31

8, I

12

श्री॰ ५ भानू रावजी साहब

नववर्षांक

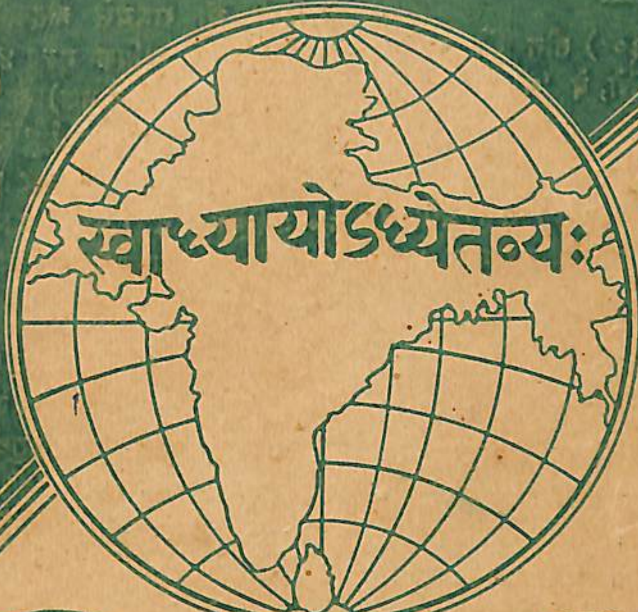
श्रीः

श्रीस्वाध्याय

शरदङ्क

वर्ष
८
सं० २००५

संख्या
१
आश्विन



वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य २)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक— ...षाचार्य
श्री पं० हरदे...

...रामता)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य—

★

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इह-लौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०)से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन)के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

...लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री ...गजके एक ओर ही लिखी होनी

...त करने या न करने, ...ने न लौटानेका सम्पूर्ण ... अस्वीकृत लेख डाक ... सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगानेसे उक्त मूल्यमें चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पंचमवर्ष का 'ग्रीष्माङ्क' और विगत चतुर्थ वर्षका 'नववर्षाङ्क' तथा गत सातवें वर्षका 'वसन्ताङ्क' अब कार्यालय में नहीं है, अतः इन अङ्कोंके लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पा[स] कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

॥ श्रीः ॥

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स०ध०प्र० सभा पंजाब।
धर्ममार्त्तण्ड राजा साहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी०आई०ई० सोलन।
रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।
श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीनदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी० पी०।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।
रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ।
श्री १०५ मान् महाराज रणदीपसिंहजी साहब नाहन (सिरमौर)
अचरोलके राजाधिराज श्री १०५ मान् हरिसिंहजी उदयपुर (मेवाड़)
श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार. एट-ला, बनेड़ा (मेवाड़)।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।
श्रीमान् पं० देवकीनन्दनजी कथावाचक, यादव कीर्तनमण्डल, अम्बाला।
श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।
श्रीमान् पं० हरिशंकरजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां सी० पी०।
श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता उदयपुर (मेवाड़)।
श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों बी० ए० एल०-एल० बी० नाभा
श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी बी०ए०एल-एल० बी० सेशनजज सोलन।
श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढती खड़ (पंजाब)।
श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढती खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्याय-सदन, सोलन (शिमला)

विषय-सूची

दो राजर्षि

बघाटमहींमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

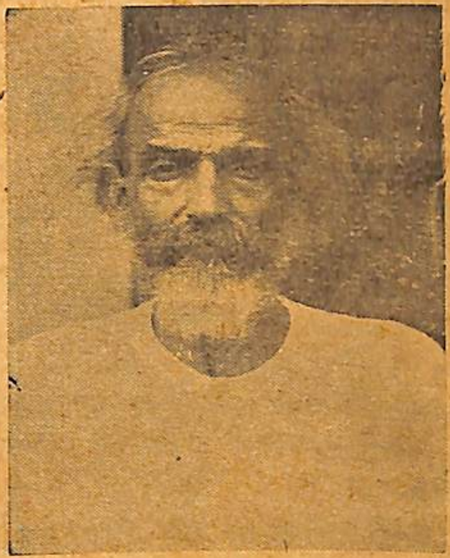
राजर्षि श्री १०५ मन्महाराज श्रीदुर्गासिंहजी महोदय



आपही के सत्य-सङ्कल्प, अपूर्व त्याग एवं अप्रतिम-प्रतिभाके कारण हिमाचल प्रदेशका नवनिर्माण हुआ है। अपनी राज्यसत्ताको जनता-जनार्दनके करोंमें समर्पित कर आपके चित्तने अत्यन्त शान्ति और सुख का अनुभव किया। हार्दिक प्रसन्नता पूर्वक ऐसा महान् त्याग करने वाला स्यात् ही कोई अन्य नरेश हो। जहाँ कई राजा राजत्यागरूप इस दुःख को भुलाने के लिए अनेक कृत्रिम उपायोंका आश्रय लेकर अपने आपको भुलानेमें लगे हैं, वहाँ ये राजर्षि वर्तमानयुगके साक्षात विदेह प्रतीत होते हैं। इस समय आप हिमाचल प्रदेशकी परामर्शदातृ-समितिके प्रधान सदस्य हैं।

युक्तप्रान्तीय व्यवस्थापिकासभा और कांग्रेसके अध्यक्ष अ० भा० हि० सा० सम्मेलनके प्राण

राजर्षि श्रीपुरुषोत्तमदासजी टण्डन



आपने श्री सुभाषचन्द्र बोस 'नेताजी' की भाँति श्री पट्टाभि सीतारामैय्या की प्रतिद्वन्द्विता में कॉंग्रेस के अध्यक्ष पदका निर्वाचन लड़नेका निर्णय कर राष्ट्रको बल दिया है। बहुत सम्भव है इतिहास अपने आपको इसबार फिर दुहराये और श्री टण्डन जी सफल हो जाएं। क्योंकि राष्ट्रका बड़ा बहुमत इस राजर्षिको ही अपने प्रशस्त-पथ-प्रदर्शकके रूपमें प्राप्त किया चाहता है। तथास्तु॥

★

आठवें वर्षमें पदार्पण

अखिल-ब्रह्माण्डनायिका श्रीजगदम्बाकी असीम अनुकम्पासे 'श्रीस्वाध्याय' अपना सातवाँ वर्ष पूर्ण कर आठवें वर्षमें प्रवेश कर रहा है। आजसे सातवर्ष पूर्व एक लंगोटधारी वीतराग महात्मा द्वारा संस्थापित और प्रकाशन सम्बन्धी सभी साधनोंसे शून्य इस एकान्त पर्वतीय प्रान्तसे एक अकिञ्चन ब्राह्मण द्वारा सम्पादित यह पत्र थोड़े समयमें ही इतना अधिक लोकप्रिय हो कर विद्वानोंमें समादरका स्थान पा सकेगा इसकी किसे आशा थी। विगत वर्षों के भयानक संक्रान्तिकालमें जहाँ 'श्रीस्वाध्याय' के समकालीन अनेक साधन-सम्पन्न पत्र पत्रिकाएँ अपना अस्तित्व स्थिर न रख सके वहाँ 'श्रीस्वाध्याय' का निरन्तर प्रकाशित हो कर पाठकोंकी अधिकाधिक सेवा करते रहनेमें ईश्वरानुग्रह ही मूल कारण है।

'श्रीस्वाध्याय' न तो किसी सम्प्रदाय या दल—विशेषका ही पत्र है और न व्यावसायिक लाभके दृष्टिकोणसे ही यह आरम्भ किया गया। विश्वरूप भगवान्, जनता-जनार्दन एवं भारतीय प्राचीन विज्ञानकी सेवाके सदुद्देश्यसे ही इसका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

विकासवादके इस युगमें अधिकांश पत्रकारोंने अपने कर्तव्यको बिल्कुल ही भुला दिया है। वे जनताके हितका ध्यान न रख कर रुचिकी ओर भागते हैं। अपने नैतिक-बलसे जनताको अपने पीछे चलानेमें असमर्थ हो वे स्वयं जनताके अनुयायी बन अपना संकुचित स्वार्थ—साधन करनेमें जुटे हुए हैं। आज पत्रकार कला दलबन्दीसे सम्बद्ध है। कांग्रेसीपत्र कांग्रेसका दोष न दिखा कर उसका सर्वथा समर्थन करते हैं। धार्मिक पत्र धर्मका वास्तविक रूप न बतलाकर कांग्रेसकी निन्दामें ही अपना कर्तव्य माने बैठे हैं। समाजवादी पत्र कांग्रेसको दोषी बताते हुए अपनी भूलोंको कभी स्वीकार नहीं करते। ऐसी दशामें जनताका मार्ग दर्शन क्या होगा। यही कारण है कि किसी समयका पत्रकारोंका पवित्र सेवाकार्य आज व्यवसाय एवं स्वार्थ—साधनकी कठपुतली बन गया है।

'श्रीस्वाध्याय' ने कभी भी अपने पाठकोंको अहितकर मार्ग नहीं दिखाया। आर्यराष्ट्रवादका 'श्रीस्वाध्याय' ने सदा प्रचार किया है। जहाँ हम अपनी राष्ट्रिय सरकारका समर्थन करते हैं वहां हमने उसकी त्रुटियों पर भी बराबर प्रकाश डाला है और भविष्यमें भी हितकी बात कहनेमें 'श्रीस्वाध्याय' कभी पीछे नहीं रहेगा।

'श्रीस्वाध्याय' पर आरम्भसे ही अनेक आपत्तियां आईं, किन्तु उन सबको साहस पूर्वक सहन करता हुआ अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होता रहा। गतवर्ष देशकी स्थिति बड़ी विकट रही। साम्प्रदायिक वैमनस्यकी आगने ऐसा विकराल रूप धारण किया कि उसमें करोड़ोंकी सम्पत्ति और हजारों निरपराधोंके प्राणोंकी आहुति पड़ गई। परिणामस्वरूप पश्चिमी पञ्जाब और सिन्धके सहायक एवं सैकड़ों ग्राहकोंके द्वारा 'श्रीस्वाध्याय' को जो आर्थिक सहयोग मिलता था वह रुक गया। देशीराज्यों और ज़मीदारीके विलीन हो जानेसे कई संरक्षक सहायकोंकी सहायता भी रुक गई। इस प्रकार गतवर्षसे भयंकर आर्थिक संकटमें फँस जाने पर भी हमने भगवान् श्रीकृष्णके "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" इस महावाक्य पर दृढ़ विश्वास रखते हुए सेवाव्रतका निरन्तर पालन किया है। अब यह आठवाँ वर्ष भी 'श्रीस्वाध्याय' के लिए कम आपत्तिका नहीं। किन्तु हमें विश्वास है कि जगदम्बाकी कृपा, श्री १०८ आचार्यचरणोंके शुभाशीर्वाद एवं सम्मान्य संरक्षक, सहायक, विद्वान् लेखक और सहृदय ग्राहकोंके सहयोगसे वर्तमान सङ्कटको पार करते हुए हम 'श्रीस्वाध्याय' के द्वारा जनता-जनार्दनकी अधिक सेवा कर सकेंगे।

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन
आश्विन शु० १ सं०२००५

विनीत—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[नववर्षाङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदापि विषीदति [राष्ट्रालोक]

वर्ष ८ | सोलन, आश्विन शु० १० मंगलवार सं० २००५ वि० | संख्या १

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ।
बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि ।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥
(यजु० १९।९)

मयीदमिन्द्र इन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् ।
अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः ॥
(यजु० २।१०)

हे तेजोमय देव ! मुझ में दिव्य तेज की स्थापना करो !
हे पराक्रमसिन्धो ! मुझ में परम पराक्रम की स्थापना करो !
हे बलनिधे ! मुझ में अनन्त बल की स्थापना करो !
हे ओजस्विन् ! मुझ में दिव्य ओज की स्थापना करो !
हे उग्रस्वरूप ! मुझ में नियामक उग्रता की स्थापना करो !
हे सहनशीलदेव ! मुझ में सहन—शक्ति की स्थापना करो !
हे इन्द्र ! मुझ में सुन्दर इन्द्रियों की स्थापना करो !
हे मघवन् ! मेरे लिये अनन्त सम्पत्ति का एकीकरण करो !
हे परमात्मन् ! हमारी इच्छायें सर्वदा ही सफल हों !
हे जगदीश ! हमारी वाणी सर्वदा ही सत्य हो !

सम्पादकीय विचार—

साम्यवादको अपनाइये

❀

यदि आप चाहते हैं कि देशकी दुर्दशाका अन्त हो जाय, प्रत्येक व्यक्ति समुन्नत होकर फूले फले, विश्वमें हम और हमारा राष्ट्र अपने पूर्व गौरवको पुनः प्राप्त कर ले तो इसके लिए आपको साम्यवादी बनना होगा।

चौंकिए मत, आपको चकित होनेकी आवश्यकता नहीं कि भारतीय संस्कृतिके परम-पोषक और आस्तिक आर्य-विचारोंके प्रचारक 'श्रीस्वाध्याय' के सम्पादक आज हमें यह क्या उपदेश देने बैठे हैं कि हम साम्यवादी बन जांय। वही साम्यवादी जिनकी कृपासे चीन मलाया और बर्माका सर्वनाश हो रहा है, भारतमें जिनकी काली करतूतें प्राप्त स्वतन्त्रताको स्थायी बनानेमें बाधक बन रही हैं, जो सदा गिरगिटकी भांति रंग बदलते रहते हैं और अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिए बड़े से बड़े राष्ट्रीय हितका बलिदान कर सकते हैं, रात दिन श्रमिकोंमें विद्रोहकी अग्नि भड़का कर वस्त्रादिके उत्पादनमें बाधाएं उपस्थित कर जनताके कष्टोंका कारण बने हुए हैं, आस्तिकता और आर्य संस्कृतिके जो जन्म जात शत्रु हैं, क्या 'श्रीस्वाध्याय' सरीखा पत्र भी अब हमें ऐसे साम्यवादी बननेके लिए उत्साहित कर सकता है? यह कैसे विश्वास किया जाय!

ठीक है, उक्त शीर्षकको पढ़कर ऐसी शंकाका होना स्वाभाविक है। किंतु, स्मरण रखिये जब हम आपको साम्यवादी (तथाकथित कम्यूनिस्ट नहीं) बननेके लिए कहते हैं तो उसका प्रयोजन यह नहीं कि किसी पार्टी या दल विशेषका सदस्य बनकर अपने विचारोंकी व्यापकताको खो बैठें और कूपमण्डूक बन जांय। हम तो वास्तविक अर्थोंमें सच्चे साम्यवाद—आर्य साम्यवाद—का अनुयायी बननेके लिए प्रेरितकर रहे हैं। भारत सदासे साम्यवादी राष्ट्र रहा है। इसकी संस्कृतिके अणु-अणुमें साम्यवाद ओत प्रोत है। भले ही विदेशी सम्पर्क अथवा दासताके कारण कुछ वर्षोंसे यह राष्ट्र अपनी उस विशेषताको विस्मरणकर बैठा हो। किंतु अब जब कि स्वतन्त्रताका प्रकाश प्राचीमें प्रकट हो रहा है, प्रत्येक व्यक्तिको अपना आत्मरूप पहचानना ही होगा। सच्चा साम्यवादी ही हमारा अपना वास्तविक रूप है। साम्यवादी क्यों, इससे भी बढ़कर हम तो अद्वैतवादी हैं। सबको बराबर समझना तो छोटी बात है, हम तो सबको आत्मरूप ही समझनेवाले हैं। जब अपना और पराया हो नहीं, सब कुछ आत्मरूप ही आत्मरूप है, तब यह भेदभाव होगा ही क्यों? इस संघर्षको स्थान ही कहां?

आप कहेंगे ये तो दार्शनिकोंको बातें हैं, सभी दार्शनिक विचार व्यवहारमें क्रियात्मक रूप नहीं ले पाते, इसलिए व्यावहारिक रूपमें तो प्राचीन भारतमें कहीं साम्यवादका नाम सुना नहीं।

ठीक है, स्थूल दृष्टिसे देखने पर ऐसी शंकाएं उचित ही प्रतीत होती हैं, किन्तु तात्त्विक दृष्टिसे विवेचन करने पर स्पष्ट विदित होता है कि भारत व्यवहार-क्षेत्रमें भी सदा साम्यवादी ही रहा है। यहां पर अपने जीवन निर्वाहसे अधिक किसीको कुछ भी अधिकार न था, सम्पूर्ण सम्पत्ति राष्ट्रकी ही समझी जाती थी। सम्पत्तिसे प्रयोजन अर्थ-शास्त्रकी परिभाषामें आनेवाली प्रत्येक वस्तुसे है और मनुष्य उसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति है। इसलिए छोटे या बड़े प्रत्येक व्यक्ति पर पूर्णरूपेण राष्ट्र ही का अधिकार था। छोटी मोटी और वस्तुओंकी तो बात ही क्या, अपने प्राणप्रिय पुत्र तक राष्ट्रहितके लिए समर्पित कर दिये जाते थे, अथवा राष्ट्रनायक उनका यथेष्ट प्रयोग एवं उपयोग कर लिया करते थे। इतिहास देखने पर सैंकड़ों ऐसे निदर्शन

मिल सकते हैं। भगवान् रामका प्रमाण तो सर्वविदित ही है। राष्ट्र-संरक्षणमें तत्पर महर्षि विश्वामित्र महाराज दशरथसे धन सम्पत्ति भूमि या सेना नहीं, प्रत्युत उनके प्राणप्रिय पुत्रोंको अधिकार-पूर्वक राष्ट्रहितके लिए अपने साथ ले जाते हैं। इससे स्पष्ट सिद्ध है कि बड़े से बड़े सम्राट् तक को भी अपनी प्रत्येक प्रिय वस्तु जनता जनार्दनकी सेवाके लिए प्रस्तुत रखनी पड़ती थी। प्रत्येक व्यक्ति सम्पत्तिका संरक्षक मात्र समझा जाता था, न कि स्वामी।

वेद पुराण उपनिषद् स्मृति और राजनीति आदि सम्पूर्णशास्त्र और धर्मग्रन्थ इसी साम्यवादका प्रचार करते चले आये हैं। उन सब वाक्यों—प्रमाणोंको एकत्रित किया जाय तो एक विशाल ग्रन्थ बन सकता हैं। दिग्दर्शन मात्रके लिए हम यहां वेद पुराणकी दो आज्ञाएं उद्धृत करते हैं—

ॐ ईशावास्य मिदं सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्यचिद्धनम्॥

इस मन्त्रमें स्पष्ट उपदेश है कि त्यागपूर्वक उपभोग करो! धनको अपना कभी मत समझो! उसको अपने लिए संग्रह करनेका अथवा उसपर अपना प्रभुत्व जमाने का कभी विचार भी मत लाओ! प्रत्युत सदा यह सोचते रहो कि यह धन किसका है? अर्थात् मेरा नहीं प्रत्युत राष्ट्रका है, जनता—जनार्दनका है। इसलिए "मागृधः" लालच मत करो! अपनी आवश्यकतासे अधिक वस्तुके संग्रहका नाम ही लोभ या लालच है। इस प्रकार वेद भगवान् लोभी या संग्रही बननेका स्पष्ट निषेध करते हुए साम्यवादी बननेकी आज्ञा दे रहे हैं। अकेला यह मन्त्र ही क्यों, यजुर्वेदका सम्पूर्ण चालीसवां अध्याय जिसे ईशोपनिषद् भी कहाजाता है अपने प्रत्येक पदमें साम्यवादकी घोषणा कर रहा है। यह तो हुई वेदकी आज्ञा। अब पुराणोंका आदेश भी सुन लीजिए। पुराणोंमें सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य श्रीमद्भागवतपुराण स्पष्ट शब्दोंमें आदेश दे रहा है कि—

यावद् भ्रियेत जठरं तावत्स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति॥

अर्थात् मनुष्य का स्वत्व या अधिकार उतनी ही वस्तुओं पर है जितनीसे उसका जीवन निर्वाह हो जाय। इससे अधिक पर जो अधिकार जमाते हैं वे चोर हैं इसलिए उन्हें दण्ड मिलना चाहिए।

तुलना करिये हमारे इस भारतीय प्राचीन आर्य-साम्यवाद और आधुनिक तथा—कथित रूसके साम्यवाद की। हमारे इस आर्य-साम्यवाद जैसा विश्वकल्याणकारी आदर्श आपको संसारमें कहीं नहीं मिलेगा।

अपनी सम्पत्ति का समाजमें समान विभाग न कर केवल अपना ही पेट पालनेवाले व्यक्तियों की निन्दा करते हुए श्री मद्भगवद् गीता में तो यहां तक कहा है कि—

तानहं द्विषतः क्रूरान् संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु॥
(गी० १६ १९)

तथा—

"भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्"

इस प्रकार सिद्ध होता है कि सनातन धर्म ही सच्चा साम्यवादका समर्थक है। इसलिए प्रत्येक सनातन वैदिक—धर्मानुयायीका कर्तव्य है कि वह पूर्णरूपेण साम्यवादी बने। साम्यवादको अपनानेके लिए कोई लम्बे चौड़े विशेष कर्तव्य नहीं करने हैं, केवल मात्र अपने—अपने कर्मका यथाविधि पालन करने मात्रसे ही मनुष्य साम्यवादी बन जायगा। उन अपने कर्तव्योंको जानने या पहचाननेके लिए भी कोई विशेष श्रमकी आवश्यकता नहीं। शास्त्र-विहित वर्णाश्रम धर्मका यथाविधि पालन ही मानवमात्रका प्रमुख कर्तव्य है और यही है साम्यवाद। जहां चारों वर्ण और आश्रम ठीक ढंगसे अपना—अपना कार्य कर रहे होंगे वहां सब प्रकारकी सुख समृद्धि स्वतः व्याप्त हो ही जायगी। इस व्यवस्थामें संग्रहको कहीं स्थान ही नहीं, सबको आवश्यकता और योग्यतानुसार प्रत्येक वस्तु प्राप्त होती रहती है। ब्राह्मण मुख स्थानीय है, अतः जिस प्रकार शरीर पोषणके लिए प्रत्येक वस्तुको मुख ग्रहण करता है तथा ग्रहण करना उसका कर्तव्य या अधिकार है, इसी प्रकार राष्ट्रके शरीरकी वृद्धिके लिए मुखरूप ब्राह्मणको राष्ट्रकी सम्पूर्ण सम्पत्तिको—बड़ी से

बड़ी वस्तुको—अपना-लेनेका अधिकार है। भगवान् मनुने तो यहाँ तक लिखा है कि—

सर्वस्वं ब्राह्मणस्येदं यत्किञ्चिज्जगतीगतम्।
श्रैष्ठ्येनाभिजनेनेदं सर्वं वै ब्राह्मणोऽर्हति॥
(मनु. १। १००)

अर्थात् संसारमें जो भी कुछ पदार्थ हैं वे सब ब्राह्मण ही के हैं। ब्राह्मण प्रत्येक वस्तु पर अपना पूर्ण अधिकार रख सकता है। उसे जब जिस वस्तुकी आवश्यकता हो वह उसे प्राप्त कर सकता है।

यह तो हुई ब्राह्मणके ग्रहणकी बात। किन्तु इस ग्रहणके साथ त्याग भी लगा हुआ है। वह राष्ट्र हितके लिए जो चाहे ले सकता है, परन्तु अपने लिए संग्रह कुछ भी नहीं कर सकता। उसे अपने लिए संग्रह करनेका कोई अधिकार भी नहीं, वह मुख जो ठहरा। क्या कभी मुख भोज्य पदार्थोंको ले लेकर अपने ही में रख सकता है? कदापि नहीं। इसी प्रकार ब्राह्मण भी राष्ट्रके लिए सम्पत्तिका ग्रहण करे। अपने लिए संग्रह करने-वाला व्यक्ति ब्राह्मण नहीं हो सकता। जो दशा ब्राह्मणकी है ठीक वही क्षत्रिय और वैश्यकी भी। मुखको भोज्य पदार्थ देनेवाले तो हाथ ही हैं। हाथ ही वस्तुओंको उत्पन्न करेंगे और वे स्वयं ही मुखको अर्पित भी करते हैं। यहां पर भी वही स्थिति है। क्षत्रिय रूप हाथ सब कुछ उत्पन्न करके भी अपने पास कुछ नहीं रखते, उनका कार्य दूसरे अङ्गोंके लिए ही है। इसी प्रकार उधर वैश्य भी सम्पूर्ण पदार्थोंको लेकर उनका अंश आवश्यकतानुसार सबको दे देता है और निकृष्ट भागको त्याग देता है। यदि पेट भले बुरे सब कुछको अपने अन्दर ही संग्रह करता जाय तो शरीरकी जो दशा होगी वह किसीसे छिपी नहीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शास्त्र-विहित वर्ण-व्यवस्थाके पालनमें कहीं भी संग्रहका नाम नहीं। सर्वत्र अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकतासे अधिकका संग्रह न करना ही मुख्य माना गया है। क्या रूस का साम्यवाद इस हमारे अपरिग्रह-मूलक वर्ण व्यवस्था के साम्यवादके समान सुखकर अथच श्रेयस्कर हो सकता है? कदापि नहीं। इसीलिये हम कहते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र को सच्चे भारतीय साम्यवाद को अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। सच्चे ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्वके समन्वय के बिना देशका कल्याण कठिन है। अकेला ब्राह्मण और अकेला क्षत्रिय कुछ नहीं कर सकता है। चाणक्यसे ही सम्राट् चन्द्रगुप्त बने थे और इन दोनोंसे मिलकर भारत बना था। चाणक्य या यों कहें कि ब्राह्मण न रहनेसे महान् मौर्यसाम्राज्य अशोकके साथ हीसमाप्तसा हो गया। समर्थ गुरु रामदास तथा दादाजी ही थे जिन्होंने महाराज शिवा को शिवा बनाया और रामदास व शिवासे यह आर्यावर्त फिरसे आर्यावर्त बन गया। किन्तु दुर्भाग्यसे आगे चलकर क्षत्रिय ने ब्राह्मण को सहयोग न दिया अथवा ब्राह्मण ही दोनों का कार्य करने लगा। फलतः महाराष्ट्र की परमोच्च सीमा तक पहुंची हुई उन्नति अवनतिके रूपमें परिवर्तित हो गई। पेशवाओं का स्वयं शासक बन जाना और मराठा सरदारों का पेशवाओंसे सहयोग न करना ही मराठा साम्राज्य की अवनति का कारण है। कहां तक कहें इतिहासके पन्ने-पन्ने को पलट कर देखिये तो आपको स्पष्ट विदित होगा कि जहां जहां ब्राह्म-क्षत्र दोनों शक्तियां संयुक्त रूपसे कार्य करती रहीं वहीं पर उत्कर्ष और उसके अभावमें अपकर्ष होता रहा। एतदर्थ इस समय भी चारों वर्णों के परस्पर संगठित सहयोग और निष्काम भावसे अपने अपने कर्तव्य पालन की परमावश्यकता है। चन्द्रगुप्त और शिवाजी सरीखे क्षत्रिय (शासक) चाणक्य और समर्थ गुरु रामदास सरीखे ब्राह्मण (मंत्री) तथा भामाशाह जैसे वैश्यों (कोषाध्यक्षों) के होने से ही राष्ट्र का कल्याण होगा। इसलिए अधिक कुछ न कहते हुए पाठकगण से निवेदन करते हैं कि वे निम्नांकित वैदिक साम्यवाद को अपनाने का पूर्ण प्रयत्न करें और प्रातः-सायं इस आदर्श मंत्र का पाठ करते हुए तदनुसार आचरण कर अपना व राष्ट्र का हित साधन करने में जुट जाएं।

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधि महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुः, वोढानड्वान् आशुः सप्तिः, पुरन्धिर्योषा, जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु। फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्॥
(यजुर्वेद संहिता २२ अ०, २२ मंत्र)

संसार का घटना चक्र

संसार का घटना-चक्र बड़ी तेजी से घूम रहा है। किस समय कहां क्या हो जायगा और कैसी घटना घटित होगी इसका कोई अनुमान किसी के पास नहीं। पूर्व-पश्चिम उत्तर-दक्षिण सर्वत्र जन-संघर्ष प्रलय कालीन सिन्धु लहरियों की भांति उमड़ता चला आ रहा है।

संसार में जब सर्वत्र प्रलय का सिन्धु हिलोरें ले रहा था हमारे प्राचीन भारतीय इतिहास के अनुसार तब भी ईश्वरीय शक्तियों ने मनु को उठाकर हिमालय के उस उच्च शिखर पर सुरक्षित कर दिया था जहां से वह विश्व का चक्र पुनः चलाकर संसार का सांस्कृतिक पिता माना जाये। हमारा विचार हो नहीं दृढ़ विश्वास है कि अमेरिका अपने अणुबमों से, रूस महा विनाशकारी रश्मि—प्रक्षेपक यन्त्रों की सहायता से, ब्रिटेन असत्य और अन्याय पर आश्रित अपनी कूटनीति से और अन्य देश भयंकर शक्तियों द्वारा प्राप्त चेतना से किये गए सन्घर्षों द्वारा संसार में शान्ति की स्थापना नहीं कर सकते। संसारमें यदि शान्ति स्थापित होगी तो वह शान्ति-प्रिय भारत के सत्य प्रयत्नों से ही।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि आज से २५ सौ वर्ष पूर्व जब जन-समाज युद्धों द्वारा अपनी साम्राज्यवादी लिप्साओं की पूर्ति कर रहा था तब मौर्यवंशी महान् सम्राट् अशोक ने संसार के सामने वह शान्त वातावरण उपस्थित कर दिया जो सदियों तक अबाध रूप से चलता रहा। यद्यपि परिस्थितियां और समय भिन्न हैं तथापि भारत की शान्त आत्मा के द्वारा प्रसारित वाणी से ही सन्तुप्त संसार सुखी और शान्त हो सकता है।

आज की समस्यायें—

संयुक्त राष्ट्रीय असेम्बली का संगठन इसलिए हुआ था कि वह अपने विशेषाधिकारों से निष्पक्ष न्याय द्वारा शान्ति की स्थापना कर सके, परन्तु आज संयुक्त राष्ट्रीय असेम्बली केवल लम्बे वाद-विवादों के लिए रंग-मंच मात्र रह गई है। जिन प्रमुख राष्ट्रों को विशेषाधिकार (वीटो) प्रयोग में लाने का अधिकार दिया गया था वे राष्ट्र स्वयं अशांत हैं और वह अपनी अशान्ति को मित्रता, न्याय, और सद्भावनाओं द्वारा मिटाने का प्रयत्न नहीं करते बल्कि दूसरे देशों में आग लगा कर अनुचित अन्याय-पूर्ण वाद-विवादों द्वारा अपने घर की आग बुझा कर शान्त होनेके प्रयास में हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण अफ्रीका हैदराबाद और कश्मीर की समस्यायें हैं।

गत नवम्बर १६४७ में हैदराबाद रियासतमें एक भारी गुण्डोंका दल बना जो रजाकार संस्थाके नामसे प्रसिद्ध था। उसके प्रधान नेता कासिम रजवीने लायकअली मन्त्रि-मण्डलके साथ मिलकर एक ऐसा फन्दा तैयार किया जिसमें वहां के शासक निजाम को फांस कर उसे अधिकार च्युत कर-सा दिया गया। नियम-विरुद्ध शासन-परिवर्तन से हैदराबाद और भारत की रही सही मित्रता भी समाप्त हो गई। लार्ड माऊंटबेटन ने जो उस समय भारत के गवर्नर जनरल थे हैदराबाद के शासन पर विश्वास न करने चेतावनी दी।

हैदराबाद के तानाशाही नेताओं ने रजाकारों को सभी प्रकार के आधुनिक शास्त्रास्त्र इसलिये दिये कि वे भारत की सीमा पर आक्रमण करके भारतवासियों को आतंकित करें। इस बीच इन आतंकवादियों ने भारत पर प्रधान मन्त्री के कथनानुसार लगभग १५० आक्रमण किये १२ रेलगाड़ियों पर हमले किये और करोड़ों की सम्पत्ति को लूट लिया। इतने पर भी वहांके मन्त्रि-मण्डल ने हैदराबाद में शान्त वातावरण की घोषणा की और हैदराबाद के वकीलों की विरोध समिति के अध्यक्ष श्री विनायक राव की उस रिपोर्ट को भी उपेक्षा

कर दी जिसमें बतलाया गया था कि १५ जनवरी १९४८ से ३१ अगस्त १९४८ तक रजाकारों और रियासती पुलिस ने ३५३ गांवों पर हमले और अत्याचार किये हैं, ५० गांव पूर्णतया जला दिये हैं और सैकड़ों व्यक्ति मारे व जिन्दा जलाये गये हैं।

भारत-सरकार जो जनताकी सरकार है वह राष्ट्रके हृदय-प्रदेशमें होते हुए इन अत्याचारोंको किसी प्रकार सहन न कर सकी और १३ सितम्बरकी प्रातःकालको शुभ वेलामें उसने इन अत्याचारोंको समाप्त करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया। फलस्वरूप आज हैदराबाद रियासत स्वतन्त्र है, वहांके निजाम स्वतन्त्र हैं—उन्होंने षड्यन्त्रोंसे मुक्ति पाई है और जनता प्रसन्न है।

ऐसी स्थितिमें निजामने उस प्रतिनिधि-मण्डलको अवैध घोषित कर दिया जो रजाकारी मन्त्रिमण्डल द्वारा संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बलीमें भेजा गया था। निजामने संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बलीके मन्त्री श्री त्रिग्वेलीको भी इस बातकी सूचना दे दी कि अब वे हैदराबादके मामलेको सुरक्षा-परिषद्के सन्मुख नहीं रखना चाहते और उन्होंने भेजे गये प्रतिनिधिमण्डलसे सब रियासती अधिकार वापिस ले लिये हैं।

इतना सब होने पर भी संयुक्त राष्ट्रीय असेम्बलीमें हैदराबादके प्रश्नको रिपोर्टसे नहीं हटाया गया और रमा स्वामी मुदालियरने अपने प्रबल तर्कों द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि हैदराबादके मामले पर विचार करनेके लिये संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बलीके पास अब कोई अवसर नहीं रहा। परन्तु संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बली उस पर विचार न करनेकी हां अब तक नहीं भर रही। क्या यही न्याय है? क्या इससे विश्व शांतिको खतरा नहीं है?

❀ ❀ ❀

यही हाल अफ्रीकाके मामलेका है—दक्षिण अफ्रीकाके प्रधान मन्त्री डा० मलानने जो एशियाई कानून संशोधन-बिल पेश किया है वह केवल भारतीयोंके नहीं वरन् सम्पूर्ण एशियाई सम्मानको चुनौती है। उनके इस कार्यकी आलोचना हम सुदूरपूर्वमें रहने वाले भारतीय ही नहीं अन्य लोग भी वहांके जी० एच० निकोलस, एल बायरन, एच टकर आदि निष्पक्ष व्यक्तियोंने भी की है। उन्होंने यहां तक भी कहा कि डा० मलान एक दम अराष्ट्रिय कार्य कर रहे हैं। यह वे केवल अपने दलके स्वार्थके लिये कर रहे हैं। डा० मलानकी सरकारके हृदयमें यदि पाप और स्वार्थ न होता तो वे डा०वाई०एन० दादू आदि भारतीय नेताओंके पासपोर्ट जप्त न करती।

जब अफ्रीकाके भारतीयोंका प्रश्न संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बलीके विचार विषयोंमें सम्मिलित करनेकी मांग की गई तो दक्षिण अफ्रीकाके प्रतिनिधि एरिकलोवने इसका घोर विरोध किया और उसे अपने समर्थक भी प्राप्त हो गये। हम पूछना चाहते हैं कि क्या एशियाके अपमानको अफ्रीकाका घरेलू मामला कहा जा सकता है? क्या अन्य राष्ट्रके लोगोंका अपमान करके अफ्रीकाने उन राष्ट्रोंको चुनौती नहीं दी है? क्या इससे वह विश्व-शांति बनी रहेगी जिसके लिये संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बलीकी स्थापना हुई थी?

❀ ❀ ❀

क्या काश्मीरकी समस्या विश्व शांतिके लिये खतरा नहीं है? काश्मीर कमीशनकी शर्तें न माननेका क्या पाकिस्तान अपराधी नहीं है? गत अधिवेशनमें पाकिस्तान के विदेश-मन्त्री मियां जफरुल्लाकी यह घोषणा कि काश्मीर में पाकिस्तानी फौजें नहीं लड़ रहीं सफेद झूठ नहीं था? क्या काश्मीर कमीशनकी रिपोर्ट ने जफरुल्ला को झूठ बोल कर विश्वकी शांतिको खतरा पैदा करने वाला अपराधी नहीं सिद्ध कर दिया? संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बलीका न्याय काश्मीरकी समस्या पर स्पष्ट हो जायेगा। यदि काश्मीरकी समस्यामें संयुक्त राष्ट्रिय असेम्बलीने पक्षपातसे काम लिया तो संसारका विश्वास उस परसे डिग जानेकी सम्भावना अवश्यम्भावी हो जायेगी।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थितियां निरन्तर घूम रही हैं, इन परिस्थितियोंमें भारत-सरकार और हमारे देशके नेता जिस सावधानी और कार्यकुशलतासे कार्य कर रहे हैं उससे भारतका गौरव अवश्य बढ़ेगा। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि भारत विश्वको वह सन्देश देगा जिससे विश्वकी आत्मा शान्त हो, सब प्रसन्न हों, सुखी हों, समुन्नत हों।

दु:ख-सागर के उस पार

सुख के अक्षय भण्डार का दर्शन

[लेखक—रायबहादुर धर्मालङ्कार धर्म केसरी श्री १०५ मन्महाराज प्रभुनाथसिंह जी]

[संसार दौड़ रहा है अक्षय सुखके लिये, परन्तु उसकी दौड़में मनमानी है स्वेच्छाचारिता है। अतः वह भौतिकताका सम्बल खोज रहा है और इसीलिये सुख उसके हाथ नहीं आता। जब मनुष्य कर्तव्य-निष्ठाकी नावको गुरु-कृपा और ईश्वर भक्ति रूपी डांडोंसे खेता है तो दुःख-सागरके उस पार अक्षय सुखके भण्डारका दर्शन कर कृत-कृत्य हो जाता है। सत्यं शिवं सुन्दरके दर्शन पाता है। इस तत्त्वको लेखकने बड़ी कुशलतासे प्रस्तुत किया है।

पर-उपदेश में कुशल व्यक्ति की अपेक्षा ज्ञान का तनिक-सा आचरण करनेवाला श्रेष्ठ है। प्रस्तुत लेखके लेखक इसके सुन्दर उदाहरण हैं। आप महाराज नरसिंहगढ़के भ्राता हैं, श्रीमान् हैं, पवित्र वंशके वंशज हैं और योगी हैं। (शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोभिजायते।) कर्तव्य-निष्ठ त्यागी संयमी और चरित्रवान् हैं। इस लेख द्वारा इनके हृदयको पढ़िये और निर्दिष्ट पथ पर बढ़िये।]

शान्ति और सुखके पीछे सारा संसार दौड़ता फिरता है। छोटे से लगा कर बड़े तक सभी इस दौड़ में दौड़ रहे हैं। किसी ने इसमें पूर्णसफलता प्राप्त की हो ऐसा न अभी तक हुआ और न होगा, कारण कि जिन्होंने अशाँति को ही शाँति मान लिया हो, झूठ को ही सत्य मान लिया हो, उनको सफलता कैसी? जो साँसारिक सुखों के ही पीछे पड़े हों वे सुखी कैसे हो सकते हैं? भगवान् से विमुख का सुखी होना असम्भव ही हैं। उसकी क्षणिक सफलता भी सङ्कट और अशान्ति के आवाहन का मन्त्र सी बन जाती है। यदि धन, राज्य, स्त्री, पुत्र, सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो भी जावें फिर भी दुःख पीछा नहीं छोड़ता। विद्रोह, रोग बैर, हानि, पद पाने की लिप्सा, सर्वमान्य होने की आकांक्षा आदि-आदि उसको दुःखी करते रहते हैं।

जिन को सच्चे सुख की प्राप्ति हो चुकी है वे इस दौड़ से दूर ही रहते हैं। कारण कि वे क्षणिक सुख, दुःख, की ओर ध्यान नहीं देते। ऐसा नहीं है कि सुख की प्राप्ति हो ही नहीं सकती अथवा उसकी प्राप्ति के साधन नहीं हैं। सुख और शान्ति के मार्ग का दर्शन कराने वाले महात्माओं से पृथ्वी शून्य नहीं है, किन्तु कोई उनकी खोज करे तब तो—

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
मैं बौरी ढूंढन गई, रही किनारे बैठ॥

सद्गुरुकी महत्ता महती है—सद्गुरु येन-केन-प्रकारेण सद्बुद्धि प्रदान करते रहते हैं, किन्तु इस ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। पहिले सत्य की खोज में अनेकानेक कष्ट उठा कर सद्गुरु की खोज की जाती थी और आज सद्गुरु सुलभ होते हुए भी उनको अपनानेवाला बिरला ही है। कारण कि आज के मनुष्य ने धन, स्त्री, पुत्र, राज्य, मान, पद-लोलुपता और नेतागीरी में ही सुख मान रखा है।

विश्ववन्द्य महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषों का नाम कलङ्कित करनेवाले, सत्य की आड़ में झूठ, छल और प्रपञ्च द्वारा जनताको ठगनेवाले, सच्चे हित चिन्तकों को शत्रु और शत्रु को मित्र माननेवाले, साधु पुरुषों को पापी और ठग के नाम से सम्बोधित करते हैं। बड़ों का मान गाली देने में ही रह गया है। भगवान् के नाम को भयङ्कर विष से भी अधिक भयङ्कर समझ कर उसको लेने की कौन कहे, भूल से या रूढ़िगत होने से जो एक दूसरे के मिलने पर राम-राम, जयराम जी की, जय श्रीकृष्ण, जय शङ्कर; आदि उच्चारण हो जाता था उसको भी तिलाञ्जलि दे दी है। भला फिर हम सुखी कैसे हो सकते हैं? पिता का

अपमान कर पुत्र को मान देने से पिता कैसे प्रसन्न हो सकता है? जिसने पाँच तत्त्व उत्पन्न किए उसे छोड़ कर केवल भौतिकता की या मनुष्य की ही जय-जय कार करना कहाँ की सभ्यता है? इस प्रकार सत्य को छोड़ कर असत्य के सहारे रहनेवाले दुःखी हो रहे हैं। इन्हीं सब उल्टी चालों को देख कर स्वभाव से ही दयालु सद्गुरु जगह-जगह फिर कर, उपदेश, भजन, कीर्तन, कथा, सत्-साहित्य और पत्रों द्वारा भूले हुओं को अनेक प्रकार से सत्य पथ पर लाने की चेष्टा कर रहे हैं। किन्तु हमारा ध्यान उधर तनिक भी नहीं जाता।

विचार करना चाहिए—इस जगद्-व्यवहार का असली स्वरूप क्या है? यह इतना बड़ा विश्व कैसे उत्पन्न होगया? किस ओर यह चल रहा है? और यह कहाँ जा कर ठहरेगा? देखने पर इस संसार में एक तिनका भी स्थिर मालूम नहीं होता, उसमें भी प्रतिक्षण परिवर्तन होता है, फिर भी सब जगद्-व्यवहार स्थिर-सा मालूम पड़ता है। यह कैसे है? इस अद्भुत व्यवहार में मुझे कहीं भी विचार दिखाई नहीं पड़ता। एक के पीछे एक सब अन्धों की तरह चले जा रहे हैं। औरों की क्या कहूँ मैं स्वयं उसी बातका उदाहरण हूँ। याद नहीं कि बचपन में क्या क्या हुआ, कुमार-अवस्था में भिन्न प्रकार का और तारुण्य में दूसरी तरह का ही था। मेरा अभी का जीवन भिन्न प्रकार का ही है। किन्तु समझ नहीं पड़ता कि इस सब से मुझको फल क्या मिला। जो जो मनुष्य जब जब जो जो उद्योग करता है वह सब विचार करके फल पाने की इच्छा से ही करता है। परन्तु इतना करने पर भी आज तक किस को क्या मिला है? कौन सुखी हुआ है? लोग कहते हैं कि फल मिला। परन्तु फल तो वह है जो क्रिया को खा जाय, जिसके प्राप्त होने पर फिर क्षणिक उद्योग करने की आवश्यकता ही न रहे। परम पुरुषार्थ में प्रवृत्ति हो। परन्तु यहाँ उससे भिन्नता है, क्यों कि लोग फिर भी उद्योग करने को दौड़ते हैं। मुझे बताओ कि जब एक बार फल मिल गया तो दूसरी बार फल मिलने की इच्छा कैसे हो सकती है? फल से दुःख का नाश और आनन्द की प्राप्ति होती है। परन्तु 'मुझे अमुक कर्तव्य करना चाहिये' इस तरह जब तक क्रिया-भाव शेष रह जाता है, तब तक दुःख का अन्त नहीं होता, और सुख नहीं मिलता। क्रिया-भाव का बोझ सब दुःखों का दुःख है। उसके रहते हुए दुःख का अभाव और सुख की प्राप्ति कैसे हो सकती है? सब शरीर तो झुलस गया हो और पैरों में चन्दन का लेप लगाया जा रहा हो, बस कर्तव्य शेष रह जाने पर इसी तरह सुखी रहना सम्भव है। अथवा बाण के लगातार घुस जाने से कलेजा बिलकुल फट गया हो और अप्सरायें आलिंगन कर रही हों तो जैसा सुख मिलना होगा मिलेगा। सिर पर क्रिया-भाव का बोझ रखनेवाले मनुष्य का सुख वैसा ही हो सकता है जैसा क्षय के कारण मृत्यु की ओर जाने वाले मनुष्य को संगीत से। संसार में सच्चे सुखी मनुष्य वही हैं जिनका कुछ भी कर्तव्य-कर्म शेष न रह गया हो अर्थात् जो पूर्ण तृप्त और भीतर बाहर शांत हो चुके हों। 'मुझे कुछ करना चाहिये' ऐसा मन में होने पर किसी को कहीं सुख हो सकता है तो शूली पर चढ़े हुए मनुष्य को भी पुष्प की गंध से सुख मिल सकता है। जब कि सैंकड़ो लिप्साओं से बिलकुल लदे हुए मनुष्य भी सुख की आशा करते हैं, तब तो बड़ा ही आश्चर्य मालूम होता है। इस अविचार की महिमा कहां तक वर्णन की जावे। करोड़ों लोभ रूपी पर्वतों के नीचे दबे हुए लोग भी अपने को सुखी समझते हैं।

आप विचार करें कि 'जैसे सार्वभौम महाराजा यथा-शक्ति उद्योग करता है वैसे ही एक भिखारी भी। फल भी दोनों को मिलता है और वे अपने को बड़े सुखी समझते हैं। मैं भी परिणाम की ओर ध्यान न देकर इन सब की विचार शून्य--पद्धति के अनुसार अन्धे की तरह अन्धे के पीछे चल रहा हूँ। अब इस गतानुगतिकत्व को छोड़ना चाहिए और सद्गुरु के पास जाना चाहिए। मुझे इन सब बातों को समझाने के लिए और इस संशय समुद्र के पार जाने के लिए श्री सद्गुरु के बोध रूपी नौका का आधार लेना चाहिए। तभी मुझे दुःख सागर के उस पार सुख के अक्षय भण्डार का दर्शन होगा।'

सभाओं और संस्थाओं का विकास

[श्री पं० तिलकधर शर्मा]

'समूह शक्ति का स्रोत है,' इस ज्ञान के प्रकाश में ही सामूहिक जीवन के साधन सूझते हैं और उन साधनों से सम्पन्न समाज बलशाली एवं समृद्ध होता है।

सामूहिक जीवन का प्रारम्भ बहुत प्राचीन कालमें हो चुका था, तब जनसंख्या परिमित थी, यातायातके साधनों का अभाव था और आर्य जाति की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ विस्तृत जीवन के क्षेत्रों का निर्माण कर रही थीं।

आर्यावर्त की सीमाओं पर असुर जातियों द्वारा होनेवाले आक्रमणों से रक्षा करने के लिये उस समय आर्योंको अपना एक नेता चुनने की आवश्यकता प्रतीत हुई और उन्होंने परस्पर परामर्श से शीघ्र ही एक नेता चुननेका निश्चय किया। उस समय नेताको इन्द्र कहा जाता था। (ऐतरेय० १।१४)

इन्द्र का निर्वाचन करने के लिए आर्योंने एक संस्था का निर्माण किया जिसे **सभा** कहते थे। सभा के अधिकारियों को पथिकृत् कहा जाता था। पथिकृत् का अर्थ है—मार्ग बनानेवाला।

यजुर्वेद में जहाँ पहिले-पहल सभा का वर्णन आया है वहाँ पहिले सभा का फिर सभापति का और फिर पथिकृत् लोगों का वर्णन मिलता है:—

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः पथिकृद्भ्यश्च।

यजुर्वेद के इस स्थल में सभा सभापति और पथिकृत् के साथ बहुवचन का प्रयोग हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि देश में उस समय अनेक सभाएं थीं, उन सब सभाओं के अपने-अपने सभापति थे और अपने-अपने पथिकृत्।

देश के थोड़े-थोड़े व्यक्ति मिल कर सभा का निर्माण करते थे। और अपने पथिकृतों का तथा सभापतियों का निर्वाचन कर लेते थे और इन्द्र का निर्वाचन करने के लिये ये पथिकृत् लोग तथा सभापति मिल कर राष्ट्र के किसी प्रमुख स्थान में एकत्रित होते थे।

सभापति का निर्वाचन कर सभासद् लोग सभापति तथा पथिकृत् लोगों से प्रार्थना करते थे—

सभ्य सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः।
त्वेद्गाः पुरुहूत विश्वमायुर्व्यश्नवम्॥
अथर्व० १९।७।५५।६

इससे यह तात्पर्य नहीं कि मनुष्य को वैराग्य लेकर संसार को ही छोड़ देना चाहिए। किन्तु ग्रन्थों के पठन पाठन से मुमुक्षुता प्राप्त करके सद्गुरु की शरण जाना चाहिए और सांसारिक कार्यों को अपने न समझ कर कार्य करते रह कर उस प्रभु का स्मरण भी करना चाहिए जिसके प्रति हमारा बहुत कुछ कर्तव्य है और इस प्रकार जन्म सफल कर यशस्वी बनना चाहिए।

वैदिक काल में इसी प्रकार के विचारवान् हुआ करते थे और तभी भारतवर्ष को जगद्गुरु की उपाधि प्राप्त थी। विधर्मियों ने जब से देश पर अधिकार किया हमने भी शनैः शनैः धर्म को तिलांजलि दे दी और इस प्रकार उनको प्रसन्न करके जीवित रहने का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके कारण आज हम सब देशवासी अधोगति को प्राप्त हो चुके हैं।

जो होना था सो हो चुका, परन्तु अब हमारा भविष्य उन्नत है, गौरवमय है। इस आशा और दृढ़ विश्वास के साथ अब हमें उठना चाहिये। राष्ट्र-तपस्वियों के दिव्य आदेशों से कर्तव्य को जान कर हमें आध्यात्मिकता के दिव्य वातावरण में विहार करना चाहिये।

भौतिकता से पीड़ित विश्व की दृष्टि भारत पर है, विश्व भारत से शान्ति का सन्देश चाहता है। भारत इसके योग्य है, वह जगद्गुरु है, ईश्वरीय कृपा उसके साथ है, अतः हमें आशा एवं विश्वास है कि भारत सन्तप्त विश्व को वह दैवी सन्देश देगा जिससे विश्व विचार करेगा, भूलों पर पश्चाताप करेगा और शान्ति के लिये जगदीश्वर का अनुग्रह प्राप्त कर सकेगा।

हे सभ्य ! (सभापते और पथिकृत् महानुभावों) हमारी सभाका पालन करो ! हे पुरुहूत (प्रथम स्मरण किये गये सभापते !) जो सभ्य और सभासद् लोग तुम्हारे साथ चलें वे पूर्ण आयु प्राप्त करें ।

यजुर्वेदके मन्त्रोंमें सभापतियों और पथिकृतोंके लिये राजा द्वारा प्रणाम-भाव का उल्लेख है । इससे ज्ञात होता है कि राजाओं की दृष्टिमें भी सभाओं का विशेष आदर था।

समिति—

सभाओं के निर्माण के अनन्तर समिति का निर्माण हुआ । राष्ट्र के प्रमुख नगर में इन्द्र (राजा) के निर्वाचन के लिये सभाओं के प्रतिनिधि एकत्रित हो कर समिति का निर्माण करते थे ।

समितिमें देश के सभी भागोंके प्रतिनिधि सम्मिलित होते थे। हम समितिको 'प्रतिनिधि-संस्था' भी कह सकते हैं । यह प्रतिनिधि संस्था ही इन्द्रका निर्वाचन किया करती थी।

जब इन्द्र राज्य-सिंहासन पर बैठता है तब वह अपने साथ के लोगों से सहायता की प्रार्थना करता है । उन सहायताके मन्त्रोंमें एक स्थान पर ग्रामीणको भी सम्बोधित किया गया है । विद्वानों का मत है कि ग्रामीण किसी ग्राम्य-सभा के प्रधान को कहते हैं । (अथर्व० ३ । ५ । ६-७)

वेदकाल की सभायें और समितियाँ ब्राह्मण और उपनिषद्-काल तक कुछ-कुछ सुधारों के साथ चलती रहीं।

उपनिषदों में तपस्वियों की अनेक सभाओं का भी वर्णन मिलता है । ये सभायें आध्यात्मिक निर्णयों के साथ-साथ राजनैतिक अविज्ञेय विषयों का भी समाधान किया करती थीं ।

रामायण में गोत्र-ऋषियों के जिन आश्रमों का उल्लेख है वे भी इसी प्रकार की संस्थायें थीं ।

इस काल के बाद सभा का स्थाना जानपद संस्थाओं ने ले लिया और समिति का स्थान पौर-संस्थाओं ने । जानपद और पौर संस्थाओं का विकास-काल इतिहासकारों के मत से ई० पू० ६०० से ई० सन् ६०० तक है । यदि वाल्मीकि रामायण का यही काल मान लिया जाय तो यह समय ठीक है, परन्तु रामायण काल अवश्य ही उससे कुछ पूर्व है और वाल्मीकिने पौर और जानपदों का उल्लेख किया है, अतः इन संस्थाओं का विकास रामायण-काल में हुआ था यह कहा जा सकता है ।

जानपद—

अर्थ-शास्त्रके सिद्धांतानुसार जनपद का अर्थ :—किसी राष्ट्रकी वह समस्त भूमि जिसमें राष्ट्र के मुख्य नगर और राजधानी सम्मिलित नहीं है । इस जनपदसे सम्बन्ध रखनेवाली संस्थाको जानपद संस्था कहा जाता है ।

जानपदका अर्थ यद्यपि जन-पदके निवासी भी हो सकता है, परन्तु जानपदोंके निर्वाचन और जानपदों के कार्योंकी ओर देखनेसे निश्चित होता है कि जानपद समस्त देशकी निर्वाचित संस्था थी । जानपद सभाके सदस्योंका निर्वाचन ग्राम्य-संस्थाओं द्वारा भी होता था और नगर-संस्थाओं द्वारा भी। उसके सभापति को राष्ट्र-प्रमुख कहा जाता था ।

दशकुमार चरितमें एक राजाने जानपदके प्रधानसे एक स्थान पर यह नियम-विरुद्ध और अनुचित प्रार्थनाकी कि अमुक ग्राम्य-सभाके ग्रामणीको पीड़ित किया जाय । इससे ज्ञात होता है कि जानपद संस्थाका ग्रामणी लोगोंसे मुख्य सम्बन्ध था। मैत्रायणी संहिता (१ । ६ । ५) के अनुसार ग्रामणी वैश्य जातिका और पाली धर्म ग्रंथोंके अनुसार ग्रामणी क्षत्रिय जातिका होता था। जान पड़ता है कि इन्हीं ग्रामणी लोगोंमें से ही जानपद संस्थाके सदस्य निर्वाचित होते थे ।

वैश्योंकी एक नैगम नामकी अलग संस्थाका भी रामायण में उल्लेख मिलता है, इससे ज्ञात होता है कि संहिता-कालमें यद्यपि ग्राम्य-सभाका प्रधान वैश्य होता था तथा तथापि रामायण कालमें वैश्योंकी अलग संस्था बन जानेके कारण क्षत्रियको ही ग्रामणी बनने का अधिकार रह गया हो । यह ग्रामणी ही जानपद सभामें निर्वाचित किए जाते थे । यद्यपि क्षत्रिय ग्रामणीकी जानपद संस्थामें प्रधानता रहती थी तथापि इतर वर्णोंके प्रतिनिधि भी इसमें सम्मिलित होते थे ।

ग्रामणी संघ ही जानपदके सदस्योंका निर्वाचन करते थे । पंतजलिने महाभाष्यमें (अष्टाध्यायी ५ । १ । ५८-५६

सूत्रकी व्याख्यामें) संघके सदस्योंकी संख्या ५, १० और २० बतलायी है। वृहस्पतिने २, ३ और पांचका भी उल्लेख किया है (द्वौ त्रयः पंच वा कार्याः) मेगस्थनीज ने भी पांच-पांच सदस्योंकी ग्राम्य समितियोंका भारतमें निरीक्षण किया था। इस प्रकार जान पड़ता है कि छोटी ग्राम्य संस्थाओंके ५-१० या बीस ग्रामणी मिलकर जानपदके सदस्योंका निर्वाचन किया करते थे।

जानपद संस्था राष्ट्रकी महत्त्वपूर्ण संस्था समझी जाती थी। महाभारत शांतिपर्व (६४। १६) में कहा गया है कि—

पौरजानपदा यस्य स्वनुरक्ता अपर्दिताः।
राष्ट्र-कर्मकरा ह्येते राष्ट्रस्य च विरोधिनः॥

पौर जानपद यदि चाहें तो राष्ट्रको बना सकते हैं और यदि चाहें तो नष्ट भी कर सकते हैं। यदि वे संतुष्ट हैं तो राष्ट्रका कार्य भली प्रकार चल सकता है, यदि वे असंतुष्ट हैं तो राष्ट्रका कार्य चलना असम्भव हो जाता है।

जानपद संस्थाका मुख्य कार्य राष्ट्रका संगठन और राजनीतिके मामलोंकी प्रजाकी ओर से देख-रेख था। अर्थशास्त्रसे ज्ञात होता है कि जानपद संस्थाके प्रतिनिधि ही राजकीय सिक्कोंकी देखभाल किया करते थे और लेन-देनके लिये कितने सिक्कोंकी आवश्यकता है इसकी जांच भी ये ही लोग करते थे। जनताकी मांगोंकी पूर्तिका दायित्व और जनताकी शिकायतोंको राज-सभा तक पहुंचाने का कार्य भी यही सम्भालते थे।

जानपद सभाका मुख्य कार्यालय राजधानीमें ही हुआ करता था और पौर सभाके साथ इस संस्थाको मुख्य सम्बन्ध रखना पड़ता था। कभी-कभी तो पौर और जानपद संस्थाओंके सम्मिलित अधिवेशन भी हुआ करते थे।

पौर संस्था

पौर संस्थाका जन्मकाल भी प्रायः वही है जो जानपद संस्थाका है। यह राजधानीकी मुख्य संस्था होती थी। इसकी शाखायें अन्य राजकीय नगरों (तहसीलों) कस्बों आदि में भी हुआ करती थीं।

जो अधिकार आजकल म्युनिस्पल कमेटियोंको प्राप्त हैं वे ही अधिकार तथा इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उच्च अधिकार भी पौर संस्थाको प्राप्त थे। इस संस्थाका प्रधान कोई प्रमुख नगर-निवासी हुआ करता था। इसे श्रेष्ठित या प्रधान कहते थे।

रामायणके अनुसार पौर और जानपद दोनों संस्थाओं के दो विभाग हुआ करते थे—एक आभ्यन्तर और दूसरा बाह्य—

आशंसते जनः सर्वो राष्ट्रे पुरवरे तथा।
आभ्यन्तरश्च बाह्यश्च पौरजानपदोजनः॥

आभ्यन्तर सभा कार्यकारिणी समितिको कहा जाता था जो स्थायीरूपसे कार्य या मन्त्रणा आदि करती थी।

गौतम धर्म सूत्र (६। ६। ११) के अनुसार सभा का सदस्य होने पर कोई किसीको ऊंच-नीच दृष्टि से नहीं देख सकता था। यहां तक कि जो शूद्र पौर संस्थाका सदस्य रह चुका हो, उसका ब्राह्मणको भी विशेष रूपसे आदर करना पड़ता था। पौर संस्थाके सदस्य (चाहे वह ८० वर्षकी अवस्थासे कमका ही क्यों न हो) के आने पर ब्राह्मणको उसका उठकर आदर करना पड़ता था। गौतमने लिखा है।

अवरोऽप्यार्यः शूद्रेण ॥११॥
नाम चास्य वर्जयेत ॥१२॥
भो भवन्निति वयस्यः समानेऽहनि जातः॥ १४॥
दशवर्षवृद्धः पौरः ॥१५॥

पौर सदस्य आपसमें नाम न लें। भो भवन् आदि आदर-वाचक शब्दों से एक दूसरेको बुलायें। यदि अवस्था में दस वर्ष का भी अन्तर हो तो भी आपस में ऐसा व्यवहार करें कि मानों एक दिन ही उत्पन्न हुए हों

इस प्रकार ज्ञात होता है पौर एक ऐसी जन-संस्था थी जिसमें छोटी से छोटी जाति के व्यक्ति भी सम्मिलित होते थे।

पौर संस्था में अनेक विभाग होते थे। इस संस्था में एक रजिस्ट्रार भी होता था। जिसके द्वारा रजिस्टर्ड प्रमाण पत्र सर्व मान्य समझा जाता था।

वसिष्ठ ने कहा है—

चिरकं नाम लिखितं पुराणैः पौर लेखकः ।

पौर लेखक का लेख्य ही लौकिक लेख्योंमें प्रमाणित माना जाता है । राज-संस्था का रजिस्ट्रार इससे अलग होता था ।

धर्म-शास्त्रों और स्मृतियों में पौरों के अनेक कार्यों का उल्लेख है—

जायदादों की व्यवस्था, (वसिष्ठ १६।२०)

नागरिकों के सम्पत्ति-बल बढ़ानेवाले कार्यों की देख भाल । (बृहस्पति पृ० ४२४)

नगर की शान्ति--रक्षा का कार्य, दीवानी मामलों का न्याय ।

(साहस-वर्ग) फौजदारी के मुकदमें राजकीय न्यायालय के ही अधिकार में थे ।

धर्म-स्थानों की और सार्वजनिक स्थानों की देख--भाल ।

नगर में इन संस्थाओं के अधिवेशनों के लिये बड़े बड़े सभा-भवन बने रहते थे, जिन्हें चत्वर (टाउन हॉल) कहा जाता था ।

पौर और जानपद संस्था के सदस्यों पर राजा के नियम पूर्वक और सच्चरित्रता से चलने की जिम्मेवारी भी रहती थी। राज-गद्दी पर कौन आरूढ़ हो इसका निर्णय भी संस्थायें ही करती थीं। राम के यौवराज्या--भिषेकके लिये पौर जानपद और नैगम संस्थाओंके सदस्यों ने ही प्रार्थना करते हुए कहा था ।

स रामं युवराजा-नमभि-षिञ्चस्व पार्थिव ।

राजन् ! राम का यौवराज्याभिषेक करो !

नैगम—संस्था —

नैगम-संस्था का जन्म भी रामायण काल में ही हो चुका था । राम के राज्याभिषेक की सम्मति देने के लिये आये हुए लोगोंमें नैगम संस्थाके प्रतिनिधि भी उपस्थित थे

उपतिष्ठति रामस्य समग्रमभिषेचनम् ।
पौरजानपदाश्चापि नैगमश्च कृतांजलिः ॥
राम० अयो १४ । ५२

नैगम संस्था एक व्यापारिक संस्था थी । इसके सदस्य नगर तथा ग्रामों के मुख्य धनवान् व्यापारी हुआ करते थे । जौहरी, हाथी दांतका काम करनेवाले, अस्त्रकार, सुनार लकड़ी पर नकाशी करनेवाले, किराने का व्यापार करने-वाले, तथा इसी प्रकार के अन्य काम करने वाले इस संस्था के सदस्य होते थे ।

नैगम संस्था का भी अपना निजी अधिवेशन-भवन हुआ करता था जिसे सभा कहते थे ।

श्री जायसवाल जी ने लिखा है—

एक स्थान पर हमें यह उल्लेख मिलता है कि एक धनवान् और उदार व्यापारी ने नैगम-सभा के अधिवेशन में यह लिखवाया था कि गोवर्धन नगर की कुछ श्रेणियों के पास मेरा जो धन है वह अमुक-अमुक दान-कार्यों में लगाया जाय ।

जायसवाल जी के इस उदाहरण से स्पष्ट है कि नैगम--संस्था का श्रेणियों से सम्बन्ध था । ये श्रेणियां व्यापारियों की होती थीं, इनका चुनाव भी ये श्रेणियां ही करती थीं

बौद्ध ग्रन्थों से पता चलता है कि राजा लोग जब बड़े-बड़े यज्ञ करते थे तो उसके लिये जो विशेष कर लगाया जाता था, वह पौरों, जानपदों और निगमों की अनुमति से ही लगाया जाता था । पौर और जानपद संस्थाओं के साथ साथ ही सर्वत्र हम नैगम संस्था का उल्लेख पाते हैं, अतः यह भी सिद्ध होता है कि नैगम संस्था भी देश की प्रमुख संस्थाओं में गिनी जाती थी ।

इस प्रकार ईसवी सन् ७०० तक देश में ये संस्थाएँ निरन्तर कार्य करती रहीं और इनकी सहायता से राजा लोग राष्ट्र को उन्नत करने में समर्थ हुए । ७०० ई० के अनन्तर का इतिहास धुँधला है । इनमें प्रायः संस्थाओं के सहारे राज्य करने की प्रणाली नष्ट हो गई और जो राज्य-प्रणाली प्रचलित हुई, उसमें एक ही व्यक्ति राष्ट्र का कर्ता धर्ता बनने लगा ।

शिवाजी ने कुछ प्राचीन राज्य-प्रणाली की ओर ध्यान दिया और अष्ट प्रधानों की सहायता से राज्य का विस्तार किया, परन्तु वे पौर और जानपद संस्थाओं से मिलती-जुलती संस्थाओं का निर्माण नहीं कर पाये । यह

हमारे मेहमान

[कविराज श्री अमृतलाल जी हंस]

भारतीय मेहमान गरीब की जान खा जाते हैं, जैसा व्यवहार भारतीय मेहमान गृहस्वामी के साथ करते हैं वैसा अन्य देशों में नहीं पाया जाता। प्रायः देखा जाता है कि अन्य देशों में रात्रिके समय स्टेशनसे किसी मित्र या सम्बन्धी के घर जाने की धृष्टता ही नहीं की जाती। यदि मस्तिष्कके दोषके कारण ऐसी कुचेष्टा कोई मेहमान कर भी बैठे तो वह घर से इस प्रकार खदेड़ दिया जाये कि फिर वह आजीवन मेहमान बननेका नाम ही न ले।

अंग्रेजों पर यह मेहमानी का दैवी प्रकोप प्रथम तो होता ही नहीं, यदि होता भी है तो अनिश्चित रूपसे कभी नहीं होता। अंग्रेज अपने मित्रके यहां किसी विशेष आवश्यकता या घटनाके बिना नहीं ठहरते। वे होटलमें विश्राम करना अधिक पसन्द करते हैं। यदि किसी अंग्रेज को किसी मित्रके यहां ठहरना होता भी है तो वह प्रथमसे ही सूचना दे देता है। स्वीकृति दे दी तो ठीक, नहीं तो सीधा होटल। यदि होटल न हो तो डाक बंगलेकी राह पकड़ते हैं।

अंग्रेज मेहमान ऐसे असभ्य नहीं होते कि गृह-स्वामी के सिर पर भूतकी तरह सवार हो जायें और न ही गृह-स्वामी ही ऐसी अनुचित सभ्यताके पुजारी होते हैं कि स्वयं दुःख भुगतें और व्यर्थकी बला सिर लें।

यह बात तो भारतीय मेहमानोंमें ही देख पड़ती है कि आजादीके साथ हर एक के घर पर अपने सामानके साथ पहुंच जायेंगे। जिससे एक बार परिचय प्राप्त हो गया फिर उसको इतना कष्ट देंगे कि बेचारेको संसारके समस्त पापोंसे जीवन भरके लिये मुक्ति मिल जावेगी। जिस समयसे पधारेंगे और जब तक वापिस न जावेंगे गृह-स्वामीकी यह दशा रहेगी कि उन्हें आराम पहुंचानेके लिये अपने शरीर तक की भी सुध नहीं रहेगी। उसके घरके सब आदमी बाल, वृद्ध, स्त्री और पुरुष केवल एक व्यक्तिके लिये व्यग्र और संलग्न रहेंगे, जैसे मेहमानने आकर उनके घरमें दफ्तर खोल दिया हो—कोई पान लगा रहा है, कोई बीड़ी सिगरेट ला रहा है और समय पर भोजन तैयार करनेके लिए पूरा स्टाक भोजनालयमें कार्य कर रहा है और स्वयं गृहपति महोदय हैं जो रह रह कर बाहरसे आकर समस्त कार्योंका निरीक्षण कर जाते हैं। परिवारके लोगोंको बीच बीच में क्रोधित होकर कहते रहते हैं कि ये सायंकालसे पहले भोजन करते हैं और हमारे यहां अब तक चावल भी नहीं चढ़े, परमात्माके वास्ते मेरी नाक न कटाना। इसके उत्तर में कुछ काम करने वाले तो मौन धारण कर लेंगे, कुछके होठों पर बड़बड़ाहटके चिन्ह प्रकट होने लगेंगे।

किन्तु गृह-लक्ष्मी इस प्रकार की बातोंका उत्तर कब तक न देगी। फौरन किसी बर्तनको आवेशमें आकर पटक कर कहेंगी—वाह हाथ पैर फुलये देते हो, कोई चार हाथ पैर कैसे लगाये, हथेलियों पर सरसों जमाये देते हैं। किस वक्त सौदा आया है? या सौदा लेने भी मैं चली जाती। आप ऐसी हफड़ा-दफड़ी मचा रहे हैं मानों कई दिनके फाकोंसे हों।

अब यदि गृह-पतिने गृहिणी को उत्तर दिया तो यह सिलसिला वह रूप धारण कर सकता है कि बाजारसे भोजन आ जाये और अतिथिसे कह दिया जाये कि घरमें इस प्रकारका दौरा पड़ा कि घर भर परेशान है। यदि गृहिणीकी बातको गृह-स्वामीने पीकर बुद्धिका परिचय दिया तो थोड़ी देर बाद भोजन बन ही जाता है।

स्पष्ट है कि 'राष्ट्र' जन-संस्थाओं के सहयोग से ही उन्नत और समृद्ध हो सकता है। इसका ज्ञान जो आधुनिक समय में फिर से प्रचारित और प्रसारित करने का श्रेय शिवा जी को ही प्राप्त है।

इस समय देश में जन-संस्थाओं की बाढ़ सी आ रही है, किसी का किसी से मेल नहीं। वह दिन शीघ्र ही उदित हो जिस दिन देश की सम्पूर्ण संस्थायें एक होकर राष्ट्र को उन्नत करने में समर्थ हों।

——

संक्षिप्तमें यह है कि एक मेहमानके आ जानेसे समस्त परिवारकी व्यवस्था ऐसी बदल जाती है कि जैसे प्रलय हो गई हो और मेहमान की यह हालत, कि उसके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। अधिकसे अधिक यह है कि भोजन की व्यवस्थाको देख कर तनिक मन चाहा तो शिष्टाचारके तौर पर कह दिया—भोजन-व्यवस्थामें इतने कष्ट की क्या आवश्यकता थी। किन्तु यदि गृह स्वामी बेचारा यह ढोंग न रचे, तो यही मेहमान साहब उससे इतने रुष्ट हो जावेंगे कि किसी दूसरेके यहां जाकर उसकी हंसी उड़ायेंगे, उसकी खूब आलोचना करेंगे और इस अतिथि-सत्कारके दोषको कुरेद कुरेद कर प्रत्येक स्थान पर उसे बदनाम करेंगे।

मेहमान भी विभिन्न स्वभाव तथा विभिन्न श्रेणीके होते हैं। प्रथम तो वे हैं जो अपनी साहब बहादुरीके कारण गृह-स्वामीके कष्टके कारण होते हैं। सुबह होते ही चायके प्रबन्धके अतिरिक्त नाईका इन्तजाम करना पड़ता है। स्नान का प्रबन्ध करना और जिस प्रकार भी हो उनके लिये कमोडका प्रबन्ध भी किया जाये, नहीं तो सब आदर सत्कार धूल में मिल जायेगा।

दूसरी श्रेणीके वे हैं जो अपने गंवार-पन से गृह-पति का नाकमें दम कर देते हैं। उनके लिये मेज पर भोजन लगाया गया तो हाथ धोकर कुर्सी लगानेके पहले ही गृह-स्वामी की प्रतीक्षा किये बिना ही हाथ धोकर मेज पर ही बैठकर भोजन करने लगते हैं। अब न तो उनको मेज पर से हटते बन पड़ता है और न उनके साथ मेज पर चढ़कर भोजन करने को दिल चाहता है। शौचादिके लिए स्नानागार में भेजा तो कमोड का चारों ओर से परीक्षण करके आ जायेंगे कि वहां तो कोई स्थान ऐसा नहीं है जहां शौचादिके लिये स्थान हो। उनके शयनका प्रबन्ध किया जाये तो पलंगके चारों ओर हजार पीक दान और हजारों थूक दान रख दीजिये। तब भी प्रातः उठकर देखिए तो कमरे का तमाम फर्श वा दीवार पान की पीक पिचकारियों से रंगी हुई मिलेंगी।

इनको कमरे का चार्ज देकर दफ्तर चले जाइये तो संध्या को कमरा इस प्रकार, खुला मिलेगा कि गद्दे पर कुर्सियों के बीच में हुक्का औंधा पड़ा होगा चिलम टुकड़ों के रूप में दिखाई देगी, कालीन राख और हुक्के के जल से पवित्र किया हुआ मिलेगा और मेहमान महोदय लापता होंगे। अब इनकी प्रतीक्षा हो रही। दासी आ कर भोजन के लिए आग्रह कर रही है, किन्तु भोजन कैसे किया जाये अतिथि महाशय तो गायब हैं, गृह-स्वामी बेचारे झूठे शिष्टाचार के ढोंग से दुखित, क्षुधा के कारण पेट पर हाथ रखे उनकी बाट में बैठा रहेगा। वह रात्रि के समय जब जी चाहेगा पधारेंगे और उनको इस प्रकार देर करने पर तनिक पश्चाताप न होगा, बल्कि उल्टा यह दोष देंगे कि स्वंय गृह-स्वामी इस आवारा गरदी में उनके साथ क्यों नहीं गये।

एक तीसरी श्रेणी उन अतिथियों की है जो अधिकतर गृह-स्वामीके यहां स्थाई रूपसे विराजमान होते हैं। उन्हें कई २ मास व्यतीत हो जाते हैं, परन्तु जानेका नाम नहीं लेते। गृह-पति थोड़े दिन अभ्यर्थना करनेके बाद उनके साथ वह बर्ताव आरम्भ कर देते हैं जो प्रतिदिन आने वालेके साथ होता है अर्थात् न तो उनके भोजन की प्रतीक्षा की जाती है और न कोई विशेषता उनके लिए होती है तथा न उनसे दिनमें पचास बार यह पूछा जाता है कि आपको कोई कष्ट तो नहीं है। किन्तु इस उदासीनताके होते हुए भी दूसरेके घरको अपना घर समझ कर रहते हैं। वे अपने विचारों द्वारा अपने हृदय में यह धारणा बांध लेते हैं कि मेरे कारण गृह-पतिको भी कोई कष्ट नही हैं।

किन्तु इसी तीसरी श्रेणी में कुछ महानुभाव ऐसे भी होते हैं जो एक अवधि तक अतिथि रह कर अपने को उस कुटुम्ब का एक सदस्य समझने लगते हैं। घर की दास दासियों, बच्चों तथा धर्मपत्नी पर इस प्रकार शासन आरम्भ कर देते हैं जैसे सब कुछ उन्हीं का है। भोजन में देर हुई तो तकाजा कर दिया। शाक में नमक तेज है तो अप्रसन्नता प्रकट कर दी, कोई ऐसी वस्तु बन गई जो आप को रुचिकर न हो तो उसके लिए आगे से न बनने का आर्डर दे दिया। अर्थात् वे इस प्रकार रहना आरम्भ कर देते हैं जैसे उनके बाप-दादों का घर हो और वे इसी घर में पैदा हुए हों।

मेहमान तो ऐसे अच्छे लगते हैं जो सूचना देने के पश्चात् घर पर आवें। हम मोटर या तांगा लेकर स्टेशन पर जायें उनका दिल खोल कर स्वागत करें एक दिन उन के आगमन के उपलक्ष्य में 'दावत' दें जिसमें हमारे मित्र भी सम्मिलित हों और वे मित्र भी इसी प्रकार हम सब को भोज दें जब तक ठहरें प्रीति भोज का तांता लगा रहे। इस के पश्चात् वे विदा हो जावें और विदाई के समय हमारे बच्चों को रुपये दें, हमारे नौकरों को इनाम दें। और हमें भी अपने यहां आने का निमन्त्रण देकर चले जावें अस्तु इन बातों से तो लोग हमें न जाने क्या समझेंगे। कोई हँसी भी समझेंगे परन्तु यह सत्य है कि मित्र ऐसे ही अच्छे लगते हैं जो मेहमान बनें और मेहमान ऐसे अच्छे लगते लगते हैं जो नगर के किसी विश्रान्ति-गृह में ठहरने के पश्चात् मिलने के लिए आ जाया करें या हमें सूचित कर के ही हमारे यहाँ आयें और एक आध दिन ठहर कर विदा हों। उनका जीवन भी ऐसा ही हो जैसा जीवन हम व्यतीत करते हैं। जो हमारे साथ मिल कर हमारे जैसा घरेलू व्यवहार कर सकें, यदि हम सँध्या के समय भोजन करते हैं तो वे भी उसी समय भोजन करने में आना कानी न करें और यदि हम रात्रि के नौ बजे भोजन करते हैं तो वे भी हमारे लिए यह कष्ट झेलने का प्रयत्न करें। तात्पर्य यह कि उन आ जाने से हमें अपने घर के आकाश को पृथ्वी और पृथ्वी को आकाश न करना पड़े।

कुछ शुभ-चिन्तक मेहमान भी होते हैं। उनका अतिथि होकर आना अनुचित नहीं प्रतीत होता, क्योंकि उन के लिए किसी प्रकार का आडम्बर नहीं करना पड़ता और वे रूखी सूखी को भी सुदामा के तण्डुल समझ कर प्रेम से अपनाते हैं। गृह-पति के कष्टों का उन्हें ध्यान रहता है— उन्हें पता रहता है कि हमें उनके लिए स्थान रिक्त करने में कितना कष्ट हुआ होगा और वे यहभी जानते हैं कि हमारे शीघ्र चले जाने से गृहस्वामी का बड़ा भारी उपकार होगा।

मेहमानों की जिन श्रेणियों का ऊपर उल्लेख हुआ है उन से अतिरिक्त एक और प्रकार के भी मेहमान होते हैं, जिनका स्मरण करते ही रोंगटे खड़े होजाते हैं, हृदय कांप उठता है, रक्त सूख जाता है और विचार-शक्ति लुप्त हो जाती है। ऐसे मेहमान का परिचय हम अपने यहां आए हुए एक मेहमान से ही देते हैं:—

दिन के दो बजे मैं अपने कार्यालय में बैठा काम कर रहा था। उस समय ये मेरे मित्र 'कहिए श्रीमन्! देखा हम भी आ ही पहुंचे।' कह कर सामने कुर्सी पर आ बैठे। हम भी अनुभवहीन थे, हमने उनके स्वागत के लिए छुट्टी ली और बिना सामान के उनको घर लेआये। पूछा सामान कहां है? तो उत्तर मिला सोचा था कि घर पर ही तो जा रहे हैं समान की क्या जरूरत है। उन्होंने स्नान किया और बोले—'भाई कपड़े तो रेल में बिल्कुल गन्दे हो जाते हैं, बनियान में से तो दुर्गन्ध मारती है। कोई दूसरी बनियान नहीं है? हम अच्छे होते तो कह देते कि धोबी के यहां गई हुई है, उन्हें भी कपड़े साथ न लाने के कष्टों का अनुभव हो जाता। पर हमने पत्नी से कहा और उसने सन्दूक से धोबी की हुई बनियान दे दी। धीरे धीरे और कपड़े भी मांगने शुरू किये — धोती ली सांयकाल घूमने के लिये कुरता पजामा लिए और हमारी घड़ी भी हाथ में बांध ली।

भोजन के लिये पूछा तो आपने कहा इस समय तो चाय परोंठा बनवादो शाम को खाना खायेंगे ही। हमने पत्नी को चूल्हा जलाने का आदेश दिया और उन्हें साथ ले दूध लेने बाजार चल दिये। उनसे कहा कि कमीज़ तो

पहिनलो तो बोले नहीं-नहीं,ठीक है ऐसे ही चलने दो,कौनसा हम बाजार में शादी कराने जा रहे हैं। बाजार पहुंच कर हमने दूध लिया और वे बोले दूध वाले को पैसे नहीं दिये हमने मूर्खता से कह दिया कि पैसा हम पहली दूसरी तारीखको तनखा आते ही देते हैं और सुनते ही वे मुस्करा दिये गरमीके दिन थे हमने सोचा कि बरफ भी लेते चलें। पान वाले की दुकान पर पहुंचे मैंने बरफ ली और महाशय जी ने भी चार पान लिये एक सिगरेट की डब्बी और माचिस भी ले ली और मुझ से बोले पैसे तो आपके पास होंगे ही । मैं तो खाली बनियान पहनकर ही आया हूं । पानवाले को पैसे दिये । चलते समय बोले चाय परोंठा खाना है एक मक्खन की टिकिया भी लेते चलते। हम ऐसे बुद्धू कि उधार ही ले ली।

घर पर आकर भोजन किया। हमने पत्नी से कहा तुम भोजन बनाओ और हम इन्हें घुमालायें। महाशय गली से बाहिर निकलते ही बोले—'ओ टांगे वाले इधर आ ! हमने कहा भाई ट्राम में चले चलेंगे, दो आने में पहुंच जायेंगे। शाम का समय है यह डेढ़ रुपये से कम नहीं लेगा। 'बोले यार क्या डेढ़ रुपये को बात है जरा शान से चलना चाहिये। आखिर जमींदार का बेटा हूं। लाचारी, मन मसोस कर हमने टांगा किया।

सिनेमा देखकर रात को १२ बजे घर। लौटे पत्नी भी परेशान हो गई और हम भो।

प्रातः काल उठते ही बोले- 'भइया चाय हो गई है क्या ?' हमने कहा हां हो गई है और फिर बोले-'यार तुम्हें तकलीफ तो होगी एक पोलसन बटर की टिकिया ले आते तो तबीयत ठीक हो जाती है। हमने कहा पोलसन बटर तो यहां मिलना मुश्किल है तो आपने फरमाया कि सिर में दर्द रहता है इसलिये डाक्टर ने कहा हुआ है कि चाय के साथ तर चीज खाया करो तुम्हें तकलीफ तो होगी, माफ करना थोड़ा सा बादाम का हलवा ही बनवालो। और हमें खून का घूंट पीकर हलवा तय्यार करवाना पड़ा।

जैसे तैसे भोजन कराया। भोजन करते ही महाशय बैठक में बिजली का पंखा चला कर लेट गये और बोले 'अच्छा तो आप आफिस से सीधे घर आइयेगा तब कहीं घूमने चलेंगे। मेरी पत्नी और बच्चे एक पड़ोसी के यहां जाकर दिन भर गरमी में मरते रहे और महाशय घर के मालिक बन कर आराम करने लगे।

चार दिन हमें नाकों चने चबाने पड़े । किसी तरह पांचवें दिन महाशय विदा हुए। दूध वाले से पता चला कि १५ रुपये का सामान खा गये है और पानवाले ने बताया की सान की सिगरटें हम से भी ले गये हैं। चलते समय किराया भी हमारी जेब से निकलवाया और भेजने के लिये कह गये।

दो तीन दिन बाद आपका पत्र आया जिसमें आपने लिखा कि—आपकी अतिथि सेवा के लिये धन्यवाद। मैं जल्दी ही पत्नी सहित फिर आने का प्रयत्न करूंगा। .

परमात्मा ऐसे मेहमानों को सद्बुद्धि प्रदान करें।

उचित तो यह है कि भारत में अतिथि-सत्कार तो रह जाय मेहमानगीरी खतम कर दी जाय।

चला जा !

तेरी पुकार सुनकर यदि कोई तेरे साथ न आये तब भी तू अकेला चला जा। तेरी बात कोई न सुने या न माने तब भी तू अपनी बात कहता चला जा। यदि तू जंगल में बिलकुल अकेला रह जाय और कांटों से जख्मी हो जाय तब भी अपने लहू लुहान पावों से चलता चला जा। यदि अन्धेरी रात्रि में तुझे कोई रोशनी न दिखाए तो अपनी पसली को जला कर उसकी रोशनी में आगे बढ़ता चला जा।

—श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर



श्री नेहरू जी चिरञ्जीवी हों !

कार्तिक शु० १४ सोमवार २००५ तदनुसार ता० १५ नवम्बर १९४८
को आपकी साठवीं वर्ष गांठ है।

राष्ट्राध्यक्ष ! आपकी कर्तव्य–निष्ठा ने राष्ट्र में नव जीवन का संचार किया है, आपकी नीति क्षमता से आज भारत स्वतन्त्र है—सुख के सुन्दर पथ की ओर अग्रसर है, आप जैसे पथिकृत् नेता पर भारत को गौरव है।

आपके ६० वें वर्षका मङ्गल–प्रभात अमरताका शुभ सन्देश लाया है। श्रीस्वाध्याय परिवार इस मङ्गल-प्रभातमें आपके शतवार्षिक नेतृत्वमें भारतकी सुख–सम्पन्नताकी कामना करता है।

आप चिरञ्जीवी हों ! आपके कृत्य मंगल मय हों ! आपके प्रयत्न सफल हों, भारत आपके नेतृत्व में सम्पन्न हो।

हमारा मार्ग

आज हमारा समाज अत्यन्त दुर्दशा में है। आत्मीयता, जाति-गौरव, व देशभक्ति की दशा दयनीय है। कोई भी व्यक्ति समाज के नियमों का उल्लंघन करने में तनिक भी संकोच नहीं करता। जिस प्रकार प्रत्येक अंग शरीर के साथ जुड़ा रहता है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को समाज के साथ मरण-जीवन की समस्याओं का महत्व समझना चाहिए। समाज के विरुद्ध कार्य करने का जो साहस आज पाया जाता है, वह भयंकर विभीषिका है। आज कोई इस बात की तो चिन्ता ही नहीं करता कि समाज के विरुद्ध आचरण से हम अपना ही विनाश कर रहे हैं, प्रत्युत क्षणिक लाभ के लिये समाज की सत्ता पैरों तले रौंदी जा रही है। रही कानून की बात सो छल-बल के आगे कानून स्वयं छलित हो जाता है इस प्रकार आज हमारा अन्तरात्मा पापी है और लोक व्यवहार स्वार्थ परायण स्वेच्छाचारी जाति तथा देश और समाज का विघातक। फिर भी हम चाहते हैं केवल कानून के जोर से ही हमारा कायाकल्प हो जाय। इस दशा को देखकर प्रत्येक व्यक्ति क्लेश अनुभव करता है और चाहता है इसका प्रतिकार और आज इसीलिये समाज-सुधार तथा देशोद्धार का कार्यक्रम देश के सामने है।

यदि हम विवेक से समीक्षा करें तो ज्ञात होता है कि किसी भी प्रतिक्रिया के तीन रूप हो सकते हैं—

१.—जिसका प्रतिकार करना हो उसे समूल नष्ट कर दिया जाय।

२.—प्रतिकार्य के रूप का ही परिवर्तन कर दिया जाय।

३.—उसके साथ संशोधन जोड़ दिया जाय।

यदि हम जनता की स्वार्थ-परायण भावना को बदलना चाहते हैं, अथवा सामाजिक कुरीतियों को बदलना चाहते हैं, तो इन्हीं तीन रूपों पर ध्यान देना होगा।

प्रथम उपायानुसार हम सारे समाज का नाश करने की सोचें। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति को नष्ट कर दिया जाय, वरन् जिस प्रकार एक मशीन के परस्पर सम्बन्धी अंगों का सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया जाता है, उसी प्रकार यदि समाज के सभी व्यक्तियों में परस्पर प्रेम और विश्वास नष्ट कर दिया जाय और जनता में परस्पर घृणा और भय का वातावरण उत्पन्न हो जाय तो इस प्रकार जाति उत्सन्न हो जाती है। इस प्रकार विशाल जन-समुदाय छोटे-छोटे संघटनों में और फिर दलों तथा छोटे छोटे टुकड़ों में बंट जाता है। यहां तक कि एक परिवार में भी एक मत नहीं रहता, जहां कि सभी के जीवनमरण का ध्येय और मार्ग भी एक ही होता है। यही समाज के उत्सादन की पराकाष्ठा है। इस प्रकार का उत्सन्न समाज संसार में तो क्या अपने घर में भी गौरव नहीं पा सकता।

उत्सन्न कुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम॥ गीता

आज सभी समाज सुधार की होड़ में लगे हैं। परन्तु बहुत से छद्म वेशधारी ऐसे हैं, जो स्पष्ट

शब्दों में उपरोक्त प्रकार से समाज के उत्सादन की घोषणा तो नहीं करते, परन्तु दिन-रात इसी प्रयत्न में लगे रहते हैं कि घर-घर में आदर्शों के बहाने फूट फलने फूलने के लिये अंकुरित हो। क्या देशवासी कुछ कर रहे हैं ? आज सतर्कता से सावधान और अन्तर्मुखी दृष्टि से आत्म-समीक्षाकी गम्भीर आवश्यकता है। ऐसे लोग चाहे वे किसी भी 'वाद' के नाम पर काम कर रहे हों हमारा उनसे यही नम्र निवेदन है कि मानवने सर्वदा सब दिशाओंमें पुराने अनुभवके आधार पर ही नया पग आगे बढ़ाया है। कोटि २ वर्षोंके मानव-समाजके अनुभवको तिलांजलि देकर अन्धकारमय अदृष्टके गर्तमें आत्मनिवेदन वही करेगा जिसको यह जीवन भारी हो गया हो और अपने अतीतमें कुछ न मिला हो। परन्तु प्रकृतिकी अनादि कालसे विहार-स्थली भारत-भूमिमें मार्ग-प्रकाशकी कमी नहीं है।

दूसरा उपाय है समाजको बदल दो ! अर्थात् समाजका जो अङ्ग जहाँ पर काम कर रहा है, उसको वहांसे हटा कर दूसरे स्थानमें नियुक्त कर दिया जाय। पुरानी रूढ़ियों और धर्ममर्यादाओंको बदल कर एक नया समाज स्थापित किया जाय। अन्यथा इस प्रकारके आमूलचूल परिवर्तनके बिना देशके भविष्यका सुधार नहीं हो सकता इत्यादि।

इस भावनासे जो आज एक नये समाजको जन्म दे रहे हैं। उनसे हम यही कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार निकट भूतमें देशके हित-सम्पादनके लिये कुछ महापुरुषोंने समाजको नवजीवन दान देनेका महान् बीड़ा उठाया और शक्तिशाली बनाना चाहा, जिसके फल स्वरूप आज हम देख रहे हैं कि कुछ और नये पन्थ खड़े हो कर हमारी एकताके परिपन्थी बने हैं, जिससे एक ही संस्कृति, देश, और धर्म होते हुए भी भेद-भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। इसी प्रकार सर्वोदयकी सुन्दर भावना भी कहीं नया प्रयोग (Experiment) सामने लाने पर एक नया सम्प्रदाय खड़ा न करदे। इस विचारको इतिहासकी शिक्षाके साथ गम्भीर परामर्शकी कसौटी पर परखनेकी आवश्यकता है।

तो क्या हमारी समस्याओंका कोई हल ही नहीं ? और हमें हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना चाहिये ?

हम पहले कह आये हैं कि समाजको नष्ट करने और बदलनेके अतिरिक्त उसका सुधार भी एक उपाय है। यही उपाय सामयिक प्रगतिका सर्वोत्तम साधन है, परन्तु सुधारके भी दो मार्ग हैं — एक तो दोष उत्पन्न करनेवाले नियमोंका उच्छेद या परिवर्तन और दूसरा समयानुसार संशोधन।

हम नहीं कह सकते कि इस द्वन्द्वज सृष्टिमें कौनसे तत्त्व केवल भलाईके एक ही रूपमें बने हैं, जिनमें दोषोंका लेश नहीं ?

भलाई बुराई सर्वत्र विद्यमान है। इसलिये भली भांति परख कर समयानुसार अभीष्ट प्रगतिके लिये, समाजमें उत्पन्न दोषों या बाधाओंका निवारण होना चाहिये; यदि संशोधनका प्रयोजन होतो इससे समाजके किसी वर्ग या दलमें उत्क्रांति या भय नहीं होना चाहिये, इस प्रकारके सुधारका सब ही स्वागत करेंगे। बड़े बड़े सिद्धान्तोंमें साधारण परिवर्तन व्यवहारमें असाधारण विप्लव फैला देते हैं। अतः व्यवहारमें जितना परिवर्तन आवश्यक हो सिद्धांतके

शिव--शक्ति

[श्री बलजिन्नाथ शास्त्री, एम. ए. एम. ओ. एल]

शैव शास्त्र अद्वैत-प्रधान शास्त्र है। यह शास्त्र समस्त शास्त्रों का मौलि है। जब तक न्याय, सांख्य, वेदान्त, व्याकरण बौद्धवाद आदि शास्त्र न पढ़े हों तब तक यह शस्त्र पूरी तरह समझ नहीं आता। इसी कारण आधुनिक कुछ-एक वेदान्ती इस शास्त्र को पढ़े बिना ही इसे द्वैत शास्त्र कह कर लोगों को इससे विमुख करते हैं। आज के वेदांती यह नहीं जानते कि श्री शङ्कराचार्य जी जैसे महान् आचार्य ने भी ब्रह्म को 'सर्वशक्ति' 'सर्वकर्तृ' 'सर्वज्ञम्' कहा है और गौड़पाद जी ने जहां—

"कल्पयत्यात्मनात्मान-मात्म देवःस्वमायया।

इस प्रकार से माया सहित ब्रह्म का वर्णन किया है और आचार्य बादरायणने भी "लोक वत्तु लीला कैवल्यम्" यह सूत्र वेदान्त-दर्शन में लिखा है। इससे ज्ञात होता है कि वेदांत के मुख्य आचार्यों ने भी मुक्त-कण्ठ से शक्ति को मान लिया है। परन्तु बहुत से पण्डितलोग उनके तात्पर्य को समझ नहीं पाते और कहते हैं कि प्रत्यभिज्ञा शास्त्र ने शिव और शक्ति दो पदार्थों को माना है, इसी कारण यह एक द्वैत शास्त्र है। शिव क्या है और शक्ति क्या है ? इसी विषय पर यह लेख लिखा जा रहा है।

शास्त्र कहते हैं—

> शक्तिश्च शक्तिमांश्चैव पदार्थद्वयमुच्यते।
> शक्तयोऽस्य जगत् कृत्स्नं शक्तिमांस्तु महेश्वरः॥

परमेश्वर अर्थात् शिव क्या वस्तु है यह तो आज तक कोई बता ही नहीं सका। शास्त्रों ने निर्देश मात्र किया है—आत्मा, स्पन्द, आनन्द आदि शब्दों द्वारा वे शिव का स्वरूप बताते हैं। परन्तु इससे भी वस्तु, पूर्णतासे स्पष्ट नहीं होती है। वस्तुतः आत्मा ही जानने-योग्य तत्त्व है, उससे दूसरा कोई जानने योग्य नहीं। इसलिये उसे कौन जाने और कैसे जाने ? जब किसी ने शिव को जाना ही नहीं तो कह कौन सके ? जानकर ही तो कहा जा सकता है। इसी कारण उपनिषदों में भी उसे

साथ उतना संशोधन जोड़ देना चाहिये। परन्तु सिद्धांतमें उलट फेरसे व्यवहारमें उथल-पुथल और गड़बड़ हो जाती है।

जिस प्रकार छोटे-छोटे स्रोत नदियों और नालोंमें और फिर समुद्रमें मिल जाते हैं, इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति पहले परिवार और फिर वर्ग दल आदिके द्वारा सारे देशके साथ सम्बद्ध रहना चाहिये। घर-घरमें तो मत-भेद हो और सारा देश या समाज एकतामें बद्ध हो—यह केवल वर्गीय या दलीय स्वार्थ-परायणताका माया-जाल है। क्रम-हीन संगठन हानि-कारक ही नहीं, किन्तु समाजके मर्ममें तीक्ष्ण भेद-नीतिका प्रहार करता है। सर्व-धर्म-समन्वय, समाज और देशका बल और जीवनका सौन्दर्य इसी क्रम-पूर्ण संगठन और समाजके नियमोंमें आवश्यकता और समयानुसार संशोधनसे ही प्राप्त हो सकता है।

यद्यपि यह कठिन कार्य है कि मनुष्यने जिस मार्गमें अपना जीवन बिताया हो उस पर उसका रङ्ग न चढ़े और वह उसी मार्गसे निरपेक्ष और तटस्थ बन जाय, तथापि मनुष्यता, दूरदर्शिता, उदारता और देश-प्रेमकी यही पुकार है।

अवाक् मनसगोचर कहा गया है। परमात्मा का स्वरूप बताने की शक्ति न रखते हुए भी अनुभवी महात्मा जन लोगों को समझाने के लिये कुछ कल्पित शब्दों द्वारा उसके स्वरूप का निरूपण करते हैं, जिससे जिज्ञासु को मार्ग मिल जाता है और वह भी उसी मार्ग से चलता हुआ परमेश्वर का साक्षात्कार प्राप्त कर सकता है। इसी कारण शास्त्र में समझाने के लिए कहा है कि जिसकी शक्ति का विकास यह सारा जगत् है उसीको शक्तिमान् अर्थात् 'शिव' कहते हैं और यह विकसित संसार और यह विकास सारा ही शक्ति रूप है।

हम स्वयं परमेश्वर रूप हैं, हमारे शरीर उसीकी शक्ति के रूप हैं, फिर भी हम उसे समझते नहीं। हम इतना अवश्य जानते हैं कि हम हैं, फिर भी हम यह नहीं समझ सकते कि हम क्या हैं? जिस प्रकार एक ही बिजली की शक्ति के लैम्प, हीटर, पंखा इन तीन प्रकार के यन्त्रों के सम्बन्ध से रूप भी तीन प्रकट होते हैं, परन्तु वस्तुतः बिजली की एक शक्ति तीनों रूपों में ओत-प्रोत है, तीन शक्तियां नहीं हैं, इसी प्रकार से परमेश्वर की एक ही शक्ति के अनन्त रूप हमें संसार में दिखाई दे रहे हैं। इसीलिए शास्त्र ने कहा है कि शक्तिमान् महेश्वर है और सारा जगत् उसकी शक्तियां हैं। 'शक्तियां' बहुवचन यहां शक्ति के भिन्न-भिन्न रूपों के अभिप्राय से कहा गया है। जैसे विद्युत्शक्ति उपाधियों के भेद से अनेक प्रकार से अनुभव में आती है, इसी प्रकार से एक ही शक्ति कार्यभेद से अनेक प्रकार से दीखती है। चित्त, आनन्द, इच्छा, ज्ञान, क्रिया, विद्या, माया, स्मृति, अपोहन, आदि अनेक शक्तियां एक ही परमेश्वरी शक्ति के अनेक प्रतिबिम्ब हैं।

शक्ति और शक्तिमान् भी दो चीजें नहीं। जैसे बिजली और उसकी दाहन प्रकाशन आदि शक्तियां भिन्न चीजें नहीं। बिजली ही बिजली की शक्ति है। जैसे अग्नि और उसकी दाहन, पाचन, प्रकाशन आदि शक्तियां उससे भिन्न नहीं। दाहन शक्ति या प्रकाशन शक्ति और अग्नि केवल शब्द ही दो हैं। वस्तु तो एक ही है। प्रकाशन शक्ति को ही अग्नि और अग्नि को ही प्रकाशन शक्ति कहते हैं। अग्नि तभी तक अग्नि है जब तक उसमें दाहन आदि शक्तियां हैं। जब कोई शक्ति उसमें न रहे तब उसी अग्नि-कण को हम कोयला कहते हैं। तब उसे अग्नि कोई नहीं कहता। अन्धेरे में हमें प्रकाशन-शक्ति की आवश्यकता हो तो आग ही जलाते हैं, क्योंकि आग ही वह शक्ति है। इसलिए शास्त्रों में कहा है कि "शक्तिशक्तिमतोरभेदः" अर्थात् शक्ति और शक्तिमान् में भेद कोई नहीं। इसी प्रकार से परमेश्वर और उसकी शक्ति में कोई भेद नहीं। जिस शक्ति से परमेश्वर एक होता हुआ भी अनेकरूपोंमें— समस्त ब्रह्माण्ड के रूपों में प्रकट होता है और ऐसा होता हुआ भी अपने एकत्व से च्युत नहीं होता, उसी पारमेश्वरी पराशक्ति और स्वयं परमेश्वर में कोई भेद नहीं। यह शक्ति ही परमेश्वर की परमेश्वरता है। यदि उसमें वह शक्ति न होती तो वह परमेश्वर ही नहीं होता। इसलिए शक्ति ही शिवकी शिवता है। शिव और शिवता दो शब्द हैं, अर्थ दोनों का एक ही है। शिव को ही कल्पना-भेद से शिवता या शक्ति कहते हैं। यदि परमेश्वर अपने वास्तविक एक रूप में ही सदा रहता तब संसार की उत्पत्ति ही नहीं होती। एक ही होने पर वह किस का ईश्वर होता? या होता या होता ही नहीं, इस बात का निर्णय ही कैसे होता और कौन करता? कल्पना-भेद से ही एक ही परमेश्वर के दो नाम हैं शिव और शक्ति।

यह तो बता चुके हैं कि परमेश्वरका कल्पित रूप सारा संसार है। जैसे एक मदारी अपनी दृढ़ कल्पना-

शक्तिसे ही ऐसे पदार्थों को प्रकट करता है जो वस्तुतः उस रूपमें होते ही नहीं। जैसे स्वप्नमें या खयाली पुलाव पकाते समय एक साधारण मनुष्य भी अपनी ही कल्पना-शक्तिसे अनेक वस्तुओंको अपने ही भीतर प्रकट करता है, इसी प्रकारसे परमेश्वर भी अपनी ही कल्पनासे अपने ही भीतर विचित्र जगत् को प्रकट करता है और फिर अपने ही भीतर उसे विलीन करता है। इस प्रकारसे जगत्की सृष्टि, स्थिति, संहार और इस जगत्में अपने अद्वैत रूपको छिपाना तथा अनुग्रह द्वारा जीवोंको आत्म-ज्ञान देना यह पांच परमेश्वर-कर्म हैं। इन पांच कृत्योंका विकास करनेवाली ताकतको ही हम 'शक्ति' कहते हैं। वह शक्ति ही परमेश्वरकी परमेश्वरता है। यही उसकी शिवता है। इस समस्त जगत्की कल्पनाके विकासके क्रममें अनेक सोपान हैं। एक-एक सोपानको हम एक-एक तत्त्व कहते हैं। कल्पना द्वारा परमेश्वर अपने पार-मेश्वर रूपसे पृथ्वी रूप तक उतरता है और फिर पृथ्वी रूपसे ऊपर चढ़ता हुआ अपने पारमेश्वर रूपको पहचान लेता है। इस अवरोहण और आरोहणके क्रममें मुख्य छत्तीस सोपान हैं। इनको ही हम छत्तीस तत्त्व कहते हैं। उतरनेके क्रममें पहले दो सोपानोंका ही नाम शिव और शक्ति हैं। पूर्ण अद्वैत रूपमें हम परमेश्वरको परम शिव कहते हैं। इसी परम शिव तत्त्वको हम चैतन्य भी कहते हैं। चैतन्य विलास-मय है, समस्त शक्तियोंका एक पिण्ड है। इसका स्वभाव पूर्ण अहं विमर्श माना गया है। अपनी पूर्णताका विमर्श ही आनन्द कहलाता है। संसारमें भी जितनी-जितनी विशाल पूर्णताकी प्राप्ति होती है उतना-उतना आनन्दका अधिक-अधिक सत्ताक्षात्कार होता जाता है। इस पूर्ण अहं-विमर्शकी अवस्थाको ही हम शिव कहते हैं। इस अवस्थामें सारा जगत् आत्मरूपमें ही चमकता है और पूर्ण आत्मरूपमें जगद्रूप तो इस अवस्थामें सर्वथा सुषुप्त रहता है। अब यदि परमेश्वर इसी रूपमें सदा रहे तो जगत् प्रकट ही कैसे हो। यदि केवल शिव ही शिव हो तब एक ही तत्त्व होगा। एक ही तत्त्वके होने पर ईश्वर कौन होगा और किसका होगा, होगा भी या न होगा यह सोचे ही कौन ? इस तरह परमेश्वरकी परमेश्वरता वन्ध्यापुत्र के तुल्य होगी। या इसके भी तुल्य नहीं होगी। क्योंकि इसकी शब्द द्वारा कल्पना तो होती ही है। परमे-श्वरता की तो कल्पना ही कौन करे ? जब कल्पना करने वाला कोई हो ही नहीं। परन्तु परमेश्वर में परमेश्वरता है, इसी कारण विलास अर्थात् लीला इसका स्वभाव है। अपने विलास ही से वह अपनी कल्पना द्वारा अपने ही आप को छत्तीस तत्वों के रूप में प्रकट करता रहता है। जगत्का उल्लास क्रमसे ही होता है। पूर्ण अहँ-विमर्श दशा का ही नाम 'शिव' है यह कह चुके हैं। इस अभेद रूप अहँ में ही भेद रूप इदं अर्थात् जगत् की कल्पना होती है परन्तु इद रूप की कल्पना भी क्रम से होती है। इस कारण पूर्ण अभेद रूप और पूर्ण भेद रूप के मध्य में भेदाभेद की दशा वर्तमान है। भेद-रूप दशा को हम 'माया' कहते हैं। और भेदाभेद दशा को विद्या या महामाया। इस महामाया दशा में अहं-विमर्श के साथ इदं-विमर्श भी होता है। अहमिदं यह उस विमर्श का स्वरूप है। अह और इदं में समानाधिकरण्य है, इसलिए अभेद है। परन्तु इदं का विमर्श होता है इसलिए भेदका भी मिश्रण है। पूर्ण अभेद की हानि है। इस भेदाभेद दशा में उल्लास से पहले तक चञ्चलता सी रहती है। जैसे निश्चल समुद्र में तरङ्ग के उठने से पहले एक अपूर्व हलचल हुआ करती है जिसे उस तरङ्ग का पूर्व रूप कह सकते हैं, उसी प्रकार से भेदाभेद दशा के उल्लास की पूर्वदशा का ही नाम 'शक्ति' है। भेदाभेद दशा के उल्लास की इच्छा भी इसे कहते हैं। इच्छाशक्ति भी इसी का नाम है जैसे आनन्द शक्ति शिव दशा को और चित् शक्ति परमेश्वर दशा को कहते हैं। यह तो उपनिषद् भी कहते हैं कि परमेश्वर अपनी शक्ति से अपने में ही जगत् का आभास करता है। इस बात को वेदान्त के पहले तीन आचार्यों ने भी माना है। परन्तु इस कल्पना के क्रम का सविस्तर निरूपण उन्होंने ने नहीं किया। यह निरूपण आगे चल कर शैव-शास्त्र के तीन आचार्यों ने किया — वे हैं श्री सोमानन्दनाथ, आचार्य उत्पलदेव, और आचार्य अभिनव गुप्तपाद। ये सभी अद्वैत शैव शास्त्र के आचार्य हैं। आचार्य अभिनव गुप्त स्पष्ट शब्दों में कहते भी हैं—

तदद्वैतं वन्दे परमशिवशक्त्यात्म निखिलम्॥

श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी



मार्ग शीर्ष शुक्ला ३ शुक्रवार तदनुसार तारीख ३ दिसम्बर १६४८ को आपकी चौसठवों वर्ष गांठ है।

अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः । यजु० ७।१०

हमारी प्रत्येक वाणी आशीर्वाद हो ! हमारा प्रत्येक आशीर्वाद सत्य–सफल हो ! श्रीस्वाध्याय परिवार इस ऋषि-वाणी से आपकी मंगल–कामना करता है। आपके सम्पन्न सफल और ओजस्वी नेतृत्व में भारतीय जनता ने अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया है–स्वतन्त्रताके मङ्गलमय दर्शन किये हैं। आपकी अध्यक्षतामें सम्पादित नव–विधान भारतके लिये दैवी सन्देश हो। हम आपके जीवनके लिये शत-शत शुभ वर्षोंका आवाहन करते हैं। और—

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम् । अश्विनोर्भैषज्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसा याभिषिञ्चमि ।

इन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ यजु २०।४

इस वेद वाक्य द्वारा हम राष्ट्र के तेज ओज बल यश और श्रीके लिये आपको राष्ट्रकी अध्यक्षताके लिये अभिषिक्त करने की कामना करते हैं।

पँचाँग-समस्या

[ले:--श्री पं० चन्द्रशेखर जी शुक्ल वैद्य, सिद्धान्तविनोद]

पञ्चाङ्गों में कहाँ किस प्रकार की गड़बड़ है और उसकी कैसी लीपा-पोती हो रहीहै, उसके विषयमें मैं यहां कुछ ऐसी विशेष बातों का वर्णन करूँगा जो काल्पनिक तथा विवाद-ग्रस्त नहीं हैं।

आकर्षण, विकर्षण, अक्ष-विचलन प्रभृति शक्तियों तथा गतियोंके कारण गतिशील ज्योतिष्कोंका गति-मान तथा स्थान कुछ न कुछ बदलता रहता है। अधिक काल से वह मान क्रमशः पुंजीभूत होकर वास्तविक संस्थानमें कुछ भिन्नता अथवा गड़बड़ पैदा कर देता है। इसीलिए समय-समय पर वेध द्वारा उक्त गड़बड़के शोध करनेकी आवश्यकता पड़ती है।

हमारे पूर्वज तथा ज्योतिष-शास्त्र-प्रवर्त्तक वशिष्ठादि ऋषि स्पष्ट शब्दोंमें कह गये हैं कि जब-जब गणित और वेधमें अन्तर देख पड़े तब-तब वेधोपलब्ध भिन्नताको बीज-रूप ग्रहण कर गणितागत मान का संशोधन करना चाहिए और उसी संशोधित प्रकारसे विशुद्ध ग्रह-संस्थान तथा तिथ्यादि बनाने चाहिएं।

भारतकी अवनतिके साथ-साथ ज्योतिष का भी पतन होने लगा। देशमें वेध-कार्य्यके लिए जो ५ मान-मन्दिर वा वेधालय थे, (जयपुरको छोड़कर) संस्काराभावसे नष्ट-भ्रष्ट हो गये। साथ ही साथ वेध-क्रिया-कुशल पण्डितों का भी अभाव होता गया। परिणाम यह हुआ कि पुराने मानसे बने ज्योतिषके करण-ग्रन्थों के आधार पर भांति-भांतिके पञ्चाङ्ग बनने लगे। जिसके पास जो सारिणियां थीं उन्हींके द्वारा लोग अपना-अपना काम करते रहे। इधर मुद्रा यन्त्रके सहारे पञ्चाङ्गों की संख्या भी बढ़ गई। फलतः एक ही स्थान-मानके बने पञ्चाङ्गोंका ग्रह-संस्थान तथा तिथ्यादि-मान एक-सा न रह गया। लोग पृथक्-पृथक् अपना-अपना मत और राग अलापने लगे। जातीय राजसत्ताके अभावसे सभी बातों में निरङ्कुशता आ गई। तब कौन मान शुद्ध है और कौन अशुद्ध है, इसकी छान-बीन ही कौन करे? अतः अब यह विकट समस्या उपस्थित है कि किस पञ्चाङ्ग पर दृढ़ विश्वास करें।

देशमें बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं तथा धनिकों की कमी नहीं है, परन्तु ऐसे आवश्यकीय अभाव की पूर्तिके लिए किसी का ध्यान नहीं जाता। स्वनामधन्य स्वर्गीय पूज्य मालवीयजी 'हिन्दू-विश्व विद्यालय'के संरक्षणमें एक वेधोपयोगी मानमन्दिर बनवानेके लिए कई वर्षोंसे धन की आवश्यकता दिखाकर चन्दा मांग रहे थे, परन्तु अब तक किसी का ध्यान उधर नहीं गया। इससे अधिक दुःखकी बात और क्या हो सकती है? उधर पाश्चात्य देशों को देखिए — ग्रीनिचका मानमन्दिर प्रायः सवा दो अरब रुपये की लागत का है। अमरीकाके विलसन पर्वत-शृङ्गपर जो मानमन्दिर बना है उसमें एक प्रकाण्ड दूरबीन १३ करोड़ की लागत की सर्व साधारणके उपयोग के लिए स्थापित है। अस्तु, अब हम यहां उन भिन्नताओं तथा भूलों की चर्चा करेंगे जो वेधोपलब्ध तथा प्रत्यक्ष हैं।

(१) **सूर्य की परम क्रान्ति**—सूर्य-सिद्धान्तमें परम क्रान्ति २४ (जिनांश) मान ली गई है। इसकी गति होने पर भी कदाचित् अति मन्थर होनेके कारण स्थिर मानी गई होगी। महाराज जयसिंहके समयमें दैवज्ञ जगन्नाथने जब 'सिद्धान्त सम्राट्' तथा 'सम्राट्-यन्त्र, की रचना की थी, तत्कालीन परम क्रान्ति २३°।२८ थी, जो 'सिद्धांतसम्राट' तथा 'सिद्धान्त यन्त्र' में व्यक्त है। आजकल वेधोपलब्ध परम क्रान्ति २३°।२६' ४८ के लगभग है, जो समस्त पाश्चात्य पञ्चाङ्गोंमें स्पष्ट लिखी रहती है। इसके आधार से ही लङ्कोदय तथा स्थानीय राश्युदय मान बनता है। प्राचीन सिद्धांतों में स्थिर माने जानेके कारण

लङ्कोदय मान भी स्थिर माना गया है, जिस कारण आजकल मानमें अन्तर पड़ गया है। पाठकोंके ज्ञानार्थ २३'।२७' परम क्रान्तिके मानके गणित से लङ्कोदय मानमें जो अन्तर हो गया है, यहां प्रकाशित किया जाता है। यह अन्तर भविष्यमें क्रमशः बढ़ता ही जायगा।

प्राचीन			नवीन (वेधोपलब्ध)		
राशि	पल	असु०	पल	असु०	भिन्नता
मेष, कन्या, तुला, मीन,	२७८	१६६८	२७६।१०	१६७५	७ असु अधिक,
वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ,	२९९	१७९४	२९९	१७९४	तुल्य।
मिथुन, कर्क, धनु, मकर,	३२३	१९३८	३२१।५०	१९३१	७ असु कम।

उपर्युक्त गणना से स्पष्ट है कि परम क्रान्तिके घटने के साथ-साथ उक्त भिन्नता भी बढ़ती जायगी। यदि इसका संशोधन न किया जायगा तो भावादि साधनमें अवश्य गड़बड़ रहेगी।

(२) सृष्ट्यादि वा स्थिर मेषारम्भ विन्दु—सृष्ट्यारम्भ कालमें जहां से ग्रहों की चाल आरम्भ हुई है, उस विन्दु का नाम आदि विन्दु है। उसे भगणारम्भ स्थान भी कहते हैं। यह विन्दु नक्षत्र-चक्र में रेवत्यन्त वा अश्विन्यारम्भ स्थान में है और स्थिर है। दूसरा सायन आदि विन्दु भी है। इसके दो भेद हैं—एक वासन्तीय सम्पात दूसरा शारदीय सम्पात। क्रान्ति-वृत्त (रविमार्ग) का नाड़ीवृत्त (विषुववृत्त) के साथ दो स्थानों में सम्पात हुआ है। उनमें वासन्ती सम्पात विन्दु है और शारदीय विराम है।

सभी ग्रहों की कक्षाओंके पात पृथक् पृथक् हैं, सबों की गति भी वक्र अर्थात् पश्चिमाभिमुखी है। प्रत्यक्ष रूपसे क्रान्तिवृत्त का पात वही कहा गया है। वास्तव में यह पात है। सब ग्रहों की कक्षाओं का सम्पात क्रान्ति-वृत्त पर और क्रान्तिवृत्त का सम्पात नाड़ी-वृत्त (विषुववृत्त) पर होता है। इसी का दूसरा नाम 'अयनविन्दु' है और सृष्ट्यारम्भ आदि विन्दु से पश्चिमाभिमुखी गत्यन्तर का नाम 'अयनांश' है। वास्तव में यही प्रधान विवाद-ग्रस्त विषय है।

इस अयनांशके दो पक्ष हैं—एक रैवत, दूसरा चैत्र रेवत्यन्त वा अश्विन्यारम्भ स्थान पर कोई स्पष्ट योगतारा नहीं है और चित्रा नक्षत्र का योगतारा षड्भान्तर (वृत्तार्द्ध) पर है। पाश्चात्य गणितज्ञों का मत है कि जिटापिसियम नाम का तारक अश्विन्यारम्भ पर है, परन्तु इसकी पुष्टि न होनेके कारण बात सर्वसम्मत नहीं है।

चित्रा का योगतारा (स्पाइका) के वृत्तार्द्ध में रहने का कारण प्रत्यक्ष है। कोई-कोई उसका संस्थान ५।२९।५९।५०। मानते हैं। उस हिसाब से भी यदि अन्तर माना जाय तो वह १० विकलासे अधिक नहीं है, अतः उपेक्षणीय है। पूनाके प्रसिद्ध गणितज्ञ स्वर्गीय बापू वेंकटेश केतकर ने अपने 'ज्योतिर्गणित' में तथा 'केतकीपञ्चाङ्ग' में इसी चैत्रपक्षीय अयनांश को ग्रहण किया है।

सम्वत् १९७५ के भाद्रमास में कलकत्ता में एक 'पञ्चाङ्ग संशोधन सभा' की बैठक हुई थी। उसमें वहां के सभी प्रसिद्ध पंडित आमन्त्रित हुए थे। उसमें भी चित्रा नक्षत्र से (कदम्बसूत्रीय स्पष्ट क्रम से) १८०° अंश दूरी पर आदि विन्दु के ग्रहण करने की बात सर्व-सम्मति से स्वीकृत की गई थी और दृश्य पञ्चाङ्ग (विशुद्ध सिद्धान्तपञ्जिका) उसी क्रमसे बनता है। इसके सिवा प्राचीन आदिविन्दु निर्णय की और प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसलिए सर्वसम्मति से इसी को आदि-विन्दु मानना युक्ति-युक्त और कार्य्योपयोगी होगा।

(३) अयनांश—ऊपर अयनांश का उल्लेख हुआ है। गणित का विषय होने पर भी सम्प्रति भारत-वर्ष में चार प्रकार के अयनांश चल रहे हैं। प्रथम सूर्यसिद्धान्तीय दूसरा ग्रहलाघवीय, तीसरा गणितागत

तथा सायन सूर्य का अन्तर और चौथा चैत्रपक्षीय। विक्रमीय संवत् २००० के प्रारम्भ काल में सूर्यसिद्धान्तीय अयनांश २१°।३६।३३ ग्रहलाघवीय २३°।४०।० सायन और गणितागत सूर्य का अन्तर २२°।५८।० और चैत्रपक्षीय अयनांश २३°।३।८ है।

अयनांश के शुद्धाशुद्ध की परीक्षा कीजिए। निरयन आदि-विन्दु से अयनांश जितना पीछे होगा उतने अंशादि पहले सायन मेष-संक्रमण और सूर्यक्रान्ति शून्य अंश शून्य कला होगी। यदि सूर्यसिद्धान्तीय अयनांश ठीक है तो सौर मीन के आठवें अंश पर यदि ग्रहलाघवीय ठीक है तो छठे अंश पर, अन्यथा मीन के ७वें अंश पर सायन रवि का मेष-संक्रमण और शून्यक्रान्ति होनी चाहिए। कोई भी पाश्चात्य पञ्चाङ्ग तथा भारतीय दृश्य पंचाङ्ग खोलकर देखा जाय तो २१ मार्च का निरयन मीन के ७वें अंश पर मिलेगा।

अतः छठे और आठवें अंशवाला भाव अशुद्ध है। अयनांश की शुद्ध वार्षिक गति ५०।२६ है। सुधी जनों को चाहिए कि यावतीय निरयन गणना इसी प्रकार से कर प्रत्यक्ष फल को उपलब्ध करें। सूर्यसिद्धान्त में वार्षिक गति ५४ विकला और ग्रहलाघव में ६० विकला कही गई है, जो प्रत्यक्ष नहीं है।

(४) निरयन सौर वर्षमान—सूर्यसिद्धान्त में वर्षमान ३६५।१५।३१।३०।२४ अनुपल (३६५·२५८७५-६५) कहा गया है। सम्प्रति वेधोपलब्ध निरयन वर्षमान ३६५।१५।२२।५६·८७ होता है, जो प्राचीन वर्षमान से ८॥ पलसे कुछ अधिक छोटा है। सम्भव है, वर्त्तमान सूर्य-सिद्धान्तके निर्माण-काल में वही रहा हो अथवा वेध की स्थूलताके कारण इतनी सूक्ष्मता पकड़में न आई हो।

यहां प्रश्न उठता है कि यदि वर्त्तमान वर्षमान वास्तव में ८॥ पलके लगभग छोटा है तो सृष्टिके करीब २ अरब वर्ष बीतने पर सूर्य्यके स्थानमें कई राशियोंका अन्तर क्यों न होगया! उत्तरमें निवेदन है कि अयनांश की यथार्थ वार्षिक गति जब ५०°२६ और प्राचीन वर्षमानसे नवीन वर्षमानका अन्तर ८।३७°३८ के करीब है तब दोनोंका मिलान करने पर पूर्त्ति हो जाती है। अर्थात् उतनी कलाओं में सूर्य्यकी गति प्रायः उतनी ही विकला होती है। इस लिए गड़बड़ नहीं होती।

(५) अक्षाँश-भेदसे राश्युदय और लग्नसारिणी—हमारे यहां राशिमान निकालने की दो विधियां हैं—एक पलभा से, दूसरी रेखागणितके सहारे। पलभाके सहारे जो गणना होती है यह स्थूल है। आठ अङ्गुल तक पलभा कार्य्योपयोगी रहती है, इसके बाद अन्तर पड़ने लगता है। परन्तु हमारा देश आठ अङ्गुल के भीतर ही है, इस लिए गड़बड़ नहीं होती। विशेषतः वह सरल रीति है, इसमें गोलीय ज्ञानकी आवश्यकता नहीं पड़ती, परन्तु सूक्ष्म अंशात्मक मान ठीक नहीं हो सकता। हमारे देशमें श्रम-लाघवार्थ केवल ३ राशियोंका ही चर साधन किया जाता है, प्रत्येक अंशका नहीं। चापीय नियमानुसार भूल होती है। एकसे लेकर ९०° अंश तकका पृथक्-पृथक् चर-साधन करना चाहिये, क्योंकि किसी भी राशिके प्रथमांशका जो चरान्तर काल (पलादि) होगा वह दूसरे अंशके लिये तुल्य रूपसे नहीं। उसकी वृद्धि चापीय मानसे होगी; परन्तु ऐसा चर-साधन गोलविद् जन ही कर सकेंगे; ग्रहलाघवीय अथवा करण-ग्रन्थोंके आधारसे पञ्चाङ्ग बनाना सीखनेवाले नहीं कर सकते।

दूसरी बात लग्नसारिणी सायन होनी आवश्यक है, क्योंकि अयनांश जब निरन्तर बदल रहा है तब एक बार की बनी सारिणी सदा काम नहीं दे सकती। सायन होने पर तात्कालिक अयनांश घटाने से ही काम होगा। कुछ पञ्चाङ्गोंमें अब यही विधि बरती जाती है।

(६) विशुद्ध ग्रह-संस्थान वा ग्रहस्पष्ट—

पञ्चाङ्गों में विशुद्ध ग्रहस्पष्ट ही सारी बातोंका मूल अथवा मेरु-दण्ड है। इसके बिना पञ्चाङ्गोंके गणितका सारा काम ही व्यर्थ है, परन्तु पूर्वकथित कारणवश सिद्धान्तरीत्या गणित-ग्रहसंस्थानों में अन्तर पड़ता है। इसीलिए करण-ग्रन्थोंमें बीज-संस्कार देने का विधान रहता है, जैसे ग्रह-लाघव, मकरन्द प्रभृतिमें है। ग्रहलाघवमें मन्दोच्चोंका चालन नहीं है, अतः स्थूलता रहती है। मकरन्दाचार्य्य खुद ही लिख गये हैं कि "वक्रादिकं स्थूलमिदं मयोक्तम्, सुखा-

र्थमेवेति न तद् यथार्थम् ।''

सूर्य-सिद्धान्तमें प्रत्यक्ष रूपसे बीज कर्म नहीं कहा गया है। अतः सूर्य सिद्धान्तसे बने हिन्दू-विश्वविद्यालयके विश्व-पंचांगमें ग्रहोंमें बीज-संस्कार न रहने के कारण गुरु और शनिके स्थानमें करीब ५ं और ३ं अंशका अन्तर रहता है। किसी भी प्राचीन मानके बने पंचाङ्गोंके साथ मेल नहीं होता। सायन स्पष्ट गुरु और सायन स्पष्ट शनिमें अयनांश घटाने पर भी मेल नहीं खाता। परन्तु आश्चर्य यह है कि गुरु-शुक्रका उदयास्त-काल स्वर्गीय बापूदेव शास्त्रीके दृश्य पंचाङ्गके साथ मेल किए रहता है उधर ग्रहस्थान कुछ और ही बताता है, स्थिति कुछ और ही होती है।

यद्यपि सूर्य-सिद्धान्तमें आदेश है कि ''नक्षत्रग्रहयोगेषु ग्रहास्तोदयसाधने।'' इत्यादि तो भी इसका मतलब यह नहीं है कि सिद्धान्तोक्त नियम छोड़ कर गुप्त रूपसे दूसरी क्रिया की जाय। सिद्धान्त-कथित नियम ही बरता जाना चाहिये। यदि उस नियममें भूल आती हो अथवा प्रत्यक्ष मेल न खाता हो तो निस्सङ्कोच भूल होने की बात मान लेनी चाहिये।

ज्योतिष-शास्त्र प्रवर्त्तक वशिष्ठादि ऋषियोंके निर्देशानुसार ही कालोपयोगी बीजसंस्कार देकर विशुद्ध अथवा वेधोपलब्ध ही ग्रह बनाना चाहिये, क्योंकि ज्योतिष-शास्त्र प्रवर्त्तक ऋषियोंकी आज्ञाको परवर्त्ती कालके कमलाकर आदि आचार्यगण रद्द नहीं कर सकते। उन लोगोंमें उतनी योग्यता अथवा अध्यात्म-ज्ञान नहीं था। यह तो श्रमलाघवार्थ पण्डितोंका बहाना मात्र समझना चाहिए।

सिद्धान्त शिरोमणि, केशवीजातक, होरावल्लभ प्रभृति ग्रन्थोंमें स्पष्ट शब्दोंमें प्रत्यक्ष जातक-फलोपलब्धिके लिए दृश्य गणित लेने की बात ही कही गई है।

(७) **पञ्चांग वा तिथि-पत्र**—वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण—ये पाँच अङ्ग जिसमें रहते हैं उसीका नाम पँचाङ्ग वा तिथिपत्र है। वैदिक कालसे ही यज्ञादि कर्म साधनके लिए पंचाङ्गोंकी गणना होती थी, जो 'सुपर्ण चिति' आदि नामों से प्रसिद्ध थी। इसके इष्टिका-द्वारा (ईंटोंके द्वारा) निर्मित होने की बात पाई जाती है।

वेदाङ्ग-ज्योतिष (लगध) के कालमें भी नक्षत्रोंके आधारसे यज्ञादिका विधान मिलता है, युगमान भी पांच वर्षका माना जाता था। इन बातों से स्पष्ट सिद्ध है कि अति प्राचीन कालसे ही भारतवर्षमें धार्मिक व्यवस्थाके पालन एवं साधनके लिये पंचाङ्ग बनते थे। पौराणिक कालमें इसका प्रचार क्रमशः बढ़ता गया और ज्योतिष-शास्त्र सिद्धान्त, संहिता और होरा इन तीन खण्डोंमें विभाजित किया गया। विक्रमादित्यके राज्यकालमें वराहमिहिराचार्यने मार्जित रूपसे उसे श्रृङ्खलित किया। जो सिद्धान्त विच्छिन्न अवस्थामें थे उन सबोंको एकत्र कर 'पञ्चसिद्धान्तिका' के नामसे उनका प्रचार किया। फलित-विषयका क्रमविकास भी तभीसे हुआ।

निरपेक्ष रूपसे विचार करनेपर स्पष्ट सिद्ध होता है कि सर्वप्रथम धर्म्म-कार्य्य-साधनके लिए ही पञ्चाङ्गोंकी उपयोगिता थी। देश और व्यक्ति विशेषके शुभाशुभ-निर्णयके लिए पश्चात् व्यवस्था हुई। स्पष्ट चन्द्र-सूर्य और उनकी गतिके द्वारा तिथि नक्षत्रादि बनते हैं। पृथक्-पृथक् मान-भेद, पूर्वाह्ण पराह्ण-भेद, वृद्धि और क्षय भेदसे स्मृतियोंमें भिन्न-भिन्न व्यवस्थायें कही गई हैं। एकादशी आदिके व्रतादिकोंके लिए भिन्न-भिन्न व्यवस्थायें पाई जाती हैं। ह्रास-वृद्धिका मान भी बाण-वृद्धि रस-क्षयके मानसे वर्णित है। और इन विषयोंकी गणना सिद्धान्तोंमें कुछ स्थूल रूपसे बताई गई है।

युति, ग्रहण, श्रृङ्गोन्नति, उदयास्त प्रभृति सूक्ष्म विषयोंके साधनके लिए कुछ विशेष-विशेष संस्कारोंका वर्णन आया है, क्योंकि स्थूल गणितसे वे सब दृश्य घटनायें यथार्थ सिद्ध नहीं होतीं।

इसके पश्चात् पाश्चात्य विज्ञानके क्रम-विकासके साथ ही साथ नित्य नूतन यन्त्रादिकोंका आविष्कार होता गया और सूक्ष्म वेध-क्रियाके सहारे अनेक-नवीन बातोंकी खोज और परिज्ञान हुआ, यहां तक कि चन्द्रमाकी विलक्षण गतिका भी पता चल गया, जिसका प्राचीन ग्रन्थोंमें कुछ भी वर्णन नहीं पाया जाता।

आधुनिक विज्ञान-सम्मत सूक्ष्म वेधके प्रभावसे और भी अनेक नवीन बातें तथा संस्कारोंकी उपयोगिता सिद्ध हुई है। तदनुसार बाण-वृद्धि रस-क्षयकी जगह सप्त-वृद्धि

अथवा अष्ट-वृद्धि दश-क्षय होते देखा गया है। कुछ पञ्चांग उसी नियमसे बनने भी लगे। पाश्चात्य खोजोंके आधारसे बननेके कारण और प्राचीन सिद्धान्तीय नियमसे कुछ भिन्न देखकर देशकी धार्मिक जनताने ऐसे पंचांगोंको सन्दिग्ध दृष्टिसे देखा और उन्हें ग्रहण नहीं किया! सब पहलुओंकी तरफ ध्यान देकर यदि विचार किया जाय तो समस्या कुछ जटिल अवश्य है, परन्तु वह हल नहीं हो सकती, ऐसी बात नहीं है, यदि अपने यहां उपयुक्त वेधोपयोगी मान-भवन बनवाया जाय, जैसा कि पूज्य मालवीय जी चाहते थे और अपने ढङ्गसे अपने जनोंके द्वारा वेध-क्रिया-साधन किया जाय तो पूर्वोक्त कलङ्क-कालिमा मिटाई जा सकती है।

मेरी समझमें गणितका विषय कोई ऐसी चीज नहीं है कि व्यक्ति विशेषके कर-स्पर्शसे कलुषित हो जाती हो। मयासुर भी तो असुर ही था, जिसको सूर्यांश-सम्भूत पुरुषने उपदेश किया था। महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी सूर्य-सिद्धान्तकी अपनी सुधावर्षिणी टीकाकी भूमिकामें स्पष्ट लिख गये हैं कि यह सूर्यसिद्धान्त वराहोक्त सूर्यसिद्धान्त नहीं है, यह मिस्र देशका बना है, जो सम्पूर्ण पाठशालाओंमें पढ़ाया जाता है। क्या यह मिस्रीय होने के कारण कलुषित नहीं है?

फिर यवनाचार्य ही कौन थे जिनका बनाया 'यवन-जातक' मुनि-प्रणीत ग्रन्थोंके सदृश आदृत है? अतः सभी आविष्कारों और खोजोंको आदरकी दृष्टिसे देखना और समयानुसार उनसे लाभ उठाना बुद्धिमानी और दूरदर्शिता का काम है, क्योंकि—भवन्ति विशतमाः क्रमशो जनाः।

यदि धार्मिक जनता इन सब युक्तिवादोंसे सन्तोष न करे तो जब तक सर्वसम्मतिसे कोई हल न निकले तब तक धार्मिक कार्योंके लिए गणितागत प्राचीन मानाधारसे ही स्थूल तिथ्यादि बनें, जिनका मान स्मृतियोंके अनुसार ही हो। परन्तु जातक, ताजिक, यात्रादि प्रत्यक्ष फलोपलब्धिके लिए सूक्ष्म वेधोपलब्ध मानसे पञ्चाङ्ग-गणना होनी ही युक्ति-युक्त एवं आवश्यक है।

विशेष ज्ञातव्य—पंचाङ्ग-समस्या सम्बन्धी ७ विषयों का जो विवेचन यहां किया गया है वह निष्पक्ष, वेधोपलब्ध और निर्विवाद है। कुछ विसम्वाद अयनांशमें है। इस विषयमें वेद तथा उपनिषदोंमें जो कुछ बातें पाई गई हैं उनके आधारसे चैत्र पक्षवाला मत ही ग्राह्य हो सकता है। जिसके विषयमें पूनाके बापू वेंकटेश केतकरने बहुत कुछ संग्रह किया है। लेख बढ़ जाने के भयसे उन सब बातोंका वर्णन यहां नहीं किया।

दूसरी बात यह है कि 'नागरीप्रचारिणी सभा' के प्रथम इन्हीं सब बातोंके समाधानके लिए तीनज्योतिष महासम्मेलन हो चुके हैं। सर्वप्रथम कांग्रेस पण्डालमें जगद्गुरु शङ्कराचार्य जी के सभापतित्वमें बम्बईमें, दूसरा जस्टिस आशुतोष मुकर्जीके सभापतित्वमें यूनिवर्सिटी हाल कलकत्तामें, तीसरा पूज्य मालवीयजी के सभापतित्वमें (सर हुकुमचन्दजी के उद्योगसे) इन्दौरमें। तीनों सम्मेलनोंमें वादविवाद के बाद यही निश्चित हुआ कि वास्तवमें यदि पञ्चाङ्गोंका मान अशुद्ध है तो अपने यहां वेधालय बनाकर अपने यहांके वेधकुशल पण्डितों-द्वारा वेध कराकर यावतीय संस्कार किया जाय।

———

आजकलके हाकिमोंमें कितने हैं जो जल्दसे जल्द धनी बनना पसन्द नहीं करते? जिसे ढाईसौ रुपए माहवार तनख्वाह मिलती है वह भी चाहता है पासमें मोटर रखना, वह भी चाहता है कि वह और उसकी स्त्री शाहाना ठाटमें रहें, उसके लड़के लड़कियाँ शाहजादों—शाहजादियोंके कान काटें।....उत्सव और त्यौहारोंमें वह शाह-खर्चीका सबूत दे सकें।....ब्याह शादीमें बड़े बड़े तिलक-दहेज दें और दोनों हाथों अशर्फियां लुटायें।....आजकलके हाकिमोंकी जब ये हार्दिक लालसायें हैं तो रुपये की चमचमाहट उन्हें क्यों न अपनी ओर आकर्षित करेगी। अगर किसीको रिश्वत लेने में सङ्कोच होता है तो या तो इस लिए कि वह कम है अथवा भेद छिपा रखने में कठिनाई होगी। अनौचित्यके ख्यालसे रिश्वतसे बाज आने वाले लोग बहुत मुश्किल से मिलते हैं।

—राहुल सांकृत्यायन

वराहमिहिर

[ले०—श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास, ज्योतिषाचार्य]

ज्योतिर्विज्ञान के पूर्ववर्ती आचार्यों में वराहमिहिर का स्थान असाधारण महत्व रखता है । यह महा-पुरुष मालव-मही-मण्डलमें उत्पन्न होकर केवल ज्योतिर्विदोंके समाजमें ही नहीं, विश्वके इतिहास और संस्कृतिके समाराधकोंमें भी अपनी ग्रन्थ-सम्पत्तिके द्वारा पंचभौतिक शरीरके शतसहस्राब्दियोंके पूर्व त्यागदेनेके पश्चात् भी यशः-शरीरको चिरंजीवी बनाए हुए है और अनन्तकाल पर्यन्त बनाए रहेगा।

संस्कृत-साहित्यके पश्चिम-देशीय विद्वान् विवेचक मेकडॉनल्डने वराहमिहिरके विषयमें यह प्रतिपादन किया है कि वे उज्जैनमें उत्पन्न हुए थे और उन्होंने अपने गणित-शास्त्रीय लेखनका कार्य लगभग ५०५ ई० सन्में आरम्भ किया था और वराहमिहिरकी विशाल एवं अमर कृति-'बृहत्संहिता' ग्रन्थके एक टीकाकारका यह कथन है कि आचार्यका निर्वाण ५८७ ई० सन्में हुआ था। वराहमिहिर-ने अपने पूर्ववर्ती जिन आचार्यों का उल्लेख किया है उनमें—"मय-यवन-मणित्थ सत्य पूर्वैर्दिवसंकरादिषु वासराः प्रदिष्टाः" मयाचार्यके नाम और यवनाचार्यके उल्लेखसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि ये दोनों ही वैदेशिक थे। स्वभावतः 'यवनाचार्य' के ज्योतिर्विज्ञानका वराहमिहिर पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ा है, उन्होंने अपने 'होरा-शास्त्र' को सर्वथा ग्रीकके निकट सम्पर्कसे अपना लिया था और ग्रन्थमें उसकी संगति लगाते हुए 'होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके' कहकर अपने शब्द-व्युत्पत्ति शास्त्रकी विशेषज्ञताका भी प्रमाण उपस्थित कर दिया है। अर्थात्-"कोई होरा इस शब्दको—'अहोरात्र' का वैकल्पिक (अपभ्रंश) रूप भी कहते हैं।" यही क्यों उन्होंने 'बृहज्जातक' और अन्य पुस्तकोंमें भी यवनोंके प्रेरित-शब्दों को उदारतापूर्वक अपनाया है। उन्होंने अनेक राशिनामोंको उसी रूपमें वर्णित कर ग्रन्थमें उन्हें संस्कृतमें गूंथकर अपना लिया है। ग्रीक ग्रह-नामोंमें यथा ऑरिसके पर्यायमें आर (मंगलका नाम), हिलिओसके बदले हेलि (सूर्य), 'केन्ट्रोन' के स्थान पर 'केन्द्र', और डायोमेट्रोनके स्थान पर'जामित्र' आदि। भारतीयोंने सर्वदा अपनी सहानुभूतिक भावनाके वशीभूत हो, जाति-देश-धर्म सम्प्रदायकी संकुचित भावनासे ऊपर रहकर,—'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः' गुण ग्राहकताका, सहृदयताका परिचय, सद्भावना पूर्वक उनके उल्लेख-सहित किया है। इससे अधिक और क्या हो सकता है, जब स्वयं वराहमिहिर यह स्वीकार करते हैं कि—

"म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूयन्ते, किं पुनर्दैवविद्द्विजः ॥"

सूर्य-सिद्धांत-कर्ता मयाचार्य भी वराहमिहरके प्रथम हुए और वे भी बाहरी माने जाते हैं। स्वयं उन्होंके शब्दोंमें उन्होंने बतलाया है कि—'अल्पावशिष्टे तु कृते मयनामा महासुरः।' इससे ज्ञात होता है कि वे 'असुर'—संज्ञा से ज्ञापित थे*। इसी प्रकार रोमक-सिद्धान्त आदि भी,

* 'मय' के विषयमें अन्य कुछ विद्वानोंका मत है कि वे बाहरी थे, किन्तु उनका शासन उज्जैन पर भी था। मय नामका एक राजा था जो उज्जैनमें राज्य करता था। इसकी संगति इससे यों लग जाती है कि जिस 'मय' नामा 'महासुर ने ' 'सूर्यसिद्धान्त' का निर्माण किया था, वह 'विक्रम' कालीन है। उज्जैनकी खुदाईमें एक मृत्तिकाकी मुद्रा मिली थी, जिसपर मय-या-मही-राजा-या-रावण ऐसा ही कुछ अङ्कित है। सम्भव है यह 'मय राजा' ही हो, जो वराहमिहिरके पूर्ववर्ती होनेके कारण तथा ज्योतिर्विज्ञानके आचार्य होनेके कारण वराहमिहिर द्वारा स्मरण किया गया हो। —लेखक

अ-भारतीय विद्वानों के निर्मित ग्रन्थ हैं। ❀ वराहमिहिर ने 'सत्याचार्य' को अपनेसे विशेष प्रामाणिक बतलाते हुए 'सत्यंतु सत्योदितम्, अथवा 'सत्योक्तेग्रहमित्थं' आदि सम्मानपूर्वक सत्यवादी सत्याचार्य कहा है। सत्याचार्य की कोई रचना वैसे संस्कृतमें प्रकट रूपसे कहीं उपलब्ध नहीं है। केवल एक मद्रासी श्रीनिवास अय्यर नामक पंडितके पास 'सत्य-संहिता' ग्रन्थ की तामिल लिपिकी ताड़पत्र पर लिखी हुई प्रति है, उसमें अध्यायोंके अन्तमें यही लिखा है कि सत्याचार्यकी रचित यह संहिता, विक्रमादित्य के समय उज्जैनमें निर्मित हुई है। वराहमिहिर ५०५ ई० सन्के स्वीकार किये जाते हैं तो अवश्य ही ज्ञात होता है कि सत्याचार्य उनसे प्रथम पर्याप्त प्रख्याति रखते थे और उनकी रचनाओंकी सत्यताका वराहमिहिर पर पूरा प्रभाव था। सम्भव है वे प्रथम शताब्दीमें होंगे। इतना तो स्पष्ट है कि वे पाँचवीं या छठी शताब्दीसे प्रथम थे और वे प्रथम विक्रम-कालीन थे।

वराहमिहिरके प्रख्यात ग्रंथोंमें 'पंचसिद्धान्तिका' गणितका संग्रह गौरव ग्रन्थ है। इसकी प्रसिद्धिका श्रेय, डा० थीबो और म० म० सुधाकरजी द्विवेदीको है। परन्तु आचार्यके बृहत्संहिता और बृहज्जातक ग्रन्थकी लोकप्रियता सर्वाधिक है। बृहत्संहिता ज्योतिषके संहिता विभागकी महत्वपूर्ण कृति है। इसको प्रमाण स्वरूप इतिहासज्ञ भी सादर उल्लेख करते हैं। लगभग सन् १८६४ वर्ष पूर्व 'कर्न' ने इसको प्रकाशमें रखनेका प्रयत्न किया और एशियाटिक-सोसायटीके 'जर्नल' में इसका सम्पूर्ण अनुवाद किया गया। वराहमिहिरके और भी कई ग्रन्थ थे, परन्तु वे अप्राप्य हैं। तथापि संहिता ग्रन्थने उनकी महत्ताको सर्वोपरि स्थान प्रदान कर दिया है। सहस्राधिक आर्यप्रणीत यह संहिता ग्रन्थ वास्तवमें अपूर्व एवं नामानुरूप बृहत् ही है। इस ग्रन्थके एकटीकाकार भट्टोत्पल हो गए हैं। जिन्हें प्रकाशमें लानेका श्रेय म० म० स्व० सुधाकरजी द्विवेदीको है। इन 'भट्टोत्पल' ने वराहमिहिरको मगधके शाकद्वीपीय वंशावतंस काम्पिल्य-नगरवासी होना बतलाया है, परन्तु यह सर्वथा भ्रमपूर्ण है। क्योंकि इनके सम्बन्धमें स्पष्ट प्रमाणित है कि ये 'आदित्यदासके पुत्र थे और 'कापित्थक' नामक अवन्तीदेशीय एक लघु-ग्रामके अधिवासी थे। आदित्यदास (अपने पिता) से ही इन्होंने पांडित्य प्राप्त किया था, (आदित्यदासतनयस्तदवाप्त-बोधः कापित्थकः) इसका प्रमाण 'षट् पंचाशिका' के निर्माता 'पृथुयशस' ने स्वयं दिया है, जो आचार्य वराहमिहिरके पुत्र ही थे। भट्टोत्पलने जिसे 'काम्पिल्य' समझकर वर्तमान कालपी आदिकी क्लिष्ट कल्पना कर डाली है, वह वास्तवमें 'कापित्थक' शब्द है, और यह 'कापित्थक वर्तमान कायथाके रूपमें उज्जैनके निकट ही मालवेका एक ग्राम है, जो आज भी अस्तित्व रखता है। वराहमिहिरके विषयमें इन प्रमाणोंके अतिरिक्त कुछ किम्वदन्तियां भी विचित्र प्रचलित रही हैं। १४वीं शताब्दीमें मेरुतुंग सूरिने, जो प्रबन्ध-चिन्तामणि ग्रन्थ जैसे जनश्रुतियोंके सफल संग्रह कर्ता रहे हैं, वराहमिहिरके विषयमें यह कथा संग्रहीत की है—

पाटलीपुत्र नगरमें वराह नामक एक ब्राह्मणका लड़का था, जो जन्मसे शकुनज्ञानमें स-श्रद्ध था। वह एक रोज किसी वनमें चला गया। वहां सहज ही एक पत्थर पर बैठे-बैठे उसने एक लग्न-कुण्डली बना दी और उसे मिटाना भूलकर वह वापिस घर चला आया। रात को उसे भोजनावसर पर यह स्मरण हुआ कि उस पत्थर पर लग्न वैसे ही बना हुआ रह गया है, तुरन्त निर्भीकता के साथ उस एकान्त जंगलमें वह चला गया, जिस पत्थर पर लग्न बनाया था, क्या देखता है कि उसपर एक सिंह बैठा हुआ है। वह डरा नहीं, पास जाकर सिंहके नीचेसे हाथ डालकर पत्थर पर बनाया हुआ वह लग्न मिटा दिया। सहसा सिंह अलोप हो गया और उस स्थान पर सूर्य उपस्थित हो गए। वराहकी निर्भीकता और ज्योतिषके प्रति दृढ़ आस्था देखकर उन्होंने प्रसन्नता-

❀ रोमक सिद्धान्तके विषयमें कई विद्वानोंकी मान्यता है कि वह 'ग्रीक' है। पोलिश और रोमक ये नाम भी इसीके सूचक हैं। मालूम होता है कि विक्रमकालमें उज्जैनका रोमसे व्यापारिक सम्बन्ध था, उसीके फलस्वरूप यह साहित्यिक आदान-प्रदान हुआ होगा और उज्जैनसे होनेके कारण ही वराहमिहिर द्वारा ये प्रचारित हुए होंगे।

पूर्वक वर मांगने को कहा। वराहने प्रार्थनाकी कि मुझे समस्त ग्रह-नक्षत्र मंडल प्रत्यक्ष दिखला दीजिए। सूर्य अपने साथही वराहको आकाश-लोकमें लिवा गए, समस्त ज्ञान देकर साल भरके बाद वराहको पुनः स्थान पर लाकर छोड़ दिया। मिहिर (सूर्य) की कृपासे ज्ञान-लाभ हो जानेके कारण वराहके नामके साथ मिहिर भी जुड़ गया और श्रीनन्द नामक नृपतिके आश्रयमें वराहमिहिरने 'वाराही संहिता' का निर्माण किया*।

एक समय की बात है कि वराहमिहिरके घर पुत्रोत्पन्न हुआ था, इसलिए घटिका आदि रखकर उसने पत्रिका द्वारा यह निश्चय किया कि यह बालक पूर्ण शतायु है। उसके आनन्दोत्सवमें जनतासे लेकर श्रेष्ठ वर्ग-तक के लोग तो सभी आए, परन्तु वराहमिहिरका छोटा भाई जैनाचार्य भद्रबाहु नहीं गया। यह चर्चा जिन-भक्त शकटाल नामक मंत्री के आगे उलहनेके रूपमें कही गई। तब भद्रबाहुसे इस बातका यह मर्म ज्ञात हुआ कि बालककी आजसे २०वें दिन मृत्यु है, यह जानकर भद्रबाहु नहीं गए, यह बात वराहमिहिर को भी ज्ञात हो गई। वह सतर्क रहा, परन्तु २०वें दिन-रात में सोते हुए बालक पर दरवाजे की अर्गला (रोकने की 'आगल' लकड़ी) गिर जानेसे उसकी मृत्यु हो गई। वराहमिहिर दुःखित हो समस्त शास्त्र को अग्निसात् करने को समुद्यत हो रहे थे कि भद्रबाहु सांत्वना के लिए जा पहुंचे। अनेक तर्कोंसे समझाकर उन्हें समाधान दिया। भावी अपरिवर्तनशीलता का विश्वास कर उसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप अभिचार क्रियाओं का उपासक बनाया। फिर एक स्तोत्र द्वारा विघ्न-शमन किया गया।

यह दन्तकथा उन आचार्य वराहमिहिरके विषयमें है, जो अपनी विशिष्ट रचनाओं को समक्ष रखकर प्रत्यक्ष ऐतिहासिक अस्तित्व को प्रकाश की तरह प्रकट कर रहे हैं। इस दन्तकथाका महत्व, जैन-जनश्रुति परम्परा तक ही सीमित है। इस प्रकार की कथा वराह-मिहिरके विषय में 'ऋषि-मण्डल प्रकरणवृत्ति' में भी दी हुई है। मेरुतुंग सूरिने तो वराहमिहिरके भाई को ही जैनाचार्य प्रकट किया है। परन्तु उक्त ग्रन्थमें तो वराह-मिहिर को भी जैन-धर्म-शिक्षित बतलाया है और अपने बन्धु भद्रबाहु से 'सूरि' पद न मिलनेके कारण वह ब्राह्मण धर्मी हो गए, अन्तमें वराह मिहिर को भागवती दीक्षा दिलाई गई है। जब वराहमिहिर का मरण हो गया, वह जैन-द्वेष्टा बनकर राक्षस रूपमें श्रावकों को सताने लगे, इसपर भद्रबाहुने 'उपसर्ग हर-स्तोत्र' की रचना की। इस कथा में जैन-धर्म की महत्ता की दृष्टिसे ब्राह्मणत्व की अवमानना प्रकट हुई है। इस बात की उपेक्षा की जाय, तो भी यह विचारणीय है कि भद्रबाहु और वराह-मिहिर का काल-साम्य भी सम्भव है या नहीं ? फिर ही वराह-मिहिरके बन्धुत्व का प्रश्न उपस्थित हो सकता है। उपर्युक्त कथा संग्रहोंमें वराह-मिहिर को पाटली पुत्र का अधिवासी प्रकट किया है। प्रथमतः यही भ्रामक बात है। आज तो सन्देह के लिए भी अवसर नहीं है कि वराह-मिहिर कापित्थक (कायथा) ग्रामवासी और उज्जैन मण्डलान्तर्गत ही थे। प्रमाणके लिए उनके पुत्र पृथुयश स्वयं हैं। स्वयं जैन समय गणनाके अनुसार आवश्यकसूत्र, कल्पसूत्र, दशवैकालिक, एवं उपसर्ग-हरस्तोत्र का प्रणेता, निर्युक्तियोंका निर्माता भद्रबाहु, वीर निर्वाण कालके १७० वर्ष पश्चात् लगभग ७६ वर्ष की वयमें दिवंगत हुए थे, अर्थात् विक्रम-संवत् ३०० वर्ष पूर्व ही, जब कि वराह-मिहिर ५०५ विक्रम संवतके प्रमाणित हैं, फिर मेरुतुंग की कथामें जिस नन्द राजाके आश्रयमें वराह-मिहिर को प्रस्थापित किया है, वह कैसे संगत हो सकता है ? जो वराह-मिहिर आदित्यदास तनय होकर उन्हींसे ज्ञान प्राप्त कर सूर्यसे वर प्राप्त करता है और ज्योतिषके ग्रंथोंमें शिव-विष्णु सूर्य आदि की स्तुति करता है, उसे जैन-धर्म-दीक्षित बतलाया

* किन्तु कुछ लोगोंका मत है कि वराह नामक पंडितका मिहिर पुत्र था, जिसकी विक्रम राजसभाकी परम प्रतिभाशालिनी 'खना' नामक विदुषी ज्योतिर्विज्ञान-विदासे मैत्री थी, किन्तु वराहको सह्य नहीं था, सो 'खना' ने अपनी जिह्वा काटकर सभाका त्याग कर दिया था। —लेखक

जाना और असुर भूत-प्रेत योनि तकमें प्रकल्पित करना, सत्य पर आवरण डालकर अनर्गल प्रचारके अतिरिक्त और क्या हो सकता है ?

परन्तु कहा जा सकता है कि भद्रबाहु भी एक नहीं दो थे, प्रथम भद्रबाहु यशोभद्र सूरिके छात्र एवं चन्द्रगुप्त-मौर्य कालीन थे,* इससे स्पष्ट है कि प्रथम भद्रबाहुका छठी शताब्दीके वराह-मिहिरसे कोई सम्बन्ध नहीं। जिन-निर्युक्ति आदिके निर्माता भद्रबाहु हैं, वे यदि प्रथम भद्रबाहु होते तो कहीं वराहमिहिरादिकका, या हेमचन्द्रके ग्रंथोंमें उक्त भद्रबाहुका अवश्य उल्लेख करते। जिन लोगोंकी दृष्टिमें द्वितीय भद्रबाहुका छठी शताब्दीमें अस्तित्व है, वे भद्रबाहुको ब्राह्मण कुलोत्पन्न ही स्वीकार करते हैं, सम्भव है, ये वराह-मिहिरके भ्राता हों ? बादकी जैन-रचनाओं में जो श्वेताम्बरीय हैं, उनमें तथा उपर्युक्त ग्रंथोंके अतिरिक्त संघतिलक सूरि कृत—'सम्यकत्व सप्ततिका' आदिमें जिन भद्रबाहुका उल्लेख है वे यही द्वितीय हो सकते हैं । संघतिलक सूरि की यह गाथा प्रकट है—

'तत्थय चउदस विज्जाठाण पारगो छक्कम्म सम्मविउ पयईए भद्दओ भद्दबाहु नाम माहणो हुत्या। तस्सय परम पिम्म सयसीरुह मिहरो वराह मिहरो नाम सहोयरो, परन्तु भद्रबाहुने स्वयं अपने किसी भी ग्रंथ आदिमें अपना समयादि कहीं अंकित नहीं किया है ।

इसपर भी यदि कालक-कथा, एवं कल्पसूत्र (१४८ सूत्र) आदिकी विक्रम कालारम्भकी कल्पनासे गणना करके भद्रबाहुके समय पर विचार किया जाये तो अनेक भ्रामक बातें उपस्थित हो जाती हैं। सूत्र की कल्पना से भद्रबाहु १२५ वर्षसे ऊपरकी वयके ठहरते हैं और वराह-मिहिर भी १००से कम नहीं। यदि भद्रबाहु ३० वर्षके लगभग वराह-मिहिरसे बड़े बना दिए जाएँ तो जैन परम्पराएँ उनके साथ सु-संगत हो जाती हैं। किन्तु मेरुतुंग, या अन्य ग्रंथकर्ता स्वयं वराहमिहिरको लघु-बन्धु कहकर ही स्वीकार करते हैं। इस प्रकार जैन-ग्रन्थोंकी विभिन्न चर्चाएं स्वयं ही अपनी प्रस्थापित कल्पनाको प्रमाणित करनेमें असमर्थ हो जाती हैं। तब वराहमिहिरके जैन होने, या भद्रबाहुके बन्धुत्वकी दन्तकथाएं सर्वथा निरर्थक और तथ्यहीन हो जाती हैं और यह निर्विवाद है कि वराह मिहिर छठी शतीमें अपनी असीमित एवं चमत्कृतिकर प्रतिभाके प्रकाशसे भू-मण्डलको ज्योतिर्मय बनाये हुए थे। अवश्य ही 'कालिदास-त्रयी'की तरह वराह-मिहिर द्वैत हो तो यह बात भिन्न है। प्रथम वराह-मिहिर विक्रमकालीन हो सकेंगे। पंचसिद्धान्तिकामें वर्णित चर्चासे इस आशंकाके लिए अवसर है कि एक वराह-मिहिर बृहत्संहिताकारसे पूर्ववर्ती भी हो सकते हैं। यद्यपि वे चाहे किसी विक्रम सभाकी नवरत्न मालिकामें परिगणित किए जाते हों या न हों, परन्तु स्वतः वे एक महान् रत्न थे, जिनमें अलौकिक आलोक पुंजीभूत हो गया था। ज्योतिर्विदाभरणके प्रणेताने वराह मिहिरको विक्रमकी नवरत्न-मालिकामें पिरो दिया है। स्वतः वराह मिहिरने कहीं भी उल्लेख नहीं किया है और द्वितीय चन्द्रगुप्तकी भी कहीं चर्चा नहीं होने देते हैं। पराश्रित प्रकाशकी अपेक्षा वे स्वतंत्र प्रतिभा-वैभवसे ही ज्योतिष-जगत् पर सहस्र-रश्मियोंकी दैदीप्यमान आभा प्रसारित कर रहे हैं।

वराह मिहिरके ज्योतिर्विज्ञानपर, अतएव इस देश पर अनन्त उपकार हैं, इस उपकार-भारसे हम समस्त भारतीयोंका गर्वोन्नत मस्तक भी उनके समक्ष सादर विनयावनत बना हुआ है।

* वीरमोक्षाद् वर्ष-शते सप्तत्यग्रे गते सति। भद्रबाहुरपि स्वामी ययौ स्वर्गं समाधिना ॥
परि० सं० ६ श्लोक ११२।

प्राचीन भारतमें व्यावसायिक शिक्षा

[लेखक:-श्रीकेशवचंदजी मिश्र एम० ए०, साहित्यरत्न]

यहां व्यावसायिक से तात्पर्य केवल उपयोगी कलाओं से ही नहीं है प्रत्युत इसमें समाज-व्यवस्था के अन्य उपयोगी ज्ञान भी सम्मिलित हैं। समाज संचालनके लिये यह आवश्यक था कि जीवनोपयोगी सब कलाओंके ज्ञानार्जन के लिये वह शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करता।

प्राचीन भारतमें शिक्षा का आदर्श था—

१—ज्ञानार्जन।

२—सामाजिक और धार्मिक कर्तव्योंका निरूपण एवं अनुगमन।

३—चरित्र और आचार का निर्माण।

भारतीय शिक्षाका आग्रह व्यक्तिके जीवनके सहज विकास के लिये था, जो अध्यात्मसे प्रेरणा लेकर जीवनके प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ता था। इसीके परिणाम-स्वरूप जीवनोपयोगी सभी कलाओं—पौरोहित्य, सैन्य, वाणिज्य, व्यवसाय, ललित और उपयोगी—की शिक्षा का लक्ष्य समाज ही बना रहा। आत्मश्लाघा तुच्छ मानकर व्यक्ति की प्रधानता इतनी त्याज्य समझी गई कि महान् कलाकारोंने अपना परिचय अपनी कृतिके साथ नहीं छोड़ा।

प्राचीन भारतमें व्यावसायिक या उपयोगी शिक्षाका क्षेत्र बहुत विस्तृत था। कर्मकांड, पौरोहित्य, सैन्य-शिक्षा, ललित एवं उपयोगी कलायें, वाणिज्य-व्यवसाय ललित और औषध तथा निदान शास्त्रोंकी शिक्षा इसीके अन्तर्गत परिगणित की जा सकती है। इनमेंसे प्रत्येककी शिक्षाके लिये समुचित व्यवस्था की गई थी। भारतमें उपयोगी शिक्षाने समाजकी व्यवस्था का भार ग्रहण कर कर्तव्यपरायणताकी दीक्षा देनेके साथ ही कालांतर में सामाजिक विच्छेदको इतना अचल बना दिया कि उसे अपना अस्तित्व भी खो देना पड़ा।

कर्मकांड और पौरोहित्यकी शिक्षा-पद्धति—

प्राचीन भारतीय समाजमें पुरोहितका वही उत्तरदायित्व था जो शरीरमें मस्तिष्कका है। पुरोहित धार्मिक परिचर्याके नायक ही नहीं, वरन् समाजके बौद्धिक, राजनीतिक और नैतिक पथ-प्रदर्शक भी थे। उनका व्यक्तिगत जीवन त्याग और आस्तिकताका प्रतीक था तो उनका सम्मान समाजमें सर्वोपरि। वे उच्च और विशिष्ट ज्ञान के अध्यापक और सब विद्याओंके ग्रहण करनेके अधिकारी थे। यदि कोई व्यक्ति ऐसा था जिसका अनुशासन राजा और सम्राट भी शिष्यवत् पालन करते थे तो वह पुरोहित ही था। परिवारमें ये शिक्षक थे, समाजमें निर्माता और राष्ट्रनीतिके कर्णधार। इसीलिए इनकी शिक्षाकी व्यवस्था अलग की गई थी। इनके पाठ्य विषय संपूर्ण वैदिक साहित्यके साथ ही कर्मकांड, ज्योतिष, लोकनीति और राजनीति थे।

इनकी शिक्षा गुरु-शिष्य-परंपरासे होती थी। पूर्ण शिक्षाकी अवधि बारह वर्ष थी। गुरु-गृह, आश्रम या गुरुकुल विद्या-ग्रहणका स्थान था, जहां इन्हें अनवरत बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य-जीवन व्यतीत करते हुए विद्योपार्जन तथा उसके व्यावहारिक पक्षका अध्ययन करना पड़ता था।

पुरोहितके पद पर प्रतिष्ठित होनेका सामाजिक अधिकार किसे था? प्रमाणोंसे विदित होता है कि संहिता-काल तक सहज रूपसे द्विजातियोंमें से कोई भी इस विद्याको पढ़कर पुरोहित-पद प्राप्त कर सकता था। 'तैत्तरीय संहिता' (६, ६, १, ४) से ज्ञात होता है कि जो इन विद्याओंका, जिनका निर्देश पहले हुआ है, संग्रह कर लेता था, वही पुरोहित या ऋषि होता था। इसकी पुष्टि 'मैत्रायणसंहिता' और 'अत्रिसंहिता' से भी होती है, परन्तु एक बन्धन था, जो मनोवै-

ज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पौरोहित्य और कर्म-कांड की शिक्षा का वही अधिकारी होता था, जिसके यहां कम से कम तीन पीढ़ियों से वह कार्य होता आया हो। वेवरका यह मत तर्कसंगत प्रतीत होता है कि पीढ़ी की इसी प्रक्रियाके कारण यह पद क्रमशः कालांतरमें ब्राह्मणोंके यहां आकर बंध गया (इण्डियन स्टडीज जिल्द १० पृष्ठ १०)। धर्मशास्त्रोंके काल तक ब्राह्मणोंके अतिरिक्त औरोंको यह पद प्राप्त करना निषिद्ध हो गया, परन्तु यह परिवर्तन महत्त्वपूर्ण नहीं था, क्योंकि यदि वाल्मीकि, जनक, विश्वामित्र, देवर्षि, इल्लुशाके पुत्र केशवको अपवाद भी मान लिया जाय तो ऐसे अनेकों उदाहरण उपलब्ध होते हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि ब्राह्मण होनेके लिये किस गुण से अधिक ज्ञान और आचरणकी आवश्यकता थी। इसीलिये इसकी शिक्षा-व्यवस्थाकी अलग आवश्यकता भी पड़ी। इस कार्य को व्यवसाय या सामाजिक कर्तव्यके ही रूप में माना गया। 'कौशीतकी' में यह भी चर्चा है कि गुरु को ब्राह्मणत्व प्रदान करनेकी क्षमता थी। इसके फलस्वरूप दीक्षा-बलसे राजन्य और वैश्य भी ब्राह्मणत्वके अधिकारी थे। उन्हें भी पुरोहितीकी शिक्षा मिलती थी।

शिक्षा आश्रमोंमें हो जाती थी। उनमेंसे असाधारण प्रतिभावाले छात्र अपने पांडित्य पर स्वीकृति लेने तक्षशिला जाते थे। पुरोहितोंकी शिक्षा-प्रणाली में विद्यार्थियोंको प्रारंभमें और सूत्रोंकी धारणा है कि पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित होनेके पूर्व, व्यक्तिको गुरुके यहां रह कर सेवा-काल (अप्रेंटिसशिप) व्यतीत कर लेना पड़ता था। पुरोहितोंकी श्रेणियां (निगम सभाएं) थीं जो उनके पाठ्यक्रम, विषय और शिक्षा-सम्बन्धी आवश्यकताओं की योजना करती थीं।

सैनिक--शिक्षा—

भारतवर्षमें छात्र-बलको सर्वदा सन्नद्ध रहना पड़ता था—कभी तो आर्यावर्तकी राजनीतिक खंडता दूर करनेके लिये और कभी विदेशी आक्रमणकारियों की चुनौती स्वीकार करनेके लिये। इसीलिए बहुत काल तक यहां रक्षाका भार सारे समाजने लिया था। फलस्वरूप वेद-युगमें केवल क्षत्रिय ही नहीं ब्राह्मण और वैश्य भी सैनिक-शिक्षा प्राप्त करते थे। कुछ काल तक तो ब्राह्मण इसे अपना एक कर्तव्य ही मानते थे। कौटिल्यके 'अर्थशास्त्र' से तो ब्राह्मणों और क्षत्रियोंकी सेनाकी स्थितिका भी पता चलता है, परन्तु उत्तरकालीन युगमें जब वर्ण-व्यवस्था अनुदार और दृढ़ हो गई, तब भी प्रायः योग्य ब्राह्मण इस क्षेत्रमें भी नेतृत्व करते थे। पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण ही था, जिसकी भुजाओंने एक बार फिर देशकी विशृङ्खलित एकता स्थापित की थी। शुक्राचार्यने सामाजिक व्यवस्थाकी प्रतिष्ठा करते हुए बतलाया है कि आपद्‌कालमें प्रत्येक द्विज को शस्त्र ग्रहण करना चाहिए। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सैनिक-शिक्षाका क्षेत्र प्रधानतया क्षत्रियोंका था, परन्तु यह उन्हीं तक परिमित नहीं था। 'महाभारत' से यही निष्कर्ष निकलता है—

ब्राह्मणो यदि वा वैश्यः शूद्रो वा राजसत्तम।
दस्युभ्यो यः प्रजां रक्षेद्दंडं धर्मेण धारयेत्॥
अपारे यो भवेत्पारमप्लवे यः प्लवो भवेत्।
शूद्रो वा यदि वाऽप्यन्यो सर्वथा मानमर्हति॥
यमाश्रित्य नरा राजन् वर्तयेयुर्यथासुखम्।
अनाथास्तप्यमानाश्च दस्युभिः परिपीडिताः॥

युद्ध-विद्या और सैनिक-शिक्षा का संघटन अति प्राचीन कालसे ही होता आ रहा था। वाल्मीकि 'रामायण' के 'अयोध्याकांड' में सैनिकों की शिक्षा की चर्चा प्राप्त होती है। दशरथकी मृत्युके पश्चात् परिषद्‌ने कुछ दिनोंके लिए सैनिक-शिक्षा स्थगित कर दी थी। 'युद्धकांड' में रावण सैन्य-शिक्षाके संघटन की ओर प्रधान सेनापतिका ध्यान दिलाता है। 'महाभारत' और 'रामायण' काल की सैनिक शिक्षाका विस्तृतरूप तो नहीं प्राप्त होता, परन्तु उस समय जब छोटे-छोटे केंद्रों पर शिक्षा संपन्न हो

जाती थी, तब सैनिकों का सामूहिक युद्ध और शस्त्र-कला-प्रदर्शन (मिलिटरी टूर्नामेंट) होता था, इसका उल्लेख प्राप्त होता है। रामने स्वयं ऐसे प्रदर्शनमें योग दिया था। वन-गमनके समय दशरथ की आज्ञा हुई कि रामके साथ प्रदर्शनमें सम्मिलित होने वालोंको रामके साथ वन जाना चाहिए। भरत जब चित्रकूटमें रामके पास पहुंचे तो अन्य समाचारोंके साथ रामने यह भी पूछा कि प्रदर्शनमें सम्मिलित योद्धाओंका समादर तो होता है? इससे प्रकट होता है कि उच्च कोटिके ही सैनिक इसमें सम्मिलित होते थे। ये प्रदर्शन शिक्षाके अनिवार्य अंग थे, क्योंकि यहां उनकी लोक-परीक्षा भी होती थी। 'महाभारत'के 'आदि पर्व'से विदित होता है कि शिक्षा संपन्न होनेके पश्चात् कैसे पांडवोंने आचार्य द्रोण द्वारा आयोजित प्रदर्शन में योग दिया था।

सैनिक शिक्षा प्राप्त करनेवाले व्यक्तियों की शिक्षा भी वैदिक शिक्षासे प्रारंभ होती थी; परन्तु वैदिक साहित्यकी उनकी पढ़ाई थोड़े ही काल तक होती थी। उसके पश्चात् वे सैनिक शिक्षाके लिये सैनिक विद्यालय या शिविर में आ जाते थे। महाभारत काल तक तो सैनिक-शिक्षा भी आचार्यों और ऋषियोंके आश्रमोंमें ही होती थी। राजकुमार तक वहीं जाकर शिक्षित होते थे, परन्तु उत्तरोत्तर शिक्षा-केन्द्रोंमें परिवर्तन होता गया। सिकंदरके आक्रमणको रोकनेके लिये राजाओंकी सेनासे अधिक सशस्त्र साधारण निवासी उठ खड़े हुए थे और युद्ध का अद्भुत कौशल्य दिखाया था। कौटिल्य 'अर्थशास्त्र' से भी ज्ञात होता है कि कुछ ग्रामकरोंसे मुक्त कर दिए गए थे. क्योंकि उनसे सैनिक-सेवा प्राप्त होती थी। ऐसी सेनाओं को 'मौल' कहते थे। अतः ऐसे गावोंमें सैन्य-शिक्षण-शिवर थे और गांव के प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य शिक्षा दी जाती थी। इसके अतिरिक्त तत्कालीन पंजाब के गण-राज्यों मल्लोई, कठ आदि—में भी पुरुषोंके लिये सैनिक शिक्षा अनिवार्य थी। इसीसे उन्हें 'आयुधजीविसंघ' कहते थे। इन शिक्षा-केन्द्रोंका प्रबन्ध ग्राम-समिति की ही ओर से होता था। इन ग्राम-केन्द्रोंमें उच्च कोटिकी शिक्षा संभव नहीं थी, इसलिये राज्यकी ओरसे संचालित कुछ विशेष केन्द्र थे। तक्षशिला भी उनमें से एक था। इन स्थानों में सैन्य-शिक्षाका प्रत्येक विभाग कार्य करता था। 'सूतसोम जातक'से यह ज्ञात होता है कि किसी सैन्य-विद्यालय में राजकुमारों की संख्या एक सौ तीन थी, जो विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों की उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।

पाठ्यक्रमकी दृष्टिसे दो कोटियां थीं। पहली प्रारंभिक शिक्षा की, दूसरी उच्च शिक्षा की कहनेकीआवश्यकता नहीं कि अधिकाधिक सैनिकों को प्रारंभिक शिक्षा ही दी जाती थी। उच्च शिक्षा उन्हें ही दी जाती थी जो बहुत ही योग्य और उदीयमान होते थे। सेनाके साधारणतया पाँच विभाग थे—पदाति, अश्व, रथ, हस्ति और नौ। प्रारंभिक कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करनेवाले सैनिकोंको इनमेंसे किसी एक की पूर्ण शिक्षा दी जाती थी। स्नातक होने के पश्चात् विद्यार्थी उसी विभाग में कार्य करता था। परंतु प्रारंभिक शिक्षा के मेधावी सैनिक उच्च शिक्षा के अधिकारी बनते थे और दो या तीन प्रकार तक की सैन्य-कला में निपुणता प्राप्त करते थे। कभी कभी तो कोई पाँचों प्रकार की युद्ध-कलामें दक्षता प्राप्त करता था। ऐसे ही सैनिकोंमें से लोग सैन्य विभागके उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर नियुक्त होते थे।

अध्ययनके विषयोंका विश्लेषण किया जाय तो ज्ञात होगा कि सैनिक-शिक्षा के दो क्षेत्र थे—एक में सिद्धान्तोंका अध्ययन कराया जाता था और दूसरे में प्रायोगिक और व्यावहारिक अभ्यास कराया जाता था। सिद्धान्त सम्बन्धी विषयोंके भीतर उन्हें अनुशासन, संघटन, व्यूह-निर्माण, नीति, कूटनीति, भूगोल, गणित और युद्धसंबन्धी नैतिकताकी शिक्षा दी जाती थी। उपर्युक्त विषयोंके साथ ही उन्हें विभिन्न यानों के संचालन और सुधार आदि का साधारण

ज्ञान भी कराया जाता था। प्रायोगिक शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण थी। इसमें सैनिक व्यायाम, प्रयाण, अस्त्र-शस्त्र ग्रहण तथा अभ्यास, व्यूहनिर्माण व्यूहभेदन शिविर-निर्माण आदि का अभ्यास कराया जाता था। शस्त्रों के अभ्यासके सम्बन्धमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि शस्त्रोंका संचालन विभिन्न अवस्थाओं में बतलाया जाता था। दौड़ते हुए रथ, घोड़े या हाथी पर चढ़ जाना अथवा उन पर से कूद जाना और इन्हीं अवस्थाओंमें शस्त्र चलाना आदि भी।

युद्धक्षेत्रकी व्यावहारिक शिक्षामें कुशलता प्राप्त कराने के लिए युद्धके विभिन्न सम्भाव्य क्षेत्रों—मरु-भूमि, वन प्रदेश, मैदान, पार्वत्य प्रदेश, खाई, घाटी और दलदल—में सैनिकों को ले जाकर अभ्यास कराया जाता था। कौटिल्यने बताया है कि उनके अभ्यासका समय साधारणतया प्रातःकाल था और दिनमें दोबार व्यायाम कराया जाता था। अनुशासन की शिक्षा केवल आठवें दिन दी जाती थी। 'शुक्र-नीति' से ज्ञात होता है कि सैनिकोंकी शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक उन्नतिका पूरा ध्यान रखा जाता था। इसलिए उन्हें ऐसे अभिनय दिखाए जाते थे या ऐतिहासिक कहानियाँ सुनाई जाती थीं जिनसे इन गुणोंकी पूर्ति हो तथा शौर्य-प्रदर्शनके लिए उनमें उत्साहका सञ्चार हो।

सैनिक-शिक्षाकी यह पद्धति साधारण परिवर्तनों के साथ ह्वेनत्साङ्गके समय तक अबाधगतिसे चलती रही। जहाँ तक प्राचीनताका सम्बन्ध है, 'महाभारत' में ही इसका पूर्ण विकास हो गया था। 'द्रोणपर्व' में धृतराष्ट्रने सञ्जयसे अपनी सेनाकी शिक्षाकी चर्चा करते हुए कहा कि मेरे सैनिक आरोहण, अवरोह, द्रुतप्रयाण, घात-प्रतिघात, दुर्ग-प्रवेश—आदि की युद्ध कलामें अभी दीक्षित हुए हैं, किन्तु खेद है कि इतनी प्राचीन पद्धति हर्षवर्धनके पश्चात् सामन्तोंके हाथमें पड़ कर क्रमशः विनष्ट होती गई।

वाणिज्य-शिक्षा—

वाणिज्य-शिक्षाके अधिकारी वैश्य समझे जाते थे, परन्तु जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है कुछ कालके लिए वेद पढ़ने का इन्हें भी अवसर था, फिर भी कर्मकाण्डसे इनका वेदाध्ययन भिन्न था। जैसा कि 'शतपथ ब्राह्मण' से ज्ञात होता है, इनकी शिक्षा का प्रारम्भ भी वेदोंके साधारण ज्ञानसे होता था। वैदिक विद्यालयोंसे इनका सम्बन्ध क्षत्रियोंसे भी कम काल तक रहता था। शीघ्र ही ये अपनी वर्गीय शिक्षा में निरत हो जाते थे। इनकी शिक्षाका क्षेत्र व्यापक था, वाणिज्यके अतिरिक्त कृषि और पशु-शिक्षा इन्हें दी जाती थी। 'महावग्ग जातक' में वाणिज्यकी शिक्षा-पद्धति, पाठ्यक्रम और विषयका बहुत रोचक उल्लेख मिलता है।

खारवेलके हाथीगुम्फा उत्कीर्ण लेख और 'महा-वग्ग जातक' के आधार पर यह अनुमान सहज ही हो जाता है कि वाणिज्यके भीतर प्रधानतया तीन विषयों—लेखा, गणना और रूपकी शिक्षा दी जाती थी। ये तीनों इस शिक्षाकी प्रधान शाखाएँ थीं। लेखा में पत्र-व्यवहारकी शिक्षा दी जाती थी। कौटिल्यने अपने 'अर्थशास्त्र' में इस विषयकी व्यापकता भली-भाँति दिखलाई है। पत्र-व्यवहारकी उपयोगिता, आज्ञापत्रोंका अर्थक्रम, सम्बन्ध, विविधता, प्रयोजन और सुपाठ्यता आदि का सम्यक् विवेचन किया गया है। केवल आज्ञापत्रोंके तेरह भेद थे और प्रत्येक का अलग अलग प्रयोजन था। इनके अध्यापनके समय सूक्ष्म अशुद्धियों पर भी ध्यान दिया जाता था। उदाहरणार्थ—अकाँति, व्याघात, अपशब्द, समालव आदि आज्ञापत्रोंके दोष माने जाते थे। विभिन्न आचार्योंने विभिन्न तालिकाएं दी हैं। इससे इस विषयके पाठ्यक्रमका विस्तार ज्ञात होता है। 'विष्णु-सँहिता' ने लेखेके कुछ और विशेष नियम रखे हैं। शुक्राचार्यने प्रमाण विषयक पत्रों (डाकुमेण्ट्स) के पन्द्रह भेद बताए हैं।

वाणिज्यके विद्यार्थीके अध्ययनका दूसरा विषय 'गणन' था, इसे हम 'एकाउण्टेंसी' कह सकते हैं। इसे ही कौटिल्यने 'गणनाख्य' कहा है। 'अर्थ-

शास्त्र' में 'गणना' रखने की पद्धति विस्तारसे प्रस्तुत हुई है। इसीके अन्दर आय-व्ययके साधन, भूमि की माप, ग्राम, मनुष्य और पशु-गणना की शिक्षा दी जाती थी। कौटिल्य 'अर्थशास्त्र' और 'शुक्रनीति' में इस विषयके पाठ्यक्रम मिलते हैं।

देशके भीतर और विदेशोंके साथ व्यापार करने के लिए मुद्राविज्ञानको जानना परम आवश्यक था। इसलिए वाणिज्य-शिक्षाके अन्दर मुद्राशास्त्र अर्थात् 'रूप' का उचित स्थान था। 'मनुस्मृति' में और विस्तृत पाठ्यक्रमका उल्लेख प्राप्त होता है। वस्तुओं के गुणदोषकी पहचान, विभिन्न देशोंका व्यवहार, शिल्प और कारीगरी सम्बन्धी वस्तुओंकी लाभ-हानि का ज्ञान रखना भी उनकी शिक्षाके अङ्ग थे। विनिमय के लिए विभिन्न जातियोंकी भाषाका ज्ञान उन्हें कराया जाता था। भूगोलका पूरा ज्ञान कराना भी आवश्यक समझा जाता था। क्षेमेंद्रने वास्तवमें इनसब विषयोंपर एक पुस्तिका तैयार कर दी थी, जो तत्कालीन व्यापारियोंके लिए उपयोगी सिद्ध हुई थी। सातवाहन-काल तक निगमों और श्रेणियोंके कार्यके अन्तर्गत बैंकोंका सा कार्य भी हो गया था। बहुत से व्यापार इन निगमोंके बैंकों द्वारा सञ्चालित होते थे। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि 'बैंकिङ्ग' भी पढ़ाई का एक अङ्ग रहा होगा।

वाणिज्य-शिक्षाके दो केन्द्र थे। वैश्य-बालककी प्रारम्भिक शिक्षा तो घर पर ही पिता द्वारा होती थी। तत्पश्चात् यह व्यापारिक श्रेणियों द्वारा आयोजित नव--शिक्षा-काल (अप्रेंटिस) के रूपसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाता था। इन शिक्षण-संस्थाओंके सञ्चालनके लिए निगमोंके पास स्वतन्त्र कोष थे। श्रीयुत दासका कथन है कि आधुनिक महाजनी पाठशालाओंका जन्म बहुत प्राचीन है और उन दिनों वाणिज्यकी प्रारम्भिक शिक्षा देनेमें इनका भी योग था। वैश्य बालकों की शिक्षा इतने से ही पूर्ण नहीं समझी जाती थी। उनमें से जो वाणिज्यकी ओर नहीं जाते थे वे कृषिमें निरत होते थे। कौटिल्यके वर्णनों का यदि ठीक अर्थ लगाया जाय तो ज्ञात होगा कि कृषि और उद्यान विद्याके शिक्षणकी व्यवस्था भी की गई थी; लेकिन इस सम्बन्धमें विशेष चर्चा कहीं देखने में नहीं आई।

औद्योगिक-शिक्षा—

भारतने अपने स्वर्णयुगमें वास्तु, शिल्प, मूर्ति, चित्र, सङ्गीत, वाद्य, वस्त्राभरण और ऐसी ही अनेक कलाओंमें पराकाष्ठा प्राप्त की थी निस्सन्देह इस बहुमुखी उन्नतिके मूलमें औद्योगिक शिक्षाकी सुन्दर व्यवस्था थी। शिक्षाका आयोजन भी अद्भुत ढङ्गसे किया गया था। इस शिक्षाके उपयुक्त अधिकारी शूद्र ही होते थे। परन्तु उन्हें भी वेदका अध्ययन कभी निषिद्ध नहीं था। इसका प्रमाण 'अथर्ववेद' (५,२,११,) 'यजुर्वेद (२५,२,) 'ऐतरेय ब्राह्मण' (४,८,१,)'शतपथ-ब्राह्मण' (१,१,४१६,) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र १, १६। 'गोभिलगृह्यसूत्र' (४, १०) 'जैमिनी पूर्वमीमांसा' 'महाभारत' (वन पर्व) और 'शुक्रनीति' से प्राप्त किया जा सकता है।

कला की परिचर्या उनके लिये आध्यात्मिक परिचर्या थी। एक प्रकार से यही बात द्विजातियोंके संबन्ध में भी कही जा सकती है, क्योंकि निर्धारित कर्तव्यों से भिन्न अध्यात्म की कोई स्थिति नहीं। हिंदू-समाजमें ईश्वर को इससे बाहर नहीं माना गया है। 'गीता' ने तो इसका प्रतिपादन भली भांति किया है—

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

फिर भी औद्योगिक ज्ञान या कला एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। विस्तृत प्रकृति का व्यक्त रूप ही कला का पक्ष है, जिसकी वास्तविक प्रेरणा मनुष्य को अलौकिकताकी अनुभूतिके पश्चात् ही मिलती है। इसीलिये भारतीय कलाकार आभ्यन्तर सौंदर्य से प्रभावित होता है—उसी का प्रभाव कृतिके बाह्य रूप पर भी लक्षित होता है। अखिल आकर्षण सौंदर्य और लयके प्रतीक विश्वकर्मा इसी कारण

कला के नायक कहे गए हैं। यह सन्देह हो सकता है कि क्या साधारण उपयोगी कालाकार भी इस गहराई को जानते थे। हां जिन्होंने अजंता, सांची, इल्लौरा जैसे स्थानोंमें अनुभूतियोंको रूप और वाणी प्रदान की है वे कला के इस उद्देश्य से अवश्य परिचित थे।

भारतीय समाज में इन कला-कृतियों और इनके निर्माताओं को अन्यथा दृष्टि से कभी नहीं देखा गया। वे पूज्य माने गए। मनुने उनके हाथों तक को पूत माना है। अभिषेकके अवसर पर भारतीय राजा स्वयं रथकार तकके घर जाता था और वहां उसका निवेदन होता था—

हिरण्यं च मे अयश्च मे श्यामं च मे
लौहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे।

पौराणिक कथानकों को देखा जाय तो यह भी ज्ञात होगा कि कर्तव्यपरायण कलाकारोंने उसी प्रकार मोक्ष-पद प्राप्त किया है जिस प्रकार कर्मकांडी या वेदज्ञ ब्राह्मण या युद्धमें वीर गति प्राप्त करनेवाला क्षत्रिय। ऋभुसने विलक्षण कला कृतिके कारण स्वर्ग प्राप्त किया। भारतीय शासकों ने भी इनकी रक्षा और इनके विकास का सर्वदा ध्यान रखा। मौर्य चन्द्रगुप्तने तो कलाकार को अनुचित कष्ट पहुंचाने वालों के लिए प्राण-दण्ड की व्यवस्था दी थी। अभिप्राय यह कि कला-निर्माताओं का समाज में बड़ा संमानजनक और उच्च स्थान था। संभवतः इसी कारण वैदिक काल में विभिन्न उद्योगोंकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्रिय तक लालायित रहता था। परन्तु कालांतर में जब इस शिक्षा और व्यवसाय का संबंध प्रधानतया शूद्रों से रह गया तब भी द्विजातियोंके लोग कतिपय कलाओंकी ही शिक्षा प्राप्त करते रहे। इस प्रकार प्राचीन भारत में बहुतसे लोग विभिन्न प्रकारके उद्योगोंके अध्ययन और उनकी उन्नति करने में लगे थे।

वैदिक कालके संघटित उद्योग आगे चलकर श्रेणियोंमें परिणत हो गये। यद्यपि वैदिक कालके प्रधान उद्योग धनुर्विज्ञान, अश्वकारी, रथकारी, लोहकारी, बढ़ईगीरी, औषध और खनि थे, तथापि आगे उद्योगोंका क्षेत्र क्रमशः व्यापक होता गया। जैसा कि 'मुगपक्ख जातक' से ज्ञात होता है विभिन्न उद्योगों और कलाओंकी सत्ताईस श्रेणियां बन गई थी। इन्हीं श्रेणियों (निगमों) द्वारा औद्योगिक शिक्षाका सचालन होता था। परन्तु शिक्षार्थीको नव-शिक्षार्थी (अप्रेंटिस) के रूपमें ही रहकर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती थी।

विज्ञानमुच्यते शिल्पं हेमकुप्यादिसंस्थितिः।
नृत्यादिकं च तच्छिक्षन्कुर्यात्कर्म गुरोर्गृहे॥

विद्यार्थी जो उद्योग सीखना चाहता था उसके कुशल ज्ञाताको वह गुरु या आचार्य बनाता था। गुरुके घर ही उसे रहना पड़ता था। अपने अभिभावकोंकी अनुमतिसे वह गुरुसे शिक्षा कालकी अवधि प्रारंभमें ही निश्चित कर लेता था। शिक्षक कोरा अध्यापक ही नहीं, उद्योग विशेषका व्यवसायी भी होता था। उद्योगके केंद्र कारखानेमें ही नव्य शिक्षार्थियोंकी शिक्षा चलती थी।

इस व्यवस्थामें शिक्षक और शिक्षार्थीको परस्पर कठोर नियमोंका पालन करना पड़ता था। इन्हीं नियमोंके प्रतिपालनका प्रभाव था कि निपुण कलाकारोंकी प्रत्येक क्षेत्रमें भीड़ लगी रहती थी। नारदने इन नियमोंका विस्तृत वर्णन किया है—

स्वशिल्पमिच्छन्नाहर्तुं बान्धवानामनुज्ञया।
आचार्यस्य वसेदन्ते कृत्वा कालं सुनिश्चितम्॥ १७॥

आचार्यः शिक्षयेदेनं स्वगृहे दत्तभोजनम्।
न चान्यत्कारयेत्कर्म पुत्रवच्चैनमाचरेत्॥ १८॥

शिक्षयन्तमदुष्टं य आचार्यं संपरित्यजेत्।
बलाद्वासयितव्यस्स्याद्व्रतबन्धौ च सोर्हति॥ १९॥

शिक्षितोपि कृतं कालमन्तेवासी समाप्नुयात्।
तत्र कर्म च यत्कुर्यादाचार्यस्यैव तत्फलम्॥ २०॥

गृहीतशिल्पः समये कृत्वाचार्यप्रदक्षिणाम्।
शक्तितश्चानुमान्यैनमन्तेवासी निवर्तते॥ २१॥

वेतनं वा यदि कृतं ज्ञात्वा शिष्यस्य कौशलम् ।
अन्तेवासी समादद्यान्न चान्यस्य गृहे वसेत् ॥ २२ ॥

इससे दो बातें समझ आती हैं—

१—प्रतिज्ञा-पत्रमें अध्यापक और विद्यार्थी दोनों नियत अवधिके लिये प्रतिश्रुत थे।

२—प्रतिज्ञा-पत्र समान रूपसे दोनों पक्षोंके कर्तव्योंका निर्धारण करता था।

आचार्यका शिष्यके प्रति कर्तव्य था कि—

१—उसे अपने पुत्र की भांति समझे।

२—उसे सचाई और निष्ठा के साथ पढ़ाए।

३—उसके समयका अन्यत्र उपयोग न कराए।

कात्यायनने तो यहां तक लिखा है यदि आचार्य विद्यार्थीको अन्य कार्यमें लगाए तो उसे दंड दिया जाय। इसी प्रकार शिष्यका आचार्यके प्रति कर्तव्य था कि—

१—वह शिक्षकके यहां ही निवास करे।

२—वह उसकी ही इच्छा और आज्ञाके अनुसार शिल्प-शिक्षा ग्रहण करे।

३—वह किसी भी दशामें अवधिके पूर्व आचार्य का त्याग न करे। यदि वह अवधिके पूर्व ही अपना उद्योग सीख जाता है तो यह आचार्यकी अनुकंपा, निष्ठा तथा सुभग प्रणाली का परिणाम है, अतः उसका कर्तव्य है कि शेष काल तक उसकी सेवा अपने शिल्प द्वारा करे।

यह था भारतीय औद्योगिक शिक्षा-प्रणालीका अनूठा विधान, जिसका उद्देश्य शिल्पकी शिक्षा मात्र नहीं था, बल्कि छात्रोंमें नैतिकताको उत्तरोत्तर दृढ़ बनाना भी था। उनकी ज्ञान-गरिमा विनयके आवरण से ढकी थी। वे समझते थे कि विद्या क्रयकी वस्तु नहीं है, क्योंकि—

एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद्दत्वाऽनृणी भवेत् ॥

औद्योगिक शिक्षाकी इस प्रणालीका यदि विवेचन किया जाय तो ज्ञात होगा कि अध्यापनके सभी कार्य अध्यापककी उद्योगशाला में होते थे। संसारके वर्तमान शिक्षा-शास्त्रियोंने पद्धतिकी इस स्वाभाविकता पर आश्चर्य और श्रद्धा प्रकट की है। यह विधि सबसे स्वाभाविक इसलिए है कि इसमें अध्यापकको विद्यार्थीकी सब कठिनाइयाँ आप ही ज्ञात हो जाती हैं। शिक्षक भी अपने गुणका कोई रहस्य छिपा नहीं सकता। सहज साहचर्य, पारस्परिक स्नेह, श्रद्धा और उत्तरदायित्वके बंधनने अध्यापनकी अनिवार्य क्लिष्टताको कितना सरल और साध्य बना दिया था, इसका आज हम अनुमान भी नहीं कर सकते।

धर्मशास्त्रोंके आधार पर यह कहा जा सकता है कि एक उद्योग ग्रहण करने वालेकी संतानको उद्योग-परिवर्तन करनेका अधिकार था। 'विनयपटक' और 'चुल्लवग्ग' में ऐसे बहुतसे उदाहरण हैं। एक जातक में एक दीन सार्थवाह एक सूचीकार और एक व्यापारीके पुत्रके साथ एक शिल्पीके यहां शिक्षा प्राप्त करता हुआ पाया जाता है। परन्तु कालांतरमें जब समान उद्योगवालोंने अपनी अलग जाति (ज्ञाति) बना ली तब किसी अन्य उद्योगवालोंका प्रवेश दुष्कर होता गया और शिक्षा-पद्धति भी परिवर्तित हो गई। अब शिक्षार्थीको किसी दूसरेके यहां नव्य शिक्षार्थी की भांति रहकर शिक्षा लेनेकी आवश्यकता नहीं रह गई। उसकी शिक्षा घर पर ही होने लगी। इस प्रकार शिक्षा-पद्धति घरेलू होती गई और लड़कोंको इच्छानुसार उद्योग ग्रहण करनेका अवसर नहीं रह गया। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यहां से भारतीय शिल्पके ह्रासका श्रीगणेश हुआ। यह क्रिया जब क्रमशः परिपक्व हुई तब जन्म ने ही व्यक्तिके उद्योग निर्धारित करनेका भार लिया। इसका परिणाम और बुरा हुआ; क्योंकि कितना ही प्रतिभावान् बालक क्यों न हो उसे अपने पिता या भाई को ही आचार्य बनाना पड़ता था। ऐसी अवस्था में जितना ज्ञान पिताका था, उससे अधिक जानने का रास्ता उसके लिये बन्द हो गया। भारतीय कला के इस प्रकारके व्यापक ह्रासका दायित्व कुछतो

जातियोंकी निश्चलता और कुछ पिछली शिक्षा-पद्धति पर भी रखा जा सकता है। ईसवी पूर्व २५० से ईसवी ५०० का युग भारतीय शिल्पका स्वर्णयुग बन गया था, क्योंकि उस समय उपर्युक्त शिक्षा-प्रणालीका प्रचार था। उन दिनों नव्य-शिक्षार्थियों की कला भी, उनके शिक्षण-कालमें ही प्रशंसनीय होती थी। मथुराके निकट झिंगकी यक्षिणी की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेखसे ज्ञात होता है कि वह शिल्पी कुणिकके नव्य-विद्यार्थी नाक द्वारा बनाई गई है।

कुमारस्वामीने बताया है कि शिल्प संबन्धी ज्ञानकी पूर्णताके लिये 'अथर्ववेद' के मंत्रों और बत्तीस प्रकारके शिल्पशास्त्रोंका ज्ञान तो कराया ही जाता था, विद्यार्थीको हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्मोंके सिद्धान्तों, भगवद्गीता, पौराणिक कथानक और 'रामायण' तथा 'महाभारत' की भी शिक्षा दी जाती थी। इनके ज्ञान बिना उनकी कलाकी अभिव्यक्ति ही ठीक नहीं हो पाती। अजंता, सांची और खजुराहोके शिल्पियोंके ऐतिहासिक और पौराणिक ज्ञानसे इसका अनुमान किया जा सकता है।

जब उद्योग जातिगत हो गए तब भी अपवाद स्वरूप दूसरे उद्योगोंके अपनानेकी संकुचित स्वतंत्रताके कुछ उदाहरण प्राप्त होते हैं। कुमार-गुप्तके मंदसोर लेखसे ज्ञात होता है कि कौशेय वस्त्र बनानेवाले तंतुवायोंका एक समूह लाटसे दशपुर गया और वहां उसने विभिन्न उद्योगोंको अपना लिया। औद्योगिक शिक्षा-पद्धतिमें इस उदारताका यह परिणाम हुआ कि कलाकारोंने—चाहे उनकी कला उपयोगी हो चाहे ललित—भारतीय संस्कृतिके निर्माणमें अतुल योग दिया। उनकी कृतियोंका भग्नरूप भी आज हमारे गौरवका उपलक्षण बना है।

आयुर्वेदीय शिक्षा-पद्धति—

यह स्पष्ट रूपसे नहीं कहा जा सकता कि आयुर्वेदकी शिक्षाके प्रधानतया कौन अधिकारी थे। इस विद्याके जाननेवालोंको ब्राह्मण-कालमें हेय दृष्टिसे देखा जाता था, ऐसा 'ब्राह्मण' ग्रन्थोंसे नहीं ज्ञात होता। परन्तु 'स्मृति' काल तक परिस्थिति भिन्न हो गई थी। 'स्मृतियों' में इन्हें 'पंक्ति-दूषक' कहा गया है, अर्थात् भोजमें इनके सम्मिलित होनेसे भोजकी महत्ता नष्ट हो जाती थी। वैद्योंको ब्राह्मण और वैश्यसे उत्पन्न वर्णसंकर भी कहा गया है। पुराणोंने भी इसकी पुष्टि की है। इसकी समीक्षा करते हुए डाक्टर अल्तेकरने बताया है कि पिछले दान-पत्रों और लेखोंसे यह बात नहीं प्रकट होती। बादमें स्मृतिकारोंकी धारणा छोड़ दी गई और आयुर्वेदका अध्ययन भी अन्य व्यवसायोंकी भाँति अभिनन्दनीय हो गया, क्योंकि ईसाकी प्रथम शतीके आचार्य चरकने इसका उद्भव बहुत ही दिव्य बताया है। उनका कथन है कि आयुर्वेदको सर्वप्रथम ब्रह्माने दक्षको पढ़ाया, दक्षने अश्विनी-कुमारोंको और अश्विनीकुमारोंने इन्द्रको, इस प्रकार पराशर, हारीतसे होते-होते यह विद्या धन्वंतरि तक पहुंची।

सामाजिक जीवनमें इसकी उपयोगिताका ध्यान रखते हुए इसकी शिक्षाकी व्यवस्था बहुत ही वैज्ञानिक ढंग पर की गई थी। प्रारम्भमें इसकी शिक्षा भी व्यक्तिगत रूपसे होती थी। तक्षशिला विश्वविद्यालयकी पद्धति यही थी। डाक्टर अल्तेकरका कथन है कि सामूहिकरूपसे इसकी शिक्षाका संघटन ईसाकी चौथी शतीसे प्रारम्भ होता है। नालंदामें भी औषध-शास्त्र एक पाठ्य विषय था, परंतु शिक्षाक्रमका क्या रूप था, यह नहीं कहा जा सकता।

'नन्दिपुराण' के वर्णनसे इस शास्त्रके पाठ्य विषयका पूरा पता चलता है। उससे निष्कर्ष यह निकलता है कि वनस्पति, विज्ञान, रसायनशास्त्र, शल्य-शास्त्र, औषध-विज्ञान, औषध-निर्माण-शास्त्र (फार्मेसी) और निदानका अध्ययन व्यापकरूपसे कराया जाता था। इन सबकी शिक्षा, सिद्धांत और

प्रयोग दोनों विधियों द्वारा होती थी। वनस्पति-विज्ञानकी शिक्षामें वृक्ष, लताओं और तृणोंकी पहचान, उनके उत्पन्न होनेका स्थान और उनके अंग-प्रत्यंगके गुण दोषका ज्ञान कराया जाता था—इसके लिए हिमालय और विंध्यके वनोंमें छात्रोंको भ्रमण करना पड़ता था, छात्रोंको इसका विशेष ज्ञान कितना गहन और व्यापक होता था, यह एक उदाहरणसे स्पष्ट हो सकता है। तक्षशिलाका प्रसिद्ध स्नातक और शिशु-रोगका विशेषज्ञ जीवक जब सात वर्षोंके अनवरत अध्ययनके पश्चात् आचार्य आत्रेय से विदा ले रहा था, तब उनकी आज्ञा हुई कि तक्षशिलासे पन्द्रह मीलके भीतर जितनी वनस्पनियां—वृक्ष, शाक, लता, तृण और जड़मूल—मिलें उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गके औषध सम्बन्धी उपयोगोंका पता लगा कर लाओ, तब अन्तिम आशीर्वाद प्राप्त होगा। केवल चार दिनोंके भीतर जीवक इस कठोर आज्ञा का पालन कर लौटा और उसने विवरण दिया कि मुझे कोई ऐसा पौधा नहीं मिला जिसका उपयोग न हो सके।

शल्य-चिकित्साके क्षेत्रमें भी उनकी शिक्षा उच्च कोटिकी होती थी। 'सुश्रुत' से तत्कालीन शल्य-चिकित्साकी शिक्षाका विस्तृत परिचय प्राप्त होता है। प्रारम्भमें विद्यार्थियोंको चीर-फाड़के लिए कुष्मांड (कद्दू), तरबूज, ककड़ी आदि दी जाती थी। इसके बाद वे जीवों पर अभ्यास प्रारम्भ करते थे। शल्य-सम्बन्धी अस्त्रोंका वर्णन पढ़ने पर आज भी हमें आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। उनकी सूक्ष्म वैज्ञानिकता देखनेसे सहज ही अनुमान हो जाता है कि शल्यकी कितनी उन्नति हुई थी। किसी मुख्य रोगका विशेषज्ञ होनेकी प्रथा तब भी थी।

परिचारिकाओं और औषध बनानेवालोंकी भी शिक्षा होती थी। उत्तरकालीन युगमें परिचारिकाएं प्रायः भिक्षुणियां ही थीं। श्रीयुत दासकी उक्ति है कि वे लोग भी परिचारक होते थे जिनकी सहज अभिलाषा प्राणीवर्गकी सेवा सुश्रूषाकी ओर लगी रहती थी। सेवा-सुश्रूषा, औषध पिलाना, उन्हें पहचानना, उनके गुण दोष, प्रतिक्रियाका ज्ञान करना उनकी शिक्षाके प्रधान विषय थे।

पशु-चिकित्सकोंकी शिक्षा-व्यवस्था अलग की गई थी। पशु-चिकित्साकी चर्चा 'महाभारत' में ही मिलती है। उसी समय विभिन्न पशुओंकी चिकित्साके विशेषज्ञ होने लगे थे। नकुल और सहदेव कुशल पशु-चिकित्सक थे। अश्व और हस्ति-चिकित्सा का उनका ज्ञान बहुत बढ़ाचढ़ा था। 'अश्वायुर्वेद' के संस्थापक सम्भवतः शालिहोत्र थे। जयदत्त और नकुलने अश्व-चिकित्सा पर पुस्तकें लिखी थीं। हस्ति-आयुर्वेदके प्रकाण्ड पण्डित पालकव्य चम्पाके निवासी थे। इन कतिपय उदाहरणों से प्राचीन पशुचिकित्साका आभास हमें मिल जाता है। उसके विकासका भी स्वरूप मिलता है। अशोकके समय यह पराकाष्ठा पर पहुँची प्रतीत होती है। अशोकके दूसरे स्तम्भलेखमें पशुओंके लिए चिकित्सालयका वर्णन मिलता है।

यह जानकर आश्चर्य होता है कि उन्हीं गौरवमय दिनोंमें प्राणि-चिकित्साके साथ ही वृक्ष-चिकित्साका कितना उत्थान हो चुका था। 'अग्निपुराण', 'कामंदक नीतिसार' और 'बृहत्संहिता' से इस विज्ञान के विषयमें प्रभूत ज्ञान प्राप्त होता है। वृक्षोंके रोगों का निदान, औषध, उपचार आदि सब इस विज्ञान के अङ्ग थे। इसके अध्ययनके लिए वृक्ष-चिकित्सकोंको अरण्य-निवासी ऋषियोंसे लेकर चरवाहों तकसे शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती थी।

आयुर्वेदकी शिक्षाकी यह सुदृढ़ पद्धति शताब्दियों तक अबाधरूपसे चली। ईसाकी आठवीं शतीमें अरबके प्रसिद्ध खलीफा हरूमने अपने यहां से कई विद्वानोंको हिन्दू-चिकित्सा-शास्त्रके अध्ययन के लिए भारत भेजा था। इसके अतिरिक्त कितने भारतीय चिकित्सकोंको अपने यहां प्रधान चिकित्सक पदों पर नियुक्त किया था। कितने ही आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको अरबीमें अनूदित कराया था।

संग्रहीत

किस व्यापारके लिये कितनी पूंजी ?

(१) ३०००००) की लागतसे साबुनकी फैक्टरी या मशीनोंका उद्योग आरम्भ हो सकता है।

(२) सेफ्टी रेजरके ब्लेड बनानेके उद्योगके लिये ५० हजार रुपयेकी आवश्यकता होती है।

(३) १ लाख रुपयेकी लागतसे ताम चीनीके बर्तन बनानेका उद्योग आरम्भ किया जा सकता है।

(४) २० हजार रुपयेकी लागतसे कृत्रिम रेशम बनानेका कार्य चल सकता है।

(५) कांचका कारखाना चलानेके लिये ५० हजार रुपयेकी आवश्यकता होगी। इसीमें सिलीकेट सोडा भी बन सकेगा।

(६) तैल पेलनेकी मिल चलानेके लिये ५० हजार रुपये चाहियें।

(७) बिजलीकी कलई करनेके कारखाने पर १० हजार रुपये लगते हैं।

(८) अखबारी कागजकी मिल स्थापित करनेमें ३० लाख रुपये लगेंगे।

(९) कारबन पेपर तैयार करनेका उद्योग १ लाख रुपयेकी लागतसे आरम्भ हो सकता है।

(१०) छापेकी स्याहीका कारखाना २० हजार रुपयेसे चालू होगा।

(११) जूट मिल चालू करनेके लिये ५ लाख रुपये आवश्यक होंगे।

(१२) ५० हजार रुपयेकी लागतसे बारले फैक्टरी चालू हो सकती है।

(१३) टिनकी वस्तुयें बनानेका कारखाना ५० हजार रुपयेकी लागतसे प्रारम्भ हो सकता है।

(१४) रबर स्टैम्प बनानेकी फैक्टरीके लिये १०००) चाहियें।

(१५) डबल रोटी तथा बिस्कुटकी फैक्टरी चलानेके लिये १० हजार रुपये चाहियें।

(१६) १० लाख रुपयेसे कागजका कारखाना चालू हो सकता है।

(१७) टाइप फाउंडरी चालू करनेके लिये २५ हजार रुपये चाहियें।

(१८) खिलौना बनानेका कारखाना ५०००) से चालू हो सकता है।

(१९) कीलें बनानेका कारखाना ५ लाख रुपयेकी लागतसे चल सकता है।

(२०) चीनी बनानेका कारखाना ५ लाख रुपयेकी लागतसे चल सकता है।

(२१) मैदा तथा सूजीका कारखाना १ लाख रुपयेमें चालू हो सकेगा।

(२२) रबरके सामानका कारखाना ५ लाख रुपयेमें चालू होगा।

(२३) चीनी मिट्टीके बर्तनोंके कारखानेके लिये ५ लाख रुपये चाहियें।

(२४) लालटेन बनानेका कारखाना चालू करनेके लिये ५ लाख रुपये चाहियें।

(२५) सीमेंटके कारखानेके लिये प्रारम्भमें १ लाख रुपये चाहियें।

(२६) मेल आर्डर बिजनैस (पत्रव्यवहार द्वारा व्यापार) के लिये १० हजार रुपयेकी आवश्यकता होगी।

(२७) सिगरेट बनानेका कारखाना खोलनेके लिये १० लाख रुपये चाहियें।

(२८) दियासलाईका कारखाना चालू करनेके लिये ५ लाख रुपयोंकी आवश्यकता होती है।

(२९) पट्टेके डिब्बे डिबिया आदि बनानेका कारखाना चालू करनेके लिये ५ लाख रुपयेकी आवश्यकता होगी।

(३०) हैवी कैमीकल्स (बड़े रासायनिक पदार्थ) बनानेका कारखाना ५० हजार रुपयेसे चालू हो सकेगा।

(३१) रेडियो बनानेका उद्योग १ लाख रुपयेसे चल सकता है।

—विज्ञान-कला

वायदा व्यापार—

तेजी-मन्दी लगाना और खाना

[लेखकः—श्री स. अ. रानडे. बी. ए. (आनर्स) बी. टी. एडवोकेट]

"वायदे-बाजार" सभी देशोंमें सर्वत्र खुले तौर पर चलते हैं। भारतमें युद्धके पूर्व रुई, सोना-चांदी, तिलहन आदिके बाजारोंमें यह धन्धा बराबर जारी था। मालवाले अपना माल बेच सकें और खरीदनेवाले खरीद सकें यही एकमात्र उद्देश्य वायदे-बाजारों का होता है। पर हां, यह डिलिवरी वायदेके अन्तमें देनी और लेनी होती है।

सौदा बराबर करना—

ऐसे वायदोंकी अवधि हमेशा छः माहकी होती है, जिसके दरमियान भावमें काफी घटाबढ़ी हो जाती है। यद्यपि वादेके अन्तमें डिलिवरी देने-लेनेका वायदा होता है तथापि बीचमें भी बिका हुआ माल खरीदा जा सकता है अथवा खरीदा हुआ माल बेचा जा सकता है। इसीको "सौदा बराबर करना" (jobbing) कहते हैं।

यद्यपि यह अवधि छः माहकी होती है तथापि प्रति माह हिसाब-किताब (Clearing) होता है। जिसके अनुसार हर महीनेकी निर्धारित तारीखको जो भाव होगा उसके अनुसार लेन-देनसे निपटकर हिसाब होता है और मुनाफा मिल जाता है अथवा घाटा पूरा कर देना पड़ता है। इसमें सबसे बड़ा लाभ यह है कि पैसा भरनेकी हैसीयत न रखनेवाला मनुष्य मनमाना झूठमूठ धन्धा नहीं कर सकता। मौके पर लेन-देनमें वायदेकी अवधि प्रायः एक माहकी ही होती है। फिर भी किन्हीं किन्हीं बाजारोंमें प्रति माह हिसाब-किताब (Clearing) के पहलेके भावमें कुछ हेरफेर होते ही पुनः हिसाब-किताब हो कर नफा-नुकसान लेना-देना पड़ता है और बाजारमें जब सरगर्मी चलती है तथा भावोंमें उथलपुथल मच जाती है तब कच्चे लोग उक्त हिसाब-किताबके कारण बड़ा धन्धा करने नहीं पाते और ऐसे अवसर पर भुक्कड़ सटोरियोंका भेद तुरन्त खुल जाता है।

वैसे तो कहनेके लिये वायदा महीनेका ही होता है; पर उसकी असली मियाद छः माहकी रहती है। इन दोनों बातोंका प्रभाव बाजार पर सदा होता ही रहता है; क्योंकि बाजारमें तेजी-मन्दी लगाना और खाना माहवारी हिसाब-किताब तक ही सीमित रहता है। कई बार पूरे वायदेके लिये भी इस प्रकार तेजी-मन्दी खाई जाती है।

तेजी-मन्दी लगाना और खाना—

(Option Business) तेजी मन्दी लगाना और खाना भारतीय वायदे बाजारोंकी विशेषता है, जिसका प्रभाव बाजार पर सदा होता है। मान लीजिये, रुईका भाव ४००) रु० है और मेरे अनुमानके अनुसार उसके ४००) रु० से घटने की सम्भावना है। अतः मैंने अपनी रुई ४००) रु० में बेच दी और मन्दीके बदले तेजी हो जाने पर (४५०) का भाव होने पर) मुझे प्रति खण्डी ५०) रु० भरना पड़ेगा। उल्टे मैंने ४००) रु० में रुई खरीदी और उसका भाव एकदम गिर पड़ा (३५० रु० हो गया) तो भी मुझे ५०) रु० भरना होगा। इस व्यवहारमें माल खरीदना तेजीका और बेचना मन्दीका धन्धा हो गया। हम धन्धा कैसा भी क्यों न करें, बाजारका रुख हमारे विरुद्ध होते ही हमें नुकसान भरना ही होगा।

प्रत्यक्ष रूपसे धन्धा करनेवालोंको घाटा उठानेकी काफी तैयारी रखनी पड़ती है। पर कई लोगोंकी ऐसी तैयारी नहीं रहती। दूसरी बात यह भी है कि जोखिमका धन्धा करनेवालोंको हमेशा बाजारमें हाजिर रहना ही पड़ता है; क्योंकि सट्टा आखिर शैतान ही तो है। कब तूफान आवेगा कहना मुश्किल है। हम दस मिनट भी बाजारसे दूर रहें, तो उसीके बीच पता नहीं क्या हो जायगा। कभी घटा-बढ़ीका तूफान आ जाता है, कभी कोई

सनसनीखेज खबर आते ही खानगी सौदे पट जाते हैं; चाहे बाजार खुला हो अथवा न हो। ऐसे अवसर पर हम यदि बाजारसे दूर रहे तो इस घटनासे लाभ नहीं उठा सकते। नये लोगोंके लिये तेजी-मन्दी लगाकर धन्धा करना पैसा कमानेका एक अच्छा रास्ता है।

तेजी-मन्दी सही निकलना—

उक्त मन्दीके धन्धेमें तेजीकी सम्भावना थी, जिसके सही निकलने पर बड़ा भारी घाटा उठानेका डर है। अतः मन्दीका धन्धा करते हुए तेजी लगाये रखनेसे कोई ज्यादा नुकसान नहीं उठाना पड़ता। तेजीकी यह दर (रेट) बाजारकी घटा-बढ़ीके अन्दाज पर अवलम्बित होती है। जब बहुत कुछ घटा-बढ़ीकी सम्भावना रहती है तब यह दर ऊंची रहती है। महीनेके प्रारम्भमें भी वह काफी ऊंची रहती है। वायदेकी मियाद जैसे-जैसे घटती जाती है वैसे वैसे यह दर प्रायः घटती जाती है। यह दर १०) रु० की है ऐसा मान लेने पर प्रति खण्डी तेजीका अधिकसे अधिक नुकसान केवल १०) रु० ही उठाना पड़ेगा। हिसाब (Clearing) के दिन अथवा उसके आसपास तेजी-मन्दी एक-सी या ठीक हो जाती है। इसीको 'तेजी-मन्दी सही निकलना' कहते हैं।

उक्त उदाहरणमें जिस प्रकार तेजीकी दर १०) रु० मान ली गई है उसी प्रकार मन्दीकी बाजूमें भी १०) रु० की दर होती है। मतलब, दोनों मिलाकर २०) रु० होते हैं। उक्त उदाहरणमें एक बाजूका धन्धा करते हुए दूसरी बाजूमें तेजी या मन्दी लगाई गई है। इसमें बाजारका रुख यदि हमारे विरुद्ध रहा तो तेजी अथवा मन्दीके पैसोंसे हमें सीधे हाथ धोना पड़ता है।

"जोटा" लगाना—

ऐसा न हो इसलिये तेजी और मन्दी दोनों एक साथ लगाई जा सकती हैं, इसीको नजराना लगाना कहते हैं। जैसा कि ऊपरके उदाहरणमें हमने देखा, तेजी और मन्दी दोनों लगाई जाने पर प्रति खण्डी १०+१० =२० रुपये होते हैं। मानलें कि ४०० रु० के भाव पर हमने तेजी-मन्दी २० रु० लगाई। इसीको नजराना या "जोटा लगाना" भी कहते हैं। प्रत्येक बाजारमें तेजी-मन्दी सही निकलनेका दिन तय रहता है, जब कि तेजी-मन्दीके सारे सौदे बराबर कर लिये जाते हैं।

तेजी-मन्दी लगानेका धन्धा कैसे होता है?—

मान लीजिये ४०० रु० के भाव पर आपने २० रु० तेजी-मन्दी लगाई और तेजी-मन्दी सही निकलनेके लिये अभी बीस दिन बाकी हैं। ऐसे अवसर पर तेजी लगा कर आप चुपचाप बैठे हैं। अब भाव भले ही ४५० रु० का हो अथवा ३५० रु० का आपको प्रति खण्डी २० रु० से अधिक घाटा कतई नहीं उठाना पड़ेगा।

पर तेजी-मन्दीका हिसाब तेजी-मन्दी सही निकलनेके दिन ही होता है। उदाहरणार्थ शेष बीस दिनमें भाव ३५० रु० और ४५० रु० हो गया और आखिरमें तेजी-मन्दी सही निकलनेके दिन भाव फिरसे ४०० रु० पर आ गया और उसी भाव पर तेजी-मन्दी सही निकली तब तो आपको कुछ भी नहीं मिलेगा। उल्टे, २०) रु० खोना पड़ेगा। ऐसी अवस्थामें तेजी-मन्दी लगानेका धन्धा कैसे करना चाहिये इसकी कल्पना निम्न विवरण से हो सकती है—

तेजी-मन्दी लगानेवाला स्वतंत्र रूप से बाजार में अपना धन्धा करता है। साधारणतः यह देखा जाता है कि तेजी-मन्दी के पैसे मिलने लायक भाव कम ज्यादा हो जाने पर धन्धेवाला खरीद बिक्री करता है। उक्त उदाहरण में ४०० रु० के भाव पर २० रु० तेजी-मन्दी लगाई गई है। पर तेजी-मन्दी लगानेवाला मनुष्य केवल तेजी-मन्दी लगाकर ही चुपचाप नहीं बैठता। अपनी कल्पना के अनुसार वह धन्धा करता ही रहता है। चार-पांच दिन में भाव ३८५ रु० हो गया और तेजीका रुख दिखाई देने लगा तो वह बाजारमें रुई खरीद लेगा और पुनः चार-पांच दिनमें भाव ४०५ रु० तक चढ़ गया तो बेच भी डालेगा। इस प्रकार प्रति खण्डी २० रु० तेजी-मन्दी भरने पर उसको दो-तीन बार मिलाकर कमसे कम ६०-७० रु० का फायदा होनेकी सम्भावना रहती है। इस रकममेंसे तेजी-मन्दीके २० रु० घटा देने पर बाकी बचने वाले ४०-५० रु० मुनाफा उसके जेबमें आजाता है। मान लीजिये कि तेजी-मन्दी लगानेसे लेकर तेजी-

मन्दी सही निकलते तक भावमें निम्न घटा—बढ़ी हो गई—

४००, ३६८, ३६३, ३६१, ३६६, ३६२, ३८८, ३८५, ३८७, ३६३, ३६०; ३६५, ३६८, ३६४, ४००, ४०२, ४०५, ४०१. ३६८, ४०२ ४०८, ४१२, ४०६, ४०३, ४०६,

ऐसी विचित्र घटा-बढ़ीमें किसी भी पक्षका (तेजी अथवा मन्दीका) धन्धा लाभदायक अथवा हानिकारक हो सकता है। अतः तेजी-मन्दी लगाकर धन्धा करना ही प्रायः उचित होता है।

इसमें और एक तरीकेसे धन्धा किया जाता है। मान लीजिये ४०० रु.का भाव ३७५ हो गया और उस समय तेजी-मन्दी १५ रु. है। ऐसे अवसर पर ३७५ रु के भाव पर २५ रु. मुनाफा है। पर मुझे तो मेरी अपनी लगाई तेजी-मन्दीके २० भरना है। निकट भविष्यमें कोई बड़ी घटा बढ़ीकी सम्भावना दिखाई नहीं देती। ऐसी अवस्थामें मैं तेजी-मन्दी २५ रु. खा जाऊंगा। भाव ३७५ रु.के नीचे कितना भी क्यों न गिरे, वह पैसा तो आखिर मेरे ही जेबमें ही आनेवाला है और आगे चलकर मेरे १५ रु. खानेसे ३७५+१५=३६० रु.का भाव होने तक मुझे कोई भी चोट नहीं है। वैसे ही, ऐसी तेजी-मन्दी खाकर मैं यदि ३७५ रु.में खरीदी करता हूँ तो मुझे २५+१५-२०= २० रु. प्रति खण्डी मुनाफा होने ही वाला है। भाव और १५ रु. घट गया तो अधिकसे अधिक क्या नुकसान होगा? केवल तेजी-मन्दीके रुपये खाने पड़ेंगे इससे अधिक कोई भय नहीं। इस प्रकार तेजी-मन्दी लगाकर धन्धा किया जाता है। इतने पर भी दावेसे यह नहीं कहा जा सकता कि तेजी-मन्दी लगानेमें हमेशा पैसा मिलेगा ही; और मिला भी तो आमदनीकी मात्रा बहुत ही अल्प रहती है। इसका कारण यह है कि तेजी-मन्दीका लगाया पैसा हमें देना ही पड़ता है और किसी भी एक बाजूकी घटा-बढ़ी कोई एकदम जोरोंकी नहीं होती। उदाहरणार्थ, ४०० रु. का भाव ३८० रु. होनेके लिये कभी कभी १५-२० दिन भी लग जाते हैं। आगे चलकर भाव ३७५ रु. तक गिरकर पुनः ३८५ रु० होनेकी भी सम्भावना होती है, जिसके कारण तेजी-मन्दीकी रकम वसूल होकर ऊपर दो-चार रुपये ज्यादा मिलनेकी सम्भावना दिखाई देते ही तेजी-मन्दी लगानेवाला तुरन्त इतना मुनाफा अपनी जेबमें डाल लेता है, अतः आगे चलकर उसी बाजूमें बाजार काफी नीचे गिर पड़ा अथवा ऊंचा चढ़ा तो भी उसका इस धन्धेवालेको कोई विशेष लाभ नहीं मिलता। तेजी-मन्दीके धन्धेका यह सबसे बड़ा दोष है। इसीलिये बड़े बड़े सट्टेवाले तेजी-मन्दी लगानेकी सलाह प्रायः नहीं देते। पर साथ ही यह भी पक्की बात है कि जब बड़ी सरगर्मी की चढ़ा-बढ़ी रहती है, तब ऐसे अवसर पर तेजी-मन्दी लगाना और गली डालना ही सर्वथा लाभदायक होती है।

गली डालना----

हमने देखा है कि तेजी-मन्दी चालू भावों पर ही लगाई जाती है और उसका रेट भी ज्यादा रहता है। उक्त उदाहरणमें यह रेट प्रति खण्डी २० रु० का लगाया गया था, जिसके अनुसार १०० खण्डीके दो हजार रुपये होते हैं। पर इतनी बड़ी रकम एकदम न लगानी हो अथवा इसी रकममें एकदम मुनाफा खाने या उतना ही घाटा उठानेकी तैयारी हो तो किसी निर्धारित प्रति सैंकड़ेके फेर के हिसाबसे भी तेजी-मन्दी लगाई जा सकती है। उदाहरणार्थ-उपर्युक्त तेजी-मन्दी ४०० रु.के भाव पर २० रु. है। पर यदि वही प्रति सैकड़ा २०के फेरसे लगाई जाये तो वह ५-६ रु. ही हो सकती है। इसके माने ये होते हैं कि ४००-२०=३८०रु० की मन्दी और ४००+२०= ४२० रु.की तेजी हमने लगाई है। इसीको 'गली डालना' कहते हैं।

भविष्यमें कोई विशेष घटा बढ़ीकी आशा हो तभी (और एकाध बार ही) इस प्रकारकी गली डालना लाभदायक हो सकता है। इसका भी कोई ठिकाना नहीं रहता कि अनुमानके अनुसार घटा-बढ़ी होगी ही। कभी-कभी गली डालकर दूसरेही ढंगसे धन्धा किया जाता है। ४०० रु. पर प्रति सैंकड़ा २०के फेरकी ५रु.की गली हमने डाली है और भाव सहसा ३८५रु. हो गया तो ऐसे मौके पर माल लेनाही हमारे लिये हितकारी सिद्ध होगा; क्योंकि

उसके पश्चात् भाव एक बार ३६०-६२रु.हो जाने पर गलीका पैसा वसूल हो जाता है और बादमें भाव घटकर ३८० रु. तक गिर पड़ा तो भी बराबर लाभ होता ही है।

इसके अतिरिक्त दूसरे तरीकेसे भी गलीसे फायदा उठाया जा सकता है। उदाहरणार्थ—भाव ३८५रु.हो गया और तेजी-मन्दी १५रु. । ऐसे अवसर पर उसको खा जानेसे ३८० रु.के नीचे मिलने वाले पैसेही हमें केवल खोने पड़ेंगे और ऊपरसे पांच रुपये दक्षिणादेनी होगी। फिर भी मन्दीके धन्धेमें १५-५-५=५ रु. मुनाफा बना ही रहता है। अच्छा भाव ऊपर चढ़ा तो भी ३८५+१५-५=३९५ रु.के भाव तक घाटेका कोई खास खतरा नहीं है।

फिर भी तेजी-मन्दी लगाकर अथवा गली डालकर धन्धा करना कोई आसान काम नहीं है। उसमें भी कुशलता और बुद्धिमानीसे काम लेना पड़ता है। बाजारकी प्रवृत्ति और रुखका ठीक-ठीक अनुमान लगानेके लिये अनेक बातोंका ज्ञान रहना आवश्यक होता है और इन सब पर तेजी-मन्दी लगाने और खानेका असर अवश्य पड़ता है।

तेजी-मन्दी खानेके तरीके—

उक्त उदाहरणमें ४०० रु.के भाव पर २० रु० तेजी-मन्दी लगाई गई है। आखिर कोई न कोई यह पैसा खाने वाला ही है। मान लीजिये तेजी-मन्दी सही निकलनेके दिनका भाव है ४५० रु.। ऐसी अवस्थामें तेजी-मन्दी ४०० रु. पर लगाई और ४५० रु. पर सही निकली तो लगानेवालेको ५० रु. मिलेंगे और उसमेंसे लगाये हुए २० रु. घटकर उसके हाथमें ३० आएँगे। यह स्पष्ट है कि ये ३० रु. तेजी-मन्दी खाने वालेको ही देने होंगे। साथ ही यह भी स्पष्टहै कि किसी मनुष्यने उसी भाव पर इस प्रकार की १०० खण्डीकी तेजी मन्दी खाई हो तो उसको ३००० रु. अपनी जेबसे भरना होगा।

पर तेजी-मन्दी खानेवाला भी यह पैसा अपनी जेबसे नहीं भरता। तेजी-मन्दी खाता हुआ बाजार में वह अपनी कुशलतासे उस तेजी-मन्दीके हिसाबके अनुसार व्यापार करता ही रहता है और इस प्रकार लगाने और खाने वाले दोनों अपनी अपनी दृष्टिसे व्यापार करते हैं। फलतः भारतीय बाजारोंमें कई बार विचित्र ढङ्गका परिवर्तन हो जाता है।

४०० रु० पर १०० खण्डीकी तेजी-मन्दी खाने वाला भी हाथ पर हाथ रखे बैठा नहीं रहता। उसका भी धन्धा बराबर जारी रहता है और धन्धा उसका स्वतः का हो तो स्वतः का और तेजी-मन्दीका भी धन्धा वह करता रहता है। उदाहरणार्थ यदि वह ४०० रु० के भावमें मन्दीमें हो तो पहले केवल १०० खण्डी ही बेचेगा। ३९५ रु० के भाव में पुनः १०० खण्डी बेचेगा और ३८० रु० के भावमें सारा २०० खण्डी खरीद लेगा। मान लीजिए ऐसे व्यवहारमें उसने प्रति खण्डी पीछे पहले १५ दिनमें स्वतन्त्र रूप से ७॥ रु० की कमाई की। आगे चल कर भाव ४०० रु० पहुँच जाने पर उसने पुनः रुई खरीद ली। माना कि यदि ४५० रु० पर तेजी-मन्दी सही निकली तो उसको हर खण्डीके पीछे ४५०-४००-२० = ३० रु० भरना होगा। पर उतनी खरीद तो वह ४०५ रु० के भावमें कर ही चुका है। इसमें उसको ४५०-४०५=४५ मुनाफा है, जिसमें से वह ३० रु० देगा। इस प्रकार शेष १५ रु० और उक्त ७॥ रु० मिला कर २२॥ रु० मुनाफा प्रति खण्डी बच ही जाता है।

परन्तु प्रत्यक्ष व्यवहारमें ऐसा कभी नहीं होता तेजी-मन्दी खाने वाले को कई बार बाजारके हेरफेर के अनुसार चक्कर खाना पड़ता है। ठीक तरीकेसे तेजी मन्दी खानेवाले को (यदि वह सतर्क हो तो) प्रायः घाटा उठाने की सम्भावना नहीं रहती। पहले १५ दिनोंमें भावका हेरफेर ४१०) रु० और ३८० रु० के इर्द गिर्दमें रहा और तेजी-मन्दी २० रु० से लेकर १२ रु० तक रही और ४१०, ४००, ३८०, ३८२, में से हर एक भाव पर १०० खण्डीकी प्रत्येक तेजी-मन्दी खावे, तो १६×४००=६४०० रु० उसको तेजी-मन्दीके मिल जायेंगे। अन्तमें ३९५ रु० पर तेजी-मन्दी सही निकली तो भी औसत तेजी-मन्दी १६ रु० रहनेसे उस में से उसे किसीको कुछ भी देना नहीं पड़ेगा। यदि यह तेजी-मन्दी खाना हो तो भिन्न-भिन्न भावों पर नियमित रूप से और हिसाबसे खाना आवश्यक रहताहै; जिसमें कोई

अधिक नुकसान उठाना न पड़े। साल भरमें यदि २० रु० औसत भावमें कुल २४० रु० खाए हों तो अधिकसे अधिक १८०—२०० रु० देने पड़ेंगे और बाकी बचा हुआ मुनाफा रहेगा; पर खानेका धन्धा लगातार बारहों माह और भिन्न-भिन्न भावों पर करना पड़ता है।

तेजी-मन्दीका बाजार पर असर—

अब हम यह देखें कि तेजी-मन्दीका असर बाजार पर क्या होता है? रुई पहले दस दिनमें ४०० रु० से लेकर ४१० रु० के बीच चक्कर काट रही है और तेजी मन्दी १०-११ रु० है। ४२५ रु० की तेजी २ रु० काफी है ऐसे अवसर पर (मान लीजिए) किसी कल्पनाहीन कारणसे बाजार सहसा चढ़कर ४२७ रु० हो गया तो ४१० रु० के बाजारमें ४२७ रु० का भाव बहुत ही ऊँचा—एकदम ऊँचा (Steep Rise) कहना होगा। अतः यह भाव किसी भी नये खरीदारके लिये ठीक नहीं है; फिर भी ऐसे समय पर भाव ४४० रु० तक बढ़जाने की काफी सम्भावना होती है।

इसकी वजह यह है कि जो ४२५ रु० की २ रु० तेजी खा गए हैं; उनके लिये ४२७ रु० बिक्रीका भाव हो जाता है और लगाने वालोंके लिए खरीदी का। मतलब, खाने वालोंने यदि ४२७ रु० के खुले बाजारमें माल न खरीदा और भाव लगातार तेज होता चला गया तो ४२७ रु० के ऊपर भाव जितना बढ़ेगा (जिस पर तेजी-मन्दी सही निकलेगी वह अधिकसे अधिक भाव) उतना घाटा उसको अपनी जेबसे पूरा करना पड़ेगा। पर ऐसा घाटा न उठाना पड़े, इसी लिए ऐसी तेजी-मन्दी खानेवाले लोग खुले बाजार में खरीदी करते हैं और वे भी खरीदने के लिए बाजारमें आते हैं जो पहले मामूली तेजी-मन्दी खा चुके हैं। इसके अलावा तेजी-मन्दी लगाने वाले भी पहुंच जाते हैं। ऐसी अवस्थामें जिन बातोंका बाजार पर वास्तवमें प्रभाव पड़ना चाहिये, नहीं पड़ने पाता।

मन्दीके बाजारमें ठीक इसके विपरीत हाल रहता है। मतलब तेजी-मन्दी लगाने और खानेसे बाजारमें बनावटी घटाबढ़ी हो जाती है।

प्रत्यक्ष धन्धा करने की आवश्यकता—

उक्त विवरण पढ़ने पर भी पाठकोंको शायद तेजी-मंदी लगाने और खानेके धन्धोंका पूरा ज्ञान न हो सकेगा। अतः उन्हें चाहिए कि या तो स्वतः प्रत्यक्ष रूपसे तेजी मन्दी लगाकर वे धन्धा करें अथवा यह कल्पना करते हुए कि दो मित्रोंने आपसमें तेजी-मन्दी लगाई और खाई है बाजार का अध्ययन और निरीक्षण करें जिससे इस धन्धेकी कई प्रमुख बातें समझमें आ सकेंगी।

[४२ पृष्ठ का शेष]

कहनेका प्रयोजन यह कि भारतीय प्राचीन-शिक्षा-पद्धतिमें प्रत्येक व्यवसायके शिक्षणका इतना सुचारु आयोजन हुआ था कि कलाका प्रत्येक अङ्ग स्वच्छन्द रूपसे उन्नति कर सका और भारत पड़ोसी देशोंके लिये शिक्षा-केन्द्र बना रहा। इस सम्बन्धमें मैक्सम्यूलरके ये वाक्य स्मरण रखने योग्य हैं—

'मानव ज्ञानके किसी भी क्षेत्रके विशेष अध्ययनके लिये—चाहे वह भाषा हो या धर्म, पुराण हो या दर्शन, विधान हो या आचार, प्राचीन कला हो या विज्ञान—भारतवर्षमें ही जाना पड़ेगा; यह दूसरी बात है कि कोई जाना ही न चाहे। इसका कारण यह है कि मनुष्य मात्रके इतिहासकी कुछ ऐसी अमूल्य और शिक्षाप्रद वस्तुएं हैं, जो भारतके ही कोशमें सुरक्षित हैं—अन्यत्र नहीं।

ग्रामीण-उद्योगोंके विकासके लिये

[श्री निरञ्जनलाल जी गौतम]

ग्रामीण-उद्योग-धन्धे—

भारतवर्षमें उद्योग धन्धोंसे औसतन वार्षिक आमदनी प्रति व्यक्ति १५) रु० है, जब कि ब्रिटेन और अमेरिकामें यह आमदनी क्रमशः ७००) रु० और १०००) रु० है। इस स्रोतसे आमदनी कम होने के कारण जनताकी निर्धनता और घोर दुःख ही हो सकता है। इसलिये देशके प्रत्येक समझदार व्यक्तिका कर्तव्य है कि इस त्रुटिके निवारण के लिए निम्न कार्यवाही करे।

इस त्रुटिके निवारणके कई मुख्य उपाय हो सकते हैं। सबसे मुख्य उपाय यह है कि भारतके ग्रामोंमें उद्योग-धन्धों और विशेष कर गृह-धन्धोंको अपनाया जाए और उन्हें अधिकसे अधिक उन्नत किया जाए। घरेलू उद्योग-धन्धोंको को उन्नत करने का अभिप्राय यह नहीं है कि खेतीके कार्य को छोड़ दिया जाए। खेतीके कार्यके साथ २ घरेलू उद्योग आसानीसे अपनाये जा सकते हैं।

आनेवाले समयके लिये यह आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य है कि उद्योग-धन्धोंको बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित किया जाये। इससे जनताकी निर्धनता दूर होगी और जीवनका स्तर भी ऊंचा होगा। उद्योग धन्धोंमें उन्नति करने के साथ-साथ वैज्ञानिक ढंगोंसे खेती को भी उन्नत करनेकी आवश्यकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि भारतमें उद्योग धन्धोंकी यथेष्ट उन्नति नहीं हुई, इसका कारण जहां सरकारका उपेक्षा भाव रहा है वहां ग्रामीण जनता की उदासीनता और सामूहिक रूप से उद्योग-धन्धों को चलाने की योग्यता और ज्ञानका अभाव भी एक मुख्य कारण है। कुछ वर्गोंमें यह मनोवृत्तिभी काम करती है कि जिस उद्योग पर उनका पूर्ण आधिपत्य होता है उसके लाभ उनके पड़ोसियों तक वा अन्य ग्रामके गरीब भाइयों तक न पहुंचें, इस प्रकारकी मनोवृत्ति को दूर किया जाना आवश्यक है।

जन साधारणके उद्योगको लाभदायक बनानेके उद्देश्य से 'आल इण्डिया मैनुफैक्चरर्स आरगेनाईजेशन' समय-समय पर छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित करता है और उद्योग धन्धोंको प्रोत्साहित करनेके लिये देशके विभिन्न भागोंके लोगोंसे भी मिलता रहता है।

जब तक किसी स्थानके व्यक्ति अपनी संकुचित आदतों का परित्याग करके अपने सम्बन्धमें सोचना और अपने ज्ञान और आमदनीको बढ़ाना प्रारम्भ नहीं करेंगे, तब तक उनका भविष्य उज्ज्वल न होगा।

प्रत्येक स्थानीय क्षेत्रमें सर्व प्रथम यत्न उद्योग-धन्धों को उन्नत करनेका होना चाहिए, इसके लिये सबसे पहले प्रचार द्वारा जनताको उद्योग धन्धोंके प्रति प्रेम करना सिखाना चाहिए। अर्थात् उनके दिमाग बनने चाहिए। इसके दो लाभ होंगे, एक तो यह कि उद्योग धंधे बढेंगे और दूसरे उनकी उपजकी मात्रा और कीमत भी बढ़ जायगी। यदि यह कार्य सन्तोष जनक रीतिसे हो जायें तो प्रति व्यक्ति आयभी स्वतः बढ़ जायेगी।

सबसे पहले गांवोंको वर्गोंमें बांट देना चाहिए, जिससे प्रत्येक वर्गकी आबादी और क्षेत्रफलके आधार पर काम करनेकी सुगम इकाई बन सके। एक वर्गमें औसतन १० ग्रामों और लगभग १५००० की आबादी होनी चाहिए, इसमें घटबढ़ भी हो सकती है और यह आबादी के घनेपन और बिखरेपन तथा अन्य स्थितियों पर आश्रित है।

इसके पश्चात् प्रत्येक वर्गके लगभग १२ प्रतिनिधियों की एक कमेटी बनानी चाहिए। कमेटीके सदस्योंकी कमसे कम संख्या ७ हो सकती है। कमेटीके सदस्योंको ग्राम-वर्गकी आबादी प्रतिवर्ष चुनेगी। विशेष अवस्थाओंमें सदस्यताका समय दो या तीन वर्षके लिए बढ़ाया जा सकता है। इसी कमेटीको अपने वर्गकी औद्योगिक उन्नतिके लिये जिम्मेवार बनाना चाहिये।

यह कमेटी अपना प्रधान व मंत्री स्वयं चुनेगी और

यही प्रतिनिधिके कार्यके लिये वैतनिक कार्यकर्ताओंकी नियुक्ति भी करेगी। इन कार्यकर्ताओंकी एक उपसमिति बना देनी चाहिये जिसमें ३ या ४ सदस्य होने चाहिएं। और ये कमेटीके सदस्य भी हो सकते हैं और नहीं भी हो सकते।

कमेटीको उन सब व्यक्तियोंके नाम संग्रह करने चाहिएं जो समय या धनसे कमेटीकी सहायता देनेकी सामर्थ्य रखते हों या इच्छुक हों। इन सब व्यक्तियोंके नाम कमेटीके कार्यालयमें एक रजिस्टरमें अंकित करने चाहिएँ।

प्रारम्भमें तो इस प्रकारके कार्यके प्रति उदासीनता ही होगी, क्योंकि इस प्रकारके नये कार्यों को हाथमें लेनेके लिये उनकी पुरानी आदतें मार्गमें खड़ी होंगी, परन्तु ज्यों-ज्यों वर्गके मुख्य और प्रसिद्ध व्यक्ति इस आन्दोलन, उद्देश्यों और निर्धारित नियमों और कार्य-प्रणालीसे परिचित होते जायेंगे त्यों त्यों उपर्युक्त उदासीनता और कठिनाइयां दूर होती जायेंगी; एक समय आयेगा जब वे इस योजनाके लाभों का आदर करेंगे और सेवा करनेमें गर्व अनुभव करेंगे और वे अपने वर्गके निवासियोंके आदर और श्रद्धाके पात्र बन जायेंगे। इस प्रकारके उपायों से ही देशके निवासी आत्म-रक्षण, उन्नति और नेतृत्वकी योग्यता प्राप्त करते हैं।

सन्तोषजनक रीतिसे वास्तविक काम प्रारम्भ करनेके लिये कमेटीके पास पर्याप्त धन होना चाहिये। प्रतिदिनके कार्यों और साधारणतया कमेटीके कार्यालयके क्लर्कों तथा अन्य कर्मचारियोंके वेतनके लिये प्रारम्भमें ५००) रु.से १०००) रु. तक होने चाहियें।

यह धन ग्राममेंमें सम्पन्न व्यक्तियोंसे ५०) ५०)से लेकर १००) प्रति व्यक्तिके हिसाबसे लेना चाहिए।

दूसरा कदम यह उठाना चाहिए कि परिवारोंके मुखियाओं और कार्यकर्ताओंके नाम एकत्र करने चाहिएं, जो कमेटीके मासिक वा अन्य व्ययोंमें हाथ बंटानेके लिये उत्सुक हों। इस प्रकारके नामोंकी एक तालिका तैयार करके सुरक्षित रखी जाये। यह भी सम्भव हो सकता है कि नियमित वार्षिक चन्देकी एक सूची बनाई जाये और प्रत्येक व्यक्ति १) रु. वार्षिकसे कम चन्दा न देवे। आरम्भमें जिन १०००) वार्षिककी आवश्यकता है वह १००० दानियों के १) रु. वार्षिकके दानसे पूरी करली जाये और बादमें यह राशि ३०००) तक पहुंच कर और बढ़ाई जाये। जितना अधिक धन एकत्र होगा उद्योग-धन्धोंको बढ़ाने का उतना ही अधिक कार्य हो सकता है।

केन्द्रीय ग्राममें एक सभा-हाल होना चाहिए और शनिवार या रविवारको नियमसे कमेटीकी बैठकें होनी चाहिएं। कमसे कम २ घण्टे पर्यन्त बैठक शामको या जो समय सुविधाजनक समझा जाए, होनी चाहिये। इन बैठकोंमें उन विषयों पर विचार होना चाहिए जिनकी लिखित सूचना पूर्व कमेटीके सदस्योंको भेजी जा चुकी हो और इन बैठकोंमें उद्योग-धन्धों, मुख्यतया गाँवके उद्योगके विषयमें उपयोगी नोट भी लिखे जाने चाहिएं।

इन साप्ताहिक बैठकोंमें वर्गकी आन्तरिक उन्नतिसे सम्बन्धित समस्याओं, नए उद्योग-धन्धों, तथा पुराने उद्योग-धन्धोंको विस्तृत करने वा कठिनाइयोंमें ग्रस्त उद्योगोंकी सहायता करने आदि पर विचार करने के लिए कमेटीके सहायकों और कार्यकर्ताओंको भी बुलाना चाहिए। वर्गोंके आपसमें सम्बन्ध अच्छे रहने चाहिएं।

कमेटीकी आवश्यकताएं संक्षेपमें निम्न प्रकार होंगी।

१—कमेटीकी बैठकें करने और कमेटीका कार्यालय स्थापित करने के लिए एक स्थान या मकान।

२—ग्राम-वर्गके वर्तमान उद्योगोंकी तालिका बनाना। (यह कार्य वैतनिक क्लर्क या अवैतनिक कार्यकर्ताओंके सुपुर्द किया जा सकता है। पहले गांवके व्यक्तियोंके द्वारा सूचनाएँ एकत्र की जा सकती हैं और यह बादमें कमेटीके अपने आदमियोंके द्वारा सीधे एकत्र होनी चाहिए।)

३—सुधार कार्यके लिए साधारण सूचनाओंका संग्रह यह सूचनायें नियमसे लेखबद्ध होनी चाहिएं और उद्योग धन्धोंमें लगने वालों के लिए जो कमेटीकी सहायता चाहें प्राप्त होनी चाहिएं।

४—उद्योग-धन्धोंके चलाने के लिए बैंककी सुविधायें कच्चा माल खरीदने, मजदूरी देने और जब तक माल बिक कर पैसे हाथमें न आ जायें तब तकके अन्य व्ययके लिए ये आवश्यक होंगे।

वर्तमानमें प्रायः यह पूँजी कोपरेटिव सोसायटियों, प्राइवेट व्यक्तियों या साहूकारोंसे लेनेकी प्रथा है।

५—कनाडा और आस्ट्रेलियामें टेरिफबोर्डके द्वारा स्थानीय धन्धोंको जितनी सुविधायें प्राप्त हैं कमसे कम उतनी ही टेरिफकी सुविधा प्राप्त करना। सरकारने अभी हालमें जनताको विश्वास दिलाया है कि समस्त धन्धोंके हितोंकी, चाहे वे नए हों या पुराने, टेरिफबोर्डके द्वारा रक्षाकी जावेगी।

६—उद्योग धन्धोंकी वा किसी खास व्यवसायकी शिक्षण व्यवस्था कुछ चुने हुए व्यक्तियोंको जिले या सूबेके शिक्षण केन्द्रोंमें भेज कर यह काम करना चाहिए। इन शिक्षा-प्राप्त व्यक्तियोंकी योग्यता-सूचियों को बनाने, रखने और धन्धोंका हिसाब रखने की भी होनी चाहिए। उनमें वर्गमें होनेवाली और औद्योगिक उन्नतिका सार बनाने की योग्यता भी होनी चाहिए।

७—विश्रामगृह, केन्द्रीय ग्राममें जहाँ उनकी मांग हो, व्यापारियों और यात्रियोंके प्रयोगके लिए विश्रामगृह होने चाहिएँ। यात्रियोंके लिए अस्थायी रूपमें कुछ अधिक कमरों की व्यवस्था होनी चाहिए, जो आवश्यकता होने पर बुलाई जानेवाली बैठकों और कान्फ्रेंसोंके लिए आते रहते हैं। स्विटजरलेण्ड और फ्रांसमें यात्राकी सुविधाएँ स्थानीय जनताकी आय का साधन होती हैं। इस प्रकारकी व्यवस्था यदि हमारे ग्रामोंमें हो जाए तो वहां वह व्यवस्था करने वालोंकी आयका साधन भी होगी।

८. आन्दोलन को चलाना।

ग्राम-वर्गके ठीक-ठीक व्यवस्थित होजाने पर, कमेटी को विस्तृत काम हाथमें लेना चाहिये और उद्योग-धन्धोंकी उन्नति प्रारम्भ कर देनी चाहिये।

कमेटीके सदस्योंका मुख्य काम होगा कि वे ग्रामोंमें परिवारों और घरोंमें जा जाकर उन लोगोंको प्रोत्साहित करावें जो नये धन्धों को प्रारम्भ करना चाहें और जो चल रहे हों उन्हें विस्तृत करायें।

९. गांवका कोई परिवार या व्यक्ति ऐसा नहीं होना चाहिये जिसके पास फालतू समयके लिये कोई सहायक व्यवसाय न हो। शाक भाजी बोना, फल फूल बोना, मुर्गी पालना, कातना व बुनना, शहद की मक्खी पालना, चटाई बुनना, भेड़ों और सुअरोंका पालना ये ऐसे घरेलू धन्धे हैं, जिन्हें गांवका निर्धनसे निर्धन व्यक्ति भी कर सकता है। थोड़ेसे उद्योगसे इसी प्रकारके बहुतसे व्यवसायके लिये साधारणतया ५०) रु०से अधिक पूंजीकी आवश्यकता नहीं होती जो प्राय; परिवार स्वयं अपनी आयसे व कर्ज लेकर लगा सकता है। ईंट और खपरेल बनाने जैसे कार्य पत्ती डालकर किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ २ या ३ व्यक्ति मिलकर अपना अपना धन लगाकर यह धन्धा कर सकते हैं। बड़े बड़े उद्योग ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों व कोपरेटिव प्रणाली पर किये जा सकते हैं।

१०. प्रत्येक इकाईके अधिक समझदार व्यक्तियोंको इस प्रकारके धन्धोंको विभिन्न स्थानों पर जाकर देखना चाहिये। परिशिष्टमें दी हुई घरेलू धन्धोंकी विस्तृत तालिकामेंसे कोई भी ग्रामीण चाहे उनकी रुचि कुछ भी हो कोई सा धन्धा चुन सकता है।

११. स्थानीय वितरणके लिये छोटे-छोटे ट्रैक्ट तैयार होने चाहियें और साप्ताहिक बैठकोंमें व्याख्यान होने चाहियें। ३-३ या ४-४ मासके बाद अथवा छः मासके पश्चात् प्रत्येक इकाईमें सम्मेलन होने चाहियें।

१२. पर्वों, त्यौहारों पर उद्योग-धन्धों का प्रचार होना चाहिये:—

१३. प्रत्येक वर्ष के अन्त पर परिणाम नोट करके लेखबद्ध होने चाहियें। उनको निम्न प्रकार लेखबद्ध कर सकते हैं:—

(१) धन्धोंकी संख्या (२) पूंजी जो लगाई गई
(३) मालकी कीमत जो तैयार हुआ।
(४) कार्यकर्ताओंकी संख्या।

दो या तीन वर्षके अनुभवके पश्चात् और भी विवरण शामिल किये जा सकते हैं, जैसे मालका परिमाण, कितनी मजदूरी दी गई, पूंजीके मुकाबले कितनेका माल बिका। गांवके पढ़े लिखे और समझदार व्यक्तियोंसे इस कार्यमें सहायता लेनी चाहिये।

प्रत्येक वर्षके परिणामको एक चार्ट पर लिख कर कमेटीके कमरेमें या हालमें लगा देना चाहिये। इससे

सिरके का व्यापार

[लेखकः—श्री पं० गणेशदत्त जी "इन्द्र"]

सिरके का धन्धा बड़ा ही लाभदायक है। बाजारोंमें सिरकेकी मांग दिनप्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। सिरका दो प्रकारसे बनता है। एक फलों तथा उनके रसों द्वारा और दूसरा एसिड, तथा खनिज क्षारों द्वारा। सिरका बनाना गृह-उद्योग है। ग्रामोंमें यदि यह काम होने लगे तो ग्रामवासी इसके द्वारा बहुत लाभ उठा सकते हैं। ग्रामोद्योगके लिए हम यहां फलोंसे बननेवाले सिरकोंके बनानेकी विधि लिखेंगे—

गन्नेका सिरकाः—

गन्नेका रस निकालकर उसे मिट्टीके बर्तनमें भर कर उसे गर्म करो। जब वह उबलने लगे और उसमें बुद-बुदे आने लगें तब उतारकर ठण्डा होनेको रखदो। जब ठण्डा हो जावे तब उसे कपड़ेमें से छानलो और मिट्टी के पात्रमें भरकर उसका मजबूतीसे मुंह बन्द करदो। इस पात्रको जमीन खोदकर एक गहरे गढ्ढेमें गाड़दो। १५ दिन बाद बर्तनको गढ्ढेमें से निकालकर उसका मुंह खोलकर देखो, उसपर एक सफेद रंगका पदार्थ जमा हुआ दिखाई देगा, उसे निकाल कर फेंक दो और फिर पहलेकी भांति उस पात्र का मुंह बन्द करके जमीनमें गाड़ दो। जबतक रसपर सफेदी आवे, इसी प्रकार करते रहो। जब सफेदी आना बन्द हो जाय तब समझो कि सिरका बनकर तैयार हो गया है। अब उसे कपड़ेसे छानकर बोतलोंमें भरकर रख दो।

नारियलका सिरकाः—

नारियलका पानी, साढे बासठ सेर, शहद एक छटांक और थोड़ा-सा 'एसेटिक-एसिड' इन सबको मिलाकर खुली हवामें एक महीने तक रखा रहने दो। बादमें फिटकरी डेढ़ सेर, न्यूटरल टारट्रेट ऑफ पोटेशियम ढाई छटांक और म्यूरियट अमोनिया साढ़े तीनसेर इन सबको मिलाकर पीसकर रख लो। इसमें से २० ग्रेन चूर्ण लेकर थोड़े पानीमें घोलो। फिर यह पानी सिरकेमें मिला दो। यह २० ग्रेन चूर्ण एक गेलन सिरके के लिए है। सिरका अधिक बनाना हो तो उसी प्रमाणसे यह चूर्ण भी मिलाना चाहिए।

खजूरका सिरकाः—

खजूरके रसको मिट्टीके बर्तनमें भरकर आगपर चढ़ा दो। जब वह उबलने लगे तब उसे आग पर से उतारकर ठण्डा कर लो। ठण्डा हो जाने पर कपड़ेसे छान कर उसे चीनीकी बरनीमें भर दो। इस बरनी को १०-१२ दिन तक सूर्यकी धूपमें और रात्रिकी ओसमें पड़ी रहने दो। बादमें उसका मुंह खोलकर उसपर जमे हुए सफेद पदार्थको निकालकर फैंक दो। फिर पात्रका मुंह बन्द करके पहले की तरह १०-१२ दिन तक धूप और ठण्ड में रखो और खोल कर देखते रहो। जबतक उसपर सफेदी आती रहे तब तक इसी तरह करते जाओ। जब सफेदी आना बन्द हो जाय तब उसे कपड़ेसे छानकर बोतलोंमें भर दो।

चनेका सिरकाः—

शीत कालमें रातके समय चनेके पौधोंपर ओसकण जम जाते हैं। एक साफ महीन कपड़ा लेकर चनेके पौधोंपर उसे फैलादो और उसे धीरे-धीरे खींचो, जब वह कपड़ा ओससे भीग जावे तब उसे किसी कांचके पात्रमें

जनताको प्रोत्साहन मिलेगा और आय बढ़ेगी और बहुत से अन्य उपयोगी परिणाम होंगे। जब इस प्रकार उद्योग-धन्धोंकी सूचनाएं एकत्र करनेमें सफलता होगी तब खेती की भी सूचनाएं एकत्र की जा सकती हैं। प्रत्येक उन्नत देशमें खेती मुख्य धन्धा समझा जाता है। इस प्रकार जो सूचनाएं एकत्र होंगी, उनसे खेती और उद्योग-धन्धोंकी आय प्रतिव्यक्ति क्या है यह ज्ञात किया जा सकता है और प्रतिव्यक्ति की औसत आय आर्थिक उन्नतिका विश्वसनीय प्रमाण होता है।

——

निचोड़ लो। यह चनेका सिरका बन गया। उदर विकारों पर यह रामबाण है। केवल २० बूंदें देनेसे पेटपर अद्भुत प्रभाव दिखाता है। स्मरण रहे यह चनेके पौधेसे क्षार प्राप्त करनेकी विधि सूर्योदयके पूर्व होनी चाहिए।

जामुनका सिरका:----

जामुनके फलोंको लेकर उनका रस निकाल लो। फिर इस रसको मिट्टीके पात्रमें भरकर आगपर उबालो। बादमें इसे छानकर खजूरका सिरका बनानेकी विधिसे तैयार करलो।

अनन्नासका सिरका:----

अच्छा अनन्नास लेकर उसके टुकड़े करलो। फिर पत्थरपर कुचलकर उसका रस निकाल लो। रसको मिट्टीके पात्रमें उबालनेके बाद खजूरके सिरकेकी क्रियासे इसे तैयार करलो।

अंगूरका सिरका:----

अंगूरका सिरका बनानेकी भी रीति ऊपर लिखे अनुसार ही है। रस निकालकर, उबालकर, छानकर, चीनी या मिट्टीके बर्तनमें भरकर धूप और ओसमें रखदो। दसवें-बारहवें दिन उसे खोलकर देखते रहो। जब तक उसपर सफेदी आये तबतक निकालते रहो। बादमें छानकर बोतलोंमें भरलो।

दूसरी विधि और है। एक सेर अंगूरके रसको ३ सेर शहदमें मिलाकर मिट्टी या चीनीके पात्रमें भरदो। उसके मुंहपर ढक्कन लगाकर कपड़ मिट्टीसे अच्छी तरह बन्द करदो। बादमें सारे पात्रपर कपड़ा लपेटकर मिट्टीसे उसे अच्छी तरह चुपड़दो। कोई जगह बाकी न रहे। इसपात्रको एक महीने तक ठण्डी जगहमें रखा रहनेदो। तत्पश्चात् छानकर बोतलोंमें भरदो।

नारंगीका सिरका:----

नारंगीका सिरका भी खजूरके सिरकेकी तरह बनाया जाता है।

दूसरी विधि यह है कि २ नारंगियां लेकर उनका रस निकालो और एक शीशीमें भरदो। बादमें उसके छिलकेको कूटकर उसमें ढाई सेर सिरका डालदो। ये भी उसमें मिलालो और मजबूत कार्क लगाकर कुछ दिन तक रखा रहनेदो। जब सिरका तैयार हो जावे तब छानकर भरलो।

स्ट्राबेरीका सिरका:---

आधासेर स्ट्राबेरी लेकर उसे पत्थर पर पीसकर लुगदी बनालो और साढ़े सात सेर सिरकेमें मिलाकर चीनी या कांचके पात्रमें भरकर गर्म जगहमें रखदो। एक सप्ताह बाद छानकर रखलो।

किसमिशका सिरका:----

पांच सेर किसमिशें लेकर उन्हें धोकर साफ करलो। बादमें एक मिट्टीके पात्रमें पांच सेर पानी डालकर इतना उबालो कि वे नर्म हो जावें। इसके बाद आगसे नीचे उतारकर १२ घण्टे तक इन्हें ठण्डा होने दो। ठण्डा हो जानेपर किसमिशोंको भली-भांति मसलकर कपड़ेमें से छानलो। छूछन फैंकदो। रसको मिट्टी या चीनीके पात्रमें भरकर मुंह बन्द करके कुछ दिनों तक ओस और धूपमें रखा रहने दो। कुछ दिन बाद उसपर सफेद पदार्थ-सा जम आवेगा, उसे निकालकर फैंक दो। फिर उसे मुंह बन्द करके धूप और ओसमें रखदो। जबतक उसपर सफेद फफूंदन जमे, ऐसा ही करते रहो। बादमें उसे छानकर बोतलोंमें भरदो।

फालसेका सिरका:----

आठ सेर पके हुए ताजे फालसे लेकर उन्हें कुचल लो, बादमें १२ सेर पानीमें डालकर उबालो। जब दो सेर पानी बाकी रह जाय तब चूल्हेसे उतारकर कपड़ेमें से छानलो। इस पानीको चीनीके पात्रमें भरकर मजबूत डाट लगाकर धूप और ओसमें रखदो। जबतक उस पर फफूंदन जमती रहे उसे हटाते जाओ और फिर बन्द करके धूप ओसमें रखते जाओ, जब फफूंदन आना बन्द हो जाय तब उसे छानकर बोतलोंमें भरकर रखलो।

शस्यबेरीका सिरका:----

शस्यबेरी डेढ़ सेर और सिरका सवा सेर लेलो। अब आधा सेर शस्यबेरी लेकर चौड़े मुंहकी बोतलोंमें भरदो उसपर सिरका डालकर ३ दिन तक रखदो। फिर उसे शस्यबेरी बिना मसले छानलो। फिर आधा सेर शस्यबेरी बोतलमें डालकर वह सिरका ऊपरसे डालदो और तीन दिन तक रख छोड़ो और बादमें छानलो। तीसरी बार फिर

शस्यबेरी डालकर सिरका भरदो और तीन दिन तक रखा रहनेदो। अब छानकर इसमें प्रति पांचसेर सिरकेमें आधा सेर शकर (चीनी) के हिसाबसे दानेदार चीनी डालकर दस मिनट तक उबाललो। ठण्डा करके बतलोंमें भरदो।

अचारका सिरकाः—

अदरक सवा तोला, छोटी पीपल ४ तोला कालीमिर्चें ४ तोला, राई १० तोला चीनी कबाला ६ माशा और सिरका ढाई सेर। इन सब चीजोंको कूटकर सिरकेमें डालदो। बादमें आगपर रखकर १० मिनट तक उबालो। उबल जानेपर नीचे उतारलो और ठण्डा हो जानेपर छानकर बोतलोंमें भरलो। यह रात दिन काममें लानेका सिरका है।

मिरचका सिरकाः—

ताजा हरी मिर्चें ५० और अचारका सिरका दस छटांक। पहले मिर्चोंको धोकर साफ करलो बादमें उनको चाकूसे दो-दो टुकड़े कर डालो। अब सिरकेको आगपर रखकर उबालो। उबाल आजानेपर उसमें मिरचें डालदो। सिरका बनगया। छानकर बोतलोंमें भरलो।

नींबूका सिरकाः—

१२ नींबू लेकर उनका रस निकाललो। नींबूके छिलकोंको कूटकर साढ़े सोलह सेर सिरकेमें डालदो। ऊपरसे नींबूका रस भी छोड़दो। छानकर बोतलोंमें भरदो।

★

रे मन !

(लेखक—पं० दयानन्द जी जोशी)

रे मन ! कितना निर्लज्ज है तू ? कैसा छलिया है तू ! भारी से भारी महान् पाप-पूर्ण विचारों की कल्पना कर स्वर्ग को नरक बना देता है। लजाता नहीं कभी भी तू निकृष्टतम विचारों की कल्पना करके। पूजनीया पतिव्रता देवियों से भी तो अपनी भोग-लिप्सा की तृप्ति की कल्पना करते शंकित नहिं होता ? यही तो निर्लज्जता है महान् तेरी। धार्मिक सज्जनों की बुद्धि को दबाकर भी तो अति नीच भावनायें करवा देता है तू उनसे रे दुष्ट लज्जाहीन ! किसी भी सुन्दर वस्तुको निहार कर उसको भी हथियाने के हथकंडे सोचने में भी तू आकाश-पाताल को छान मारता है। न्याय अन्याय कुछ भी नहीं मानता है तू अपने इच्छित पदार्थकी प्राप्तिके प्रयत्नमें। कितना नीच और दुष्ट है तू। जिस समय घृणित कामों के करने के लिये तू उतारू हो जाता है, उस समय बुद्धि और अन्तरात्मा की सम्मति को ठुकरा कर जीवको घोरतम पापके गहरे गर्त में ढकेल सत्य को ढक देता है। तू नश्वर सुखके ही तो स्वप्न देखता रहता है सदा। क्या फल होगा तेरी दुष्ट कृतियों का यह भी कभी तूने सोचा है ?

तेरे अदूरदर्शिता पूर्ण नीच संकल्प ने ही तो, उस महान् विभूति, महान् आत्मा, जगत्पूज्य मानव मात्रके परम हितैषी आर्य (हिन्दू) आदर्शकी महानताको इस क्षणिक स्वार्थ मय जगतमें प्रकाशित करनेवाले, द्वेष-हीन साधु, अहिंसा के महान् उपासक, विश्वबन्धु, शान्ति के साकार स्वरूप, लंगोटी-धारी तपस्वी महात्मा की निर्दयता पूर्ण हत्या करवा-कर पुनीत आर्य (हिन्दू) जातिके भाल पर कलंकका टीका लगवा दिया तूने ही तो।

तूने ही भले-भले और साधु पुरुषोंको भी नारकीय दुष्ट कर्म करने को प्रेरित किया है कई बार। बड़े बड़े तपस्वी और योगियों को भी तो तूने भोगी बनाकर निन्दनीय बना दिया है जग में। त्यागी महात्माके द्वारा प्राप्त कराई भारत की स्वतन्त्रता के श्रीगणेशमें ही अनेकों रोड़े अटकाये हैं तूने। अब भी अपने देशकी इस स्वतन्त्रता को नहीं सह रहा है। कई देश द्रोहियोंमें घुसा हुवा तू उन लोगोंके विरुद्ध दुर्भावनायें उत्पन्न करता है जो शासन-सूत्र हाथमें लिये अनेक कठिनाइयोंका सामना करते हुये भी अन्तर्राष्ट्रीय जगतमें अपने देशकी स्वतन्त्रताकी धाक जमा रहे हैं।

आस्तिक हिन्दुओंके पवित्र मनमें भी प्रतिशोधकी भावनायें भरकर बर्बर भयानक कर्म करनेको विवश कर आर्यत्वके (मानवताके) परमोच्च आदर्शसे गिराकर उन्हें विक्षिप्त सा बना दिया तूने, इतनी अदूरदर्शिता।

दया क्षमा और अहिंसाके पुजारी पाश्चात्य जगत्के महान् महात्मा ईसाको भी तूने ही तात्कालिक मूर्खों द्वारा सूली पर चढ़वा दिया था। मन्सूर जैसे आत्मज्ञानीको भी अज्ञानी म्लेच्छों द्वारा नास्तिक कहलवाकर मरवाया था तूने ही। धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधनादिक कौरवों को भी स्वार्थकी मदिरा पिला कर अन्याय पथ पर भटकाता हुवा महाभारत युद्ध रचवाया था तूने ही तो ? बालब्रह्मचारी भारतको स्वतन्त्रताके प्रथम सेनानी नेता त्यागी (संन्यासी) स्वामी दयानन्द सरस्वतीको भी तो मरवाने वाला तू ही है ओ दुष्ट मन ! कैसी कैसी नीच भवनाओंकी कल्पना करता रहता है प्रतिक्षण तू ! अब तो त्याग दे अपनी कुटेवों को ! छोड़ दे स्वार्थ-लिप्सा, मार दे कुभावनायें ! स्वतन्त्र भारतके जन-जन में यह भाव भरदे वह तेज भरदे ओज भर दे जिससे वह शुद्ध शान्त सृष्टिका उपक्रम करदे, विश्व को सुख से भर दे, वन्धुत्व की भावनाओं को जगादे। सर्वत्र सुख और शान्ति का साम्राज्य हो, जन जनसमुन्नत हो। स्वतन्त्रभारतकी जय हो !

अर्श (बवासीर) रोग और उसकी स्वानुभूत चिकित्सा

[लेखक—वैद्यभूषण श्री पं० विहारीलाल जी शर्मा मिश्र]

आजकल देखा जाता है कि इस रोग की मानो बाढ़सी आई ई है, यह रोग प्रायः स्त्री एवं पुरुषों में सामान रूपसे पाया जाता है। अर्श बड़ा भयंकर रोग है, यह एक वार जिस स्त्री-पुरुष को हो जाता है फिर उसेइससे सहज पीछा छुड़ाना बड़ा कठिन हो जाता है। साधारणतया यह रोग दो प्रकार का होता है। एक वातज (वादी) दूसरा रक्तज (खूनी) खूनी बवासीर में रक्तस्राव होता है। दूसरे में मस्से फूल जाते हैं और रोगी को बड़ा कष्ट होता है। यह एक कष्ट-साध्य व्याधि है। जो बवासीर जन्मसे ही हो अथवा त्रिदोषोत्पन्न हो या प्रवाहिनी नामक गुदाकी भीतर की तीसरी नली में उत्पन्न हुई हो तो उसकी चिकित्सा असाध्य सी हो जाती है। उस दशामें भी यदि रोगी की आयु शेष हो, चिकित्साके चारों पाद भी पूर्ण हों, रोगी की जठराग्नि अत्यन्त प्रदीप हो तो उसको कष्ट-साध्य समझना चाहिए।

अन्य चिकित्सा-पद्धतियोंमें तो इसकी चिकित्सा में मौनावलम्बन ही है। ऐलोपैथीमें भी सिवाय शल्य-क्रिया (सर्जरी) के इसकी सफल चिकित्सा नहीं है। इसका ओपरेशन भी खतरेसे खाली नहीं इसमें अनेकों की जीवन-लीला समाप्त हो जाती है और फिर कभी-कभी तो ऑपरेशनके कुछ दिन बाद ही इस रोग का पुनः प्रादुर्भाव होते देखा गया है। किन्तु आयुर्वेदमें इसकी सफल और सुगम चिकित्सायें है।

गुदाकी तीन (आटों) नलियोंमें वात, पित्त, कफ, त्रिदोष, रुधिर, और स्वाभाविक ऐसे ६ प्रकार की अर्श (बवासीर) होती है। कई आचार्य रुधिर को भी दोष ही मानते हैं। अतः उनके मतानुसार रुधिर को भी समझ लेना चाहिये।

स्वाभाविक, वंश-परंपरागत (जन्म-जात बवासीर) को कहते है जो माता पिता से होती है।

गुदा—जहां अर्श (बवासीर) होती है उसका प्रमाण साढ़े चार अंगुल का होता है। शंखावर्तकी आंटीके समान तीन वलि एकके ऊपर एक होतो है यही त्रिवली का नाम प्रवाहिनी (जो मल को नीचे उतारती है) दूसरी विसर्जनी (जो मल को बाहर निकालती है तीसरी संवर्ण (जो गुदा को यथावत् बना देती है)। इनमें प्रथम वली को। प्रमाण (१) एक अंगुल, २—डेढ़ अंगुल, ३—वली भी १॥ ऊंगुल ही है और आधा अंगुल प्रमाण का गुदोष्ठ है। कहा भी है कि—

> "तत्र गुदोष्ठो ऽर्द्धाङ्गुलमोनस्त,,
> दूर्ध्वं मंगुलमाना प्रथमावलिः
> साधैकांगुलमाना द्वितीया, तृतीया तावती,,

लक्षण—

अर्श (बवासीर) वाले रोगी के पेटमें का अन्न यथावत् विष्ठा होकर नहीं निकलता, और दुर्बलता का विशेष प्रतीत होना, पेटमें अफारा, कृशता, डकारोंका अधिक आना, मुखमें बारम्बार पानी आना, जाघोंमें पीड़ा होना, मल थोड़ा उतरना, ग्रहणी पार्श्वशूल, तथा उदर रोग की आशंका इत्यादि होते रहते हैं।

अर्शमें—दोष त्वचा, मांस और मेदको दूषित कर गुदा, नासिका, नेत्र, कर्ण, नाभि और लिङ्गादि स्थानोंमें अनेक प्रकारके पूर्णाकार मांसके अंकुर उत्पन्न होते हैं। इन अंकुरोंको ही अर्श (बवासीर) कहते हैं।

अर्शके अंकुर कई एक प्रकारके होते हैं। जैसे लाल, धुएंके रंगके, कठिन, विशद, मृदु,

तीक्ष्ण, कन्दुक, बेर, खजूर आदिके फलोंके समान, तोतेकी जीभ या गौकी जीभाकारके टेढ़े- बहुत दुखदाई होते हैं।

स्वानुभव चिकित्सा—

जो भी अन्न पान एवं औषधि वायुको अनुलोमन करनेवाली हों तथा अग्निके बलको बढ़ानेमें सहायक हो सकें वे सब अर्श रोग वालेको हितकर हैं। जैसे—शाली, साठी चावल, गेहूँ और जौ इनका भोजन, घृत, बकरीके दूधका सेवन। नीम, कड़वी परवलका रस, मूरण (जिमीकन्द) बैंगन, मूली, जीवन्ती, पोई, बथुआ, (वास्तुक) और चौलाई आदिका शाक। विष्ठा मूत्र और वायुको प्रचलित करनेवाला अग्निको प्रदीप्त करने वाला आहार-विहार ही सदा करना चाहिये।

छाछ या मठे का सेवन भी इस रोगमें बहुत हितकारी है, तक्रसे जला कर नष्ट किया हुआ रोग या मस्से फिर उत्पन्न नहीं होते 'न प्ररोहन्ति गुदजाः पुनस्तक्र-समाहताः' के अनुसार तथा और भी—

> न तक्रभोजी व्यथते कदाचित्,
> न तक्रदग्धा प्रभवन्ति रोगाः।
> यथा सुराणाममृतं सुखाय,
> तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः॥

यों तो तक्रसे सब रोग दूर होते हैं, किन्तु बवासीरमें तो तक्र (छाछ) का सेवन बहुत ही लाभकारी है। अर्शवाले मनुष्योंके बलवर्ण और जठराग्नि की तक्रसे सदा रक्षा करनी चाहिये। इससे शरीर के स्रोत शुद्ध होकर अन्नादिकका रस अच्छी प्रकार से संचार करता है और मनुष्यको पुष्टि, तुष्टि, बल, वर्ण और वीर्यकी प्राप्ति होती है। वायु तथा कफके सैंकड़ों रोग नष्ट होते हैं।

अर्श रोगवालेको कब्जियत पर बहुत ध्यान रखना चाहिये। अर्थात् कब्जियत न होने देनी चाहिए। मस्सोंमें जलन, पीड़ा, टीस या शोथ (सूजन) हो तो मंहदीकी ताजा हरी पत्तियोंको शिला पर भाँगकी भांति खूब घोट कर चकती बनाकर गुदा पर लगावें। या घीग्वारका गूदा मल द्वार पर बांधें। गेंदेकी पत्ती भी अर्शाङ्कुरों पर लगनेसे जलन पीड़ा आदिमें शांति होती है। यदि रक्त अधिक गिरता हो तो हमारी नीचे लिखी 'रक्तस्थापिनी' मक्खनके साथ दें।

रक्त स्थापिनीकी मात्रा, द्रव्य और निर्माण-विधि—

सफेद सुरमा	५ तोला
रसौत (दारू हल्दीका घन क्वाथ)	५ "
स्वर्णगैरिक	१ "
लाल बोल	१ "

इन चारोंको जलके साथ मर्दनकर चनेके बराबरकी गोलियां बना लें। मात्रा—१-१ गोली ॥ तोला मक्खनके साथ दोनों समय दें और रातको सोते समय दो गोली आरोग्य-वर्धनीकी गौके एक पाव दूधमें ५ तोला घृत डालकर दें। अगर शरीरके किसी भागमें (नेत्र मुख आदि) शोथ (सुजन) रहती हो तो भोजनके बाद दोनों समय लवणभास्कर चूर्ण (शारंग धरोक्त) का सेवन करावें।

लवणभास्कर चूर्ण—

समुद्र लवण	८ तोला
काला लवण (संचर)	५ "
नौसादर	सैंधानमक
धनियाँ	छोटी पीपल
पीपलमूल	स्याह जीरा
तेजपात	नागकेसर
तालीसपत्र	अमलवेत
प्रत्येक २-२ तोला—	
कालीमिर्च	सोंठ
सफेदजीरा	प्रत्येक १-१ तोला
अनारदाना	४ "
दालचीनी	आधा तोला
छोटी इलायची	" "

इनका कपड़-छान चूर्ण करके रखलें।

मात्रा-३--६ माशा।

अनुपान-जल या छाछ।

वैद्य शोथ (सूजन) में देनेके वास्ते बनाते समय इसमें से अमलवेत निकाल देते हैं। कारण शोथमें खटाई देना मना है।

अर्श (बवासीर) की औषधि—

—रीठेके छिलकेको यव-कुट करके तवे पर जलालें और पीस लें तथा उसके बराबर ही पपरिया कत्थाका चूर्ण मिला कर ३-४ घण्टे खरलमें घोट कर रखलें।

मात्रा-अनुपान--इसमेंसे १रत्ती औषधि सुबह शाम मलाई या मक्खनमें मिलाकर खानेसे ७ दिनमें बवासीर नष्ट हो जाती है। इसके सेवनसे कब्ज, बवासीर, अर्शकी खुजली और मस्सोंको भी बिल्कुल आराम होता है और खून बन्द हो जाता है। यदि हर छटे महीने ७-७ दिन इस औषधिका सेवन किया जाय तो बवासीरके फिर उभरनेका भी भय नहीं रहता। इस प्रयोगको मैंने बनाकर देखा और आशातीत लाभ पाया। अतः पाठक भी इससे जनताको अधिकाधिक लाभ पहुँचावें।

अर्श में पथ्यापथ्य—

रोगी को सदा पथ्यका पालन करना चाहिये अर्थात् अपने अनुकूल आहार-विहार करना चाहिये। प्रतिकूल आहार-विहारसे रोगी को लाभ नहीं होता हानि अवश्य होती है।

'नतु पथ्य-विहीनानां भेषजानां शतैरपि'

पथ्य रहित रोगियोंको सैंकड़ों औषधियोंसे भी आराम नहीं होता। संयमसे रहने पर बिना औषधि के भी आराम हो जाता है।

पथ्य—मक्खन, मिश्री, दूध, प्रातः सायं खुली स्वच्छ वायुमें घूमना। खूनी बवासीरमें रोगी को मक्खन और दूध अधिक दें, जिससे नवीन शक्ति पैदा होती रहे। अपथ्य—मल मूत्रके वेगोंको रोकने और क्रोध, चिन्ता, मैथुन आदि मानसिक विकारोंसे रोगी को बचाना चाहिये। तैल, लाल मिर्च, ठंडे बासी व्यञ्जन गर्म और गृष्ट प दार्थों का सेवन करना मना है।

अर्शहर गुटिका

द्राक्षा	२ तोला
बकायनकी निबोरी की मींगी	१ ,,
नीमकी निबोरीकी मींगी	१॥ ,,
शुद्धरसौत	२ ,,
वैडूर्य भस्म (लसुनियाभस्म)	६ माशे

विधि—सबको कमलकी जड़के रसमें मर्दन कर चना बराबर गोली बना, सुखाकर रखलें। व्यावहारिक विधि—एक-एक गोली दिनमें तीन बार जलके साथ सेवन करें।

गुण—इससे रक्तार्शमें जाता हुआ रक्त रुक जाता है।

मेहनत की रोटी

[ले० श्री० महाराज कृष्ण वत्स्य]

शेरसिंहने पगड़ी उतार कर खूँटी पर टांग दी और कमरसे पेटी खोलने लगा। उसकी चार वर्षकी कन्या जिसे प्यारमें वह नन्ही कहा करता था उसके पास आकर खड़ी होगई और उत्सुक नेत्रोंसे पिताके मुंहको देखने लगी। नन्हीके उत्सुक नेत्रों द्वारा मूक भाषामें किए गए प्रश्नको शेरसिंह भली प्रकार समझ गया। वह उस प्रश्नसे कुछ व्याकुल सा होगया, उसके हाथोंने पेटी छोड़ दी और लपक कर नन्हीको उठा हृदयसे लगा लिया। शेरसिंह हृदयमें अनेकों बहाने ढूंढ रहा था, वह चाहता था किसी भी प्रकार नन्हींके प्रश्नका समाधान कर दिया जाय। पर अभाव! जिसके कारण वह आज भी खाली हाथों घर आया था उसे मौन रहने को बाधित कर रहा था। शेरसिंहके मस्तिष्कको एक गहरा धक्का सा लगा और उसके नेत्र गीले से होगए। वह मन ही मन कहने लगा—'वाह रे धर्मात्मापन! धन्य हो ईश्वर! क्या यही धर्मका फिल है। रिश्वत लेनेवाले सिपाही अपने बच्चोंके लिए मिठाई ले गए, फल लेगए और हम हैं जो अपने धर्मात्मापनमें मरे जा रहे हैं। 'रोते गए-मरेकी खबर लाए'। ईश्वर! क्या मेरी यह प्रतिज्ञा निभ सकेगी? कब तक निभेगी ऐसी दशामें और सहसा उसे गलेमें चिपटी नन्हीका ध्यान आया। उसने नन्हीको चूमा पुचकारा और कहा– 'क्यों बेटे! क्या बात है?'

नन्हीकी वाणी पिताके प्यारसे खुली और उसने अपनी भोली भाषामें कहा—'चीज'।

'चीज! चीज बेटे कल जरूर ला दूँगा, अच्छा क्या-क्या लेगी।'

'चीज'

'चीज तो लेगी पर क्या लेगी, केला लेगी, बर्फी लेगी, बरफ लेगी या............।

'आज भी इसके लिए कुछ नहीं लाए? भला हम तो बड़े हैं, समझ गए कि अपने देशके लिए भूखों मरना भी अच्छा होता है पर यह बेचारी क्य समझे आपकी प्रतिज्ञाओं को। सबके बाप शामको घर आते हैं, सबके हाथमें कुछ न कुछ होता ही है और आप हैं जो रोज खाली हाथ घर लौट आते हैं।'

'ठीक है कला! उनके पास पैसे आते हैं'

'वे कमा सकते हैं और आप नहीं कमा सकते?'

'नहीं कला! मैं भी कमा सकता हूँ, कमाता हूँ, पर मैं उतना लेता हूँ जो मुझे न्यायसे प्राप्त होता है जिसके लिए मैंने परिश्रम किया होता है।'

'ये बिना परिश्रम किए ही कमा लेते होंगे?

'कला! ये लोग जो पैसा लाते हैं वह अन्यायका पैसा होता है, मैं अन्यायका पैसा घरमें न आने दूंगा।''

'आप तो हमें भूखा मारेंगे?

'अन्यायके पैसेसे जीनेकी अपेक्षा मरना अच्छा होता है कला!

'यही हाल रहा तो मरने में क्या कसर रह जायगी, भर पेट रोटी भी तो नसीब नहीं होती!'

'कला, सरकार हमें कामके बदले खानेको देती है, फिर भूखे मरने की बात ही क्या?'

'रोटी तो कुत्ता भी पेट भर कर खा लेता है। साथ वालीको देखिए, कल कैसी बढ़िया साड़ी लायी है। धर्मसिंह की बहुकी चूड़ियां देखो तो दङ्ग रह जाओ! आप हैं जो बेचारी लड़की के लिए चार पैसे की चीज भी नहीं ला सकते।'

'ठीक है कला, जब ये चूड़ियां न्यायकी कसौटी पर चढ़ेंगी तब ये खरी न उतर सकेंगी।

'इतना लम्बा भविष्य किसने देखा है, अभी तो वे सुखी हैं।'

'हां, अभी वे सुखी हैं और हम दुःखी हैं। कभी हम भी सुखी होंगे, उनकी ईश्वर जाने।'

तभी नन्ही ने कहा 'भाभी', चीज।'

'देखो तो बेचारी कैसे मांग रही है।'

'कल बेटे बड़ी चीजें लाऊंगा। देखना तो सही कल कितने चीजें आती हैं। अच्छा जा कला रोटी ला, अब हम रोटी खायेंगे और कल बाजार जाकर चीज लावेंगे।

कला खाना परोसने के लिये रसोई में चली गई और शेरसिंह वहीं बैठकर नन्हीं को पुचकारने लगा। नन्हीं थी जो पिता का प्यार पाकर उसके कन्धे से लिपट गयी मानो वहां वह अथाह आनन्दका अनुभव कर रही हो शेरसिंह नन्ही की पीठ पर हाथ फेर रहा था। सहसा उसका ध्यान सामने की दीवार पर लटके बापू के चित्र पर जा पड़ा। यह वह चित्र था जिसे वह बापू के अन्तिम संस्कार के दिन घर लाया था और जिसके सामने उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह अब रिश्वत न लेगा, न्याय से मिले पैसे को ही वह अपना समझेगा। उसके ऐसे दो चार साथी भी थे जिनने रिश्वत न लेने की प्रतिज्ञा की थी, पर वे इस बढ़ती महंगाई में आवश्यकताओं से बाधित हो अपनी प्रतिज्ञा निभा न सके। शेरसिंह मन ही मन कहने लगा—

बापू उस दिन तेरी दिव्य आत्मा ने मेरे से रिश्वत न लेने की प्रतिज्ञा करायी थी। क्या तुम मुझे ऐसा बल भी दोगे जिससे मैं यह प्रतिज्ञा पूरी कर सकूं? बापू कहो तो कैसे निभ सकती है मेरी प्रतिज्ञा? कुल सत्तावन रुपये ही तो मिलते हैं। क्या इस समय सत्तावन रुपये में गुजारा सम्भव है? बापू क्या सोच कर सरकार ३) सीटी अलाऊंस देती है? क्या इन तीन रुपयों में शहरी खर्चे पूरे हो सकते हैं। बापू तुमने मुझे प्रेरणा दी थी, क्या इन्हें जो आज उत्तरदायी स्थानों पर बैठे हैं तुम प्रेरणा नहीं दे सकते। बापू! पुलिस का सिपाही रिश्वत न ले तो उसका गुजारा कैसे चले! मैं क्या करूं? कैसे करूं परिवार का निर्वाह? अभी १८ तारीख ही तो हुई है और कुल ५) शेष हैं।

शेरसिंह अपनी विचार-धारा में दूर तक बहता चला गया। उसने न जाने अपने नागरिक जीवन की कितनी कठिनाइयां उन बापू से कह डालीं जो दिव्य रूप से उसके सामने खड़े थे। उधर कला जो रसोई में पहुंच चुकी थी उसने थाली परोसी, डालडा घी से चुपड़ी चार रोटियां और पतली सी अरहर की दाल। जब कला थाली में रोटियां रखकर उठाने का उपक्रम कर रही थी तभी सहसा उसे ध्यान आया—

क्या दूं यह इन्हें? ये बेचारे दिन भर तपती धूप में खड़े होकर आये हैं। क्या इन्हें इस भोजन से सन्तुष्टि हो सकेगी। दिन भर काम करने के बाद यह खाना! ईश्वर! यह क्या मुसीबत दी है हमको। क्या ये रोटियां इन्हें दे दूं? भला इन पर इनका स्वास्थ्य कैसे रह सकता है? जब इनका स्वास्थ्य ही नहीं रहेगा तो ये बेचारे काम ही क्या करेंगे? इनके काम के बिना हमारी क्या दशा होगी?

कला का मस्तक चकराया। उसके और उसके पति के तथा उस बच्ची के दुखद भारे भविष्य की कल्पना राक्षसी बन कर उसके सर पर सवार हो गई। वह बहकने लगी।

भगवान्? हमने बहुत सहन कर लिया! ये सूखी रोटियां मैं उन्हें न दूंगी। यह उनकी मेहनत का फल नहीं है। मैं इन्हें उसी दिन रोटी दूंगी जिस दिन इन्हें इनकी मेहनत का फल मिलेगा। सरकार अन्धी है, पर तुम तो अन्धे नहीं हो भगवान्! तुम्हें पता है मैंने पिछले चार महीने कैसे बिताये हैं? तुम क्या जानो! तुम्हें क्या परवाह है किसी की!

कला और शेरसिंह दोनों अपने-अपने विचारों में बहे जा रहे थे। दोनों को एक दूसरे की तथा अपनी सन्तान की चिन्ता अपने में लय किये जा रही थीं कि तभी नन्ही ने कहा 'रोटी'।

'रोटी' सुनते ही शेरसिंह सावधान हुआ। उसने रसोई की तरफ देखा, पाया कि कला पागलों की तरह अनर्गल आलाप कर रही है। उसने नन्ही को संभाला और वह रसोई में जा पहुंचा। उसने कला के कन्धे पर हाथ रख कर उसे बुलाया 'कला'!

कला पति का स्पर्श पाते ही सुध में आई। वह हैरान सी रह गई और शेरसिंह के मुंह की ओर देखने

लगी।

'क्या है कला ?' और कला चुप ही रही।

'कला'।

'जी'।

'क्या बात है'

'कुछ नहीं'

'तू तो रोटी ला रही थी न ! क्या हो गया है तुझे ?

'कुछ नहीं परमात्मा से पूछ रही थी कि क्या इतनी मेहनतका यही फल है ?

इसमें परमात्माका दोष नहीं है कला ! हमारी मेहनत में अभी कसर है, तुम्हारे विचारोंमें अभी अंग्रेजी राज्यकी दुर्गन्ध है। क्या है इन रोटियोंमें कला इनमें हमें अपनी मेहनतके दर्शन करके प्रसन्न होना चाहिये। तू पागल है जो इसप्रकारके छोटे विचार मन में लाती है।

'मैं पागल नहीं हूं. आप ही बतायें कि क्या दिन भर कड़ा परिश्रम करने के बाद आपको यही खुराक मिलनी चाहिए ?'

'यह मेरी मेहनतकी रोटियां हैं कला, इनमें वह शक्ति है, वह ओज है, जो हमें लोह-पुरुष बना सकता है। अपने राष्ट्रमें अपनी मेहनतसे प्राप्त अन्नके दर्शन करके हमें प्रसन्न होना चाहिए कला ! आओ रोटी खाएं देखो इनके खाने में कितना आनन्द आता है।

❀ ❀ ❀

शेरसिंहकी नींद उचट गई। प्रयत्न करने पर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। वह उठता कभी नन्हीके मुंहको देखता और कभी कला के। कभी मुंडेरके सहारे जाकर खड़ा हो जाता। अन्तमें हार कर वह खाट पर जा लेटा और आकाशके तारों की सुषमाको निरखने लगा।

तारों के प्रकाश में उसकी स्मृतियां जागीं और साकार रूप से क्रमशः शेरसिंह के सामने आने लगीं। शेरसिंह ध्यान से स्मृतियों के अभिनय को देखने लगा अब उसे नींद न आने की चिन्ता न रह गई—एक दिन मैं अपने मित्र बलदेवसिंह के घर गया उसने कितना अच्छा स्वागत किया था, पर उसी ने तो बताया था कि मैं सिपाही हूँ तो क्या आमदनी तो मेरी एक मजिस्ट्रेट से भी बढ़कर है। उस दिन जब फत्तू ने एक खेत के झगड़े में लट्टो को मार डाला, तब मैं फत्तू को पकड़ने गया। फत्तूने कहा 'हवालदार साहिब ५००) पहिले ले लो और ५००) बाद में दूंगा, पर देखो मेरे आंच न आने पाये। मैंने ५००) जेब में रखे और इन्सपेक्टर साहिब से फत्तूको जाकर मिला दिया। इन्सपेक्टर साहिब ने भी फत्तू से १०००) धरा लिये और तुरन्त एक केस बनाकर फत्तू को १० तारीख से हवालात में पड़ा हुआ सिद्ध कर दिया, जब कि लट्टो का खून २० तारीख को हुआ था। क्या यह न्याय है, क्या यह अपराध और अपराधी को प्रोत्साहन नहीं है। क्या ऐसी कमाई उचित है ? मैं स्वयं मोटर ठेला वालों का चालान इसीलिये नहीं करता था कि वे मुझे प्रति खेप २) दे जाते थे। शाम को १०—२० लेकर ही घर लौटता था। मैं सुखी था परिवार सुखी था।

उस दिन जब कचहरी में क़ैदियों के कटघरे पर ड्यूटी लगी, तब हमारे पौ-बारह ही थे। २ घण्टे में ५०) की आमदनी ! केवल कैदियों से उनके रिश्तेदारों को मिलने देना ही तो था। कैदी को बीड़ी लाकर देने में ही २) सीधे हो जाते थे।

उस दिन चान्दी वालों ने इतनी सी बात के लिये १००) दे दिये कि मैं उनका चालान न करूं और यह पता न लगनेदूं कि वह बुढ़िया उन्हीके टांगे के नीचे आकर सख्त घायल हुई है।

पर तब मैं सुखी था। मुझसे ज्यादा कला सुखी थी, नन्ही सुखी थी। पर मुझे आत्म-शान्ति न थी, मानसिक भय मेरे प्राण हमेशा दबोचे ही रखता था।

अब आत्म शान्ति है, पर बाहिर चारों ओर दुःख है। क्या करूं ? कुछ समझ में नहीं आता। आत्म-शांति देखूं या अपना और परिवार का बाहिरी दुख ! कुछ समझ नहीं आता ? यह लोक देखूं या परलोक ? सुख देखूं या कर्तव्य ?

तभी सहसा उसे आकाश में एक वृद्ध पुरुष दिखाई दिया। उसने कहा–'कर्तव्य ! शेरसिंह ! कर्तव्य ! कर्तव्य !'

'कर्तव्य ! बापू ! कर्तव्य !'

हां ! कर्तव्य ! शेरसिंह ! हिन्दुस्तान तेरा है, तू इसका स्वामी है, इसकी रक्षा और व्यवस्था का तुझ पर उत्तरदायित्व है। क्या तुम देश माता के साथ विश्वास-घात करोगे ?

बापू ! मुझ से कर्तव्य नहीं निभता। ५७) रुपये ! कर्तव्य ! अभावग्रस्त परिवार ! बापू मैं सिपाही हूँ, मैं कड़ा से कड़ा परिश्रम कर सकता हूं, पर परिवार का अभाव मुझे असह्य है ! मैं यहां से चल दूंगा न मैं कर्तव्य का पालन करूंगा और न परिवार का दुःख ही देखूंगा। मुझे नहीं चाहिये ऐसा जीवन बापू।

शेरसिंह जैसे उसने भांग पी रक्खी हो, वह उठा उसने कमीज गले में डाली। पत्नी के मुंह को देखा, नन्ही को धीरे से चूमा और वह चल दिया। जब शेरसिंह जमना के पुल के पास पहुँचा तो उसे सहसा ध्यान आया—वही तो है राजघाट जहां बापू अनन्त समाधि लगाये विश्व का हित चिन्तन कर रहे हैं। उसके पैर राजघाट की ओर बढ़ चले।

नन्ही नन्ही बूंदे टपक रही थीं, तेज हवा एक चौंतरे के पास गड़े हुए डण्डे पर झण्डे को फहरा रही थी। शेरसिंह ध्वज के नीचे डण्डा पकड़ कर खड़ा हो गया। वह कुछ देर चुप रहा और समाधि पर जलते हुए दीपक को देखता रहा। उसके मन और मस्तिष्क ने अनेकों प्रश्न किये पर किसी अलौकिक दिव्य शक्ति ने उसके सभी प्रश्नों का समाधान कर दिया। रात्रि आधे से ज्यादा बीत चुकी थी। शेरसिंह शांति का अनुभव करता निश्चल खड़ा था। उसका मन और बुद्धि दोनों एक निश्चय पर पहुँच गये। वह कहने लगा—

परिवारको दुःखी छोड़ कर तुम भाग नहीं सकते ! परिवारका पालन भी तुम्हारा कर्तव्य है, । हिन्दुस्तानमें—स्वतन्त्र भारतकी न्याय और व्यवस्था के दायित्वका भार भी मुझ पर है। मैं परिवार के दो प्राणियोंके लिए देश के साथ विश्वासघात नहीं करूँगा।'

शेरसिंहके मुंहसे जब निकला 'विश्वासघात' उसे एक जोश आगया, वह अपना होश भूल गया। वह चिल्लाने लगा—

'मैं देशके साथ विश्वासघात नहीं करूँगा। नहीं करूँगा ! बापू मैं परिवारको भूखा मरजाने दूँगा, मैं अपने बच्चेको देश माताके चरणों पर चढ़ा दूँगा, पर मैं कर्तव्यसे नहीं डिगूँगा। नहीं डिगूँगा। सब मर जायें, मैं मर जाऊं मुझे इसकी चिन्ता नहीं मैं रिश्वत लेकर काम न करूंगा। बापू मैं रिश्वत न लूँगा, न लूँगा।'

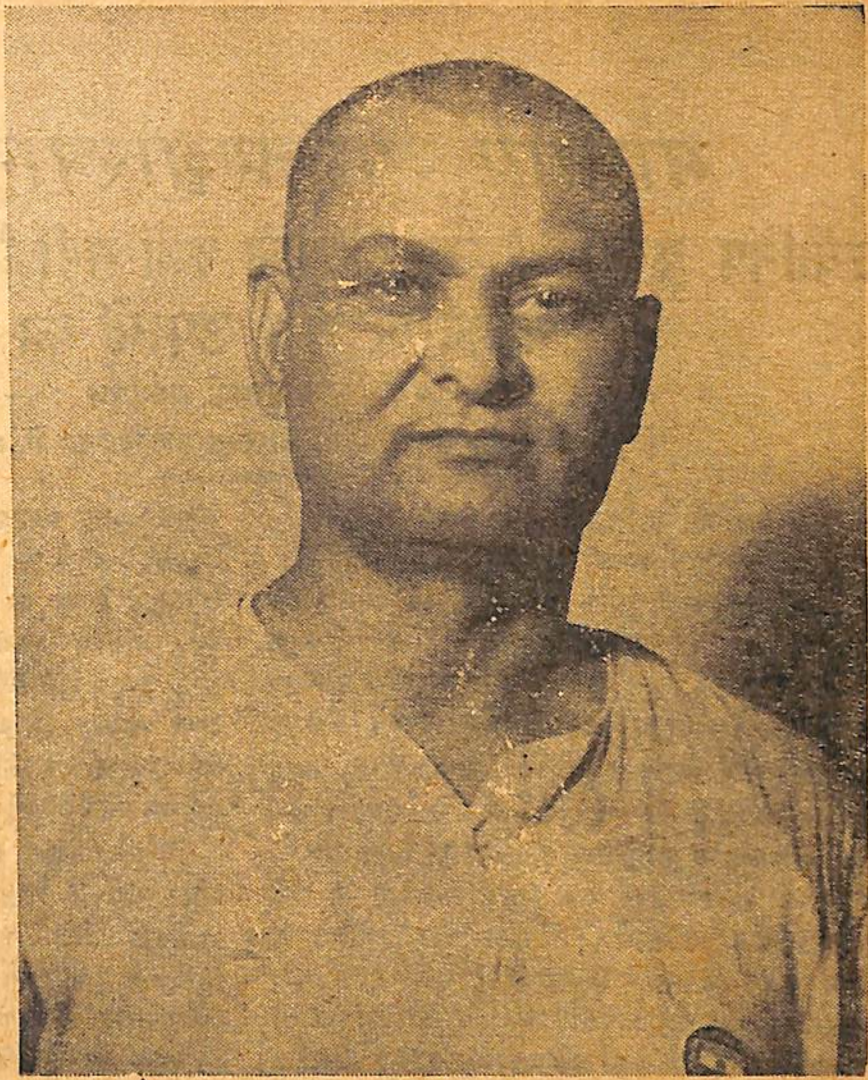
शेरसिंह चिल्लाता हुआ बापू की समाधि पर जा गिरा। उसने दोनों हाथोंका सहारा देकर सिरको समाधि पर टिका दिया और बराबर कहता चला गया 'मैं रिश्वत न लूँगा, मैं परिवार को देशमाताके चरणों पर चढ़ा दूँगा।"

शेरसिंह की चिल्लाहटसे पासमें सोए हुए 'हरिजन सेवक-सङ्घ' के सदस्य जागे और उन्होंने जाकर शेरसिंहको पकड़ लिया। वे उसे उठा कर अपने कमरे में ले आए और प्रातःकाल ही उन्होंने शेरसिंह को कांग्रेस कमेटी के दफ्तर में पहुंचा दिया। प्रेजिडेन्ट ने उसके कन्धे पर पढ़ा 'डी.पी.' और उससे सुना 'मैं सब को मर जाने दूंगा पर मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूंगा। मैं कभी रिश्वत न लूंगा।"

प्रेजीडेण्ट ने मामला भांप लिया और उसे साथ लेकर वे शहर के डी.जी. के पास पहुंचे। डी. जी. ने जांच पड़ताल की और उसके बच्चों को बुलाकर सारा हाल जाना। शेरसिंह ने जब अपनी नन्ही को देखा उसे जैसे होश आगया। उसने भागकर नन्ही को उठा लिया और 'आगये बेटे, आज चीज ला दूंगा।' कहता कहता रो पड़ा। डी. जी. ने मिठाई मंगाई और उसने नन्ही को दी। नन्हीं हंसने लगी और शेरसिंह प्रसन्न हो उठा।

शेरसिंह आज पुलिस-सब-इन्सपेक्टर होकर रिश्वत खोरी को दूर करने में संलग्न है। पर आज भी वह मेहनत की रोटी देखकर फूला नहीं समाता।

राहुल सांकृत्यायन



जिन लोगों को चोरी बन्द करने का काम मिला है, यदि वे खुद वही काम करते हों तो उनके लिये चोरी कैसे बन्द होगी ? पुलिस चोरों को पकड़ने और चोरी रोकने के लिये अपने को जिम्मेवार समझती है, लेकिन चौकीदार और कान्स्टेबिल ही नही थानेदार इन्सपेक्टर और ऊपरके अफसर तक हाथ गरम कर देने पर तरह दे देते हैं।............

जनता की सरकार कायम होने पर भी हम पुलिस के इस रवैये में कोई फरक नहीं देखते। जब तक इस तरह रिश्वत का बाजार गरम है, तब तक चोरी कैसे रुक सकती है ? ख्याल करने की बात है कि जिन लोगों को अपने परिवारकी परवरिश के लिये काफी रुपया हर महीने मिल जाता है, यदि वे अवैध आमदनी से हाथ हटाना नहीं चाहते तो भूख की पीड़ा से पीड़ित होकर चोरी करनेवाले अपने को कैसे रोक सकेंगे ?

—राहुल सांकृत्यायन

भारतीय ज्योतिश्शास्त्रानुशीलन

ज्यौतिष क्या है ? उसका फल क्यों नहीं मिलता ? न मिलने के कारण और उपायों का

—: एक विवेचनात्मक अध्ययन :—

[लेखकः—श्री० पं० रमानन्द सारस्वत ज्योतिषशास्त्री, साहित्य रत्न]

'अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥

यह श्लोक पूर्ण रूपेण अन्वर्थ है और इस श्लोक द्वारा ज्यौतिष शास्त्रका क्या महत्त्व है ? यह भली भांति प्रकट हो जाता है । कुछ लोगोंकी यह धारणा है कि ज्यौतिष शास्त्र एक कल्पित या झूठा शास्त्र है, इसका सिद्धान्त विभाग सही है और आर्ष (ऋषि–प्रणीत) भी है, किन्तु फलित विभाग न तो सत्य ही है और न आर्ष ही है । क्योंकि फलित का दूसरा नाम 'होरा–शास्त्र' है जैसा कि—'सिद्धान्त संहिता होरा रूपं स्कन्धत्रयात्मकम्' से ज्ञात होता है कि (१) सिद्धान्त (२) संहिता और (३) होरा ये तीन ज्यौतिषके मुख्य विभाग हैं । इनमें होरा शब्द भारतीय नहीं है यह विदेशी शब्द है और भारतीयोंने ग्रहण किया है, अतः यह फलित शास्त्र विदेशी है । कुछ लोगों का अब तक यही अनुमान है कि ज्यौतिष-शास्त्र सम्पूर्ण ही विदेशी है-क्योंकि इसकी अनेक प्रक्रियाएं पाश्चात्य प्रक्रियाओं से मिलती हैं । इसके अतिरिक्त गताङ्क (७/४) के 'त्रैमासिक भविष्य फल' को पढ़कर अनेकों जिन व्यक्तियों ने हमारे पास पत्र भेजे हैं उनकी भी यही एक शिकायत है कि बहुतसे ज्यौतिषी लोगोंको हमने जन्म-पत्र दिखाया, पर फल नहीं मिला–वास्तवमें अधिकांश ऐसा ही होता है । अतः जो लोग इसे झूठा कहते हैं उनकी धारणा कुछ अंश में सही ही है । यह मानना ही पड़ेगा कि सैंकड़ों वर्ष पूर्वके साधित नियम उदयास्त और ग्रहण-काल मिल जाते हैं । परन्तु तुरन्त की हुई भविष्य वाणियोंमें २५ प्रतिशत ही बड़े यत्न से मिल पाती हैं, अतः ज्यौतिषका फलित विभाग अवश्य ही संदेहास्पद है । यद्यपि इन सब उपर्युक्त बातों या ऐसी ही बातोंमें कितनी बातें युक्ति-युक्त हैं यह तो प्रायः समस्त विद्वान् जानते ही हैं, तथापि जन–साधारण अभी इन विषयोंसे नितान्त अनभिज्ञ है । ऐसी स्थितिमें इस लेखमें यह बतानेका यत्न किया जायगा कि ज्यौतिष क्या है और फल क्यों नहीं मिलता ? आदिके विवेचनके साथ मुख्य-मुख्य ज्यौतिष सम्बन्धी बातों का भी क्रमशः विवेचन किया जायगा ।

ज्यौतिष शास्त्र भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा प्रणीत अनेक शास्त्रोंमें से एक मुख्य शास्त्र है । भारत की उन गिरि-कन्दराओंमें कन्द-मूल फल खाकर जीवन व्यतीत करने-वाले महर्षियों ने समस्त संसार को ही नहीं जीता, किन्तु उन्होंने इस लोकके अतिरिक्त अन्य लोकों (स्वर्ग) से भी सम्पर्क स्थापित किया था—इसके साथ ही उन्होंने यह निश्चित रूपेण जान लिया था कि ग्रह, पृथ्वी और नक्षत्र-कक्षायें जो इधर-उधर घूम रही हैं इन सबका निर्माण पंच तत्वों में जिस ग्रह आदि में जिस तत्त्व की विशेष न्यूनता प्रतीत हुई उसका उन्होंने भिन्न-भिन्न नाम रखा–इस प्रकार ग्रहोंके द्वारा जो प्रभाव पड़ता है उसका उन्होंने अनुभव किया और यह सिद्ध कर दिखाया कि इन अनन्त भू, ग्रह, तारा पिण्डोंमें जो जिसके जितना निकट या दूरवर्ती है वह उतना ही कम या विशेष प्रभावशाली है—इसी विज्ञान को पृथ्वीके मानवोंके लिये अन्य देशीय परिज्ञानको और और उसके साधन की प्रक्रिया को उन्होंने जो लिपिबद्ध किया है वही प्रस्तुत ज्यौतिष शास्त्र है । ज्यौतिष शास्त्रके आश्रय से ही उन्होंने और उनके उत्तराधिकारी वंशजों ने

मनुष्य, मनुष्यकी पैतृक सम्पत्ति, कुटुम्ब, सुहृद्वर्ग, शत्रु-वर्ग, ग्राम और राष्ट्र तक के विषय में परिष्कार करते करते कब क्या और कैसे होगा आदि रूपों में इसे पल्लवित किया है। इस सम्बन्धमें मुख्य बात यह है कि संसारका सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद (चतुष्टय रूपमें) है वेदका ज्योतिष-शास्त्र नेत्र रूप में माना गया है जैसा कि—

'वेदस्य निर्मलं चक्षुः ज्योतिषं शास्त्रमकल्मषम्' आदि वाक्योंसे प्रमाणित होता है—ऐसी स्थितिमें वेदका सर्वोत्तम अङ्ग (नेत्र) होते हुए यह शास्त्र विदेशी कैसे हो सकता है। यदि वेद भी विदेशी हों तब तो ज्योतिष भी विदेशी विद्या हो सकती है, नहीं तो इसे विदेशी समझना भ्रांति है। इसके अतिरिक्त नेत्र एक श्रेष्ठ अङ्ग है और मनुष्यके ६७% प्रतिशत भावोंका उदय नेत्र से, २% प्रतिशत कानोंसे और केवल १% प्रतिशत नाक मुंह और हाथों से होता है, ऐसा—मनोविज्ञान शास्त्रियों का मत है। अतः इतना श्रेष्ठ स्थान एकाएक किसी विदेशी शास्त्र को हमारे भारतीय विद्वान् कभी नहीं दे सकते थे। यह बात अवश्य है कि गुप्त-कालके बाद हमारे ज्योतिषियोंका अरबों और ग्रीकों से सम्बन्ध हुआ और उन्होंने शब्दों का आदान-प्रदान भी किया; किन्तु उसी प्रकार जिस प्रकार कि समुद्र में नदियां कितनी ही गिरें, समुद्र केवल समुद्र ही रहेगा, वह पानी बहानेका रूप (नदी) कभी नहीं धारण करेगा न मर्यादा ही छोड़ेगा। हां यह बात अवश्य है कि विशेष पानी से उसमें लहरों का नर्तन अधिकाधिक दिखाई दे; पर समुद्रपन छूटना असम्भव है। उसी प्रकार भारतीय ज्योतिषियोंने उन शब्दों को ग्रहण किया, पर क्या यह मानने में आ सकता है या किसी प्रकार माना जा सकता है कि ऐसी स्थिति में वे विदेशी शास्त्रोंको इतना महत्त्व नेत्ररूप देते और वह भी वेद का ? कभी नहीं। इसके अतिरिक्त जिस समय हमारे यहांके दिग्दिगन्त वेदध्वनियोंसे झंकृत हो रहे थे, उस समय सारा संसार या तो शैशवकी नींद में निमग्न था या असभ्यताके पाशमें पड़ा हुआ था। आज जो और देश अपनी वैज्ञानिकता की धूम मचा रहे हैं उस समय अतीतके गर्भमें ही पड़े थे। आज जिन आविष्कारों पर भारतीय चमत्कृत हैं उन्हें यह ज्ञात ही नहीं है कि इससे भी अधिक आविष्कार तो हमारे पूर्वज पहले ही कर गये हैं।

ऐसे महर्षियों की बुद्धि पर क्या इतना सन्देह किया जा सकता है कि वे ज्यौतिष जैसे शास्त्रोंके निर्माण करने की सामर्थ्य नहीं रखते थे ? कदापि नहीं। ऐसा मानना उन महापुरुषोंके साथ अन्याय करना होगा। दूसरे ज्योतिष वेदका नेत्र है और वेद-काल में किसी और देश या जाति का इतना उन्नत अस्तित्व ही नहीं था, जिसका वे कुछ अनुकरण करते—क्योंकि कर्ता के बाद अनुकर्ता होता है। जो पीछे उत्पन्न होता है वही पहले व्यक्तिका अनुकरण करता है, किन्तु जो पहला व्यक्ति होता है वह पिछलेका अनुकरण कदापि नहीं कर सकता, अतः जो लोग ज्योतिष को यह समझते हैं कि यह विदेशी लोगोंके सम्पर्कसे बनाया गया शास्त्र है, उन्हें यह भली प्रकार समझना चाहिये कि हर बातमें विदेशों ने भारतकी नकल की है भारतने उनकी नकल कदापि नहीं की। क्योंकि भारतके महर्षिगण परम बुद्धिमान् थे और उन्हें किसीसे सीखने की आवश्यकता ही नहीं थी। उनका उद्घोष (नारा) था कि—

एतद्देश-प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥
तथा यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्

अर्थात् जो यहाँ है वही और जगह भी है (नकलके रूपमें बदला हुआ) किन्तु जो यहां नहीं है वह कहीं भी नहीं है। अतः ज्यौतिष शास्त्र भी उनका अपना है। दुर्भाग्य से अंग्रेजी विद्याके प्रभावसे आज हम विदेशी लोगों के हर बातमें अनुकरणशील बन गये हैं, किन्तु हमारे पूर्वज ऐसे नहीं थे। विदेशी ही उनकी नकल करते थे। पर साथ ही यहां यह तर्क हो सकता है कि फिर होरा शास्त्र' नाम क्यों ? और विदेशी शब्दों की भरमार क्यों ? इसका क्रमसे नीचे स्पष्टीकरण किया जाता है—

इससे पूर्व हमने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है है कि ज्यौतिष भारतीय विद्या है और इसका मूल वेद-काल ही है। अब हमें वेदोंके प्रमाण देकर यह सिद्ध करना चाहिये कि क्या ज्यौतिष (सिद्धांत संहिता और होरा) वेदकाल में भी प्रयुक्त था ? यदि था तो किस रूप में ?

वस्तुतः सिद्धान्त और फलित (संहिता और होरा मिला कर) एक ही हैं। सिद्धान्तमें केवल ग्रहोंके साधनका वर्णन और प्रकार है तो फलितमें उनकी उपयोगिता और लाभालाभका निदर्शन। तात्पर्य यह है कि सिद्धान्तके बिना फलित अपूर्ण है तो फलितके बिना सिद्धान्त भी एक प्रकार से अपूर्ण। इसे यों भी कहा जा सकता है कि दोनोंका अविनाभाव सम्बन्ध है अस्तु—

वेद विश्वकी प्राचीनतम विभूति हैं, चारों वेदोंमें ऋग्वेद सबसे अधिक प्राचीन गिना जाता है। ऋग्वेद-कालमें भी सूर्य-चन्द्रकी सूक्ष्मगतिका महर्षियोंने अनुभव प्राप्त कर लिया था— (ऋक् ६। २। ७)

'प्रपद्येते श्रविष्ठादौ सूर्याचन्द्रमसावुदक्।
सर्पार्धे दक्षिणार्कस्तु माघश्रावणयोः सदा ॥'

अर्थात् घनिष्ठाके अग्र बिन्दुमें सूर्य चन्द्रके आने पर एवं आश्लेषाके मध्य बिन्दुमें सूर्य चन्द्रके आने पर ही क्रमसे माघ और श्रावणमें उत्तरायण व दक्षिणायन होता है। इसी प्रकार दिनकी और रात्रिकी घटाबढ़ीके सूक्ष्म विज्ञानका भी उन्हें परिज्ञान था—

'घर्मवृद्धिरपां प्रस्थः क्षपा ह्रास उदग्गतौ।
दक्षिणे तौ विपर्यासः षण्मुहूर्त्ययनेन तु ॥' (७। २८)

अर्थात् उत्तरायणसे प्रतिदिन जलके एक प्रस्थके बराबर दिनकी वृद्धि और रात्रिका ह्रास होता है, इसी प्रकार दक्षिणायनमें एक प्रस्थ जलके तुल्य ही विपर्यय (बदलाव) होता है। अर्थात् दक्षिणायनमें एक प्रस्थके बराबर दिनका प्रतिदित ह्रास एवं रात्रिकी वृद्धि होती है और एक अयनमें ६ मुहूर्त (मास) होते हैं। इसके अतिरिक्त ऋग्वेदके तैत्तरीय ब्राह्मणकी तैत्तरीय संहिताको देखनेसे स्पष्ट लक्षित होता है कि ऋषियोंको अयन-चलनका जितना मार्मिक ज्ञान था वह शब्दोंसे अवर्ण्य है। यह तो अयन विषयक बातें हुईं—इनके अतिरिक्त ऋग्वेदके एक स्थान (४। २। १२) में लिखा है कि ग्रहण सम्बन्धी गणितका ज्ञान जितना अत्रियोंको था उतना और किसीको नहीं था—

यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसा विध्यदासुरः।
अत्रयस्तमन्वविन्दन्नह्यन्ये अशक्नुवन् ॥'

यं सूर्यं (जिस सूर्यको) आसुरः स्वर्भानुः (राहु असुर ने) वै (निश्चय पूर्वक) विध्यत् (विद्ध किया था) तं (उस सूर्य-ग्रहणको) अत्रयः अन्वविन्दन् (अत्रि कुलोत्पन्न महर्षियोंने ही जाना) नह्यन्ये अशक्नुवन् (और लोग न जान सके) इन सब बातोंसे यही प्रमाणित होता है कि हमारे महर्षियों को वेद कालमें ही इन सब बातों का सूक्ष्म परिज्ञान हो चुका था। बल्कि प्राचीन समयमें फलित-शास्त्र के द्वारा फल कहने की पद्धतिका भी सङ्केत मिलता है। भारतीय ज्योतिषमें आजकल अश्विन्यादि नक्षत्र प्रचलित हैं। यही पूर्व समयमें भी प्रचलित थे। किन्तु इतना अन्तर अवश्य हुआ है कि उस समय नक्षत्र क्रम अश्विनी, भरणी कृतिकादिक न हो कर कृत्तिकासे ही प्रारम्भ था—जैसा कि निम्न उद्धरणसे प्रकट होता है—(अथर्व० १६। १। ७)

"सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी
चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ॥ १ ॥
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो
भानुराश्लेषा अयनं मघामे ॥ २ ॥
पुण्यं पूर्वाफाल्गुन्यो चात्र हस्तः
चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे ह्यस्तु
राधे विशाखे सुहवाऽनुराधा
ज्येष्ठासु नक्षत्रमरिष्टमूलम् ॥ ३ ॥
अन्नं पूर्वा रासतां मे अषढ़ा
ऊर्जं देव्युत्तरा आवहन्तु।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव
श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम् ॥ ४ ॥
आमे महच्छतभिषक् वरीय
आमे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म।
आ रेवती चाश्वयुजौ भगं
आ मे रयिं भरण्य आवहन्तु ॥ ५ ॥"

इसके अतिरिक्त—

'वाजनीवती सूर्यस्य योषा चित्रा मघा राय ईशे वसूनाम्
(ऋ० ७। ७५। ५)

में चित्रा और मघाका स्पष्ट उल्लेख है। यजुर्वेदके 'वायुर्वात्वा मनुर्वा त्वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः' (७। ७) मन्त्रमें २७ नक्षत्रोंकी संख्या देते हुए उनको गन्धर्व संज्ञा दी है। इसी प्रकार कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तरीय ब्राह्मण

में (१।५।२।५) अट्ठाइस नक्षत्र और उनके स्वामियों तथा उनके फलाफलका भी वर्णन किया गया है जो वर्तमान समयमें प्रचलित नाम और स्वामियोंके नामसे यथा-तथा मिलता है। शतपथ ब्राह्मण और तैत्तरीय संहितादिक में भी—

'ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतोर्यमस्य,
मूल बर्हणात् परिपाह्येनम्।
अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा
दीर्घायुत्वाय शत शारदाय॥
(अथर्व० ६।११।१११।२)

आदिके सूक्तमें मूलोत्पन्न शिशुको अरिष्ट-कारक कहा गया है और इसकी शान्तिके लिए भी कहा गया है जो अब तक भारतवर्षमें प्रचलित है—इससे अधिक फलितके प्राचीनताका प्रमाण क्या मिल सकता है? इसके अतिरिक्त तैत्तरीय आरण्यकके प्रथम प्रपाठकमें जहाँ पञ्चाग्नी और वैशम्पायन आदि ज्योतिषियोंके मत अङ्कित हैं, वहाँ आरोग और भ्राजादि सूर्यके भिन्न-भिन्न विषय भी वर्णित हैं—इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन महर्षिगण सूक्ष्मतम ज्योतिर्विषयके मर्मज्ञ थे। यद्यपि इन प्रमाणोंसे ज्योतिषके सम्बन्धमें पर्याप्त स्पष्टीकरण हो सकता है—पर फिर भी कुछ लोगोंका यह तर्क रहता है कि हो सकता है कि ज्योतिषका कुछ लोगों को परिज्ञान रहा हो—पर तब तक यह प्रचारमें नहीं आया था और यह पठन-पाठनके योग्य विषय नहीं था—इस विषयमें साम ब्राह्मणके छान्दोग्य भागके सातवें प्रपाठकके पहले खण्डके द्वितीय प्रवाकमें सनत्कुमार—नारद-सम्वाद बहुत सुन्दर रूपमें वर्णित है। वहाँ सनत्कुमारके प्रश्नके उत्तरमें नारदने कहा था कि मैंने निम्न चौदह विद्याएं वेद-चतुष्टय ससंहिता पढ़ी हैं।

१. इतिहास पुराणानि (History)

२. 'वेदानां वेदम्' वेदोंके भी अर्थ बताने वाली जैसे व्याकरण निरुक्त आदि (Grammar and Philologe etc.)

३. 'पित्र्यम्' पितर सम्बन्धी विद्या (Anothropology).

४. 'राशिम्' गणित (Mathematics)

५. 'दैवम्' देव प्रकोपादि बतलाने वाली अथवा देवताओंको प्रसन्न करने आदि सम्बन्धी (Geology and physicol geogrophy)

६. 'निधिम्' खान सम्बन्धी विद्या (Minerology)

७. 'वाकोवाक्यम्' तर्क शास्त्र (Logic)

८. 'एकायनम्' नीतिविद्या (Ethies)

९. 'देवविद्याम्' इसका अर्थ न जाने किस लिए प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि 'दैवम्' और 'देवविद्याम्' का एक ही आशय प्रतीत होता है—फिर भी इसका अर्थ हम रसायन विद्यामें ले सकते हैं (Physical Science)

१०. 'ब्रह्म-विद्याम्' (Theosophy)

११. भूतविद्याम्' शारीरिक विज्ञान (Zoology, Anotomi etc.)

१२. 'क्षत्र विद्याम्' राज शासन सम्बन्धी विज्ञान तथा सैन्य सम्बन्धी विज्ञान (Military science and the art of government)

१३. 'नक्षत्र विद्याम्' ज्योतिष (Astronomy)

१४. 'सर्प-देव जन विद्याम्' जिसमें सर्प सम्बन्धी विज्ञान व देव तथा मनुष्योंका विशेष विज्ञान आदि हो (The Scince tereatiny of venomous reptiles etc)

इस उद्धरणसे विदित होता है कि प्राचीनकालमें न केवल ज्योतिष का प्रचार ही था, न केवल उसका प्रयोग और फल—निर्णय ही होता था, अपितु उसका पठन पाठन भी होता था। ऐसी स्थितिमें जो लोग इसे विदेशोंका उधार लिया हुआ ऋण मानते हैं वे कितनी भूलमें हैं और कितना हमारे शास्त्रोंके साथ महान् अन्याय अपनी अनभिज्ञतासे कर रहे हैं यह स्वयम् उन्हें समझना चाहिए। इससे भी बड़ी और जबर्दस्त जो बात है वह यह है कि बिना किसी उपयोगमें आनेवाली वस्तुका प्रभाव सम्पूर्ण समाज पर नहीं हो सकता है और कुछ विशेष कारणों (प्रापेगेन्डा) से हो भी जाय तो वह स्थायी नहीं रह सकता। भारतवर्षके एक सहस्र वर्ष तक परतन्त्र रहने और बौद्ध एवं अन्य विरोधियों भारतीय धर्मके शत्रुओंके पूर्णतः प्रचार

करते रहने पर भी इस नास्तिकता-पूर्ण युगमें आज भी समस्त विश्वके एक तिहाई व्यक्ति ऐसे हैं जो ज्योतिषमें विश्वास करते हैं। भारतवर्षमें तो अब भी ऐसे व्यक्तियोंकी कमी नहीं है जो फलित ज्योतिषको सर्वथा सत्य मानते हैं। यद्यपि उनका मत है कि सौ में से २५ ज्योतिषियोंकी वाणी मुश्किलसे सर्वाङ्ग सत्य मिलती है, तथापि वे इस शास्त्रपर दृढ़ भरोसा रखते हैं। इसके अतिरिक्त जब वेद-कालसे आज तक ज्योतिष-सुरसरि उसी अविच्छिन्न रूपमें बहती स्पष्ट लक्षित हो रही है तब कोई कारण नहीं कि हम ज्योतिषको आधुनिक या मध्यकालीन मान सकें। ऊपर कुछ प्रमाणों द्वारा वेद कालमें ज्योतिषके प्रचारका निदर्शन कराया गया है। इसके बाद महाभारत कालसे पूर्व महर्षि भृगु और गर्ग ज्योतिषके अत्यन्त विद्वान् होगए हैं। महाभारतमें शर-शय्या पर पड़े हुए आबाल ब्रह्मचारी पितामह भीष्मका उत्तरायणमें ही देहत्याग करना—

'निवृत्तमात्रे त्वयने उत्तरे वै दिवाकरे।
समावेशयदात्मानमात्मन्येव समाहितः॥
शुक्ल पक्षस्य च ष्टम्यां माघमासस्य पार्थिव।
प्राजापत्ये च नक्षत्रे मध्यं प्राप्ते दिवाकरे॥

तथा—

शुक्ल पक्षे दिवा भूमौ गंगायां चोत्तरायणे।
धन्यास्तात! मरिष्यन्ति हृदयस्थे जनार्दने॥

आदि वाक्यों द्वारा देहोत्सर्ग करना—तथा

ऐन्द्रे चन्द्रसमारोहे मुहूर्तेऽभिजिदष्टमे
दिवो मध्यगते सूर्ये तिथौ पूर्णेति पूजिते॥,

श्लोकों द्वारा—आश्विन शुक्ल पञ्चमी चन्द्रवारको मध्यान्हमें अष्टम अभिजिन्नामक मुहूर्तमें युधिष्ठिरका जन्म होने का उल्लेख होना तथा आदि पर्वमें द्रौपदीको बिदा करते समय द्रुपदका यह कहना कि 'जो सम्बन्ध रोहिणीका सोमसे, भद्राका श्रवण से अरुन्धतीका वशिष्ठसे है वही सम्बन्ध तू अपने पतियों से जोड़े रहना। तथा महाभारत की सूचना में 'सूर्यका राहु से ग्रस्त होना श्वेतग्रहका चित्राको अतिक्रमण करना, धूमकेतुका पुष्यमें उदय होना, अङ्गारकका मघा नक्षत्रोंमें वक्रगति, शुक्रका पूर्वा भाद्रपदमें उदय होना, सप्तऋषियोंका प्रकाश नष्ट हो जाना, चतुर्दशी पंचदशी और भूतपूर्वा षोडशीमें सूर्य चन्द्रका ग्रहण होना, आदि-आदि क्या यह नहीं स्पष्ट करते कि उस समय ज्योतिषका पर्याप्त प्रचार था। इसके अतिरिक्त दुर्योधन-जन्म, कर्ण और कृष्णके मिलाप स्थलोंपर जो-जो बातें कही गयी हैं वे इस शास्त्रकी महानता और प्राचीनताका गंभीर उद्घोष स्वतः कर रही हैं।

इसके बाद आदि कवि वाल्मीकिकी सुप्रसिद्ध पुस्तक रामायणमें राम-जन्म सम्बन्धी ग्रह-स्थिति तथा अन्य अनेक स्थलों पर ऐसे अधिकाधिक प्रमाण उपलब्ध हो सकते हैं, जिनसे इस शास्त्रकी महत्ता स्पष्ट परिलक्षित होती है। भारतसावित्री में महाभारतारम्भका समय यह बतलाया गया है—

हेमन्ते प्रथमे मासि शुक्लपक्षे त्रयोदशीम्।
प्रवृत्तं भारतं युद्धं नक्षत्रे यमदैवते॥
अमावस्यान्तु मध्यान्हे निहतः शल्य एव च।
अमावस्यान्तु संध्यायां राजा दुर्योधनो हतः॥"

इसके अतिरिक्त पुराणोंमें विष्णु-पुराण जिसे विशेष प्रामाणिक माना जाता है—

"वैशाख मासस्य तु या तृतीया
नवम्यसौ कार्तिक शुक्ल पक्षे।
नभस्य मासस्य तमिस्रपक्षे त्रयोदशी पंचदशी च माघे॥
एताः युगाद्याः कथिता पुराणै-
रनन्त पुण्यास्तिथयश्चतस्रः॥

द्वारा विविध पुराणोंसे भी इस शास्त्रकी महत्ता स्पष्ट हो जाती है। इसके अनन्तर रघुवंशमें रघुके जन्मके ग्रहोंकी—

'ग्रहैस्ततः पंचभिरुच्चसंश्रयैरसूर्यगैः— यह निदर्शना कवि-कुल-गुरु कालिदासके समय ज्योतिषीका कितना व्यवहार था लक्षित करती है। बादके महात्मा बुद्ध के धम्मपद तथा जैनियोंके ग्रन्थ देखनेसे विदित होता है कि ये ज्योतिषके निन्दक थे—ऐसी स्थितिमें यह माना जा सकता है कि उस समय ज्योतिषका प्रभूत प्रचार था।

रही ग्रीक शब्दोंके प्रचारकी बात सो इस विषयमें यह कथन है कि छठी शताब्दीमें भारतमें बहुतसे ग्रीक विद्यार्थी पढ़ने आये थे, उनके द्वारा ही यह विद्या यवनोंमें फैली। इससे पूर्वके (छठी सदीके) ग्रंथोंमें न तो कहीं ग्रीक शब्दोंकी ही चर्चा है और न ऐसे प्रयोग ही। ग्रीकोंके

द्वारा ही इस शास्त्रका विस्तार हुआ है। यवनाचार्य हमारे शास्त्रमें पीछेसे प्रविष्ट हुए हैं। अरब देशके वासी इस गणित विद्याको अब भी 'हिन्दसा' कहते हैं।

स्वनामधन्य राष्ट्र कवि श्री मैथिली शरणजीने इसीलिए ही अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'भारत-भारती' में क्या ही सुन्दर लिखा है—

डर कर कठोर कलङ्कसे वा सत्यके आतङ्कसे !
कहते अरब वाले अभी तक 'हिन्दसा' ही अङ्कसे ॥

इतना सब होते हुए भी कुछ पूर्वीय और पश्चिमीय महाशय इस सत्यका गला घोंटनेको अब भी कमर कसे बैठे हैं। पश्चिमीय विद्वानों में एक श्रीयुत वेंटली साहबने ज्योतिषको आधुनिक सिद्ध करनेकी बड़ी भारी चेष्टा और परिश्रम किया था, पर अन्तमें उन्हें भी यह स्वीकार करना पड़ा कि हिंदुओंने ३३०० वर्ष पूर्व ही २७ नक्षत्रों का ज्ञान कर लिया था। इतने प्रत्यक्ष प्रमाण होते हुए भी धन्य हैं ऐसे महानुभाव जो भारतीय विद्याओं पर इस प्रकार निर्मम कुठाराघात करते हैं।

अरबी भाषामें ७०० वर्षसे भी पुरानी एक पुस्तक है। जिसका नाम "ओयन-उल-अम्बाफितलकाबुली अत्वा" है। इस पुस्तकमें लिखा है कि भारतीय विद्वानोंने अरब के अन्तर्गत बगदादकी एक राजसभामें जाकर ज्योतिष चिकित्सा आदिकी शिक्षा दी थी।" कर्क नामके (गर्ग ?) एक पण्डित ६६४ या ६६५ शाकेमें बादशाह अलमंसूरके दरबारमें गये थे। ये चिकित्सा ज्योतिष और रसायनके अच्छे विद्वान् थे। इनके पास बहुत-सी आर्य-पुस्तकें थीं। जिनमेंसे एकका नाम "बिहत्-सन-हिन्दसा" था हो सकता है यह पुस्तक "बृहत्-संहिता" रही हो।

'सूर्य सिद्धांत' ज्योतिष की एक अति प्राचीन पुस्तक है। इसमें इसका निर्माण-काल भी लिखा है—(काल विवरण श्लोक २२ व २३ का भावार्थ) वर्तमान कल्प या सृष्टिके संधि सहित ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं, वैवस्वतके २७ चतुर्युगी तथा २८वें युगके सतयुगका भी अन्त हो चुका है, इससे हम इस पुस्तकका काल निर्णय सहजमें कर सकते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पुस्तक रचना के समय सतयुग बीत चुका था और त्रेताका प्रारम्भ था। अतः त्रेता और द्वापरके मानमें गत कलि (वर्तमान सम्वत् तक) जोड़ दें तो पुस्तक रचना काल निकल आयगा। अतः त्रेतामान १२६६०००+८६४००० द्वापर मान=२१६००००में गत कलि सं०२००५ तक ५०४६ जोड़ा तो २१६५०४६ वर्ष निकल आये। यही इस पुस्तक का रचना काल हुआ। अब विचारणीय विषय है कि इतने प्राचीन शास्त्रको जो व्यक्ति सिर्फ १३०० या १५०० वर्ष के करीबका बना हुआ समझते हैं उन्हें क्या कहा जाय ? यह तो स्वयं पाठक ही विचार करें।

यह तो हुई वेदकालसे अब तक ज्योतिष प्रवाहके अविराम प्रवाहित होनेकी बातें जिनमें शास्त्रीय प्रमाण ही बहुलतासे दिये गये हैं। किन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो न तो शास्त्रको ही मानते हैं और न शास्त्रीय प्रमाणोंको ही। ऐसे व्यक्ति सर्वांशमें अग्रेजोंके प्रायः अनुकरणशील ही होते हैं और किसी भी वस्तुको जबतक पाश्चात्य विद्वान् भली या बुरी न कह दें न तो भली समझते हैं और न बुरी। उन्हें तो मानों अपनी आंखोंसे देखना भी नहीं आता। उक्त विषयमें इसीलिए इच्छा न रहने पर भी कुछ प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानोंके मत इस लेखमें संगृहीत किये जाते हैं ताकि ऐसे महानुभाव भी जान लें कि पाश्चात्य विद्वानोंमें जो विवेकी हैं, वे किस रूपमें इस तथ्यको स्वीकार करते हैं।

(१) प्रोफेसर बेवर (Bewar) और कोल ब्रुक साहबने यह सिद्धकर दिखलाया है कि चीन और अरबकी ज्योतिष विद्याका विकास भारतवर्षसे ही हुआ है, उनका क्रांति-मण्डल हिन्दुओंका ही है। निस्सन्देह उन्हींसे अरब वालोंने इसे लिया था।

(२) इस शास्त्रमें (ज्योतिष शास्त्रमें) हिन्दू लोग संसारकी समस्त जातियोंसे बढ़कर हैं। मैंने अनेक भाषाओंके अंकोंके नाम सीखे हैं, परन्तु मैंने किसी जातिमें हजारसे आगेकी संख्याके लिए कोई नाम नहीं पाया, किंतु हिंदुओंमें १८ अंकोंकी संख्या तक के ज़िये नाम हैं और वे उसे परार्धक कहते हैं।'

—एलबरूनी

(३) बीज गणित और रेखा गणितका आविष्कार

और ज्योतिषके साथ उनका प्रथम प्रयोग हिंदुओंके द्वारा ही हुआ।

—मानियर विलियन्स

(४) बेली नामक एक प्रसिद्ध पाश्चात्य ज्योतिर्षीने अपने समयसे ४३८३ वर्ष पूर्वके साधित भारतीय सूर्य-ग्रहण गणितको पुनः गणना द्वारा जांचकर कहा है कि भारतवर्षके आर्यवंशीय पंडित ज्योतिषी लोगोंकी गणना निर्भ्रान्त होती है और उसमें एक मिनिटकी भी भूल नहीं रहती।

—थियोजोनी आफ दी हिन्दूज

(५) 'संसार रेखा गणितके लिये भारतवर्ष और हिंदुओंका ही ऋणी है, यूनान या अन्य किसी देशका नहीं।'

—डाक्टर थीबो

(६) दशमलवके सिद्धांतानुसार अंकोंके रखे जानेके लिये हिंदुओंका संसार ऋणी है। इस सिद्धांतके न होनेसे गणित-शास्त्रका होना ही असम्भव था। पहले पहल अरब वालोंने अंक लिखनेकी रीति हिंदुओंसे ही सीखी, उन्होंने इसका यूरोपमें प्रचार किया। प्राचीन यूनानी और रोमन इस अंक लिखनेकी रीतिको नहीं जानते थे; इसीलिये वे अंक-गणितमें उन्नति न कर सके।'

—आर० सी० डुत्ते

(७) 'हिंदुस्तानियोंने रेखा गणितके मूल सिद्धांत निकाले और उसे यूनानियोंको सिखाया।'

—आर० सी० दत्त

इसके अतिरिक्त और भी अनेकों विवेकी पाश्चात्य विद्वानोंने इस सम्बन्धमें अपने विचार व्यक्त किये हैं, किंतु अनावश्यक विस्तार न करनेकी इच्छासे वे उद्धृत नहीं किये जा सके।

तत्व यह है कि क्या प्राचीन विद्वान् और क्या नवीन विद्वान् तथा क्या पूर्वीय और क्या पश्चिमीय सभी विज्ञ यह सादर स्वीकार करते हैं कि ज्योतिष विद्या भारतीय है, भारतीय विद्वान् ऋषि मुनि आचार्योंने इस विषयमें भिन्न-भिन्न ग्रन्थोंका प्रणयन किया है। वेदका नेत्र रूपक अंग होनेसे यह भी वेदकी भांति अनादि और अनन्त है। क्योंकि उदाहरणतः किसी व्यक्तिके जन्मके साथ ही नेत्रोत्पत्ति होती है और मृत्युकाल तक यदि उनमें कुछ विकार मध्यमें न हो तो रहती हैं। उसी प्रकार यह शास्त्र भी वेदके साथ ही उत्पन्न हुआ है और जबतक वेदोंकी सत्ता विद्यमान है यह शास्त्र भी विद्यमान रहेगा। इस प्रकार इतना सिद्ध करनेके अनन्तर अब हम प्रस्तुत विषय पर आते हैं—

ज्योतिष क्या है ?

ऊपर यह बताया जा चुका है कि पृथ्वीतलके व्यक्तियोंका आकाश स्थित ग्रहोंसे जिस विद्या द्वारा सम्पर्क स्थापित किया जा सके वह ज्योतिष है। ज्योतिष-शास्त्र की शास्त्रीय व्युत्पत्ति यह है—ज्योतिः 'सूर्यादिगोलमधिकृत्य कृतो ग्रन्थो ज्योतिषम्; तत्सिद्धांत संहिता होरा रूपेण स्कन्धत्रयेण शासत्वाच्छास्त्रम्' अर्थात् सूर्य चन्द्रादि ग्रह गोलोंके आधार पर रचे गये ग्रन्थों को ज्योतिष कहते हैं, यह (ज्योतिष) सिद्धांत संहिता और होरा इन तीन विभागों द्वारा जगत् पर शासन करता है अतः इसे 'ज्योतिष शास्त्र' कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र बहुत बड़ा शास्त्र है। कहीं तो इसके पांच अङ्ग कहे गये हैं और कहीं छः अङ्ग। इसलिये यह शास्त्र साधारण शास्त्र न होकर एक बहुत बड़ा शास्त्र-महाशास्त्र है। 'लक्षं व्याकरणं प्रोक्तं चतुर्लक्षं तु ज्योतिषम्' के अनुसार इस समय ज्योतिषका बहुत भाग प्रायः अनुपलब्ध है।

'पञ्चस्कन्धमिदं शास्त्रं होरा गणित संहित।
केरलिः शकुनं चेति ज्योतिः शास्त्र मुदाहृतम्।
'जातक गोल निमित्त प्रश्न मुहूर्ताख्य गणितभानि'
अभिदधतीह षडङ्गान्याचार्या ज्योतिषे महाशास्त्रे।।'

आदि प्रमाणों से ज्योतिषकी षडङ्गता और पंचाङ्गता सिद्ध होती है। किन्तु यह ज्योतिष त्रिस्कन्ध है। इसे तो प्रायः सभी स्वीकार करते ही हैं। तत्त्व यह कि—

'वेदास्तावत् यज्ञ कर्म प्रवृत्ताः।
यज्ञाः प्रोक्तास्तेऽपि कालाश्रयेण (सि० शि०)

वाक्योंके अनुसार ज्योतिष एक ऐसा शास्त्र है जिसके बिना संसारका कोई कार्य नहीं चल सकता। अन्य शास्त्र तो केवल कल्पना और विवादके विषय मात्र ही हैं। आयुर्वेद शास्त्र भी केवल विद्यमान रोगोंको ही मिटा सकता

है, अतः उतना प्रत्यक्ष नहीं है जितना कि ज्योतिष। ज्योतिष शास्त्रसे पिछले समयमें क्या हुआ था, अब क्या हो रहा है और आगे क्या होने वाला है, भली-भांति जाना जा सकता है। ऐसी कोई बात नहीं है जो ज्योतिष-शास्त्र से पृथक् हो। त्रिस्कंध ज्योतिषका मर्मज्ञ विद्वान् ज्योतिषी दैवज्ञ कहलाता है। वह ऊंचेसे ऊंचा ब्रह्मवेत्ता कहा जा सकता है। प्रत्येक प्रकारके समस्त संसारके कार्योंका उसे ज्ञान होता है। यह ज्ञानी होकर भी अजान बना रहता है। प्राचीन महर्षियोंको यह शक्ति प्राप्त थी। आजके ज्योतिषी घंटो गणित कर जिस बातके निर्णय पर नहीं पहुंच पाते वे लोग केवल मनुष्यको देखने मात्रसे ही यह निश्चय कर लिया करते थे और जैसा भला या बुरा 'दैव' या भाग्य किसी व्यक्तिका होता तदनुरुप समय में वैसा ही उसे वे वरदान या शाप दे देते थे। आजके ज्योतिषियोंकी भांति वे हर किसीको न तो वर ही देते थे और न किसी को अनायास ही शाप देते थे। बड़े बड़े वैज्ञानिकों तथा महर्षि पतञ्जलि ने अपने योग-दर्शन में यह स्वीकार करते हुये स्पष्ट लिखा है कि मनुष्योंकी बुद्धिका ह्रास धीरे धीरे होता जा रहा है। जो लोग वेद जैसे ग्रन्थ बनाते थे उनके वंशज टीकाओं पर ही विश्राम करने लग गये। उनके वंशज केवल संस्कृत ग्रन्थ समझाने भरकी ही प्रतिभा रखते थे। आजके व्यक्ति सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सरल भाषा हिंदीको समझने में असमर्थ होते जा रहे हैं। यह क्रमशः ह्रास होता जा रहा है। और यही मुख्य कारण है कि आजके अधिकांश ज्योतिषियोंके फल नहीं मिलते। यह हमारा इतना श्रेष्ठ और महान् शास्त्ररत्न इसीलिये ही कलंक-चिन्होंसे लिप्त दिखाई पड़ता है। आज इसके शरीर में से भी सैकड़ों पाकिस्तान बन गये हैं—इसकी महत्ता में लोगों को सन्देह हो गया है क्यों? इसका यथोचित फल नहीं मिलता। बहुतसे व्यक्ति मेरे जैसे ज्योतिष प्रेमियों से यह विचित्र प्रश्न किया करते हैं कि 'ग्रह तो आकाश में रहते हैं, घूमते हैं और जड़ हैं। वे भला क्या किसीको नुकसान पहुंचा सकते हैं? यह तो पण्डितोंका पाखण्ड है। कुछ लोग 'सत्यार्थ प्रकाश' के श्री स्वामी जीके इस तर्क द्वारा भी पण्डितोंको निरुत्तर कर देते हैं कि एक व्यक्ति जिसे सूर्य अच्छा है उसे और दूसरे व्यक्ति जिसे कि सूर्य खराब है दोनोंको जेठकी जलती धूप मध्यान्हके समय बालू पर चला कर देखें यदि जिसे सूर्य अच्छा है उसके पैर न जलें और जिसको सूर्य खराब है उसके पैर जलें तब तो ग्रहोंका प्रभाव मानना चाहिये, नहीं तो यह ढोंग है ही" ऐसे ऐसे बहुतसे प्रश्न प्रतिदिन लोग करते हैं, सुने जाते हैं। मैंने भी कई जगह ऐसे प्रश्न सुने हैं और यथामति उनका उत्तर भी दिया है। इससे पूर्व कि मैं ज्योतिषके अनुशीलनकी ओर चलूँ—इस बातका उत्तर और 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंका दे दूं ताकि यदि कोई महानुभाव, ऐसी धारणा रखते हों तो सन्तुष्ट हो जायं ग्रहोंका प्रभाव और वर्तमान समय में फलादेश में अन्तर क्यों रहता है इस विषयका अनुसन्धान 'श्रीस्वाध्याय' के आगमी अंकोंमें देखिये।

भारतीय ज्योतिष-शास्त्र

[लेखक—रायबहादुर श्री पं० लज्जाशंकर जी झा बी० ए०]

इस देशमें सदासे लोगोंका ज्योतिष-विद्या से प्रेम रहा है। पुराने ग्रन्थोंमें इस बातकी साक्षी अनेक स्थानों में मिलती है। पर कई कारणों से इस पर से कुछ समझदार और शिक्षित लोगों का विश्वास उठ सा गया है, और वे समझते हैं कि यह सब ठग विद्या है, लोगोंसे पैसा ठगने की कला है। यह अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव है, कारण अंग्रेजी शिक्षा विभूषित केवल उन बातों को माननेको तैयार हैं, जो विज्ञान (साइंस) के अनुकूल है, वे समझते हैं कि जिन बातों का समर्थन साइंस ने नहीं किया वे ठीक हो ही नहीं सकती। साथ ही यह मानना पड़ेगा कि यह युग पुरुषार्थी लोगोंका है भाग्य के भरोसे रहना लोगों को पसन्द नहीं आता, ऐसी चित-वृत्तिको दोष देना भी ठीक नहीं। फिर इस विद्याको वास्तविक रूपमें जानने वालों की भी दिन-प्रति-दिन

कमी होती जारही है।

पण्डितों की कमी हो जाने से नौसिखियों और धूर्त लोगों की बन आई, न उनमें विषयका यथार्थ ज्ञान है और न चरित्र बल है- न इतनी बुद्धि है कि ज्यौतिष शास्त्र के गूढ़ तत्वों का ठीक उपयोग करके दिखा सकें ऐसे लोग कई नयी-नयी रीतियोंका उपयोग करके जनता को ठगते हैं। इस प्रकार अनेकों कारणोंसे इस विद्याका लोप हो रहा है। पर साथ ही यह देखनेमें आता है, कि जब मनुष्य को भारी कष्ट या संकटका सामना करना पड़ता है, तब ज्योतिषियों का द्वार खटखटाने लगता है। इस देश में लोग ऐसा करें तो आश्चर्य ही क्या है ? परन्तु यूरोप, अमेरीकाके पुरोगामी विचारवाले भी ज्योतिषियों की सलाह लेने लगते हैं।

बहुत वर्ष हुए तब कैरो नाम का एक फ्रांसीसी यहूदी बनारस आया। और पं० सुधाकरजीके पास आकर ज्योतिष, सामुद्रिक आदि विद्यायें सीख वापिस यूरोप गया। उसने खूब ख्याति प्राप्त की और लाखों करोड़ों रुपये बनाये। उसकी लिखी पुस्तकोंसे ज्ञात होता है कि अनेक सम्राट, राजा, महाराजा, मंत्री गण और विद्वान् नागरिक उससे सलाह लिया करते थे।

रूसके जार, बादशाह एडवर्ड सातवें (इंग्लिस्तानके) कैरो को बुलाते थे। हिन्दुस्थानमें भी बड़े-बड़े अफसर जो प्रकट रूपमें बड़ी अकड़से शासन करते थे, वे भी समय आने पर ज्यौतिषियों का परामर्श लेते हैं। कोई कोई स्वयं न पूछकर किसीके द्वारा पूछते हैं

एक कमिश्नर थे जो चीफ सिकत्तर होना चाहते थे, बड़ी जोड़ तोड़ लगा रहे थे, अन्तमें न रहा गया, एक ज्योतिषीको बुलाया, वह मुंहफट था, उसने कहाकि "साहिब क्या झींगुर मारना चाहते हो, तुम तो अमुक सन तथा मासमें गवर्नर हो जाओगे।" बात सत्य निकली। हिन्दुस्तानियोंकी तो यह आदि विद्या हैं। यदि वे लोग बहक जायें तो विस्मय क्या ? सुनते हैं कि हिटलर को ज्योतिष पर पूरा विश्वास था और किसीने बतलाया भी था कि सन् ४५के लगते उसका पाया लौटने लगेगा।

प्रश्न उठता है कि क्या स्थूल ग्रहों का प्रभाव मनुष्यके जीवन—मरण पर पड़ना सम्भव है ? नीचे लिखे अनुभवों तथा अन्वेषणों से उत्तर का कुछ दिग्दर्शन हो सकेगा।

सूर्यः—देखनेमें आता है कि सूर्यके उदय होते ही मनुष्य में एक प्रकार का विचित्र साहस आ जाता है। यदि बादलोंके कारण सूर्य कई दिन न दीखे तो मनुष्य सुस्त पड़ जाता है, कठिन बिमारीके समय आधीरात और ब्राह्म मुहूर्तके बीच में बहुत मौते होती हैं। सूर्यके उदय होने पर रोग दबता है और अस्त होने पर बढ़ता है। डाक्टर वैद्य की पुकार रातको अधिक होती है। बैशाख जेठके महीनों में जब धूप अत्यन्त तेज हो जाती है तब कष्ट भलेही बहुत रहे, पर मौतें बहुत कम हो जाती हैं। रेगिस्तानों में जहाँ बादल बहुत ही कम आते हैं, जलवायु निरोगी होता है, लोग शरीर से दृढ़ और परिश्रमी होते हैं, पर साथ ही तामसी भी विकट सीमाके होते हैं। खून-खराबा बहुत होता है। इस देशमें भी गर्मीमें दंगे और खूनी वारदातें बहुत होती हैं।

जो लोग ब्राह्म मुहूर्तमें उठकर कार्य प्रारम्भ करते हैं वे अधिक निरोगी तथा शुद्ध बुद्धि एवं शांत मनके होते हैं। पर जो सूर्य चढ़ जाने पर उठते हैं उनमें यह गुण कम देखनेमें आते हैं। जो सूर्योदयके समय सूर्य नमस्कार किया करते हैं उनका शरीर शीघ्र बलवान् हो जाता है। सूर्यकी गर्मी तथा प्रकाशका प्रभाव बनस्पतियों पर भी बहुत अधिक पड़ता है। जङ्गलोंमें देखनेमें आया है कि पेड़ एक दूसरेको पानेके लिये टेढ़े सीधे उगते हैं और फिर भी उचित प्रमाणमें शक्ति न मिलें तो मर जाते हैं।

शीतकालमें लोग धूपमें अधिक रहने लगते हैं और तब पुराने रोग भागने लगते हैं। इसीलिए मार्गशीर्षको मासोत्तम बताया गया है। हिन्दुस्थानमें चमड़ेके रोग लोगोंको कम सताते हैं। पर ठण्डे देशोंमें जहां सर्दीके कारण शरीर पर कपड़े लदे रहते और धूप नहीं लगती वहां चर्म रोग जैसे छाजन, खाज, अपरस, दाद आदि भयङ्कर रूप धारण करते हैं।

पशु, पक्षियों तथा अन्य प्राणियोंके जीवनमें सूर्यका भारी प्रभाव पड़ता है पर विस्तार भयके कारण विवेचन नहीं किया। ज्योतिषशास्त्रमें सूर्यको मनुष्यकी आत्मा माना है और उसका महत्त्वका स्थान है।

अब जरा चन्द्रमाका प्रभाव देखें। जिन लोगोंको पागलखानों तथा मानसिक रोगोंके अस्पतालोंका अनुभव है, वे यह बतलावेंगे कि जैसे जैसे शुक्ल पक्षमें चन्द्रमा बढ़ता है वैसे वैसे उन्माद भी बढ़ता है। अनेक कठिन रोगोंमें देखा गया है कि अमावस या पूनों पार करना कठिन हो जाता है। ज्वार भाटे पर चन्द्रमाका भारी प्रभाव पड़ता है, यह तो समुद्र यात्री बतलाया करते हैं। वैद्यलोगोंका कहना है कि अमुक २ तिथियोंके चन्द्रमाका प्रकाश बिना पड़े अमुक २ बनस्पतियोंको तोड़कर औषधि बना लेनेसे पूरे फल या गुण नहीं आते। उदाहरणार्थ आश्विन शुक्ल पूर्णिमाके दिन जब चन्द्रमाकी किरणमें आधी रात तक औषधि न रखी जावे तो लाभ नहीं। आंखके रोगोंके लिये घी, कालीमिर्च, मिश्री मिलाकर चान्दनीमें रखते हैं, दूध भी उसी रातको मध्य बिन्दु की किरण आने तक चांदनीमें रख कर औषधिके लिये देते हैं। खांसी दमेकी औषधियां भी आश्विन तथा कार्तिक शुक्लकी रातको देकर रोगियोंको चान्दनीमें बैठाते हैं।

श्रीकृष्णने चन्द्रमाका महत्त्व भगवद्गीता (१५-१३) में इन शब्दोंमें बतलाया है:—

'पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः'

'अर्थात् ईश्वर रस तैयार करनेवाला चन्द्रमा होकर सब औषधियोंमें उत्तम गुण उत्पन्न करता है।

चन्द्रमाका बनस्पतियों पर कितना भारी प्रभाव पड़ता है यह भी लोगोंके देखनेमें आता है कि कार्तिककी एकादशीके बाद ही गन्ने, मूली, भट्टे, मेथी आदिमें विचित्र स्वाद आजाता है। समयके पहले खानेसे वे सब विकार करते हैं और नीरस भी होते हैं।

सूर्य चन्द्रका प्रभाव विशेष होता है, क्योंकि वे बलवान् हैं और पृथ्वीके पास हैं। पर अन्य ग्रहोंका जैसे बृहस्पति, शनि, शुक्र, बुध, मंगल आदिका भी थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ता है और ज्योतिष शास्त्रका ध्येय यही है कि इन सबके प्रभावका अध्ययन करे और मनुष्यको सचेत भी करे। मनुष्यके जन्मके समय जिस राशिका उदय पूर्वमें हो रहा है उस परसे ग्रहोंकी स्थिति देख कर बलाबल का विचार किया जाता है।

नई रोशनीवाले भले ही ज्योतिषको 'दकयानूसी' विषय समझें और उससे लाभ न उठाना चाहें। इसका कोई उपाय नहीं। उन्हें छेड़ना भी नहीं चाहिये, कुछ समय बीतने पर या कोई आपत्ति आने पर वे इस विषय पर भक्ति दिखाने लगेंगे। जैसा श्रीकृष्णने १८।६७ में कहा है—

'इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति॥'

यानि उनका उपदेश उन लोगोंके लिये नहीं है जिन में भक्ति नहीं, जो तपस्या नहीं करते, सुनना नहीं चाहते अथवा निन्दा करते हैं।

ज्योतिष विद्या भी उन लोगोंके लिये नहीं है, जिनमें विश्वास जरा भी नहीं, न विषय जानने की इच्छा है। पर जो लोग जानना चाहते हैं, अवलोकन करके अपना मत स्थिर करना चाहते हैं, जिनमें इतनी उदारता है कि वे यह मानने को प्रस्तुत हैं कि ज्योतिषी मनुष्य है, भूल कर सकता है, वे ही विषय जानने के अधिकारी हैं। साथ ही यह भी मानना चाहिए कि विद्या शास्त्रोंके नियमोंके विरुद्ध नहीं हो सकती, शास्त्रोंमें बताया है कि प्रारब्धकर्म भोगनेको प्राणी जन्म लेता है, पर क्रियमाण कर्मों से वह उन्हें बदल सकता है। जन्मकुण्डलीसे प्रारब्ध कर्मोंके फलाफलका विचार होता है। क्रियमाण कर्म उन्हें थोड़ा बहुत बदल देते हैं। तब फिर यह दावा या आशा करना व्यर्थ है कि ऐसा ही होकर रहेगा। कुण्डलीसे सम्भावनाका ज्ञान (वह भी पूरा नहीं) हो सकता है। पर रत्ती-रत्ती ठीक निकले यह आशा करना व्यर्थ है।

इस प्रकारकी चित्त वृत्ति करके यदि समझदार मनुष्य देखे तो उसे अनेक बातें ऐसी दीखेंगी कि उसे यह सिद्ध हो जायगा कि यह विषय अध्ययन के योग्य है। और उसमें कुछ तथ्य है। उदाहरणः—

(१) साढ़ेसात और अढ़ैय्या शनि थोड़ा बहुत सब को सताते हैं।

(२) लग्नका सम्बन्ध वृहस्पति से हो तो दं.र्घकाय मनुष्य होता है। शुक्र से हो तो नौक चोक सुन्दर होती है। मङ्गल से हो तो फोड़े, फुन्सी, चर्मरोग आदि बहुत होते हैं। इत्यादि—

(३) कुण्डली में चन्द्र बिगड़ा हो तो कफप्रकृति तथा कफ रोग जैसे खांसी निमोनिया आदि हुआ करते हैं। यदि चन्द्र निर्दोष हो तो मनुष्यका मन शुद्ध रहता है।

(४) यदि धर्मस्थानमें शुभग्रह हों, शुभ दृष्टि हों तो मनुष्य धर्मात्मा होता है।

(५) दशमस्थानमें मङ्गल निर्दोष हो तो जातक प्रमुख स्थान पाए बिना नहीं रहता।

(६) प्रसिद्ध योद्धाओंकी कुण्ड लियों में मङ्गल सप्तम स्थान में होता है। जैसे श्री रामचन्द्रजी और अभी हिटलर की कुण्डली में था, या मङ्गल का सप्तम स्थान से निकट सम्बन्ध होता है।

(७) जिन लोगोंकी राशियोंमें षडष्टक सम्बन्ध रहता है उनमें मेल होता ही नहीं है।

इस प्रकार सैंकड़ों बातें तत्काल सहजमें बतलाई जा सकती हैं। जिनको स्थूल दृष्ट्या ज्योतिष समझने वाले सब मानेंगे कि वे बहुधा सत्य निकलती हैं। अपवाद भले ही मिले। पर यदि सौ में पचानवे केस में सत्यता पाई जावे तो मानना पड़ा कि विषय में कुछ तथ्य है। यहाँ मेरे इस लेख का उद्देश्य केवल यह है कि विचारवान् लोग अवलोकन करें, विचार करें, और तभी अपना मत दें। विषय को सिद्ध करनेका हेतु नहीं है, इस लिए विस्तार पूर्वक विवेचन करना ठीक नहीं।

मेरी प्रार्थना है कि पाठकगण ज्योतिष-शास्त्र को गपोड़ा पन्थके समान न समझें, उस पर पक्षपात रहित होकर विचार करें। मुझे भली प्रकार ज्ञात है कि अनेक धूर्त लोग इस विषय का सहारा लेकर भोले भाले लोगों को ठगते हैं। अनावश्यक पूजन, जप, दान, व्रत आदि कराते हैं और निर्दयता से लूटते हैं। जनताको अनेक प्रकारके चकमे देते हैं। फल स्वरूप लोगोंकी श्रद्धा कम होती जाती है, इस का कारण यह भी है। दूसरा कारण यह है कि पंचाङ्ग प्रायः अशुद्ध मिलते हैं। दो ढाई हजार वर्ष हुए तब के लिखे हुए मान्य ग्रन्थों के दिए हुए चालन के अनुसार ग्रहोंकी गति दी जाती है। पर यथार्थमें ग्रह कहां हैं, उस की जांच वेध से नहीं करते। वेधके यन्त्र काशी, दिल्ली, जयपुर, उज्जैन आदि स्थानों में हैं; पर उनका उपयोग न कोई जानता है न कोइ बतला सकता है। जहाजी पण्डित दूरबीन से तथा आधुनिक यन्त्रोंकी सहायता से वेध करके नक्शे तथा पंचाङ्ग बनाते हैं उनका भी उपयोग अपने पंचाङ्गों में नहीं होता। फल यह होता है कि उनमें बतलाए ग्रहों के स्थान ठीक नहीं निकलते। ग्रहण कभी लगता है, पर पत्रों में और दूसरा समय दिया रहता है। मकर संक्रांति का पुण्यकाल कभी हो जाता है, पर संक्रांति कभी मानी जाती है। प्रायः सभी ग्रहों की राशि, कला, विकलामें अन्तर मिलता है। अशुद्ध पंचाङ्गों पर से बनाई कुण्डलियों के भरोसे फल कहाँ तक ठीक निकल सकता है? यह भी एक कारण है कि ज्योतिषी का कहना ठीक नहीं उतरता और वह झूंठा पड़ता है।

फिर बहुत कम घरोंमें शुद्ध समय घड़ियों में देखने को मिलता है, दस पन्द्रह मिनट घण्टे आध घण्टे का अन्तर सहल देखने में आता है। उन पर से जन्म समय बताया जाता है। आचार्योंने समय की जाँच के अनेक मार्ग बतलाए हैं। पर उनका उपयोग बिरले पण्डित ही करते हैं। फिर आजकल स्टेण्डर्ड टाइम का बोल बाला है, उसके और स्थानीय टाइममें अन्तर प्रत्येक स्थानमें थोड़ा या बहुत आ जाता है, फिर तुर्रा यह कि लड़ाईके समय में स्टेण्डर्ड टाइम एक घण्टा और बढ़ा दिया गया था। कुण्डली स्थानीय समयके अनुसार ही बनानी चाहिए, इन कारणोंसे अनेक कुण्डलियाँ अशुद्ध बन जाती हैं। और उन पर भरोसा करने वाले लोग मूर्ख बनते हैं।

पहले कहा है कि जन्मकुण्डली प्रारब्ध कर्मोंका प्रभाव बतला सकती है, न कि क्रियमाण कर्मोंका। पर किसी अनजान मनुष्यके क्रियमाण-कर्म कैसे हैं, यह ज्योतिषी कैसे जान सकता है?

अन्त में यह भी कहना आवश्यक है—कि यह विषय

बहुत ही गूढ़ है, अनेक दृष्टियोंसे विचार करना पड़ता है, बलाबलों का विचार करना पड़ता है। फल कहने वालेको प्रत्येक बातका सूक्ष्मतासे विचार करना पड़ता है। आचार्योंने श्लोकों या सूत्रोंमें अपना मत प्रकट किया है। उनके गूढ़ सिद्धान्त भी समझ लेना चाहिए। प्रत्येकके आधार पर तोल-तोल कर निर्णय करना कठिन है, भूल होना स्वभाविक है।

फिर मनुष्य के जीवनमें केवल उसके कर्मोंका प्रभाव नहीं पड़ता, वरन् उसके कर्मोंका बन्धन पूर्वजों, माता, पिता, भाई बहिनों, स्त्री, पुत्र, घर, गांव, देश, के प्रारब्धों से भी रहता है। उनका भी प्रभाव पड़ता है। कई केस मेरे देखने में आए, जहां पति की कुण्डली में राजयोग क्षीण थे, परन्तु स्त्रीके प्रबल राजयोग थे, पर स्त्री को राजयोग का फल इस दशा से तभी मिल सकता था, जब उसके पति को लाभ हो। हुआ भी वैसा, पति ऊँचे पद पर पहुँच गए। अंग्रेज बच्चे को यदि राजयोग हो तो वायसराय बना सकता है, पर हिन्दुस्तानी को वही राजयोग मण्डलाधिपति (जिला-कलक्टर) बनावे तो भी बहुत है। वही राजयोग मेहतर के बच्चे को सफाई का जमादार बना सकेगा। देश, काल, पात्र, कुल आदि सबका विचार होना चाहिए।

——

आदर्श सूक्तियाँ

(संग्रहकर्त्ता—ऋषभ जैन 'लहरी')

(१) कर्मोंका फल देखना हो तो बड़े २ अस्पतालोंमें जाकर देखो।

(२) दूसरोंके भरोसे न रह अपना कार्य स्वयं करो।

(३) क्रोधसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं, लालचसे बढ़कर पाप नहीं और दयासे बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

(४) यदि राज्यकर्मचारी, वैद्य और गुरु भयके कारण मीठा बोलते हैं तो राज्य, शरीर और धर्मका नाश होता है।

(५) दूसरोंकी इज्जत करनेसे अपनी इज्जत होती है।

(६) रूपकी अपेक्षा स्वभावको सुन्दर बनाओ।

(७) सङ्गठन विजयका शस्त्र है और बाल-विवाह मृत्युका आमन्त्रण है।

(८) विदेशमें युक्ति (विद्या) घरमें नारी तथा रोग में औषधि मित्र है।

(९) भावनासे कर्तव्य ऊंचा है।

(१०) उपाय करनेसे दरिद्रता नहीं रहती और मौन रहनेसे कलह नहीं बढ़ता।

'विजयाभिनन्दन'

विजये ! विजय दिला जाओ !!!
एक बार फिर इस भारतकी पुण्य कीर्ति लहरा जाओ !!!
यह दुर्दान्त दस्यु-दानव-दल जगतीतलको कुचल रहा।
मानव आज पुनः दानव बन मानवताको मसल रहा !!
आर्य धर्म औ आर्य सभ्यताका संहार हुआ जाता !
भारतीयता औ भारतका भीषण ध्वंस हुआ जाता !!
इसी दिवस तो पहले हमने आर्यधर्मकी ज्योति जगायी !
समुद पुलकसे फिर दीपावलि अब तक बारम्बर मनायी !
नव स्वतन्त्रताकी नव-विजये ! नव-निर्माण करा जाओ !
भारत के बच्चे बच्चे को लक्ष्मण राम बना जाओ !!
विजये ! विजय दिला जाओ !!

—रमानन्द सारस्वत शास्त्री

उच्च मीमांसा

(ले०—राजगुरु ज्यौतिषालंकार श्री पं० तारादत्तजी राज ज्योतिषी)

अथात उच्च मीमांसा ॥१॥

इसके अनन्तर उच्च मीमांसा है ॥

"नासदशमनुकूलं विरुद्धधर्मिणः प्रतिकूल्यात्" इस ज्योतिष मीमांसा-दर्शनके उत्तरखण्डके सूत्रमें फलित ज्योतिषोपपत्ति नियम समाप्त है। शेष सूत्र उदाहरण रूपमें हैं। परिशिष्ट सूत्र भी उदाहरण रूपमें हैं। उच्च मीमांसादि सूत्रोंको परिशिष्ट सूत्र विस्तार रूप जानना चाहिए ॥ १ ॥

कक्षाक्रमात् ॥२॥ (अधिकारोऽम्)

कक्षाक्रमसे ॥

मुझे अनेक प्रकारकी उच्चोपपत्तियां ज्ञात हुई हैं। प्रथम कक्षाक्रमसे उच्चोपपत्ति लिख रहा हूं। मुझे जिस प्रकार शास्त्रमें स्पष्ट रूपसे स्वगृहोपपत्ति प्राप्त हुई उसी प्रकार उच्चोपपत्ति प्राप्त नहीं हुई। यह शास्त्रोक्त स्वगृहोपपत्ति कक्षाक्रमसे है। इसलिए मैं कक्षाक्रमसे सिद्ध इस उच्चोपपत्तिको शास्त्रदर्शित क्रमानुसारिणी होनेसे प्रधान मानता हूँ। इस उपपत्तिमें उच्चशब्दका अर्थ भी पूर्णरूपसे चरितार्थ होता है। यहां शास्त्र-प्रसिद्ध सूर्यसिद्धांतोक्त कक्षाक्रम स्वीकार किया गया है। नवीन वैज्ञानिक कक्षाक्रमसे विरोधाभासका परिहार भी आगे लिखा जायगा ॥ २ ॥

सजात्यन्तरेणाव्यवहितस्याग्रतः कक्षायां भ्रमतः सजातेः सजातीराशिरुच्चः ॥ ३ ॥

अन्य सजातीयग्रहके व्यवधानसे रहित आगेकी कक्षामें भ्रमण करनेवाले सजातीयग्रहकी सजातीय राशि उच्चराशि हैं ॥ ३ ॥

शुभाशुभत्वाभ्यामत्र जाती ॥ ४ ॥

यहां शुभजाति अशुभजाति इस प्रकार दो जातियां मानी गई हैं ॥ ४ ॥

क्रूर संयोगात् क्रूरः पृथक् ॥ ५ ॥

क्रूर ग्रहके संयोगसे क्रूर होनेवाला ग्रह (बुध) यहां पृथक् माना गया है। वह शुभजातिवाला भी नहीं, अशुभ जातिवाला भी नहीं, अर्थात् मिश्र ग्रह माना गया है ॥५॥

राश्योर्निर्णये शुभः ॥ ६ ॥

उच्चाधिकार प्राप्तिके लिये दो राशियोंके विरोधमें वह शुभ माना गया है ॥ ६ ॥

स्व एव तस्य ॥ ७ ॥

अपनी ही राशि उसकी उच्चराशि है ॥ ७ ॥

द्विनाथयोः क्रूरयोः क्रमशः सजातेर्विजातिर्विजातेः सजातिः ॥८ ॥

सजातीय ग्रहकी विजातीय राशि प्रथम द्विराशि पति क्रूर ग्रहकी उच्च राशि है, और विजातीय ग्रहकी सजातीय राशि द्वितीय द्विराशि पति क्रूर ग्रहकी उच्चराशि है ॥७॥

सूत्र ३ में प्रतिपादित किया गया है कि अन्य सजातीय ग्रहके व्यवधानसे रहित आगेकी कक्षामें भ्रमण करनेवाले सजातीय ग्रहकी सजातीय राशि उच्चराशि है।

सूर्यसिद्धान्तमें पृथिवीसे ऊपर चन्द्रमाकी, उससे ऊपर बुधकी, उससे ऊपर शुक्रकी, उससे ऊपर मंगलकी, उससे ऊपर बृहस्पतिकी और उससे ऊपर शनिकी कक्षा लिखी है, इसलिए बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल बृहस्पति और शनि चन्द्रमासे आगे भ्रमण करनेवाले ग्रह सिद्ध हुए। इनमें सूत्र ४ से बुध, शुक्र, बृहस्पति चन्द्रमाके सजातीय ज्ञात हुए। चन्द्रमा बृहस्पतिके बीचमें बुध-शुक्र हैं। चन्द्रमा शुक्रके बीचमें बुध है। इसलिए चन्द्रमाकी कक्षासे आगे सजातीय ग्रहके व्यवधानसे रहित कक्षामें बुध ज्ञात हुआ। इसलिए बुधकी राशिमें चन्द्रमाका उच्चाधिकार प्राप्त हुआ। परन्तु सूत्र ५ से बुधका शुभत्व बाधित होनेसे शुक्र अन्य सजातीय ग्रहके व्यवधानसे रहित आगेकी कक्षामें

भ्रमण करनेवाला सजातीय ग्रह सिद्ध हुआ। इसलिए शुक्रकी सजातीय राशि वृषभ चन्द्रमाकी उच्चराशि सिद्ध हुई।

इसी रीतिसे बृहस्पतिकी राशि १२ शुक्रकी उच्चराशि सिद्ध हु । बृहस्पतिसे ऊपर शनि है। इससे ऊपर कोई ग्रह नहीं है। इसलिए प्रथम ग्रह चन्द्रमा इससे आगेका ग्रह माना गया। इसकी राशि ४ पूर्वत् बृहस्पतिकी उच्च राशि सिद्ध हुई।

इसी प्रकार मंगलकी राशि १ सूर्यकी उच्चराशि सिद्ध हुई।

सूत्र ८ में प्रतिपादित किया है कि सजातीयकी विजातीय राशि प्रथम द्विराशि पति क्रूर ग्रहकी उच्चराशि और विजातीयकी सजातीय राशि द्वितीय द्विराशि पति क्रूर ग्रहकी उच्चराशि है।

प्रथम द्विराशि पति क्रूर ग्रह मंगल है। इससे आगेकी कक्षामें व्यवधान रहित सजातीय ग्रह शनि है। इसकी राशि १० विजातीय है। यह मंगलकी उच्च राशि सिद्ध हुई।

शनिसे आगेकी कक्षामें पूर्व रीतिसे विजातीय ग्रह चन्द्रमा है। इसकी राशि ४ क्रूर नहीं है। इससे आगेकी कक्षामें बुध सूत्र ५ से अग्राह्य है। बुधकी कक्षासे आगे शुक्रकी कक्षा है। यह शनिका विजातीय है। इसलिए इसकी राशि ७ सजातीय होनेसे शनिकी उच्चराशि सिद्ध हुई।

सूत्र ७ से बुधकी राशि ही उसकी उच्च राशि सिद्ध हुई। बुधकी राशियां दो हैं एक मिथुन दूसरी कन्या, सूत्र ६ से इन दोनोंमें कन्या बुधकी उच्च राशि सिद्ध हुई।

(क्रमशः)

नारी और उसकी शक्ति

[लेखिका—श्री कुसुम कुमारी सिन्हा]

इतिहासके उन पृष्ठों का अध्ययन करनेसे जिनमें संसार को सभ्य कह कर चित्रित किया गया है, पता चलता है कि उस समय के समाज में नारी भी अपना विशेष स्थान रखती थी। उसके प्रति पुरुष का दृष्टिकोण आदर और सम्मानसे परिपूर्ण था। वह उसे वासनाके रूप में न देखकर मातृत्व के पावन रूपमें निहारा करता था तथा नारी का वासनात्मक रूप केवल रंगमहलों तक ही सीमित था। उनके बाहर वह पुरुष के समान ही समझी जाती थी। नारी के प्रति यह भावना रखने से पुरुष के जीवन में वह पंकिलता प्रवेश नहीं कर पाती थी जो उसके, समाज के और राष्ट्र के लिये घातक बन जाती है तथा स्वयं नारी का भी विनाश कर देती है। जब तक पुरुष ने अपने इस विचार को दृढ़ रखा, उसका चरित्र गंगा की तरह निर्मल और हिमालय की तरह अटल बना रहा और वह नारी की शक्ति का सदुपयोग करके संसार में सुन्दरता और शक्ति का निर्माण करता रहा। नारी के प्रति उसके उदारता और सभ्यता पूर्ण व्यवहार में जब कभी भी कमी आई और उसने नारी को केवल उपभोग की वस्तु समझा तभी उसका पतन हुआ इसके प्रमाण में इतिहास के पृष्ठ के पृष्ठ रंगे पड़े हैं। संसार में जब भी बुरे विचारों की सृष्टि हुई तभी नारी का वासनात्मक रूप उसका प्रधान कारण सिद्ध हुआ। हमारे ऋषियों तथा अध्यात्म-चिन्तन में लीन रहने वाले सन्तों की वाणियां भी नारी के इसी रूप की निन्दा करती हैं। नारी को नरक का द्वार और माया मोह में डालने वाली इसीलिए कहा गया है। किन्तु आश्चर्य है कि आज का मानव भी नारी के उसी कुत्सित रूप की तरफ दौड़ रहा है जो समय समय पर उसे रसातल की ओर लेजाने वाला सिद्ध हुआ है।

नारी के प्रति आज उसका दृष्टिकोण इतना विकृत हो गया है कि वह अपनी माता को भी अपने पिता की दासी समझने लगा है। वासना की भूख उसमें इतनी बढ़ गई है कि स्त्रियों का अकेले में विचरण

करना कठिन हो गया है। आज की नारी पुरुष को अपना सहयोग देने में असमर्थ है। उसे शंका की दृष्टि से देखा जाता है या उपभोग की वस्तु समझ कर अपमानित किया जाता है। पुरुष के इस संकुचित दृष्टिकोणने नारीको लज्जाकी पोटली बना कर रखनेमें विजय समझी है। जिसका उल्लंघन करते ही नारी-नारी न रह कर अर्धपुरुष बनी जा रही है। विचारों की यह संकीर्णता नारी के नारीत्व का विनाश कर रही है और मानवता के लिये कलंक बनती जा रही है। आज की नारी पुरुष से होड़ लेने के लिये कर्म-क्षेत्र में कूदना ही चाहती है। इसमें उसकी विजय होगी या हार, यह विचार करने का अवसर भी अब उसके पास नहीं रहा। अपने मातृत्व रूप से उसे घृणा हो चली है। प्रकृति के नियम ~~को~~ बदल डालने की उत्कंठा उसे पीड़ित कर रही है। उसकी आंखें विज्ञान की ओर लगी हुई हैं, देखें वह उसकी सहायता करता है या नहीं।

नारी में इस प्रकार के विचार क्यों जाग उठे, इसका कारण है पुरुष का उसमें सौन्दर्य की खोज करना और उसके सौन्दर्य को क्रय विक्रय की वस्तु बनाना, उसके अन्तःकरण को प्यार न करके बाह्य तड़क-भड़क पर आकर्षित होना तथा उसे केवल वासना की वस्तु या खिलवाड़ समझना। आज का युग नारी के घोर पतन का युग है। इस युग की नारी जैसा घृणित जीवन व्यतीत कर रही है, वह अवर्णनीय है। नारी के अपहरण और बलात्कार असहनीय हो उठे हैं। सभ्ययुग इसे सहन न करेगा। यदि पुरुष की यही अवस्था रही तो नारी उसके लिये अभिशाप बन कर आयेगी।

नारी! तेरे अभिशाप की ज्वाला जल उठी है। अब तू दूषित मनोवृत्तियों के प्रसार में पुरुष को अपना सहयोग मत दे। अपनी शक्ति को पहिचान कामिनि, प्रमदा और रमणी जैसे विशेषणों को श्रवण करके मत फूल, इनकी गहराई को पहचान, अपना समर्पण इन रूपों में मत कर, वरना तू उपभोग की ही वस्तु बनी रहेगी, अपने उन रूपोंका स्मरण कर जिन्होंने तुझे सावित्री, सीता, अनुसूया, पद्मिनी दुर्गावती और झांसी की रानी कहलाया है। शकुंतला का वह रूप जो तपोवन की भोली मृगी का द्योतक है, तू क्यों ग्रहण करती है? तनिक उसके उस रूप पर भी तो ध्यान दे जो उसने सर्वदमन जैसे पुत्र को जन्म देकर प्राप्त किया था। आज का पुरुष तुझे आकर्षण समझ कर अपने व्यापारिक विज्ञापनों को भी तेरे उन चित्रों से रंग रहा है जो तेरे एकान्त क्षणों का विषय है। जिनका दर्शन तू केवल उसी को कराने का अधिकार रखती है जो सब प्रकार से तेरा है। पगली! इतनी बेहोश होकर मत चल कि दुनियाँ तेरे शृंगारिक रूपका अनुचित लाभ उठाने लगे। देख तो सही! इस स्वार्थी संसार ने तेरे रूपों से वासना का कितना गंदा चित्र बना डाला है। तू अधिकारों के लिये लड़ रही है किन्तु पहले पुरुष की इस कामुक मनोवृत्ति से तो पीछा छुड़ा ले, जो पग पग पर तेरे अपमानका कारण बनती है। राष्ट्रनिर्माणके सहयोगमें तूने कदम बढ़ाया है। तू पुरुषसे होड़ लेने चली है, तू उसे इतिहासके उन पृष्ठों का प्रमाण देना चाहती है; जिनमें तुझे मन्त्रीकी पदवीसे सुशोभित किया गया है तो पहले अपने प्रमदा रूपको तिलांजलि दे दे। अपने इस रूपसे किसीको तोलनेका उपचार मत कर, इस रूपमें तो तू स्वयं तुल जायगी। तेरी यही तो दुर्बलता है। यदि तू अपने अबला नाम की सार्थकता मिटाना चाहती है तो आकर्षणके इस माया जालसे दूर हट जा। ऐसा किये बिना आज तक संसारकी कोई भी नारी मार्गप्रदर्शनका कार्य नहीं कर सकी। तेरा वास्तविक रूप श्रद्धामय है। तू माया और ममताकी शक्तिमयी छाया है। तेरा वर्णन भारतके पावन ग्रन्थोंमें नरकी अर्ध-शक्ति कह कर किया गया है। तू दुर्गा है, लक्ष्मी है, सरस्वती है। भारतने तेरे उज्ज्वल रूपोंकी उपासना की है, फिर

वेधालयकी आवश्यकता

[ले०—श्री पं० बलदेवजी मिश्र ज्योतिषाचार्य]

भारतीय ज्योतिषमें एक कल्पमें ग्रहचलन कितने होते हैं, उनकी संख्यायें लिखी हुई हैं। इन संख्याओंको भगण कहते हैं। कल्पमें भगणमान जानकर त्रैराशिकसे इष्टसमयमें ग्रहका आनयन करते हैं। कल्पके भगणमान जाननेका उपाय केवल वेध है। यन्त्रोंके द्वारा ग्रहोंको देखकर उनका राश्यादिक मानका ज्ञान करना ही वेध है। इस वेध-क्रियाकी उपपत्ति भास्कराचार्यने अपने गणिताध्यायमें लिखी है, "उपपत्तौ तु ग्रहः प्रत्यहं यन्त्रेण वेध्यः भगणान्तं यावत्" अर्थात् प्रतिदिन यन्त्र से ग्रह को देखो जब तक एक भगण की पूर्ति हो।

प्राचीन समयमें पटनेके आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्तने वेध करके ग्रह-भगणोंको जाना था ऐसा प्रमाण है। भास्कराचार्यने स्वयं वेध नहीं किया था, उन्होंने ब्रह्मगुप्तके लिखे हुए भगणोंको ही प्रमाण माना। उनकी दृष्टिमें एक मनुष्यके द्वारा वेध कार्य सम्पन्न करना कठिन विषय प्रतीत हुआ, उन्होंने स्पष्ट ही कहा है "तावत् शनैश्चरस्य वर्षाणां त्रिशता भगणः पूर्यते मन्दोच्चानां, वर्षशतैरनेकैः अतो नायमर्थः पुरुषसाध्येति" अर्थात् शनैश्चरकी भगणपूर्ति तीस वर्षमें होती है, मन्दोच्चनोंकी भगणपूर्ति अनेक सौ वर्षोंमें होती है, इसलिये यह कार्य एक मनुष्यसे होने योग्य नहीं है। परन्तु भारतीय सब गणक दृक्तुल्यताके ऊपर बहुत जोर देते हैं। दृक्तुल्यताका अर्थ यह है कि गणितसे जो सिद्ध हो उसकी प्रत्यक्षता भी हो जाय अर्थात् वेध के द्वारा ज्ञात ग्रह, गणितसे साधित ग्रहके तुल्य हो। इससे स्पष्ट है कि किसी रूपमें प्राचीन गणक ग्रहोंकी प्रत्यक्षता करते थे। सूर्यसिद्धांतमें लिखा है "स्फुटं दृक्तुल्यतां गच्छत्" भास्कराचार्यने लिखा है "स्फुटक्रिया दृगणितैक्यकृद्या" गणेशदेवज्ञने लिखा है "इतींमे यान्ति दृक्तुल्यतां" इस प्रकार सब आचार्योंने दृक्तुल्यतां की शरण ली है, अतएव वेध क्रिया आवश्यक है। जयपुरके राजा जयसिंह ज्योतिष विषयके बड़े प्रेमी थे। उन्होंने अपने समयमें जगन्नाथ सम्राट नामक एक अच्छे गणक को प्राप्त किया था, उन्हींकी सहायतासे जयपुर, काशी, उज्जयिनी दिल्ली आदि स्थानोंमें उन्होंने वेधशालाएँ निर्माण करवाईं।

आजकल यूरोपमें कोई ऐसा देश नहीं है जहां वेधशाला न हो। भारतमें भी एक वेधशाला हो

तु कुमार्गकी ओर जानेका प्रयत्न किस लिये करती है। अपने स्वरूपको पहचान, शृङ्गार और अर्थके मोहको छोड़। गुण और शक्तिको जीवनमें प्रथम स्थान दे। कर्तव्य परायण बन तथा साहित्यके उन पात्रोंसे अपने चरित्रका निर्माण कर जिन्हें आदर्श रूपमें चित्रित किया गया है। कविकी इन पंक्तियों को सार्थक करके दिखला दे—

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष श्रोत सी बहा करो,
जीवनके सुन्दर समतल में॥

यदि तूने जीवनके सुन्दर समतल (योवन) में, पीयूष (अमृत) के स्रोतकी तरह बहना सीख लिया तो निश्चय ही पुरुषको विश्वास-रजतनग (विश्वासरूपी चाँदीका पर्वत) बनना पड़ेगा। तथा मार्ग प्रदर्शनमें तेरी विजय होगी।

——

जहां ज्योतिषी लोग अपनी आंखोंसे ग्रहोंको देखें, इसकी बड़ी आवश्यकता है। भारतधर्म-महा मण्डल, स्वर्गीय मालवीयजी, दरभङ्गाके वर्तमान महाराजने वेधशाला निर्माणकी चर्चा तो उठाई, परन्तु वेधशाला बनी नहीं। अब देश स्वतंत्र हो गया है, आशा है कि किसी विद्या प्रेमी वैज्ञानिक की दृष्टि इस ओर जाय। संभावना इस बातकी है कि यदि वेधशाला बनेगी भी तो यूरोपीय वेधशाला के अनुकरणमें ही। ऐसा होने पर भी देशका अभ्युत्थान ही है परन्तु अपेक्षित तो यह है कि जिस रीतिसे जिस प्रक्रियासे आज पन्द्रह सौ वर्षसे भारतीय गणक वेध करते थे, उस प्रक्रिया को पुनः उज्जीवित किया जाय। इस कार्यके सम्पन्न होनेसे अनेक लाभ होंगे। सबसे बढ़कर लाभ तो यह होगा कि आज पंचाङ्गके सम्बन्धमें देशके गणकोंमें जो वैमत्य है जो अन्तर देखा जाता है वह मिट जायगा। गणित सत्य है इस विषयमें मतान्तर होना समुचित नहीं है, वेधशाला हो जाने से तदनुसार उपलब्ध ग्रह के मान में किसी को नतुनच करनेका अवसर नहीं होगा। आजकल अनेक पंचाङ्गकार नॉटिकलसे बने हुए ग्रहको, कोई केतकरके दृग्गणितसे बने हुए ग्रहको वेधोपलब्ध ग्रह मानते हैं। किन्तु प्राचीन मतसे पंचाङ्ग चलाने वाले लोग उसको नहीं मानते, इसलिये प्राचीन और नवीन दोनों मतसे भारतमें आज कल पंचाङ्ग निर्मित होते हैं। वेधशाला हो जानेसे यह भेद नहीं रहेगा। वेधालय यह बतलाता है कि इस देशकी विज्ञानमें रूचि है। ये लोग सत्यके खोजनेवाले हैं, गणित विद्याकी वृद्धि होती है— गणक लोग कर्मठ कार्यकुशल हो जाते हैं। अब तक इस वैज्ञानिक युगमें भी वेधालयके विषयमें इस देशवासियोंकी उपेक्षा यह स्पष्ट करती है कि इस विषयमें भारत कितना पीछे है। आशा है स्वतंत्रभारत अब इस ओर अपना पैर उठावेगा। और शीघ्र इस देशमें वेधालयकी स्थापना होगी।

ज्योतिर्विज्ञान

स्पष्ट काल साधन

[१]

[लेखकः— श्री पं० केदानाथ जो शर्मा राज्य ज्योतिषी]

[सर्वसाधारण ज्योतिर्विदोंको प्रचलित स्टैण्डर्ड टाइम और स्थानिक स्पष्टकाल (लोकल टाइम) के अन्तर एवं स्थानीय सूर्योदयका सम्यक् ज्ञान न होनेसे जन्मपत्रोंमें इष्ट कालके घटीपल अशुद्ध लगे रहते हैं इस इष्टकाल रूप आधार शिलाके सुदृढ़ (शुद्ध) न होनेसे फलादेशमें भी अन्तर पड़ना स्वाभाविक ही है। इस त्रुटिको दूर करनेके लिए पूज्यपाद गुरुवर श्री पं० केदारनाथजी महाराज राज ज्यो० जयपुरका यह लेख पाठकोंके लिए अत्युपयोगी सिद्ध होगा। शुद्ध इष्टकाल बनानेके लिए स्थानीय स्पष्ट सूर्योदयका होना परमावश्यक है। इस लेखमें पाठकोंको संसारके प्रत्येक स्थानका प्रतिदिनका स्पष्ट सूर्योदयकाल बना हुआ मिलेगा। नयी दिल्लीकी सुप्रसिद्ध वेधशाला जन्तर-मन्तरके जीर्णोद्धारके लिए जयपुर राज्यकी ओरसे पूज्य गुरुजी महाराज विगत ३ माससे दिल्लीमें ही हैं अतः भविष्यमें स्वाध्यायके प्रत्येक अङ्कमें महत्त्वपूर्ण मौलिक साहित्य पाठकोंको मिला करेगा। —सम्पादक]

अनन्त आकाशमें प्रकाशमान ज्योतिःपिण्डोंको ज्योतिः कहा जाता है। इनके गतिस्थितिशास्त्रका नाम ज्योतिर्विज्ञान है। इस शास्त्रकी पश्चिमके देशोंमें आज जितनी उन्नति हुई है उससे भारतको भी लाभ उठाना चाहिये। किसी समय यह शास्त्र भारत तथा यूनान आदि देशोंमें उन्नतिके शिखर पर पहुँचा हुआ माना जाता था, किन्तु दूरबीन आदि नवीन साधनोंकी सहायतासे वर्तमान कालमें वास्तवमें उन्नति शिखरकी चोटी पर पहुँचा हुआ माना जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। किन्तु खेदके साथ लिखना पड़ता है कि भारतके लोग इस समयमें भी इस ओर जितनी रुचि रखनी चाहिये उतनी नहीं रखते हैं, जब कि इङ्गलैण्ड, अमरीका, फ्रान्स आदि देशोंमें लक्षावधि रुपया व्यय किया जाता है। भारत अब तक सबसे पीछे है।

सबसे प्रथम इस शास्त्रकी पहली सीढ़ी काल साधन या समयज्ञान है। पहले समयमें कालज्ञान सूर्यके प्रकाशमें छाया यन्त्रोंके द्वारा किया करते थे और रात्रिके समय प्रकाशमान तारोंके द्वारा। परन्तु घड़ीका प्रचार होनेके पीछे वह प्रकार तो लुप्त प्रायसा हो गया है। अब घड़ीका प्रचार इतना अधिक देखनेमें आता है कि एक साधारण व्यक्ति भी इस कालसाधन यन्त्रसे लाभ उठा रहा है। अस्तु।

आज घड़ी रखने वाले सारे भूमण्डलमें प्रचलित स्टैण्डर्ड टाइमको ही अपने-अपने घटी यन्त्रोंमें रखते हैं। ये टाइम देशभेदसे पृथक् २ हैं। किन्तु भारतके ज्योतिषी लोग तो इस स्टैण्डर्ड टाइमके चक्करमें पड़ कर अपने वास्तविक कालसाधनको भूलसे गये हैं और इसका परिणाम फलित शास्त्र पर (जिसपरसे शिक्षित जनताका विश्वास प्रायः उठता जा रहा है) इतना बुरा पड़ा है कि जन्मसमयका लग्न साधन करना ज्योतिषियोंके लिये कठिन सा हो गया है।

प्रत्येक स्थान पर स्टैण्डर्ड टाइमसे देशी इष्टकाल तथा लग्नका साधन।

स्टैण्डर्ड टाइम ग्रीन्विचकी प्रसिद्ध ज्योतिष वेधशालाके मध्यम सूर्य (जो प्रत्यक्ष सूर्यसे आगे या पीछे ऋतुओंके अनुसार कभी कुछ आगे कभी कुछ पीछे रहता हुआ देखा जाता है) के ठीक मध्याह्नवृत्त पर आने पर

(जो वहांके दोपहरके बारह बजे प्रति दिन मध्याह्नवृत्त पर आ जाता है ऐसा मान कर) उस समयसे गिना जाता है। अर्थात् माना हुआ कल्पित-मध्यम सूर्य जिस क्षणमें ग्रीन्विच वेधशालाके मध्याह्नवृत्त पर पहुंचता है उस समयको ठीक मध्याह्न मान कर दिनके बारह बजे मान लिया जाता है। भारतवर्षमें उस समयको सायंकालके ५ बज कर ३० मिनट माना जाकर भारतका स्टैण्डर्डटाइम स्वीकार किया गया है। फलितार्थ यह हुआ कि जिस समय ग्रीन्विचमें मध्यम सूर्यके १२ बजना माना जाता है उस समय भारतवर्षमें सायंकालके ५ बज कर ३० मिनट स्टैण्डर्ड टाइमके होते हैं, ऐसा मान कर स्टैण्डर्ड टाइमका प्रचार किया गया है। भारतमें कलकत्ता और बम्बईको छोड़ कर (जहां कि वहांका देशी मध्यम समय भी अलग २ प्रचलित है) यह स्टैण्डर्ड टाइम रेल, तार, पोस्ट तथा रेडियो आदिमें चल रहा है। देशान्तर नामसे चिरपरिचित यह देशोंका अन्तर गणनासे ग्रीन्विच और मिर्जापुर नगरका घण्टे मिनटके रूपमें अन्तर है। भारतके ज्योतिषी इस स्टैण्डर्ड टाइमको मिर्जापुरके काशीके संनिहित होनेसे 'बनारसका मध्यम समय' इस नामसे भी संज्ञा देते हैं। यदि इस लेखमें भी इस समयको बनारसका मध्यम समय कहा जाय तो कोई आपत्ति नहीं।

बनारसके मध्यम समय (स्टैण्डर्ड टाइम) से अपना-अपना स्थानिक स्पष्ट समय निकालनेका प्रकार—

जिस नगर वा ग्रामका स्पष्ट सूर्योदय से इष्टकाल साधन करना हो प्रथम उसका ग्रीन्विचसे देशान्तर (रेखान्तर) जानना चाहिये। यह रेखान्तर सुगमतासे जाननेके हेतु एक भूगोल सम्बन्धी भूचित्र (भूगोलका नक्शा) अपेक्षित होता है। इन प्रचलित भूगोलके अंग्रेजी नक्शोंमें अन्तमें नगरोंके नामकी एक सूची अकारादि क्रमसे दी हुई रहती है। उस सूचीमें प्रत्येक नगरके अक्षांश और रेखांश साथमें दिये रहते हैं। यदि इसमें अंग्रेजी अक्षरोंके नाम पढ़नेमें असुविधा हो तो काशीके विश्वपञ्चाङ्गको उपयोगमें लाना चाहिये। उस देशान्तर संस्कारको ५ घण्टे ३० मिनटमें देना चाहिये। क्योंकि उस ही समय ग्रीन्विचमें मध्यम मध्याह्न होता है, यहां अंग्रेजीके नक्शेके रेखांशों पर ही ऐटलस (भूगोलके नक्शे) के सर्वसुलभ होनेके कारण आगे उदाहरण दिया जाता है।

प्रत्येक स्थानके देशी सूर्यके स्पष्ट समयमें इष्ट काल जो प्रत्यक्ष सूर्योदयसे गिना जाता है उसके लिये भूगोलके नक्शेसे देशान्तर (रेखांश) जान कर रेखांशोंको ४ से गुण देना चाहिये। अंशोंके साथ कला भी रहती हैं उनको भी ४ से गुण देना चाहिये। ऐसा करनेसे रेखान्तरके अंश कला; मिनट सैकिण्डमें परिणत हो जाते हैं। क्योंकि हर एक ४ मिनटका १ अंश होता है। वृत्तके ३६० अंश होते हैं, उनको २४ घण्टोंमें परिणत करने पर हर १५ अंशमें १ घण्टा या ६० मिनट होते हैं। और एक अंश ४ मिनटके बराबर होता है।

उदाहरण

नक्शेमें देहलीके अक्षांश २८।३७। ३५ और ग्रीन्विचसे देशान्तर ७७ अंश १३ कला और भी सूक्ष्म लिया जाय तो ५ विकला और हैं। इन ७७°।१३।५ को ४ मिनटसे गुणा किया जाय तो ३०८।५२।२० मिनट सेकिण्ड प्रतिसेकिण्ड होते हैं। मिनटोंमें ६० का भाग देनेसे ५ घण्टे ८ मिनट ५२ सैकिण्ड और २० प्रतिसैकिण्ड हुए। जब कि स्टैण्डर्ड टाइम ग्रीन्विचके टाइमसे भारतवर्षमें ५ घण्टे ३० मिनट आगे रक्खा गया हैं—, तो इस ५।८।५२।२० का और ५।३० का अन्तर किया तो २१।७।४० हुआ। यह मध्यमान्तर स्थिर रहता है। अर्थात् देहलीका मध्यम समय सर्वदा २१।७।४० मिनट स्टैण्डर्ड टाइमसे पीछे रहता है। इस ही प्रकार हर एक नगरके रेखांशोंको ४ से गुणा कर ६० से भाग कर ५।३० पांच घण्टे ३० मिनट से अन्तर करने से स्थानिक मध्यम समयकाअंतर निकलता है जो देश बनारससे पूर्वमें हैं उनमें देशान्तर ५ घण्टे ३० मिंनट से भी अधिक होने से मध्यमान्तर+धन होता है। तात्पर्य यह हुआ कि जैसे देहलीका मध्यम समय स्टैण्डर्ड टाइमसे २१ मिनट पीछे रहता है उसी प्रकार ५।३० से अधिक देशान्तर वाले देशों में स्टै० टाइमसे उतने ही मिनट आगे रहता है। जैसे बम्बई आदि

पश्चिम के नगरों में स्टेण्डर्ड टाइम ५।३० के अन्तर करने पर पाए हुए मिनटोंके तुल्य देशी टाइम पीछे रहता है, उसी प्रकार कलकत्ते का मध्यम समय देशान्तर और ५।३० के अन्तर तुल्य मिनट आगे रहेगा। इस प्रकार नक्शेके रेखान्तरांशों को ४ से गुणा कर और ६० से भाग देकर आए हुए घण्टे मिनटोंका ५ घण्टे ३० मिनटसे अन्तर कर के हर एक नगरका व ग्रामका देशी मध्यमसमय जान लेना चाहिए। इस स्टेण्डर्डटाइमको देशी मध्यम समय बना कर उसमें फिर कालसमीकरण संस्कार जो इस लेखके साथ हर महीने का प्रति अंग्रेजी तारीखके सामने दिया है, वह उस मध्यम समयमें जैसा ऋण धन लिखा गया है तद्नुसार जोड़ घटा देना चाहिए। ऐसा करने से वह समय स्पष्ट हो जाता है। इस प्रकार देशान्तर संस्कार (१) काल सम करण (२) ये २ संस्कार स्टेण्डर्ड टाइम में कर देने से जन्मसमय का स्पष्टकाल हो जाता है।

इस लेखके साथके (तृतीय) कोष्ठक में अक्षांश और सूर्य की क्रान्ति इन दो उपकरणों से जिस अक्षांश का सूर्योदय जानना हो वह तुरन्त मालूम हो जाता है। इसके लिए प्रति अंग्रेजी तारीखकी सूर्यकी क्रान्ति का कोष्ठक नं ४ का और दिया गया है। अक्षांश भूगोल के नकशे से जान ही लिया जायगा। यों सूर्योदय का स्पष्ट समय जान कर अपने इष्ट समय के स्पष्टकाल में से सूर्योदय के घण्टे मिनटों को उसमें से घटा देना चाहिए। जो शेष रहेगा वह सूर्योदयसे अपने अभीष्ट समय तक का घण्टे मिनट के रूप में इष्टकाल हो जायगा। इस इष्टकाल के घण्टे मिनटों को २।। अढ़ाई गुणा कर देने से घटीपलात्मक (इष्टकाल (स्पष्ट) हो जायगा।

इस प्रकार देशान्तर, कालसमीकरण और चर सँस्कार जो (स्पष्ट सूर्योदय लाने में दे दिया गया है) ये ३ संस्कार स्टेण्डड टाइममें देने पर ही प्रचलित स्टेण्डर्ड टाइम से देशी स्पष्ट समय जाना जा सकता है।

जो ज्योतिषी ये ३ संस्कार किये बिना ही स्टेण्डर्ड-टाइम को ही २।। गुणा कर घटी पल बना कर अपने देश के प्रचलित पंचाङ्ग सारणी पर से लग्न साधन कर डालते हैं वे ज्योतिष शास्त्र पर अज्ञानवश कलङ्क लगाने के अपराध भागी हैं। पहले ये ३ संस्कार देकर ही अपने पंचाङ्ग की लग्नसारिणीसे लग्न निकालना शास्त्रानुकूल व न्याय सङ्गत है। स्टेण्डर्डटाइमकी वास्तविकता न जाननेके कारण ही ऐसा हो रहा है।

यों तो लग्नसारिणीका उपयोग न करके अपने स्थानके लग्नमान नये बनाकर उनके द्वारा लग्नसाधन करना ही उचित है, यदि इसमें श्रम अधिक प्रतीत हो तो अपने देशके पंचाङ्गसे लग्नसाधन करनेसे अंशोंमें चाहे अन्तर पड़े, लग्न राशिमें विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा। हां, यदि लग्न सन्धिगत आ जावे अर्थात् उसके अंश २६, ३०, या १ या २ आवें तो विशेष विचार की आवश्यकता है।

-- --

ज्योतिषवेधशाला

विगत कई वर्षोंसे काशीके 'विश्व पञ्चाङ्ग' में वेधशालाके लिए दश लाख रुपयेकी अपील निकल रही है, किन्तु अभी तक उसका कुछ भी फल हुआ दीखता नहीं। हमारी समझमें अभी कार्यारम्भ करनेके लिए दश लाख रुपयेकी कोई आवश्यकता नहीं। ५० साठ हजार रुपयोंसे एक अच्छी उपयोगी वेधशाला बन सकती है। दिल्लीकी वेधशालाका जीर्णोद्धार श्री ६ गुरुवर पूज्य पं० केदारनाथ जी महाराजके तत्त्वावधानमें जयपुरराज्यकी ओरसे प्रारम्भ हो चुका है। इसी वेधशालामें 'राशिवलययन्त्र' और एक-सूक्ष्मकाल-साधन-यन्त्र, और बना दिया जाय तो राजधानीमें यह एक परमोपयोगी वेधशाला निर्माण हो सकती है अथवा जयपुरकी वेधशाला प्राचीन शैलीसे वेधके उपयोगी सर्वाङ्गपूर्ण है, इसमें बने हुए द्वादश-राशिवलय विकला तक स्पष्ट ग्रह बतलाते हैं। उसका उपयोग करनेसे बहुत कुछ कार्य सम्पन्न हो सकता है।

—सम्पादक

 कोष्ठक नं० ४

अपने नगरके उत्तर अक्षांश तथा सूर्य क्रांतिसे सूर्यके उत्तर गोलमें रहने पर २१ मार्चसे २२ सितम्बर तक सूर्यास्तका समय तथा दक्षिण गोलमें २२ सितम्बरसे २१ मार्च तक सूर्योदय का देशी स्पष्ट समय जाना जाता है।

अक्षां० \ क्रां.	०	१°	२°	३°	४°	५°	६°	७°	८°	९°	१०°	११°	१२°	१३°	१४°	१५°	१६°	१७°	१८°	१९°	२०°	२१°	२२°	२३°	23°26'
	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
१	६-००	६-००	६-००	६-००	६-००	६-००	६-००	६-००	६-०१	६-०१	६।०१	६।०१	६।०१	६।०१	६।०१	६।०१	६।०१	६।०१	६-०१	६-०१	६-०१	६-०२	६-०२	६-०२	६-०२
२	६-००	६-००	६-००	६-००	६-०१	६-०१	६-०१	६-०१	६-०१	६-०१	६।०१	६।०२	६।०२	६।०२	६।०२	६।०२	६।०२	६।०२	६-०३	६-०३	६-०३	६-०३	६-०३	६-०३	६-०३
३	६-००	६-००	६-००	६-०१	६-०१	६-०१	६-०१	६-०१	६-०२	६-०२	६।०२	६।०२	६।०३	६।०३	६।०३	६।०३	६।०३	६।०४	६-०४	६-०४	६-०४	६-०५	६-०५	६-०५	६-०५
४	६-००	६-००	६-०१	६-०१	६-०१	६-०१	६-०२	६-०२	६-०२	६-०३	६।०३	६।०३	६।०३	६।०४	६।०४	६।०४	६।०५	६।०५	६-०५	६-०६	६-०६	६-०६	६-०६	६-०७	६-०७
५	६-००	६-००	६-०१	६-०१	६-०१	६-०२	६-०२	६-०२	६-०३	६-०३	६।०४	६।०४	६।०४	६।०५	६।०५	६।०५	६।०६	६।०६	६-०७	६-०७	६-०७	६-०८	६-०८	६-०९	६-०९
६	६-००	६-००	६-०१	६-०१	६-०२	६-०२	६-०३	६-०३	६-०३	६-०४	६।०४	६।०५	६।०५	६।०६	६।०६	६।०६	६।०७	६।०७	६-०८	६-०८	६-०९	६-०९	६-१०	६-१०	६-१०
७	६-००	६-००	६-०१	६-०१	६-०२	६-०२	६-०३	६-०३	६-०४	६-०४	६।०५	६।०५	६।०६	६।०६	६।०७	६।०८	६।०८	६।०९	६-०९	६-१०	६-१०	६-११	६-११	६-१२	६-१२
८	६-००	६-०१	६-०१	६-०२	६-०२	६-०३	६-०३	६-०४	६-०५	६-०५	६।०६	६।०६	६।०७	६।०७	६।०८	६।०९	६।०९	६।१०	६-१०	६-११	६-१२	६-१२	६-१३	६-१४	६-१४
९	६-००	६-०१	६-०१	६-०२	६-०३	६-०३	६-०४	६-०४	६-०५	६-०६	६।०६	६।०७	६।०८	६।०८	६।०९	६।१०	६।१०	६।११	६-१२	६-१३	६-१३	६-१४	६-१५	६-१५	६-१६
१०	६-००	६-०१	६-०१	६-०२	६-०३	६-०४	६-०४	६-०५	६-०६	६-०६	६।०७	६।०८	६।०९	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१२	६-१३	६-१४	६-१५	६-१६	६-१६	६-१७	६-१८
११	६-००	६-०१	६-०२	६-०२	६-०३	६-०४	६-०५	६-०५	६-०६	६-०७	६।०८	६।०९	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१४	६-१४	६-१५	६-१६	६-१७	६-१८	६-१९	६-१९
१२	६-००	६-०१	६-०२	६-०३	६-०३	६-०४	६-०५	६-०६	६-०७	६-०८	६।०९	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६-१६	६-१७	६-१८	६-१९	६-२०	६-२१	६-२१
१३	६-००	६-०१	६-०२	६-०३	६-०४	६-०५	६-०६	६-०६	६-०७	६-०८	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६।१६	६-१७	६-१८	६-१९	६-२०	६-२१	६-२२	६-२३
१४	६-००	६-०१	६-०२	६-०३	६-०४	६-०५	६-०६	६-०७	६-०८	६-०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६।१६	६।१७	६-१९	६-२०	६-२१	६-२२	६-२३	६-२४	६-२५
१५	६-००	६-०१	६-०२	६-०३	६-०४	६-०५	६-०६	६-०८	६-०९	६-१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६।१६	६।१८	६-१९	६-२०	६-२१	६-२२	६-२४	६-२५	६-२६	६-२७
१६	६-००	६-०१	६-०२	६-०३	६-०५	६-०६	६-०७	६-०८	६-०९	६-११	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६।१६	६।१८	६।१९	६-२०	६-२१	६-२३	६-२४	६-२५	६-२७	६-२८	६-२९
१७	६-००	६-०१	६-०२	६-०४	६-०५	६-०६	६-०७	६-०९	६-१०	६-११	६।१२	६।१४	६।१५	६।१६	६।१७	६।१९	६।२०	६-२१	६-२३	६-२४	६-२६	६-२७	६-२८	६-३०	६-३१
१८	६-००	६-०१	६-०३	६-०४	६-०५	६-०७	६-०८	६-०९	६-१०	६।१२	६।१३	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२०	६।२१	६-२३	६-२४	६-२६	६-२७	६-२९	६-३०	६-३२	६-३२
१९	६-००	६-०१	६-०३	६-०४	६-०६	६-०७	६-०८	६-१०	६-११	६।१३	६।१४	६।१५	६।१७	६।१८	६।२०	६।२१	६।२३	६-२४	६-२६	६-२७	६-२९	६-३०	६-३२	६-३४	६-३४
२०	६-००	६-०१	६-०३	६-०४	६-०६	६-०७	६-०९	६-१०	६-१२	६।१३	६।१५	६।१६	६।१८	६।१९	६।२१	६।२२	६।२४	६-२६	६-२७	६-२९	६-३०	६-३२	६-३४	६-३६	६-३६
२१	६-००	६-०२	६-०३	६-०५	६-०६	६-०८	६-०९	६-११	६-१२	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२०	६।२२	६।२४	६।२५	६-२७	६-२९	६-३०	६-३२	६-३४	६-३६	६-३८	६-३८
२२	६-००	६-०२	६-०३	६-०५	६-०६	६-०८	६-१०	६-११	६-१३	६।१५	६।१६	६।१८	६।२०	६।२१	६।२३	६।२५	६।२७	६-२८	६-३०	६-३२	६-३४	६-३६	६-३८	६-३९	६-४०
२३	६-००	६-०२	६-०३	६-०५	६-०७	६-०९	६-१०	६-१२	६-१४	६।१५	६।१७	६।१९	६ २१	६।२२	६।२४	६।२६	६।२८	६-३०	६-३२	६-३४	६-३६	६-३८	६-३९	६-४२	६-४२
२४	६-००	६-०२	६-०४	६-०५	६-०७	६-०९	६-११	६-१३	६-१४	६।१६	६।१८	६।२०	६।२२	६।२४	६ २५	६।२७	६।२९	६-३१	६-३३	६-३५	६-३७	६-३९	६-४१	६-४४	६-४५
२५	६-००	६-०२	६-०४	६-०६	६-०७	६-०९	६-११	६-१३	६-१५	६।१७	६।१९	६।२१	६।२३	६।२५	६।२७	६।२९	६।३१	६-३३	६-३५	६-३७	६-३९	६-४१	६-४३	६-४६	६-४७
२६	६-००	६-०२	६-०४	६-०६	६-०८	६-१०	६-१२	६-१४	६-१६	६।१८	६।२०	६।२२	६ २४	६।२६	६।२८	६।३०	६।३२	६-३४	६-३६	६-३९	६-४१	६-४३	६-४५	६-४८	६-४९
२७	६-००	६-०२	६-०४	६-०६	६-०८	६-१०	६-१२	६-१४	६-१६	६।१९	६।२१	६।२३	६।२५	६।२७	६।२९	६।३१	६।३४	६-३६	६-३८	६-४०	६-४३	६-४७	६-४८	६-५०	६-५१
२८	६-००	६-०२	६-०४	६-०६	६-०९	६-११	६-१३	६-१५	६-१७	६।१९	६।२२	६।२४	६।२६	६।२८	६।३०	६।३३	६।३५	६-३७	६-४०	६-४२	६-४५	६-४७	६-५०	६-५२	६-५३
२९	६-००	६-०२	६-०४	६-०७	६-०९	६-११	६-१३	६-१६	६-१८	६।२०	६।२२	६।२५	६।२७	६।२९	६ ३२	६।३४	६।३७	६-३९	६-४२	६-४४	६-४७	६-४९	६-५२	६-५४	६-५६
३०	६-००	६-०२	६-०५	६-०७	६-०९	६-१२	६-१४	६-१६	६-१९	६।२१	६।२३	६।२६	६।२८	६।३१	६।३३	६।३६	६।३८	६-४१	६-४३	६-४६	६ ४९	६ ५१	६ ५४	६ ५७	६ ५८

 कोष्ठक नं० ५

अपने नगर के उत्तर अक्षांश तथा सूर्य क्रांतिसे सूर्यके उत्तर गोलमें २१ मार्च से २२ सितम्बर तकसूर्यास्तका समय तथा दक्षिण गोलमें २२ सितम्बर से २१ मार्च तक सूर्योदयका देशी स्पष्ट समय जाना जाता है।

अक्षां	क्रां०	१°	२°	३°	४°	५°	६°	७°	८°	९°	१०°	११°	१२°	१३°	१४°	१५°	१६°	१७°	१८°	१९°	२०°	२१°	२२°	२३°	२३२८
	घ.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घं.मि.	घ.मि.	घं.मि.	घं मि.	घं.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घं.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.
३१	६-००	६-०२	६-०५	६-०७	६-१०	६-१२	६-१४	६-१७	६-१९	६-२२	६-२४	६-२७	६।२९	६।३२	६।३४	६।३७	६।४०	६।४२	६।४५	६।४८	६।५१	६।५३	६।५६	६।५९	७।००
३२	६-००	६-०२	६-०५	६-०८	६-१०	६-१३	६-१५	६-१८	६-२०	६-२३	६-२५	६-२८	६।३१	६।३३	६।३६	६।३९	६।४१	६।४४	६।४७	६।५०	६।५३	६।५६	६।५८	७।०२	७।०३
३३	६-००	६-०३	६-०५	६-०८	६-१०	६-१३	६-१६	६-१८	६-२१	६-२४	६-२६	६-२९	६।३२	६।३४	६।३७	६।४०	६।४३	६।४६	६।४९	६।५२	६।५५	६।५८	७।०१	७।०४	७।०५
३४	६-००	६-०३	६-०५	६-०८	६-११	६-१४	६-१६	६-१९	६-२२	६-२५	६-२७	६-३०	६।३३	६।३६	६।३९	६।४२	६।४५	६।४८	६।५१	६।५४	६।५७	७।००	७।०३	७।०७	७।०८
३५	६-००	६-०३	६-०६	६-०८	६-११	६-१४	६-१७	६-२०	६-२३	६-२५	६-२८	६-३१	६।३४	६।३७	६।४०	६।४३	६।४६	६।४९	६।५२	६।५६	६।५९	७।०२	७।०६	७।०९	७।११
३६	६-००	६-०३	६-०६	६-०९	६-१२	६-१५	६-१८	६-२०	६-२३	६-२६	६-२९	६-३२	६।३६	६।३९	६।४२	६।४५	६।४८	६।५१	६।५५	६।५८	७।०१	७।०५	७।०८	७।१२	७।१४
३७	६-००	६-०३	६-०६	६-०९	६-१२	६-१५	६-१८	६-२१	६-२४	६-२७	६-३१	६-३४	६।३७	६।४०	६।४३	६।४७	६।५०	६।५३	६।५७	७।००	७।०४	७।०७	७।११	७।१५	७।१६
३८	६-००	६-०३	६-०६	६-०९	६-१३	६-१६	६-१९	६-२२	६-२५	६-२८	६-३२	६-३५	६।३८	६।४२	६।४५	६।४८	६।५२	६।५५	६।५९	७।०२	७।०६	७।१०	७।१४	७।१७	७।१९
३९	६-००	६-०३	६-०६	६-१०	६-१३	६-१६	६-२०	६-२३	६-२६	६-२९	६-३३	६-३६	६।४०	६।४३	६।४७	६।५०	६।५४	६।५७	७।०१	७।०५	७।०९	७।१२	७।१६	७।२०	७।२२
४०	६-००	६-०३	६-०७	६-१०	६-१३	६-१७	६-२०	६-२४	६-२७	६-३१	६-३४	६-३८	६।४१	६।४५	६।४८	६।५२	६।५६	६।५९	७।०३	७।०७	७।११	७।१५	७।१९	७।२३	७।२५
४१	६-००	६-०३	६-०७	६-१०	६-१४	६-१७	६-२१	६-२५	६-२८	६-३२	६-३५	६-३९	६।४३	६।४६	६।५०	६।५४	६।५८	७।०२	७।०६	७।१०	७।१४	७।१८	७।२२	७।२७	७।२९
४२	६-००	६-०४	६-०७	६-११	६-१४	६-१८	६-२२	६-२५	६-२९	६-३३	६-३७	६-४०	६।४४	६।४८	६।५२	६।५६	७।००	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२१	७।२५	७।३०	७।३२
४३	६-००	६-०४	६-०७	६-११	६-१५	६-१९	६-२२	६-२६	६-३०	६-३४	६-३८	६-४२	६।४६	६।५०	६।५४	६।५८	७।०२	७।०६	७।११	७।१५	७।१९	७।२४	७।२९	७।३३	७।३६
४४	६-००	६-०४	६-०८	६-१२	६-१५	६-१९	६-२३	६-२७	६-३१	६-३५	६-३९	६-४३	६।४७	६।५२	६।५६	७।००	७।०४	७।०९	७।१३	७।१८	७।२२	७।२७	७।३२	७। ७	७।३९
४५	६-००	६-०४	६-०८	६-१२	६-१६	६-२०	६-२४	६-२८	६-३२	६-३६	६-४१	६-४५	६।४९	६।५३	६।५८	७।०२	७।०७	७।११	७।१६	७।२१	७।२५	७।३०	७।३५	७।४०	७।४३
४६	६-००	६-०४	६-०८	६-१२	६-१७	६-२१	६-२५	६-२९	६-३३	६-३८	६-४२	६-४६	६।५१	६।५५	७।००	७।०४	७।०९	७।१४	७।१९	७।२४	७।२९	७।३४	७।३९	७।४४	७।४७
४७	६-००	६-०४	६-०९	६-१३	६-१७	६-२२	६-२६	६-३०	६-३५	६-३९	६-४४	६-४८	६।५३	६।५७	७।०२	७।०७	७।१२	७।१७	७।२२	७।२७	७।३२	७।३७	७।४३	७।४८	७।५१
४८	६-००	६-०४	६-०९	६-१३	६-१८	६-२२	६-२७	६-३१	६-३६	६-४१	६-४५	६-५०	६।५५	६।५९	७।०४	७।०९	७।१४	७।१९	७।२५	७।३०	७।३५	७।४१	७।४७	७।५३	७।५५
४९	६-००	६-०५	६-०९	६-१४	६-१८	६-२३	६-२८	६-३२	६-३७	६-४२	६-४७	६-५२	६।५७	७।०२	७।०७	७।१२	७।१७	७।२२	७।२८	७।३३	७।३९	७।४५	७।५१	७।५७	८।००
५०	६-००	६-०५	६-१०	६-१४	६-१९	६-२४	६-२९	६-३४	६-३९	६-४४	६-४९	६-५४	६।५९	७।०४	७।०९	७।१५	७।२०	७।२५	७।३१	७।३७	७।४३	७।४९	७।५५	८।०२	८।०५
५१	६-००	६-०५	६-१०	६-१५	६-२०	६-२५	६-३०	६-३५	६-४०	६-४५	६-५०	६-५६	७।०१	७।०६	७।१२	७।१७	७।२३	७।२९	७।३५	७।४१	७।४७	७।५३	८।००	८।०६	८।१०
५२	६-००	६-०५	६-१०	६-१५	६-२१	६-२६	६-३१	६-३६	६-४१	६-४७	६-५२	६-५८	७।०३	७।०९	७।१४	७।२०	७।२६	७।३२	७।३८	७।४५	७।५१	७।५८	८।०५	८।१२	८।१५
५३	६-००	६-०५	६-११	६-१६	६-२१	६-२७	६-३२	६-३८	६-४३	६-४९	६-५४	७-००	७।०६	७।११	७।१७	७।२३	७।२९	७।३६	७।४२	७।४९	७।५६	८।०३	८।१०	८।१७	८।२१
५४	६-००	६-०६	६-११	६-१७	६-२२	६-२८	६-३३	६-३९	६-४५	६-५०	६-५६	७-०२	७।०८	७।१४	७।२०	७।२७	७।३३	७।४०	७।४६	७।५३	८।००	८।०८	८। ५	८।२३	८।२७
५५	६-००	६-०६	६-११	६-१७	६-२३	६-२९	६-३५	६-४०	६-४६	६-५२	६-५८	७-०४	७।११	७।१७	७।२३	७।३०	७।३७	७।४४	७।५१	७।५८	८।०५	८।१३	८।२१	८।२९	८।३३
५६	६-००	६-०६	६-१२	६-१८	६-२४	६-३०	६-३६	६-४२	६-४८	६-५४	७-०१	७-०७	७।१३	७।२०	७।२७	७।३४	७।४१	७।४८	७।५५	८।०३	८।११	८।१९	८।२७	८।३६	८।४०
५७	६-००	६-०६	६-१२	६-१९	६-२५	६-३१	६-३७	६-४४	६-५०	६-५६	७-०३	७-१०	७।१६	६।२३	७।३०	७।३७	७।४५	७।५२	८।००	८।०८	८।१६	८।२५	८।३४	८।४३	८।४८
५८	६-००	६-०६	६-१३	६-१९	६-२६	६-३२	६-३९	६-४५	६-५२	६-५९	७-०६	७-१३	७।२०	७।२७	७।३४	७।४२	७।४९	७।५७	८।०५	८।१४	८।२२	८।३२	८।४१	८।५१	८।५६
५९	६-००	६-०७	६-१३	६-२०	६-२७	६-३३	६-४०	६-४७	६-५४	७-०१	७-०८	७-१६	७।२३	७।३०	७।३८	७।४६	७।५४	८।०२	८।११	८।२०	८।२९	८।३९	८।४९	९।००	९।०५
६०	६-००	६-०७	६-१४	६-२१	६-२८	६-३५	६-४२	६-४९	६-५६	७-०४	७-११	७-१९	७।२६	७।३४	७।४२	७।५१	७।५९	८।०८	८।१७	८।२६	८।३६	८।४७	८।५८	९।०९	९।१५

रविक्रांति कोष्ठक नं० ३

तारीख	जनवरी दक्षिण अं.क.	फरवरी दक्षिण अं.क.	मार्च दक्षिण अं.क.	अप्रैल उत्तरा अं.क.	मई उत्तरा अं.क.	जून उत्तरा अं.क.	जुलाई उत्तरा अं.क.	अगस्त उत्तरा अं.क.	सितम्बर उत्तरा अं.क.	अक्टूबर दक्षिण रा.अं.	नवम्बर दक्षिण अं.क.	दिसम्बर दक्षिण अं.क.
१	२३ ७	१७ २७	७ ४१	४ ६	१४ ४६	२१ ५४	२३ ११	१८ १७	८ ४०	२ ४७	१४ ६	२१ ३८
२	२३ २	१७ १०	७ १८	४ ३२	१५ ४	२२ ३	२३ ७	१८ २	८ १८	३ १०	१४ २६	२१ ४८
३	२२ ५७	१६ ५४	६ ५५	४ ५५	१५ २२	२२ ११	२३ ३	१७ ४७	७ ५६	३ ३४	१४ ४५	२१ ५७
४	२२ ५१	१६ ३६	६ ३२	५ १८	१५ ४०	२२ १८	२२ ५९	१७ ३१	७ ३४	३ ५७	१५ ४	२२ ६
५	२२ ४५	१६ १८	६ ९	५ ४१	१५ ५८	२२ २६	२२ ५४	१७ १५	७ १२	४ २०	१५ २२	२२ १४
६	२२ ३९	१६ ०	५ ४६	६ ४	१६ १५	२२ ३३	२२ ४८	१६ ५९	६ ५०	४ ४३	१५ ४१	२२ २२
७	२२ ३२	१५ ४२	५ २३	६ २७	१६ ३२	२२ ३९	२२ ४२	१६ ४३	६ २८	५ ६	१५ ५९	२२ २९
८	२२ २५	१५ २३	४ ५९	६ ४९	१६ ४९	२२ ४५	२२ ३६	१६ २६	६ ५	५ २९	१६ १७	२२ ३६
९	२२ १७	१५ ४	४ ३६	७ १२	१७ ५	२२ ५१	२२ ३०	१६ ९	५ ४३	५ ५२	१६ ३४	२२ ४३
१०	२२ ९	१४ ४५	४ १३	७ ३४	१७ २१	२२ ५६	२२ २३	१५ ५२	५ २०	६ १५	१६ ५२	२२ ४९
११	२२ ०	१४ २६	३ ४९	७ ५६	१७ ३७	२३ १	२२ १५	१५ ३५	४ ५७	६ ३८	१७ ९	२२ ५५
१२	२१ ५१	१४ ६	३ २५	८ १८	१७ ५३	२३ ५	२२ ७	१५ १७	४ ३५	७ १	१७ २५	२३ ०
१३	२१ ४२	१३ ४६	३ २	८ ४०	१८ ८	२३ ९	२१ ५९	१४ ५९	४ १२	७ २३	१७ ४२	२३ ५
१४	२१ ३२	१३ २६	२ ३८	९ २	१८ २३	२३ १३	२१ ५१	१४ ४१	३ ४९	७ ४६	१७ ५८	२३ ९
१५	२१ २२	१३ ६	२ १४	९ २४	१८ ३७	२३ १६	२१ ४२	१४ २३	३ २६	८ ८	१८ १४	२३ १३
१६	२१ ११	१२ ४६	१ ५१	९ ४६	१८ ५१	२३ १९	२१ ३३	१४ ४	३ ३	८ ३०	१८ २९	२३ १६
१७	२१ ०	१२ २५	१ २७	१० ७	१९ ५	२३ २१	२१ २३	१३ ४५	२ ४०	८ ५३	१८ ४३	२३ १९
१८	२० ४७	१२ ४	१ ३	१० २८	१९ १९	२३ २३	२१ १३	१३ २६	२ १६	९ १५	१८ ५८	२३ २२
१९	२० ३६	११ ४३	० ४०	१० ४९	१९ ३२	२३ २५	२१ ३	१३ ७	१ ५३	९ ३६	१९ १३	२३ २३
२०	२० २४	११ २२	० १६	११ १०	१९ ४५	२३ २६	२० ५२	१२ ४८	१ ३०	९ ५८	१९ २७	२३ २५
२१	२० ११	११ १	उ० ८	११ ३१	१९ ५८	२३ २६	२० ४१	१२ २८	१ ७	१० २०	१९ ४१	२३ २६
२२	१९ ५८	१० ३९	० ३२	११ ५१	२० १०	२३ २७	२० ३०	१२ ८	० ४३	१० ४१	१९ ५४	२३ २७
२३	१९ ४४	१० १७	० ५५	१२ ११	२० २२	२३ २७	२० १८	११ ४८	० २०	११ ३	२० ७	२३ २७
२४	१९ ३०	९ ५५	१ १९	१२ ३२	२० ३४	२३ २६	२० ६	११ २८	द० ३	११ २४	२० २०	२३ २६
२५	१९ १६	९ ३३	१ ४३	१२ ४१	२० ४५	२३ २५	१९ ५४	११ ७	० २७	११ ४६	२० ३३	२३ २६
२६	१९ १	९ ११	२ ६	१३ ११	२० ५६	२३ २४	१९ ४१	१० ४७	० ५०	१२ ६	२० ४५	२३ २४
२७	१८ ४६	८ ४९	२ ३०	१३ ३१	२१ ७	२३ २२	१९ २८	१० २६	१ १४	१२ २६	२० ५६	२३ २२
२८	१८ ३१	८ २६	२ ५३	१३ ५०	२१ १७	२३ २०	१९ १४	१० ५	१ ३७	१२ ४७	२१ ७	२३ २०
२९	१८ १६	८ ४	३ १७	१४ ९	२१ २७	२३ १७	१९ १	९ ४५	२ ०	१३ ७	२१ १८	२३ १७
३०	१८ ०		३ ४०	१४ २८	२१ ३७	२३ १४	१८ ४७	९ २३	२ २४	१३ २७	२१ २८	२३ १४
३१	१७ ४३		४ ३		२१ ४६		१८ ३२	९ १		१३ ४७		२३ ११

कोष्ठक २ मध्यम और स्पष्ट समयका अन्तर

तारीख	जन. मिं.	फर. मि.	मार्च. मिं.	अप्रैल. मिं.	मई मिं.	जून. मिं.	जुलाई. मि.	अगस्त. मिं.	सि. मि.	अक्टू. मिं.	नवंबर. मिं.	दिस मिं.
१	−४	−१४	−१२	−३	+३	+३	+३	−६	०	+१०	×१६	+१२
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	+१	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	२	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	२	१२	१६	८
११	८	१५	१०	−१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	+१	५	५	३	१३	१७	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	४	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	+१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	४	१	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	+१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	+१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	−१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	−१२	४	३	३	३	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	+३	३	+३	+६	१	+९	+१६	+१२	३
३१	−१४		−४		+३			−१				−३

उपयु क्त मिनटका संस्कार मध्यम कालमें करने से स्पष्टकाल होगा।

संसार का महान् दूरवीक्षण यन्त्र

(जिसका व्यास २०० इञ्च है)

इस २०० इञ्च के व्यास के दूरबीन के तैयार होने में लगभग २५ वर्ष लगे हैं। अब ये अमेरिका के माउण्ट पालोमर के शिखर पर स्थापित कर दिया गया है। सन् १९२७ में डा० हेल नाम के ज्योतिष विद्वान् ने एक लेख लिखा था उसके फलरूप 'राकफेलर जनरल एज्यूकेशन बोर्ड, के सभापति ने इस कार्य के लिए २ कोटि रुपया स्वीकार किया था।

इस महान् यन्त्र के स्थापन करने को माउण्ट पालोमर नाम का स्थान (सैन डीगो से ४५ मी उत्तर में अमरीका में है) चुना गया है। जो कि ६१२६ फीट ऊँचाई पर है।

यह यन्त्र जिस स्थान पर स्थापित किया है, वहाँ इसका गुम्मद १३७ फीट की ऊँचाई पर है। जो भाग इसका बिजली द्वारा घूमेगावह १००० टन अर्थात् २७०० मन का है। जिस यन्त्रशाला में यह स्थापित किया गया है उसकी ऊंचाई समुद्र का सतह से ५६०० फीट ऊंची है।

माउण्टविल्सन् नाम की वेधशालामें अब तक १०० इंच व्यास की दूरबीन थी। उससे जो ज्ञान प्राप्त हो सका था उसकी चौगुनी वृद्धि इसके द्वारा हो सकेगी।

वर्तमान ज्योतिषशास्त्रकी उन्नतिके साधक आकर्षण सिद्धान्त के आविष्कारक सर ऐजक्न्यूटन ने सन् १६७२ में जो दूरबीन उपयोग में ली थी और वह अब तक लण्डनकी प्रदर्शिनीमें वर्तमान है उसकी ही यह पराकाष्ठा की उन्नति का फलरूप है।

इस २०० इंच के विशाल आकृति के यन्त्र से भविष्य में अदृष्ट आकाश के बहुत से तेज पिण्ड देखे जा सकेंगे।

अभी वहाँ अनुमान लगाया जा रहा है कि मङ्गल ग्रह में जो अब तक नहरें सी नजर आती थीं, वे कुछ काल से टेढ़ी मेढ़ी से सीधी हुई नजर आने लगी है। सर्व प्रथम यह मङ्गल ही इस कार्य का मङ्गल है। चन्द्रमा इस दूरबीन से २५ मील पर रहने वाली चीज के बराबर दीखता

है। इस कथन में कोई हानि नहीं कि पाश्चात्य गणितज्ञों का यह प्रयत्न ईश्वर की कोटि ब्रह्माण्ड नायकता का पूर्ण साधक होगा।

भारतवर्ष में बड़ी यूनिवर्सिटियाँ होते हुए भी आकाश इन महामहिमशाली ग्रह उपग्रहों का देखने का साधन सम्पन्न नहीं।

ग्रीनविच की वेधशाला से पञ्चाङ्ग नाटिकल ऐलमनक् नाम का प्रतिवर्ष छपता है, उसका उपयोग यद्यपि नाविक विभाग में ही होता है। तथापि हमारे भारतवर्ष के पञ्चाङ्गों का यह पञ्चाङ्ग उपजीव्य हो गया है। इसमें लिखे चन्द्र-ग्रहण सूर्यग्रहण सब मिनट सैकिण्ड तक ठीक उतरते हैं।

इसके सहारे से भारत के अनेक पञ्चाङ्गकर्त्ता अपने पंचाङ्ग की प्रतिष्ठा बनाए हुए हैं। यह पंचांग किसी वर्ष न आवे तो ज्यौतिषी जी के कार्य में विघ्न सा प्रतीत होने लगता है। गुड़ खाएं गुलगुले से परहेज करें इस लोकोक्ति अनुसार भारतीय ज्यौतिष विज्ञान अपना सब खो चुका तब दूसरों के श्रम से पूर्ण लाभ उठाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया जाता है। पाश्चात्य देशों में फ्रान्स आदि देश ग्रह-गणित के लिए माने हुये हैं।

इस समय भारतीय जनता को भी ज्यौतिष शास्त्र पर लक्ष्य देना चाहिये। और प्राचीन शैली में कुछ उन्नति करना चाहिये।

आकाश के ग्रह वे ही अब हैं जो पहले थे। गणित में समय २ पर कालान्तर सँस्कार न देने से जो भूल आ रही हैं। उनका सम्भालना प्रथम कर्तव्य है।

दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि भारत में सब मिला कर दो सौ ढाई सौ पंचांग प्रतिवर्ष छपते हैं। कोई वर्तमान वर्ष में गुरु के (जो १ वर्ष १ राशि पर रहता है) ६ अक्टूबर को धनु राशिमें आने वाला है, गणित में एक सत्य नहीं है। इस कलङ्क को हटाने के लिए इस ज्यौतिविज्ञान की उन्नति के समय में इस ज्योतिर्विज्ञान के साधन पंचांग की भी दुर्दशा पर विचार होना आवश्यक प्रतीत होता है। इस निमित्त ही वेधशाला और दूरवीन आदि यन्त्र अपेक्षित होते हैं॥

(फिर कभी)

★

आप व्यापार कैसे करें ?

'श्रीस्वाध्याय' से व्यापारी वर्गका भी विशेष स्नेह है। उन्हींके आग्रहसे हम भारतवर्षके प्रसिद्ध गण्य-मान्य ज्योतिषियोंके व्यापार पर प्रकाश डालने वाले अनेक विशेष लेख इसमें निरन्तर प्रकाशित कर रहे हैं। हमारी इस योजनासे भारतके हजारों व्यापारियोंने पर्याप्त लाभ उठाया और उठाते जा रहे हैं।

इस आधुनिक सट्टे के व्यापारका प्राचीन ग्रन्थोंमें कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। विद्वान दैवज्ञ यथाशक्ति इस पर अभी अपना-अपना अनुसन्धान कर रहे हैं। जब तक इस विषय पर सामूहिक रूपेण पूर्ण अनुसन्धान (रिसर्च) न हो जाये तबतक किसी एक ज्योतिषीका रुख निश्चित रूपमें शतप्रतिशत सदा ठीक उतरना सर्वथा असम्भव है। एक ज्योतिषीकी रायसे व्यापारियोंको उतना लाभ सम्भव नहीं जितना कि भारतके पांच सात अनुभवी ज्योतिषियों की रायके समन्वय या मिलानसे हो सकता है। यदि कोई व्यापारी ठीक ठीक मिलान करके अपनी लाइन न बना सकें या कोई बात समझमें न आवे तो वे सज्जन 'व्यवस्थापक' श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) के पते पर उत्तरके लिए टिकट भेज कर ठीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

तुलसी के उपयोग

(ले०—कविराज श्री बिशनदास जी वैद्य)

तुलसी भारतवर्षमें सर्वत्र मिलती है, जो कि सैंकड़ों रोगोंके लिए अमोघ औषधि है। तुलसीमें अनेक उत्तम गुण होनेसे और अनेक रोगों को नाश करनेके कारण हिन्दू घरानोंमें पवित्र मानी जाती है। योरुप आदि विदेशों वाले आजकल भी इससे अत्यन्त धन कमा रहे हैं, परन्तु भारतवासी यहां की इस बहुमूल्य औषधिसे कोई विशेष लाभ नहीं उठाते हैं। इसकी जड़, पत्र और बीज विविध प्रकारके रोगोमें उपयुक्त होते हैं। मैं इसके बहुत से उपयोग और इस पर जो विदेशोंमें वैज्ञानिक अनुभव हुए है, उन पर प्रकाश डालनेका यत्न करूंगा। आशा है कि वैद्यगण उनसे लाभ उठावेंगे।

वैज्ञानिक अनुभव १—डा० मोलिंडग और डा० पोलीनो ने सिद्ध किया है, कि तुलसी-पत्रमें हरितपीत तैल (Yello wish Green essential oil) होता है, जो वायु द्वारा सँचार करता है और वायुको शुद्ध करता है। यदि इस तैल को थोड़ी देर सुरक्षित रखा जावे, तो Basicamphor बन जाता है।

२. कुछ वैज्ञानिकों का मत है, कि इसमें "थायमल" (Thymal) नामक सत्त्व है, जो त्वचाके रोगों पर विशेष लाभकारी है।

३. डा० मेवर लोरीमसका कथन है, कि तुलसीकी गन्धसे मच्छर मर जाते हैं।

विषम ज्वर पर—भारतवर्षमें प्रतिवर्ष हजारों रुपयोंकी विदेशी औषधियां ज्वर आदिके लिए आती हैं, परन्तु जिस घरमें कुछ तुलसीके बूटे हों, वहां ज्वरके कीटाणु बिल्कुल ही नाश हो जाते हैं और कुनीन आदि खुश्की उत्पन्न करने वाली विदेशी और महंगी औषधियोंकी आवश्यकता नहीं रहती है, विषमज्वरके रोगीको तुलसीपत्र-स्वरस और द्रोणपुष्प-रसके साथ कालीमिरचका चूर्ण देने से ज्वर दूर हो जाता है। यथाः—

"पीतो मरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः।
द्रोणपुष्प रसोऽप्येवं निहन्ति विषमज्वरम्।"
(शार्ङ्गधर)

Sir George Birdwood writes "When the present Victoria Gardens were being planned inBombay, the men employed on these works were at first so pestered by mosquitoes and suffered so much from malarial fever that on the recommendations of the Hindu manager the whole boundary of the gardens was planted with Holy Tulsi at hand on which the plague of mospuitoes was at once abated and fever altogether disappeared from among the resident gardeners and temporary resident massons."

त्वचाके रोगों पर—तुलसीपत्र स्वरस और नींबू-स्वरस दोनों को मिलाकर शरीर पर मलना त्वचाके सारे रोगों (Skin diseases)में लाभकारी है। विशेषकर दद्रु, धब्बे और श्वेत कुष्ठमें इसका प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है और त्वचाकी सुन्दरताको बढ़ानेमें भी एक अद्भुत कौशल रखती है।

नासिका रोग (Ozoena):-Ozoena में शुष्क पत्रोंकी नस्य बनाकर प्रयुक्त करनेसे अत्यन्त लाभ होता है।

बालकोंके रोगः—बालकोंके आमाशय और यकृत् की खराबीमें तुलसीका स्वरस लाभप्रद है।

जुकाम और कास परः—तुलसीको चायवत् प्रयोग करें। क्वाथमें खांड और गोदुग्ध मिलाकर पीनेसे खांसी, जुकाम, पीनस और थकावट दूर हो जाती है। मंजुर-तुलसी, वच, मधुयष्टी और पिप्पली प्रत्येक ६ माशे लेकर

त्रैमासिक-भविष्य-फल

'प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी, त्रैमासिक राशिफल व अन्य हलचलें'

(लेखकः—कविवर श्री० पं० रमानन्द शर्मा सारस्वत ज्योतिश्शास्त्री साहित्य-रत्न भूतपूर्व सम्पादक 'जय हिन्दी' साप्ताहिक)

गताङ्ककी निर्दिष्ट सूचनानुसार पहले तो हैदराबादके प्रति उपद्रव बढ़ना व बादमें फिर मिर्जाइस्माइल द्वारा सन्धिके लिये प्रस्ताव कराना आदि-तथा अनेक स्थानों पर भीषण गर्मी। कहीं बाढ़ और प्रायः सरसामका सा मौसम रहना व अनेक चान्सोंका मिल जाना हमारी सत्यताका अब तक प्रमाण-पत्र मिलता जा रहा है। यदि जगदम्बाकी ऐसी ही कृपा रही तो फिर पाठकोंकी सेवा विशेष रूप से होगी। हम न तो अपने पाण्डित्यका ही दावा करते हैं और न यही कहते हैं कि हमारा लिखा सर्वथा सत्य होकर ही रहेगा। यह तो विज्ञान है, जो जितना समझता है उतना ही बतलाने का यत्न करता है। तिस पर भी विधाताके आगे सब विज्ञान धरे रह जाते हैं। पर परिश्रम करनेसे मनुष्य सफल हो सकता है यह हमारा दृढ़ प्रत्यय (विश्वास) है।

प्रथम मास (तुला-संक्रान्ति)

[१६ अक्टूबर से १५ नवम्बर तक]

यह मास स्वास्थ्यकी दृष्टिसे साधारण रहेगा। इस मास में कई एक विषम समस्यायें उपस्थित होंगी। प्रायः लोगोंमें आर्थिक संकट तथा वात पित्त जनित व्याधियोंकी वृद्धि होगी, सुख शान्तिका अभाव होकर अनेक हलचलें दिखलाई देंगी। काश्मीरका प्रश्न फिर उग्रता धारण करेगा ऐसा प्रतीत होता है। ईशानकोणस्थित प्रदेशोंमें विशेष भयावह स्थिति होगी। निजाम हैदराबाद पाकिस्तान अथवा अग्नि या ईशानकोणवर्ती किसी देशको भारी अर्थ संकटका सामना करना पड़े। मेष, तुला और सिंह राशि वालोंको यह मास अनिष्ट रहेगा। विशेष अशुभ तुला राशि और जन्मलग्न वालोंको रहेगा। उन्हें भी किसी अश्रुत पूर्व आर्थिक संकटका सामना करना पड़ेगा। संक्षेपमें यह मास चिन्ता कारक सा ही रहेगा। उत्तरार्ध पूर्वार्धकी अपेक्षा अच्छा रहेगा।

व्यापार—

यह मास व्यापारके लिये विशेष चमत्कारिक है। कुल मिलाकर मासमें अधिकांश मन्दीके दौर रहेंगे। अन्य अनेक कारणोंसे व्यापारमें हलचल ही रहेगी। ऐसा भी प्रतीत होता है कि एक बार काफी मन्दी आ जानेसे बाजार में लोगोंको पूरा नुकसान हो जाय। हमारी सम्मतिमें ऐसे

आधा सेर पानीमें जोश दें। जब पानी आधा पावके लगभग शेष रह जावे, तो इसमें दाना खांड मिलाकर पीवें। खांसीमें बहुत लाभकारी है। और यदि बालकोंको चमचा भर दिनमें ५–६ बार दिया जावे, तो बालकोंकी काली खांसी तक हट जाती है। और बालकोंके श्वासमें लाभप्रद है।

सर्प दंश पर—किसी पुरुषको सर्प डस जावे, तो शीघ्र ही उसे तुलसी पत्र खिलाओ। तुलसीकी जड़ पीस कर मक्खनमें मिलाकर सर्पदंशके स्थान पर पलस्तर लगा देना चाहिए। इसी प्रकार कई बार करनेसे विषका सारा प्रभाव दूर हो जवेगा

वीर्य-दोषों पर—तुलसीकी जड़का चूर्ण पानके पत्तों के साथ प्रयोग करनेसे वीर्यदोष दूर हो जाते हैं। तुलसी के बीजका चूर्ण १८ ग्रेन, पुराना गुड़ ३६ ग्रेन २ मात्रा। दोनोंको मिलाकर गायके दूधके साथ प्रातः सायं प्रयोग करनेसे वीर्य गाढ़ा हो जाता है और शरीर में शक्ति उत्पन्न होती है।

वमन पर—ताजे पत्र स्वरसमें आधा माशा छोटी इलायचीका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सब प्रकारकी उल्टी बन्द हो जाती है।

——

चान्सोंमें खरीदना ही आगे लाभकारी होगा। जो लोग पर्चाका सौदा करते हैं उन्हें ही ऐसी कठिनाइयाँ हो सकती हैं। अतः इस मासमें हाजिर सौदा ही ठीक रहेगा। नीचे कुछ साधारण चान्स लिखे जाते हैं।

चांदी—

ता० १७ अक्टूबरसे घट बढ़के साथ २० ता० को कुछ मन्दीका भाव होगा। इसके बाद २२ अक्टूबरसे तेजी होते हुए २७ तक तेजी ही रहेगी, किन्तु ऐसा प्रतीत नहीं होता कि भाव तेज होते ही जावें। दो चार टके पर भाव रुक भी सकते हैं। इसके बाद करीब घट बढ़ होते होते ता० २ नवम्बरके आस पास पुनः तेजी होगी जो कुछ दिन ठहरेगी। इसके बाद मन्दीके योग हैं, मासके अन्तमें तेजी ही रहेगी।

सोना—

इस मासमें सोनेका व्यापार अच्छा लाभकारी रहेगा, मन्दीके योग तो हैं, ही पर ता० २३ और ३० अक्टूबर तथा ५ और ७ नवम्बरके दिन सोनेमें तेजीका ही भाव रहेगा।

अन्य वस्तुएं—

प्रायः मन्दी ही रहेंगी। धान्य भाव सम रहेगा। घृत सस्ता तथा तैलादि अन्य तिक्त पदार्थ तेजीमें हो जायेंगे।

(२) द्वितीय मास (वृश्चिक-संक्रान्ति)

ता० १५ नवम्बर से १५ दिसम्बर तक

यह मास पिछले माससे अच्छा रहेगा। इस मासमें भी शान्ति की तो कोई आशा नहीं। सम्भवतः युद्धकी घटनायें विश्वके रंग-मंच पर घटित होने लगें। यह मास भारतके लिये भी अशान्ति पूर्ण ही बना रहेगा। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे दुष्ट लोग पर्याप्त हानि पहुंचानेकी चेष्टा करेंगे। देशकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति विप्लवमय होगी। काश्मीर और पाकिस्तान तथा हैदराबादकी समस्यायें अगले मासमें बहुत कुछ सुधर जायेंगी। इस मासमें देशके नेताओंको विशेष सतर्क रहना आवश्यक है, नहीं तो हानि भी हो सकती है। मेष तुला राशिवालोंको मास विशेष कष्ट कारी या सिंहको साधारण होगा। तथा अन्योंको प्रायः शुभ रहेगा।

व्यापार—

व्यापार इस मासमें अच्छा रहेगा। हमारी सम्मतिमें इस मासमें चांदीका व्यापार अच्छे उथल पुथलका रहेगा, पर व्यापारी चांदी द्वारा अच्छा लाभ उठा सकते हैं। ऐसे कई योग हैं। सोना भी तेजीमें ही रहेगा। इस मासमें सोना चांद के व्यापारी विशेष सावधान रहें! इसमें कई तेजी मन्दीके ऐसे योग आ रहे हैं जो ढाई दिनमें लखपति वाली कहावतको चरितार्थ करेंगे।

चांदी—

ता० १८। २६ नवम्बर तथा ५ और १४ दिसम्बर मन्दीके रूपमें बीतेंगे तथा २०। २५। २८ नवम्बर व ६ तथा १४ दिसम्बर तक भाव तेजीमें ही बन्द होंगे। ये घट-बढके अच्छे मौके हैं।

सोना—

सोनेमें ता० १७, १६, २६, २६ नवम्बर और २ तथा १५ दिसम्बरका दिन अच्छी तेजीसे बीतेगा। व्यापारी लोगों को सावधानीसे कार्य करना चाहिए।

अन्य वस्तुएं—

घी, गुड़, खांड व धान्य भाव मन्दे ही रहेंगे। अलसी में प्रायः तेजी ही रहेगी, तेल आदि रस पदार्थोंमें भारी घट-बढ़ चलेगी। संक्षेपमें मासमें अशान्ति सी रहेगी, पर फिर भी मासका उत्तरार्ध अच्छा रहेगा। व्यापारियों को विशेष सावधानीसे कार्य करना चाहिये।

तृतीय मास (धनुःसंक्रान्ति)

ता० १५ दिसम्बर से १३ जनवरी तक

यह मास विशेष चमत्कारिक होगा। पूर्वीय देशोंमें इस मासमें विशेष कष्ट रहेगा। भारतकी राजधानी दिल्लीमें भी कुछ आश्चर्य जनक घटनाएं घटें। इस मासमें शत्रुओंका रहा सहा पराक्रम नष्ट हो जायगा। पश्चिमीय देशोंमें घोर अर्थसंघर्ष व आतङ्कके चिन्ह दीखने लगेंगे। लोगोंमें नास्तिकताकी वृद्धि होगी। गुरु मंगल संयोगसे किसी विशेष अधार्मिक कार्यका होना पाया जाता है। इस मासमें भारत

के लिये सम्भवतः कोई-न-कोई ऐसी बात आ पड़े जिससे काश्मीर और हैदराबादकी समस्याएं सुलझ जांय। धार्मिकताका ह्रास करने के प्रयत्नोंका प्रचार होगा। यदि सुरक्षापरिषद्में पाकिस्तान आदिका प्रश्न रहा तो शायद युद्धके बादल भी मंडराने लग जांय। पर अधिकांशमें ऐसी संभावना प्रतीत नहीं होती। तथापि नेताओंको दूरदर्शितासे काम लेना चाहिए। मेष धनुः राशिवालोंको यह मास प्रायः अनिष्ट ही रहेगा। सिंह तुला वालोंको साधारण तथा अन्योंको शुभ रहेगा।

व्यापार—

व्यापार इस मासमें डाँवाडोल रहेगा। अधिकांशमें चांदी तेज रहेगी। ता० २४ दिसम्बरसे प्रत्येक वस्तुमें तेजी होने लगेगी। सारांश यह है कि मासमें सोनेकी अपेक्षा चांदी विशेष तेजीसे निकलेगी। व्यापारी अच्छा लाभ उठा सकते हैं।

चांदी—

ता० १८ को मंदीका रिएक्शन आवेगा। फिर ता० २४ से २७ तक अच्छी तेजी रहेगी। ५ जनवरीके आस पास मन्दीके योग हैं। व्यापारियोंको आठ जनवरीके लगभग सौदा लेकर १० या ११ के अन्तिम समय तक सौदा साफ कर लेना चाहिये।

सोना—

सोना मासके प्रारंभमें तेज रहेगा। २० तारीख सायंकालसे तेजीके झोंके प्रारम्भ होंगे इसके बाद २८ दिसम्बर को साधारण मन्दीमें लेकर आठसे १२ जनवरीके बीच नफा कमा लेना चाहिये।

अन्य वस्तुएं—

मासके प्रारम्भमें प्रायः तेज ही होकर मन्दीकी ओर जावेंगी। बीचमें कई बार तेजी आवेगी, पर अन्तमें मन्दी ही रहेगी। मास जरा घट बढ़का है, बिना किसी अच्छे ज्योतिषीकी रायके बाजारमें न उतरें। हमारे बताये हुये भावों द्वारा लाभ उठाने वाले सज्जनोंसे हमारा अनुरोध है कि लाभमें से कृपया कमसे कम दशांश ज्योतिष विद्याके उद्धारके लिये संकल्प कर दें। विशेष विवेचन आगामी अंक में लिखा जायगा।

त्रैमासिक भविष्य

[ले० राजवैद्य श्री पं० भ्रमर दत्त जी मिश्र एल.एम.ए. कोमरशीयल एस्ट्रालोजर]

मव्यज्योतिषशास्त्रमें रुई (Cotton) का अधिपति शुक्र और वृष राशिको माना है, प्राचीन पद्धति वालों ने तुला राशि मानी है। दोनों प्रकारसे अधिकारी शुक्र ही आता है। यहां सर्व प्रथम (Nature of signs) देते हैं—यह लेख सायन सिद्धान्तकी गणनानुसार है। मेष, सिंह, धनुः, यह तीनों राशियां अग्नि (Fiery) तत्व वाली हैं। वृष, कन्या, मकर यह पृथ्वीतत्व वाली हैं, (Earthy)। तुला मिथुन, कुम्भ, यह वात तत्व वाली हैं, (Airy) कर्क, वृश्चिक, मीन, इनका जलतत्व है, (Watery)। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनुः, कुम्भ, ये छः विषम राशियां पुरुष राशियां हैं और कर्क, वृश्चिक, वृष, कन्या, मकर, मीन यह छः राशियां स्त्री संज्ञा वाली सम हैं।

राशियोंका गुण भेद— वृष, कर्क, वृश्चिक, मीन, धनुः, फलवती राशियां हैं। मेष, मिथुन, सिंह, मकर, ये अफलवती राशियां हैं। कन्या, तुला, कुम्भ ये मिश्र संज्ञा वाली राशियां हैं (Modrate signs) किन्तु इनमें मिथुन, और धन, दोनों दो देह वाली हैं याने इन्हें डबल बोडाइड (Double bodied signs) कहते हैं। अतः राशियोंमें किसी भी ग्रहका सक्रमण हो तब अप्रभावित रूप से मार्केट गिरा देते हैं। प्रथम पाठकों के लिए उदाहरण देकर समझाया जाता है, जिससे वे राशि-संज्ञाका उपयोग कर सकें। ऊपर आपको राशियोंकी संज्ञाके बारेमें बतलाया जा चुका है, उस आधार पर ही आपको समझाना है—

विषय सरल भी है और जटिल भी, किन्तु बुद्धि-बलसे काम लिया जाय तो क्लिष्टता कम होकर विषय समझमें आ सकता है। यथा – मेष, सिंह, धनुः, ये तीनों राशियां अग्नि तत्व वाली हैं। किन्तु मेष, सिंह, अफलवती राशियां हैं—, और धनुः फलवती है तथा दोदेहज (Double Bodied) भी, अतः ध्यानसे काम करना है। इस लिए जब कभी ग्रहों का संक्रमण (Transit) मेष, सिंह राशि पर होवे तब तब तेजीके व्यापारमें न पड़ें, क्योंकि ग्रहयोग मेष सिंह पर विशेष होने पर यह लम्बी मंदीकी तरफ बाजारको ले जाती हैं (Iong bearish line) इसी प्रकार सभी राशियों का प्रभाव जानें। किन्तु धन फलवती होने से बाजारको अपने गुण धर्मके अनुसार तेज करना चाहिए, किन्तु दो देहज (Double Bodied) होने से यह बाजारमें एक दम घटा-बढ़ी करती है और विशेषतया बाजारको गिराती है। (१) यदि विशेष ग्रहयोग फलवती राशियोंमें होता है तथा मिश्र राशियोंमें, तो उस समय राश्याधिकारके अनुसार अधिकृत वस्तुओं में तेजी आती है (२) यदि ग्रहयोग अफलवती राशियोंमें बनते हैं तब मंदी जानें। (३) जब दो देहज राशियों पर ग्रहयोग हों तब जानों कि बाजारमें विशेष घटाबढ़ी होगी या बाजार एकतरफा चलेगा। (४) यदि ग्रह फलवती राशीके साथ है और वह राशि यदि उसकी नीच राशि है उस दशामें उसका प्रभाव विपरीत होगा, तेजी के स्थानमें मंदी होगी। (५) रुईमें तेजी तब आती है जब सूर्य गुरु बुध वृष राशी पर आवें या वृष पर दृष्टि हो तब तेजी आती है। यदि शनि मङ्गल वृष पर आवें और दृष्टि हो तब रुई मंदी होती है (Traine aspect) दो फलवती राशियोंमें हो और शुभग्रहों द्वारा हो तब रुईमें तेजी आती है। पापग्रह जब वृष पर आते हैं और शुभग्रह दृष्टि सम्पादित हो तो रुई तेज होती है। शनि सायन सिंहसे सायन कन्यामें सितम्बर १६ को आता है, यह रुईकी तेजी करेगा, जब अपने नवांशमें आवेगा तब तेजी करेगा।

अक्टूबर १६४८ ग्रहयोग फल—

ता० ७ अक्टूबरको शुक्र कन्यामें प्रवेश करता है, मंदी लावेगा। ६ को बुध वृश्चिकमें वक्री होता है यह बाजारको टेढी रखेगा। मङ्गल १८ को धनुःमें जाता है यह खूब घटा बढ़ी करेगा। ३ को चन्द्र सूर्य युति है और चन्द्र नेपचून की युति भी है मंदी आवेगी, किन्तु चांदीमें ही मंदी आवेगी। गत मासकी तेजीका रुख यहाँ मन्दीमें बदलेगा। फिर ता० ४ को चन्द्र बुध युति है, यह मार्केटको लेबलसे बाहर नहीं जाने देगी। फिर ५ को चन्द्र मङ्गलकी युति वृश्चिक राशि में होगी। ता० ६ क सूर्य नेपचूनकी त.० ८ को शनि-चन्द्र की ५ से ८ तककी टोन तेजी की रहेगी और तेजी आवेगी। ता० १४ को चन्द्र शनिकी अपोजिट Apposite Aspect है यह मंदी लावेगी और उस दिन ही चन्द्र शुक्रकी भी अपोजिट हैं यह तेजी कारक हैं, किन्तु ता० १४ को मार्केट पड़ा ही रहेगा, कोई परिवर्तन नहीं होगा। ता० २० का सूर्य बुधकी युति है, यह तुलामें होती है, इनका रुख तेजी की तरफ चलेगा, लेकिन प्रभाव शायद ही होवे। फिर सूर्य २४ को वृश्चिकमें प्रवेश करता है, मित्र क्षेत्र है, वृश्चिक राशि फलवती है यह तेजी लावेगा। फिर २८। २६। ३० को क्रमसे चन्द्र शनि चन्द्र-शुक्र और चन्द्र नेपचून की युति और ३१ को बुध-चन्द्र युति है, अतः २८ से ३१ तक बाजारमें १०। १२ आने की तेजी-मन्दीका परिवर्तन हो, किन्तु ता० ३० को बुध मार्गी होता है यह प्रथम ३ दिन पूर्व मंदी लाकर तेजी लाता है। चाँदीमें घटाबढ़ी करेगा।

सारांश—ग्रहयोगसे सिद्ध हो जाता है कि यह मास प्रारम्भ और अंतमें मंदी पर चलेगा, बीचमें तेजीका चक्र चले।

नवम्बर १६४८ का ग्रहयोग फल

ता० १० को बुध वृश्चिकमें प्रवेश करता है, रुईमें तेजी आवेगी, किन्तु मासके प्रारम्भमें शुक्र तुलामें आता है, यह मन्दी करेगा और ता० १५ को गुरु मकरमें प्रवेश करता है यह रुईके बाजारमें परिवर्तन न होने देगा, भाव नारमल रहेगें। ता० १ को चन्द्र सूर्य युति है यह चांदीमें तेजी लावेगी प्रारम्भमें रुईका रुख भी तेजीकी ओर बढ़े, केवल वातावरण ही बनेगा और ता० ३ को चन्द्र मङ्गल युति धनुः में होती है, यह चांदीमें घटा बढ़ी करेगी, फिर १३ को चन्द्रनेपचून युत तुलामें होती यह रुईकी तेजी करेगी। ता० १५ को गुरु हर्शलकी अपोजीशन है, यह कर्क मकरमें होगी रुई और चांदी बाजारमें यहां विशेष परिव-

र्तन होगा। बाजार जिस ओर जाये उसे जब करके व्यापार करने वाले अवश्य लखपति होंगे। यह योग गत जनवरीमें आया था, फिर जूनमें आया, जूनमें इसके प्रभावसे चांदीमें ५।७ रु० एकदम टूटे थे, इसका प्रभाव १० से २० के बीचमें ही होगा। इस बार सम्भव है कि यह प्रथम तेजी पर दौड़े। फिर २६ को शुक्र हर्शलकी आपोजीशन है (Apposition) यह कर्क में होगी और मकरमें यह बाजारमें विशेष घटा बढ़ी करेगा, मगर बाजार एक तरफ ही होगा याने तेजी अच्छी आवेगी। कर्क राशि तेजी कारक है। पुनः ता० २७, २८, ३० इन दिनोंमें क्रमसे चन्द्रसे नेपच्चून शुक्र और बुध युति करते हैं, जिसके प्रभावसे बाजारमें विशेष मन्दी आवेगा, लेकिन २६ को शुक्र मकरमें प्रवेश करता है, यह मार्केटको स्टेडी रखेगा किन्तु फिर भी मन्दीका झोका आवेगा ही।

दिसम्बरके ग्रहयोग और उनका प्रभाव

ता० १ को मङ्गल गुरु युति, यह बाजारको बनाये रखेगा, किन्तु इस दिन सूर्य चन्द्र युति धनुमें होती है इस कारण मन्दी भी आवेगी। ता० २ को चन्द्र गुरु और चन्द्र मङ्गल युति मकरमें है, यह मन्दी करेगा। फिर ता० ७ को चन्द्र शनि आपोजिट हैं (Apposite) यह तेजी करेंगे। ता० ११ को चन्द्र नेपच्चून आपंजीशन (Aapposition) मेष तुलामें मन्दी आवेगी और ता० १३ को सूर्य बुध युति धनुमें है सो ता० १३ को विशेष मन्दी आवेगी। ता० १८ को फिर बुध हर्शल प्रतियोग है इसका फल भी मन्दी करेगा। बुध ता० १६ को मकरमें प्रवेश करता है। यहां पर पहिले बेचो फिर खरीदो। फिर ता० २० को सूर्य हर्शल प्रतियोग है यह मार्केटको बनाये रखेगा। ता० २१ को चन्द्र शनि युति है, तेजी करेगा। लेकिन ता० २१ को शुक्र धनुमें जाता है यह मन्दी करेगा। २२ को सूर्य मकरमें प्रवेश करता है और शनि वक्री होता है, यहां १।२ दिनमें रुईमें ४० टकेकी मन्दी आवेगी और महीनेके आखरी तक मन्दीका ही टोन चलेगी।

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[ले०:—श्री राधावल्लभ व्यास ज्योतिर्विद्]

कातिक मास

कृष्ण (वदी) पक्ष—

इस मासमें ५ मंगलवार हैं प्रजामें पीड़ा रहे, गुड़, शक्कर, तेज।

कार्तिक वदी ४ पूर्वमें बुध उदय दिन ८ में १५) से २०) तक रुईमें तेजी करेगा।

„ „ ५ स्वातिका सूर्य—यह रुईका नक्षत्र है सो रुईमें तेजी।

„ „ ८ कन्या शुक्र—२० दिनमें वर्षा विषम, घास चावल, तेज, चांदीमें २) ३) की घटाबढ़ी,

„ „ मार्गी बुध रुईमें ५) ७) मंदी करेगा।

„ „ १२ ज्येष्ठाका मंगल—दिन ५ में रुईमें ५) १०) की घटाबढ़ी।

„ „ १४ मोठ, बाजरा तेज।

„ „ ३० दीपमालिका रुईमें १०) से १५) तक घटाबढ़ी दिन ८ में मंदी होगी।

शुक्ल (सुदी) पक्ष—

सुदी १ हस्त का शुक्र—धान्य मंदा रुई में अग्नि लगने का भय, गुड़, शक्कर तेज।

„ ३ तुला का बुध धान्य, रुई, अफीम, तेज।

„ ४ विशाखा का सूर्य दिन १५ में चने तेज, रुई तेज।

„ ६ स्वाति का बुध अन्न तेज।

„ १३ चित्रा का शुक्र सामान्य फल।

सुदी १५—धनु—का मंगल—दिन ४० में प.प. लामूल, मूंगफली, सिंघाड़े, घास, लकड़ी,

पहिले मंदा फिर तेज, रुईमें घटाबढ़ी, चांदी तेज ।

मार्गशीर्ष मास

कृष्ण (वदी) पक्ष

इस मासमें ५ बुधवार हैं (बुधाः पंच रसत्रयः) गुड़, खांड, शक्कर तेज—प्रजामें सुख शान्ति ।

वदी ३—अनुराधा का सूर्य—दिन १५ में मूंग मोठ, ज्वार, बाजरा चावल तेज ।

,, ४—विशाखा का बुध—रोग व उपद्रव ।

,, ५—मूला के चार चरण पर गुरु—धान्य मंदा रुई ५) ७) तेज ।

,, ७—तुला का शुक्र—दिन तीसमें रुई, चांदी, अफीम में घटाबढ़ी । रुईमें १०) २०) चांदीमें २) से ४) अफीममें २००) से ३००) तक का फेरफार ।

,, ९—स्वाति का शुक्र—दिन ३में रुई १०) से १५) तेज ।

,, १०—वृश्चिक का बुध—दिन २५ में घी तेल तेज, धान्य मंदा, रुईमें घटाबढ़ी अधिक ।

,, १३—अनुराधा का बुध—सामान्य फल ।

,, १४—अश्विनी के तीसरे चरण पर राहु—चना चावल, रुई, सूत, तेज ।

,, १५—गुड़, शक्कर, रुई, तेज ।

शुक्ल (सुदी) पक्ष—

सुदी १—चांदी में घटाबढ़ी ।

,, २—ज्येष्ठा का सूर्य—दिन १५ में चांदी, सोना, धान्य, चावल, सरसों, अलसी, सणा तेज ।

,, ६—ज्येष्ठा का बुध—गुड़ शक्कर तेज ।

,, १२—धनु का बुध—दिन १२ में अफीम मंदी रुई, सूत, घी, खांड, तेज ।

,, १३—वृश्चिक का सूर्य—रुई चांदी, अफीम शक्कर पहिले मंदा होकर तेज ।

,, १४—धनु की संक्रांति—पहिला हिस्सा तेज आखिरी मंदा ।

पौष मास

कृष्ण (वदी) पक्ष—

इस मासमें ५ शुक्रवार हैं । एक बार सब वस्तु मंहगी चांदी मंदी होकर तेज ।

सुदी १—शनि वक्री—धान्य, वस्त्र, तिल, तेल, रस, तेज ।

,, ३—अस्त गुरु—दिन ८ पीछे अफीम १००) रुई १५) से २०) घटाबढ़ी होकर मंदा ।

,, ६—उत्तराषाढ़ा का मंगल—सामान्य फल ।

,, १०—मकर का मंगल—रुई, कपास, तेज ।

,, १२—ज्येष्ठा का शुक्र—रोग उपद्रव अधिक ।

,, १४—उत्तराषाढ़ा का बुध—जरदा, तम्बाखू मंदा ।

शुक्ल (सुदी) पक्ष

सुदी २—१४दिनमें आलू, मजीठ, लालरंग, खार, तिल, अलसी, तेल, सरसों, घी, गुड़ तेज । रुई ५) से ७) घटाबढ़ी होकर तेज, अफीम तेज ।

,, ५—अस्त मंगल—दिन ८ में रुई में १५) से २०) तक घटाबढ़ी होकर मंदी ।

,, ६—चणा का भाव तेज ।

,, ८—रुई में घटाबढ़ी अधिक ।

,, ११—उत्तराषाढ़ा का सूर्य दिन १५ में मूंग चावल, पाट, रेशम, कुष्टा, सूत, गुड़, खांड चांवल, लाख, घास, हल्दी, पीपलामूल तेज ।

,, १५—उदय गुरु—दिन ८ में रुई ८) से १०) तेज ।

त्रैमासिक व्यापारिक तेजी मन्दी

[ले०—श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद्]

कार्तिक मास

ता० १५ अक्टूबर शुक्र चांदी गुड़ मन्दा।

ता० १६ अक्टूबर शनि घटा-बढ़ी।

ता० १८ अक्टूबर सोम चांदी मन्दी, गुड़ सरसों तेज।

ता० १६ अक्टूबर मं० मन्दीके साथ तेजी।

ता० २० अक्टूबर बुध चांदी तेज सायंकाल।

ता० २१ अक्टूबर बृह०—चांदी तेज

ता० २२ अक्टूबर शुक्र चांदी तेज हो के मन्दी, सरसों तेज

ता० २३ शनि रातको चांदी गुड़ तेज।

ता० २५ सोम० चांदी ३) ४) तेज, गुड़ मन्दा

ता० २६ मं० – चांदी मन्दी

ता० २७ " बुध घटाबढ़ी से मंदी

ता० ३० " शनि० चांदी १॥) २) तेज, सरसों तेज

ता० १ नवम्बर सोम० चांदी १॥) तेज, मन्दीका झटका

ता० ३ नं०—बुध–चांदी २) ३) गुड़ ।) ।=) मंदा सरसों तेज

ता० ४ नं० बृह० रातको चांदी सरसों मन्दी, गुड़ साधारण तेज

ता० ५ नं० शु० चांदी मन्दी

ता० ६ नं० शनि० चांदी तेज

ता० ९ नं० मं० चांदी तेज

ता० १० नं० बुध चांदी तेज

ता० १५ नं० सोम० चांदी तेज

ता० १६ नं० मं० चांदी २) ३) तेज

सारांश—

ता० १८ अक्टूबर तक मन्दीमें खरीद करें

ता० २५ अक्टूबर चांदीमें अच्छी तेजी जंचती है। बीचमें मन्दीके झटके आते रहेंगे।

मगसिर मास

ता० १७ नं० बुध० चांदी मन्दी

ता० १८ नं० बृह० चांदी तेज

ता० १६ नवम्बर शु० चांदी कुछ १) २) मंदी फिर १) तेज, फिर २) मन्दी, सोना २) तेज, गुड़ तेज

ता० २० नवम्बर शनि० चांदी मन्दी

ता० २२ नवम्बर सोम० चांदी तेज

ता० २३ नवम्बर मं० चांदी तेज

ता० २४ नवम्बर बुध० कुछ मन्दी हो के तेज

ता० २५ नवम्बर बृह० चांदी गुड़ मन्दे होके तेज

ता० २६ नवम्बर शु० चांदी तेज

ता० २७ नवम्बर शनि० चांदी तेज

ता० २९ नवम्बर सोम० चांदी तेज सायं

ता० ३० नवम्बर मं० चांदी तेज

ता० १ दिसम्बर बुध० चांदी तेज होके मन्दी, गुड़ तेज

ता० २ दिसम्बर बृह० गुड़ तेज, चांदी तेज होके मन्दी

ता० ३ दि० शु० चांदी तेज

ता० ६ दि० सोम० तेज होके मन्दी

ता० ७ दि० मं० चांदी मन्दी

ता० ८ दि० बुध० मन्दी होके तेज

ता० ९ दि० बृह० चांदी मन्दी

ता० १३ दि० सोम० १० बजे रात चांदी २) ३) मन्दी

ता० १४ दि० मं० कुछ मन्दी होके तेज

ता० १५दि० बु० चांदी तेज

ता० १६ दि० बु० चांदी मन्दी

सारांश—

इस मासमें चांदी ता० १७ से २० नवम्बर तक मन्दी रहेगी, फिर ता० ३ या ६ दिसम्बर तक अच्छी तेजी रहकर बाद ता० १६ दिसम्बर तक मंदी रहेगी।

तीन मासका पाक्षिक फलादेश

('श्रीविश्वविजय--पञ्चाङ्ग' से)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

(ता० १९ अक्तूबर से १ नवम्बर तक)

इस पक्षमें ति० १।२ को रुईमें तेजीके योग हैं। ति. ३ से रुईमें अकल्पित मन्दी आयगी, यह मन्दी ति० १२ तक रह सकती है। यह पक्ष विशेष मन्दी कारक है, १५) २०) की मन्दी आना सम्भव है। चांदी का बाजार ति० ३ तक तेजी का रहकर बाद १० तक मन्दी की ओर चलेगा। ति० ११।१२ को बजार कुछ तेज होकर पुनः मन्दी आयगी। सोनेके भाव इस पक्षमें प्रायः तेजीमें ही स्थिर रहेंगे। ति० ८ से १२ तक कुछ मन्दी के योग बनते हैं। अलसी, मूंग, मोठ, उड़द, मसूर, जीरा, राई, मेथी, कुलथी, मिर्च, हल्दी, और लहसुन का भाव मन्दा हो। अफीम तेज। सरसों, तेरिया, रत्न, यह पदार्थ ति० ४ से मन्दे होंने के योग हैं। इस पक्ष में व्यापार परिस्थिति व्यापारियों के लिये नेष्ट है। रविवार की दीपमाला, मेष-लग्न में मंगल राहुके षडष्टक के होने से संसार में अशान्ति कारक है। भारत के पश्चिमोत्तरीय देशों में भी कुछ उत्पात और जन धन विनाश होगा। पश्चिमी और पूर्वीय प्रदेशों में कुछ बूंदाबांदी होगी। मध्य भारत में कुछ वर्षा होगी। उत्तरीय विभाग में वा राजपूताना में भी कहीं २ साधारण वर्षा होने के योग हैं।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

(ता० २ नवम्बर से १६ नवम्बर तक)

ति० ४ तक रुईमें मन्दी रहकर बाद तेजी के योग हैं। ति० ९ से ३ दिन मन्दी रहेगी और १३ से तेजी चलने के योग हैं। चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। ति० ६ तक तेज, बाद ति० ९ तक मन्दी रहकर ति० १३ तक घटाबढ़ी होगी, रुख मन्दी की जान पड़ती है। ति० १४ तथा १५ को बाजार तेजीमें बन्द होगा। सोने का बाजार इस पक्ष में प्रायः तेजी की ओर चलेगा। बीच बीच में मन्दी के रिएक्शन भी आयेंगे। ति० १३ से ३ दिन मन्दी के जान पड़ते हैं। अलसी का भाव इस पक्ष में नीचा जाएगा। मादक पदार्थ बहुत तेज होंगे। गेहूँ, चना, चावल, घृत, तिल, तेल, नमक, मिर्च तेज रहेंगे। हल्दी, मूंग, मोठ, बाजरा ज्वार, मसूर, उड़द, सरसों, सुपारी, गुड़, शक्कर, मन्दे। व्यापारियों को यह पक्ष विशेष लाभदायक सिद्ध न होगा। भूमि की उपु-

---

पौष मास

ता० १७ दि० शु० चांदी कुछ मन्दी।

ता० १८ दि० शनि० चादी तेज होके मन्दी, गुड़मंदा।

ता० २० दि० सोम० चांदी तेज।

ता० २१ दि० मं० चांदी तेज होके मन्दी, गुड़ मंदा।

ता० २३ दि० बृह० चांदी गुड़ मन्दे होकर कुछ तेज।

ता० २४ दि० शु० चांदी तेज।

ता० २५ दि० शनि० चांदी, गुड़, सरसों तेज।

ता० २७ दि० सोम० चांदी मंदी।

ता० २८ दि० मं० चांदी गुड़ मंदे होके तेज।

ता० २९ दि० बुध० मंदीके साथ कुछ तेजी।

ता० ३० दि० बृह० चांदी मंदी।

ता० ३१ दि० शु० चांदी तेज होके मंदी।

ता० १ जनवरी शनि० चांदी २) ३) तेज।

ता० ३ जन० सोम० मन्दीके साथ तेजी।

ता० ४ ज० मं० ८ दिनमें १) २) तेज।

ता० ५ जन० बु० चांदी मंदी, गुड़ सरसों तेज।

ता० ६ जन० गुरु चांदी मंदी।

ता० ७ जन० शु० तेज होके मदी, सरसों तेज।

ता० ८ जन० शनि० चांदी मंदी।

सारांश—

इस मास चांदीमें ता० २० दिसम्बरसे ता० २५ दिसम्बर तक तेजी रहेगी, फिर ता० २७ या ३१ दिसम्बर से ता० ८ जनवरी तक मदी रहेगा।

जीविका वालों को एवं कण्ट्रैक्टर, इंजीनियर, कारखानेदारों को यह पक्ष श्रेष्ठ और लाभदायक सिद्ध होगा। भारत में राजनैतिक सैनिक हलचल अधिक दिखाई देगी, कुछ जटिल समस्याएं सामने आयेंगी।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

(ता० ७ नवम्बर से ३० नवम्बर तक)

इस पक्षमें रुई का भाव ति० १ से ५ तक तेज, ति० ६ से १० पर्यन्त घटबढ़ से रुख मन्दी की। ति० ११ से ५ दिन रुई के भावों में तेजी आने के योग हैं। चांदी का भाव इस पक्ष के पूर्वार्द्ध में मन्दा रहकर उत्तरार्द्धमें तेज होवे, सोने के भाव में घटबढ़ अधिक होगी, तथा ति० ५ से ति० १० तक ४) ५) का हेर फेर होगा। रुख तेजी की रहे। ति० ११ से ३) ४) मंदी होकर ४) ५) टके सुधरने का योग है। धान्य भाव इस पक्षमें तेजी की धोरण रखते हुए चलेगा, जौ, चणा, गेहूं, चावल, मसूर, ति० ८ तक तेज रहकर बाद मन्दे होवे। तोरिया, मिर्च, हल्दी, मोठ, ज्वार, बाजरा, एरण्डिया, अलसी, जीरा, नमक, आदि पदार्थ मन्दे होवें। यह मन्दी ति० ११ तक रहे बाद तेजी होगी। तृण काष्ठ कोयला तेज। शेयर भाव तेज रहेगा। मशीन, कारखानों, तथा मिलों वा वर्कशाप रेल्वे आदि में स्फोट होकर हानि की सम्भावना है। मजदूरों में अशान्ति बढ़ेगी, किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु वा दुर्घटना होना सम्भव है।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

(ता० १ दिसम्बर से १६ दिसम्बर तक)

इस पक्ष में रुई के भाव ति० १ से ५ तक घटाबढ़ी के रहेंगे। ति० ६ से ८ तक कुछ भाव तेज होकर ६ से मन्दी के योग बनते हैं। यह मन्दी ति० १२ तक रहकर १३ से घटबढ़ अधिक, तथा बाजार अस्थिर रहेगा। अतः इस समय व्यापार बड़ी सावधानीसे करें चांदीके भाव इस पक्षके पूर्वार्द्ध में तेज हो कर ति० १२ से मन्दीके योग हैं। १२ से चान्दीमें घटाबढ़ी प्रारम्भ होगी, रुख मन्दी की जावें। सुवर्णके भावमें बड़ी क्रांति होगी, मन्दीमें ४) ५) तेजीमें ५) १०) की घटांबढ़ी होकर बाजार अस्थिर रहेगा। गुड़, शक्कर, धान्य, घृत मन्दे होंगे। शेयर बाजार इस पक्षमें अधिक आन्दोलनकी स्थिति में रहेगा, रुख मन्दीका जानें। लोह, स्टील, आदि धातु मन्दीकी ओर जाता दिखाई देगा। भारतको यह पक्ष नेष्ट जान पड़ता है। पश्चिमी विभाग (बम्बई सिन्ध आदि) में आर्थिक कठिनाइयां अधिक होंगी। भारत-सरकारको नई आयोजनामें अधिक खर्च उठाना पड़ेगा। इस पक्षमें वायु अधिक चले। तथा पश्चिम दक्षिण और मध्यभारतमें बादली हवा चले जिससे कहीं कहीं खेतियोंकी हानि होवे। पूर्वीय विभागमें यह पक्ष अनिष्ट कारक दिखाईदेता है। कहीं-कहीं वायुयान, जलयान दुर्घटनाएँ होंगी।

पौष कृष्ण पक्ष

(ता० १७ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक।

इस पक्षमें रुईके भावमें बड़ी क्रान्ति होगी। गुरुका अस्त एवं बु० गु० युति तथा अन्य कई योगोंसे रुईमें अकल्पित मन्दी आयगी। अतः व्यापारी तेजीकी ओर न पड़ें। ति० १ से ३ तक थोड़ी घटाबढ़ी होकर ति० ४ से ही प्रायः मन्दीके योग बनते हैं। यह मन्दी ति० ११ तक रहेगी। १५) २०) या इससे भी अधिक भाव टूट जाना सम्भव है। ति० १२ से दुतर्फी बाजार चलेगा। चान्दीके लिये यह पक्ष मन्दीका जायगा। सुवर्णमें भी काफी मन्दीका योग है। यह मन्दी ति० ६ तक रहेगी बाद बाजार कुछ ऊँचा जावे। धान्य, गेहूं, मूंग, मोठ, मसूर, घृत, गुड़, शक्कर, मन्दे होवें। हल्दी, जीरा, सुपारी, मेवा, तोरिया, मिर्च इस पक्षमें ति० ५ से मन्दे होवें। अलसी, अफीम, लोहा, तिल, तेल, जस्त, सीसा, तांबा, एल्युमीनियम तेज होनेके योग हैं। मिल मालिकों तथा मशीनोंसे जीविका चलाने वालोंको यह पक्ष श्रेष्ठ जायगा। बृटिश शासित प्रदेशोंमें यह पक्ष अनिष्ट सूचक है। रशियन शासित प्रदेशोंके लिये पक्ष श्रेष्ठ जान पड़ता है। अमेरिकामें आन्तरिक कलह होगा। दक्षिण, पूर्व, मध्य-प्रांत और पश्चिमी प्रदेशोंमें बादल युक्त वायु चले और कहीं-कहीं वर्षा भी होवे। पञ्जाब राजपूतानामें ति० ६ से १० तक बादल व बूंदाबांदी होगी।

रुई चांदी सोना गुड़ खाण्डकी अनुभूत रिपोर्ट

[ले०—ज्यो० भू० दै० र० श्री पं० गिरिधारीलाल जी शर्मा दैवज्ञ]

(१) प्रथम राय:—

आश्विन शुक्ला १० मङ्गलवार ता० १२ से १८ अक्टूबर १९४८ तक संसारमें प्राणिमात्रके लिये अशुभ समय है। सोना, गुड़, खांड कुछ तेजीमें रहेगा। रुई, चांदी तेज होगी भी तो ठहरेगी नहीं। ता० १२-१६ को रुई अवश्य तेज। ता० १८ को सब वस्तु तेज। ता० १६-१८ को फीचर अवश्य तेज। अङ्कोंमें-१-५-० का पूर्णयोग है।

(२) दूसरी राय:—

ता० १६ से २५ अक्टूबर तक प्रत्येक वस्तु अधिक मन्दीकी ओर रहेगी। रुई-चान्दी-अवश्य मन्दी। ता० २०। २१। २२। २३ में घट बढ़ होगी। प्रायः यह दिन बेचनेके हैं। ता० २०-२१ निश्चय मन्दी, ता० २५ को एकतरफी तेजी होगी। रुई, चांदी, में सांयकाल या रात्रिमें मन्दी। यहां गुड़ खाँड साधारण तेजीमें, मन्दा नहीं रहेगा।

(३) तीसरी राय:—

ता० २६ अक्टूबरसे १ नवम्बर तक सोना चान्दी तेज। गुड़, खाण्ड, रुईमें मन्दी। रुई निश्चित मन्दी। ता० २६-३० और १ नवम्बरको रुई अवश्य मन्दी। ता० २७। २८ चान्दी तेज, २६। ३० मन्दी। यदि २७। २८ मन्दी रहजाय तो २६। ३० मन्दी नहीं होगी। यहांसे भविष्यके लिये समय बहुत नाजुक आता है।

(४) चौथी राय:—

ता० २ से ७ नवम्बर तक प्रत्येक वस्तुमें तेजीका वातावरण रहेगा। परन्तु ता० २। ३ को चान्दी, गुड़, खाण्ड मन्दा रहेगा। ता० ४ से प्रत्येक वस्तुमें तेजीका ध्यान है। परन्तु रात्रिमें बन्द बाजार तेजीमें रहे तो निश्चय तेजी समझना, उस वस्तुमें घटबढ़से नहीं घबराना घटेभाव खरीदते जाओ। निश्चय लाभ होगा। यहाँ पर उत्पातोंका जोर रहेगा।

(५) पांचवीं राय:—

ता० १० से १६ नवम्बर तक साधारण भाव रहेगा। गुड़में कुछ तेजी रहेगी। ता० १५-१६ को प्रत्येक व्यापारमें हलचल पैदा हो जायगी, घटबढ़की तारीख १५ को मन्दा १६ को तेजी या १६ को मन्दा १५ को तेजी। ऐसा ध्यान पक्का है। इन दोनों तारीखोंमें कई एक वस्तु तेज कई एक मन्दी होंगी। मन्दी होगी वह ता० १५ को होगी। तेजी होगी वह १६ को होगी।

(६) छठी राय:—

ता० १७ से २४ नवम्बर तक बढ़े भाव या घटे भाव बेचना अच्छा है। मन्दीका रूप अधिक है, तेजी हो वहां बेचना अच्छा है। ता० १७ को गुड़ और रुई चान्दीमें

पौष शुक्ल पक्ष

(ता० ३१ दिसम्बर से १४ जनवरी १९४९ तक)

इस पक्षमें रुईमें ति० १ से ४ तक तेजी रहेगी। बाद ३ दिनमें मन्दी होकर घटाबढ़ी अधिक होगी। रुख तेजीकी जान पड़ती है। यह घटाबढ़ी ति० ९ तक रहेगी, ति० १० से मन्दीके योग हैं। चांदीके भाव ति० १ से १० तक तेज रहेंगे, बाद मन्दी होगी। सोनेके भावोंमें यह पक्ष अधिक घाटबढ़ीका जायगा। ति० १ से ६ तक रुख तेजीकी रहे, । बाद मन्दीके योग हैं। धान्य गेहूँका भाव इस पक्षमें प्रायः तेजीका जान पड़ता है। चावल, चवला, मूंग, मोठ, बाजरा, मसूर ति० ५ से सस्ता होवे। उड़द, लोह, स्टील, एरण्डिया, तिल, तेल, आदि पदार्थ तेज। ति० ८ से घृत मन्दा। यह स्मरण रहे कि यह पक्ष विशेषतया रुई चान्दी सोनेके लिये मन्दी कारक आया है, फिर भी आगे इन तीनोंमें बड़ी क्रांति होगी और तेजी भी अकल्पित आयगी। इस समयसे आगे आर्य अनार्योंमें संघर्ष उत्पात और सीमा प्रान्तोंमें युद्धोत्पादिक आरम्भ होगा। पाकिस्तानमें जन धन विनाश अधिक होगा।

तेजी। ता० १८। १६ को विशेष घटबढ़का सामना करना पड़ेगा। ता० २३ को घटबढ़से मन्दी। ता० २३-२४ सोने और चान्दीमें विशेष परिवर्तन होगा।

(७) सातवीं राय:—

ता० २५ से ३० नवम्बर तक गुड़ सोना चांदी में घटबढ़ से तेजी, रुईमें दुतर्फा लगावें। खांडमें २०) ३०) रुपियों की घटबढ़ होगी। ता० २६।२७ को दोतर्फा लगाओ निश्चित लाभ होगा। ता० २६ को चान्दी में निश्चित तेजी। ता० ३० को गुड़ खांड में अवश्य तेजी।

नोट:—ता० २४ के ४ बजे से ता० २६ के ४ बजे तक ३) ४) की अवश्य तेजी।

(८) आठवीं राय:----

ता० १ से ७ दिसम्बर तक चांदी में २) ३) तेजी रुई में यहां पर मन्दी। ता० २ को सायंकाल बन्द बाजार तेजमें होगा। यदि तेजीमें बन्द हो तो ता० ५ तक तेजी। रुई मन्दी। सोना चांदी गुड़ तेज। ता० ६ को जो वस्तु मन्दी हो वो वस्तु ता० १६ तक मन्दी। जो तेज हो वह तेज। हमारा ध्यान चांदीमें तेजी, रुईमें मन्दी का है। ता० ७ को घटबढ़ अधिक और संसारमें उत्पात होगा।

(९) नौवीं राय----

ता० ८ से १६ दिसम्बर तक प्रत्येक वस्तुमें घटबढ़ अधिक होगी। ता० १३ तक रुई मन्दी, चांदी तेज। गुड़ खांड भी मंदी। ता० १४ से विशेष मंदी, चांदी साधारण घटबढ़में। ता० ८।९।१० इन दिनोंमें प्रत्येक वस्तुमें अच्छी मंदी होगी। ता० ९के सायंकाल जो बाजार तेज रहे वह ता० ११ तक तेजी, मंदी रहनेसे मंदी। हमारा ध्यान मन्दा। ता० १५--१६ एक दिन प्रत्येक वस्तु ही विशेष मंदी।

(१०) दशवीं राय:—

ता० १७ दिसम्बर से २२ तक रुई में घटबढ़ चलेगी खाण्डमें १५) २०) की दैनिक घटबढ़ होगी। चांदीमें ५) से ले के ७) की तेजी होगी, ता० २० या २१ में सोना चांदी गुड़ अधिक तेज होगा। यहां पर आयरन शेयरोंमें १००,५०) की तेजी होगी। अचूक चांस है। ता० १७-को घटबढ़ अच्छी होगी, दोतरफा लगावें। यहां पर वस्त्र की बहुत तेजी और प्रजामें पीड़ा की सम्भावना पूर्ण रहेगी।

(११) ग्यारहवीं राय:---

ता० २३ से ३० दिसम्बर तक रुई चांदी अवश्य तेज। रुई पहले तेज होके अमावस्या के आस पास मंदी होगी। ता० २४ को अच्छी घटबढ़ और तेजी। ता० २७ को चांदी सोना अच्छा तेज। ता० २८ को रुई गुड़ अच्छा तेज। ता० २९—३० घटबढ़ से मंदी, किराणे की वस्तु अधिक तेज। ता० ३१ को मंदी।

(१२) बारहवीं राय----

ता० १ जनवरी से ७ जनवरी तक रुई घटबढ़ से मंदी रहेगी। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड तेज होगा। ता० ४ को रुई चांदी विशेष मंदी होगी। ता० ५ को रुई मन्दी, चांदी सोना गुड़ तेज। ता० ४ से अचानक और अचूक गुड़में अच्छी तेजी। ता० ८।९ रुईमें तेजी इन १० दिनों में वर्षा बिजली और उत्पात जगत्में होते रहेंगे।

व्यापारिक तेजी-मन्दी और ज्योतिष

[लेखकः—श्री प्रोफेसर बी० सी० महता एम. आर. ए. एस.]

गत "ग्रीष्माङ्क" में मैंने अपने लेखमें पाठकोंसे अनुरोध किया था कि—"ता० २५ जुलाई ४८ से शनि महाराज सिंहमें प्रवेश कर रहे हैं सो एकबार अच्छी मन्दी रुई में आए बिना नहीं रहेगी। रुईके साथ २ इसका प्रभाव सोना, चांदी, व शेयरोंमें भी मन्दीका होगा।" पाठकोंने इस बातका अनुभव किया होगा कि उक्त तारीखसे रुई, सोना, चांदी, शेयर इत्यादि में मन्दीके कैसे झटके आए और पहले से कितना लेबल भावोंका गिरा।

अक्टूबर मास १९४८

अब अक्टूबर मासमें ग्रहोंका खास परिवर्तन होरहा है। ता० ८ को धनुराशिमें बृहस्पति प्रवेश कर रहा है यह योग चांदी, सोना, रुई आदिमें विशेष घटाबढ़ीका सूचक है और जनरल तेजीकी टोन बतलाता है।

अंग्रेजी सिद्धान्तसे शनिग्रह इस मासमें रुईकी जन्मकुण्डलीमें उसके "उपज" के स्थानको बेधता है जिससे सर्वत्र रुईकी उपज कम होती है तथा उसमें किसी न किसी प्रकारकी तेजी ही आती है, इस लिये इस मासमें अब मन्दी का ध्यान नहीं रख कर तेजीका ही ध्यान रखना चाहिये। बीच २ में मन्दीके चान्स आवेंगे जिसमें तेजीका व्यापार करना परम उपयोगी सिद्ध होगा। इस मासमें सोना चांदी में एक मन्दीका चान्स आवेगा, उस मन्दीमें तेजीका रोजगार करने वालोंको अच्छा लाभ होनेकी सम्भावना है। अक्टूबर में विशेष वटाबढ़ी की तारीखें इस प्रकार हैंः—

तेजीकी तारीखेंः—३। ५। ७।८। १०। १४। १५ १७। १८। २०। २३। २६। २७। ३०।

मन्दीकी तारीखेंः— १। २। ४। ६। ८। ११ २२। २५। २९।

नवम्बर मास १९४८

नवम्बरके प्रारम्भमें ही सारे बाजारोंमें मन्दी आवेगी। जो ता० ५ तक रह कर ता० ६ से १५ तक रुई, चांदी, सोने, और शेयरमें अच्छी तेजीका रिएक्शन आ सकता है।

ता० १५ से योग तेजीके समाप्त होते हैं और मन्दीके प्रारम्भ होते हैं। इस लिए इस तारीख तक तेजीसे निकल कर मन्दीमें आ जाना चाहिये। एक सप्ताह तक प्रत्येक वस्तुमें मन्दी चलेगी खास तौरसे रुई चांदी सोना और शेयरमें। बादमें थोड़ी तेजी आवेगी लेकिन तेजी होकर भी बाजार नीचे लेबल पर आता जावेगा।

दिसम्बर मास १९४८

दिसम्बरके प्रारम्भमें मङ्गल बृहस्पति युति हुई है, यह शेयरमें तथा चांदी सोनेमें तेजीकी द्योतक है। रुईमें विशेष तेजी नहीं आवेगी। हाँ चांदी सोनेमें झड़पी तेजी आ सकती है। ता० १२ के बाद रुईमें भी तेजी आवेगी। ता० १३ से २० तक बाजार इकतरफा चलेगा और उसके बाद फिर बाजार बढ़ेगा। अतः मन्दीमें खरीद कर तेजीमें बेचने वाले को अधिक लाभ होगा। जनरल रुख चांदी सोने और शेयरके लिए इस मासमें तेजी ही समझनी चाहिए।

—

ज्योतिष का चमत्कार

जन्म पत्रमें जिस स्थानमें मीन और धनुः राशि हैं—उस भावसे सम्बन्धित जितने भी पदार्थ हैं वे सब नेष्ट हैं। यदि उसका स्वामी बृहस्पति देखता है तो अनिष्ट नहीं है। और जन्म पत्रमें जिस स्थानमें मकर और कुम्भ राशियाँ हैं उस भावसे सम्बन्धित जितने भी पदार्थ हैं वे सब वृद्धि करने वाले हैं। यदि शनि देखता है तो वृद्धि नहीं करेगा, अचूक योग है परीक्षा करें।

—गिरिधारीलाल शर्मा दैवज्ञ

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श

प्रत्येक वस्तुकी अर्धसाप्ताहिक तेजी मन्दी

[लेखक—श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञभूषण]

तुलासंक्रान्ति (सौर कार्तिक मास)

(ता० १७ अक्टूबरसे १५ नवम्बर तक)

दीपावलीके निकटतप किसी ग्रहका नीच कक्षामें चलना, किसीका उच्चमें घूमना और किसी-किसी ग्रहका अपने ही घरमें गश्त लगाते रहना विशेष कारणोंके सूचक हैं। । ध्यान रहे राजा और कूटनीतिज्ञ अपनी नीचता पर तुले हुए हैं। सेनापति और विशिष्टमन्त्री अपनी सत्ताका भरपूर उपयोग करनेमें जुटे हुए हैं। यह सब मसाला राजविग्रहको उत्तेजना देने वाला है। जन समुदायमें परस्पर गुटबन्दियाँ चलाते अपनी २ खींचा-तानी करते रहेंगे। वस्तु-सम्पर्कमें सोना, रूई, चान्दी, अलसी एरण्डा, मूंगफली हेसियन आदि वस्तुओंमें अधिकसे अधिक सस्ताई आना पाया जाता है। नितान्तमें बड़ी मन्दीका श्रीगणेश बैठा है। उपरोक्त वस्तुओंके एशोशिएशन नियमानुसार जो वायदे चल रहे हैं, ड्यू डेट की मन्दी लगाते गलयें लगानेमें न चूकेंगे।

ध्यानमें रखने योग्य मासिक व्यापार व्यवस्था

(१) ता० १८ सोमवार सोना चांदीका बदला आसौजी पूर्णिमाका है।
(२) ता० २२ शुक्रवार रुईकी क्लीयरिंग छपने और शेयरके बदलेका दिन है।
(३) ता० २६ शुक्रवार शेयरका बदला होनेमें और रुईकी क्लीयरिंग छपनेमें अन्देशा है।
(४) ता० ३० शनि० सोना चान्दीकी तेजी मन्दी सही पड़नेके साथ-साथ एरण्डा, मूंगफली और अलसीकी तेजी मन्दी भी सही पड़े।
(५) ता० ५ शुक्र० रुईकी क्लीयरिङ्ग छपते शेयरके बदले का दिन है।
(६) ता० १२ शुक्र० शेयरका बदला होते रुईकी क्लीयरिंग छपेगी।
(७) ता० १३ शनि० कार्ति० शु० १५ सोना, चान्दीकी तेजी मन्दी सही पड़े।
(८) ता० १५ सोम० एरण्डा मूंगफली और अलसीकी क्लीयरिङ्गका दिन है।

वायदा व्यापार :—ऊपर लिख आये हैं कि महीना भरपूर मन्दी का है। प्रत्येक वस्तुकी वास्तविकताको समझते हुए व्यापारका टोन बांध लीजिये।

ता० १७ अक्टूबर प्रातः ६ बजेसे ३½ दिनमें—

बहुत दिनोंसे छः खिलाड़ी खेलमें जुटे हैं। इन छः में चार सदस्य मँहगाईको मना रहे हैं। और २ सप्लाई की गरजमें हैं। अनुसन्धान अच्छी तेजीका लगाया जाता है। बहुत दिनोंसे व्यापारमें घटबढ़का समय आया है। अतएव घटे भाव खरीद करें। बढ़े भाव डबल वेचें। फिर दुगना खरीद फरोख्त कर, बार बार मनोरथको व्यापारान्वित करें। यदि आप भूल न करेंगे तो अवश्य लक्ष्मी मिलेगी।

ता० २० अक्टूबर दिनके २ बजे से ३½ दिनमें—

जब २ ऐसा संयोग आता है तब-तब रुईके भावमें अक्सर मन्दी आया करती है। प्रत्येक वस्तुको घटे भावमें खरीद करें। थोड़े या अधिक मुनाफेके साथ वेचनेमें देरी न करें, आशा है संकेतका उपयोग समझदारीसे करेंगे।

ता० २३ अक्टूबर रात ११ बजेसे ३½ दिनमें—

अपने घरमें पूर्वमें उदय हुआ बुध कन्यापर चढ़ा है। षष्ठी तिथि क्षय। फल—खास कर चान्दी में बड़ी मन्दी और रुईमें अच्छी तेजीका चान्स है।

धातुओंमें चान्दी और सोना वेचना न भूलें। वनस्पति जन्य वस्तुओंमें रुई, एरण्डा, मूंगफली, अलसी, हेसियन,

और डिफर्ड शेयर खरीद कर तारुणीमें नफेके साथ बेचना समयकी सावधानी है।

ता० २७ अक्टूबर प्रातः ७ बजेसे ३। दिनमें—

कन्या पर शुक्रने गमन किया। यह तमाशा देखने बुध उलट पड़ा, फल—चान्दीके भाव ो पैंदे बिठानेकी दौड़ है। जबर मन्दी ऐसे ही समय आया करती है। लक्ष्मी लूटनेका यही बड़ा भारी चान्स है। धनतेरसके दो दिन पूर्व व्यापार में बड़ी धमाल चलेगी।

ता० ३० अक्टूबर दिनके २ बजेसे ३। दिनमें—

दीपमालिकाके शुभ अवसर पर क्रूर ग्रहोंका कमरा बदलना व्यापारी समुदायमें तहलका सा मचा देगा। प्रत्येक वस्तुके भावमें पुख्ता चढ़ाव उतारका समय है।

ता० २ नवम्बर रात ११ बजेसे ३। दिन में—

ताता-डिफर्ड शेयरका भाव ५०) ७५) रुई, कालीमिर्च १५)२०) मूंगफली, एरण्डा ५) ७) चान्दी २) ३) अलसी हेसियनके भावमें १॥) २) बढ़ना पाया जाता है। बम्बईस्थ व्यापारी समुदायमें बैठते नए वर्षकी नई सलाह तेजीकी मिली है। अतएव वस्तुओंको खरीद करते सम्प्राप्त नफाके साथ डबल बेचना न भूलें।

ता० ६ नवम्बर प्रातः ७ बजेसे ३। दिनमें—

फैसला यही है कि रुई ८) १०) एरण्डा मूंगफली, चान्दी ३) ४) कालीमिर्च ताता डिफर्ड शेयर २०) ३०) और अलसी हेसियन १) टका घटना प्रतीत होता है। जब कि स्पष्ट पैगाम सस्ताईका है वायदा बाजारमें सिवाय वस्तु बेचनेके और कोई सलाह नहीं। समझदारको संकेत काफी है।

ता० ६ नवम्बर दिन २ बजे से ३३ दिन में—

चलती हुई मन्दीकी रफ्तारमें जब तेजीकी सीटी बज रही है, ऐसे समयमें हर एक वस्तुको खरीद किया बोलना प्रत्येक समझदार व्यापारीका कर्तव्य है

ता० १२ नवम्बर रात १० बजेसे ३। दिनमें—

संकेत सस्ताईकी सूचना दे रहा है ऐसा अनुमान पाया जाता है। इस समय रुईके रेटमें १०) १५) ताता-स्टील डिफर्डमें ४०) ५०) कालीमिर्चमें २०) ३०) एरण्डा मूंगफलीमें ४, ६) चान्दी ३) ४) अलसी हेसियन और सोनाके भावमें १॥) २) टकेका दुतर्फा चढ़ाव उतार होना पाया जाता है। जबकि समय अच्छी घट बढ़का है। तो इस पोइन्टको ध्यानमें रखते पहलेसे ही डयूडेटका नजराना सुधारते सलाहका सदुपयोग करेंगे।

वृश्चिक संक्रान्ति (सौर मार्गशीर्षमास)

(ता० १६ नवम्बरसे १४ दिसम्बर पर्यन्त)

सारांश—महीनेमें ३० दिन होते हैं। यहां इस माह में बनने वाली घटनाओंमें १७ कारण हैं। अतः हर दूसरे दिन व्यापारी समुदायमें एक न एक समस्या चक्कर लगाती रहेगी। प्रत्येक वस्तुके वायदा मार्केटमें दुतर्फा हलचल रहेगी। अनुसन्धान पाया जाता है कि ताता-स्टीलडिफर्ड शेयरमें २५०) ३००) टके और रुई तथा कालीमिर्चके भावमें ३०) ४०) हेसियन, सोनाके भावमें २) ३), चान्दी के मूल्यमें ८) १०) एरण्डा, मूंगफलीमें १०) १५) का रद्दोबदल होना पाया जाता है।

ध्यान रखने योग्य मासिक व्यापार व्यवस्था

ता० १६ मंगल०—पूर्णिमा वायदा सोना चान्दीके बदलेका दिन है

ता० १९ शुक्र०—रुईकी क्लीयरिंग छपेगी और शेयर के बदलेका दिन है।

ता० २६ शुक्र०—शेयरका बदला होते रुईकी क्लीयरिंग छपेगी।

ता० २७ शनि—मासिक वायदा सोना चान्दीकी तेजी मन्दीका सही का दिन है।

ता० ३०—मंगल एरण्डा मूंगफली आदिकी तेजी मन्दी सही पड़ेगी।

ता० ३१ शुक्र—रुईकी क्लीयरिंग छपते शेयरके बदलेका दिन है।

ता० १० शुक्र०—शेयरका बदला होते रुईकी क्लीयरिंग छपेगी।

ता० १४ मं०—सोना चांदीकी तेजी मन्दी सही पड़ने का दिन है।

ता० १६ नवम्बर प्रातः ५ बजे से ३। दिनमें—

मंगल ने नक्षत्र बदला और साथ ही राशी भी बदल डाली। फल—दुनियाँ जानती है कि मंगल हमेशा

दंङ्गल किया करता है। यहां यह प्रयोग रुई और चान्दी पर लागू होना पाया जाता है। रुई और चांदी को बाद करते अन्य वस्तुओं में डिफर्ड शेयर, एरण्डा, मूंगफली अलसी, हेसियनके भाव में ठीक तेजी आना पाया जाता है। टेकनिकल चान्स रुई और चांदी बेचने का है। अन्य वस्तुएं खरीदने का मौका है। बाजार भावोंके साथ-साथ लेवा बेची करते तारुणी सुधारिये।

ता० १६ नवम्बर दिन के १ बजे से ३। दिनमें—

ताता स्टील डिफर्ड शेयर ४०) ५०) रुई ८) १०) कालीमिर्च २०) ३०) एरण्डा, मूङ्गफली ५) ७) चांदी में २) ३) अलसी और हेसियनमें १) १।।) टका बढ़ना पाया जाता है। जब कि सलाह साफ साफ तेजी की मिल रही है तो प्रासगिक वस्तु की आगामी डयूडेट की तेजी लगावें, अथवा खरीद सकते हैं। साथ ही सम्प्राप्त नफा सुधारनेमें भूल न करेंगे। ध्यान रहे यहां चांदी और सोने के लिये तेजीका पाया निर्बल स्थितिमें दिखाई देगा, रुई का उछाला अधिक देर न ठहरेगा।

ता० २२ नवम्बर ११ बजे से ३। दिन में—

जब-जब बुधाष्टमी आती है, बुड्ढे और समझदार व्यापारी अनाज और रुईके भावमें मन्दीकी कूंत लगाया करते हैं। तातास्टील डिफर्ड, एरण्डा, मूंगफली और अलसीके भावमें अधिकसे अधिक तेजी लानेका प्रयास है। जिन-जिन वस्तुओंके लिये तेजीका संकेत मिला है, उन-उन जिन्सोंको खरीदिये या तेजी लगाइये। उछाले में नफा सुधारनेमें जुट जाइये।

ता० २६ नवम्बर प्रातः ७ बजे से ३। दिन में—

वायदा वस्तुओंमें रुईके भावोंमें १५) २०) कालीमिर्च ३०) ४०) तातास्टील डिफर्ड १००) १२५) एरण्डा मूंगफली चान्दी ५) ७) अलसी हेसियन सोनेके भाव में २) ३) टकेका चढ़ाव उतार होना पाया जाता है। योग परीक्षित और पक्का है।

खुल्ला सौदा करनेमें हर घटे भाव वस्तु खरीदनेमें हिचकिये नहीं, और उछालेमें डबल बेचनेका प्रयास रखिये। इसी तरह साधारण व्यापारीका फर्ज है कि नजराना लगा पेटामें रिएक्शनमें बेचें, क्राईसीसमें खरीदें, इस प्रकार बार-बार तारुणी सुधारते रहें।

ता० २६ नवम्बर दिनके ३ बजेसे ३।। दिनमें—

वस्तुके भावमें पुख्ता तेज मन्दी चलनेका समय है। संख्याका संकेत सब ऊपर की कलमके अनुसार समझ लीजिये।

ता० २ दिसम्बर रात ११ बजेसे ३। दिनमें—

ग्रहयोग वस्तुओंके भावमें स्पष्ट तेजी बता रहे हैं। कोई भी वस्तु खरीदिये और बढ़े हुए भावमें सन्तोषसे नफेके साथ बेच दीजिये।

ता० ६ दिसम्बर प्रातः ६ बजेसे ३।। दिनमें—

वस्तुओंमें सर्व प्रथम रुई, अनन्तर चांदी, बादमें अलसी एरण्डा मूंगफली आदिके भावमें अच्छी मन्दी आना पाया जाता है।

ता० ६ दिसम्बर दिनके २ बजेसे ३ दिनमें—

रुई चांदी और सोनेके भाव सस्ताई की ओर ढलते रहेंगे। शेषमें स्टीलडिफर्ड शेयर, एरण्डा, मूंगफली, अलसी, और हेसियनके भाव टिके हुए रहें और तेजी भी आ सकती है। जिन जिन वस्तुओंके लिये मन्दीका आइडिया बताया गया है उन्हें बेचना मञ्जूर कर लें और जिन वस्तुओं का ध्यान तेजीकी ओर दिलाया गया है उन वस्तुओंको खरीदना स्वीकार कर लें। प्रत्येक सौदा में न्यूनाधिक नफासे जो भी चांस मिले सुलझाते रहिये।

ता० १२ दिसम्बर रात १० बजेसे ३। दिनमें।

उतरते महीनेके अन्तिम दिनोंमें कोई सलाह बताना उपयुक्त मालूम नहीं देता। जैसा आप उचित समझें वैसा सौदा सूत कर लीजिये।

धनुः संक्रान्ति (सौर पौष मास)

(ता० १५ दिसम्बरसे १३ जनवरी १६४८ तक)

इस मासमें कोई व्यापारी जबर मंदीके प्लानमें रहेगा और कोई कोई व्यापारी बड़ी तेजीकी कूंत लगाते प्रोपेगण्डा पैदा करेगा। मतलब यह कि रुई में ५०) ७५) ताता स्टील डिफर्ड शेयरमें १५०) २००) काली मिर्च १००) १५०) एरण्डा, मूंगफली ८) १०) चान्दी ५) ७) अलसी सोना और हेसियनमें २) ४) का हेर-फेर होना

पाया जाता है। महीना पुख्ता घटाबढ़ी का है।

ध्यान रखने योग्य मासिक व्यापार व्यवस्था

ता० १५ बुधवार—अलसी, एरएडा, मूंगफली क्लीयरिंग का दिन है।

ता० १६ गु० सोना चान्दीका बदला और क्लीयरिंग का दिन है।

ता० १७ शु० रुईकी क्लीयरिंग और शेयरके बदलेका दिन है।

ता० २१ मं० रुईकी तेजीमन्दी ठीक पड़नेकी ड्यूडेट है।

ता० २४ शु० शेयरके बदले रुईकी क्लीयरिंग भरी जानेका दिन है।

ता० २८ श० सोना चांदी की तेजी मन्दी सही पड़ने का दिन है।

ता० ३० गु० सोना चांदी की क्लीयरिंग भरी जाने का दिन है।

ता० ३१ शु० एरएडा अलसी मूंगफली की तेजी मन्दी सही पड़ने का दिन है। इन्हीं की क्लीयरिंग छपते शेयरके बदले और रुई की क्लीयरिंग का दिन हैं।

ता० ७ शु० शेयर का बदला होते रुईकी क्लीयरिंग छापी जायगी।

ता० १२ बु० सोना चांदी की तेजी मंदी सही पड़ने का दिन है।

वायदा व्यापार—ग्रहयोग और व्यापारिक संयोग देखते इस महीनेमें नजराना लगाकर व्यापार करने वाला अच्छा धन कमायेगा। गरीबोंको धनवान बनाने वाला महीना है। आशा है व्यापारी समुदाय सूचनाका पूरा २ उपयोग करेंगे।

ता० १५ दिसम्बर दिनके १ बजेसे ३। दिनमें

रुई और सोनेको बन्द करते ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें ५०) ७५) एरएडा मूंगफली ३) ४) और कालीमिर्च २०) ३०) चान्दी ४) ५) अलसी हेसियन १) २) टका बढ़ना पाया जाता है। सम्भव है कि रुई और सोनेका भाव बढ़े नहीं तो टिका रहेगा। जिस वस्तुके सौदेका पाठकको सम्बन्ध हो, निकटतम ड्यूडेटकी तेजी लगावें अथवा मालखरीदना मंजूर करलें। दाव साधनेमें जो चूकेगा उस बहमीले व्यापारीके हाथमें नफाके बजाए पछतावा रहेगा।

ता० १७ दिसम्बर रात ११ बजेसे ३। दिनमें—

रुई रेटमें १०) १५) स्टील शेयरके भाव १००) ७५) चान्दी, एरएडा मूङ्गफली ४) ६) अलसी, हेसियन और सोनेके भावमें २) ३) की घटबढ़ होना पाया जाता है। जब कि अच्छे उतार चढ़ावका समय है तो घटे भाव खरीद करें और बढ़े भावोंमें बेचते रहें।

ता० २१ दिसम्बर प्रातः ७ बजेसे ३। में—

स्टील शेयरके भावमें सस्ताईका पैगाम जुटा है। वैसे अन्यान्य वस्तुओंके भावमें भी बाकी घटाबढ़ा चलेगी। रुई १५) २०) ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें १००) ७५) और कालीमिर्च ३०) ४०) एरएडा मूङ्गफली ३) ४) टके, चान्दी २) ३) सोना, हेसियन अलसीमें १) १।।) बढ़ना पाया जाता है। खयाल रहे बीच-बीचमें मन्दीकी झलक भी दिखाई देती रहेगी।

ता० २४ दिसम्बर रातके १० बजेसे ३। दिनमें—

बड़े दिनकी तातीलोंके बदौलत बन्द बाजारमें सौदेकी सलाह लिखना नीति विरुद्ध है। फिर भी धनके लोभी बनियोंको बिना धन्धा किये चैन नहीं पड़ता। अत एव वस्तु खरीदनेका प्रयास रखते अन्दर नफा सुधारते रहिये।

ता० २८ दिसम्बर दिनके २ बजेसे ३। दिनमें—

रुई १५) २०) ताताडिफर्ड शेयर (खानगीमें) १००) १२५) कालीमिर्च ३०) ४०) एरएडा, मूङ्गफली ३) ४) चान्दी ४) ६) सोना हेसियन और अलसीमें १।।) का चक्कर (घटाबढ़ी) पड़ना पाया जाता है। चान्स परीक्षित और पका है।

ता० १ जनवरी प्रातः ५ बजेसे ३। दिनमें—

टेकनीकल मन्दीको बाद करते तेजी चलना प्रतीत होता है। ऐसी अवस्थामें मालखरीदना मञ्जूर कर लें। प्रत्येक उछालेमें बेचनेका प्रयास भी रक्खें।

(शेष पृष्ठ १०७ पर)

॥ श्रीः ॥

व्यापार से धन कमाओ

धन कमाकर फीस भेजो।

यदि आप तेजी मंदीकी सही जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, व्यापारमें सफलता चाहते हैं, चाहे जब इच्छानुसार नफा कमाना चाहते हैं, बड़ीसे बड़ी और साधारण दोनों लाइन आपकी जानकारीमें रहे ऐसा सोचते हैं तो हमारा आपसे खास अनुरोध है कि आप सिर्फ १ बार भारतके सुप्रसिद्ध सैकड़ों व्यापारियोंसे प्रशंसापत्र प्राप्त तेजी--मंदीके विशेषज्ञ विद्वान् श्री पं० हरिशंकर जी शास्त्री की स्पेशल मासिक रिपोर्ट के ग्राहक बनें। वर्तमानमें सैकड़ों व्यक्तियों को तर्फसे तेजी-मंदी प्रकाशित होती है, ऐसे लोगोंको प्रर्याप्त फीस देनेके बाद भी हानि उठाकर अब आप निराश हो चुके होंगे। किन्तु हमने ऐसे ही निराश व्यक्तियोंको लाभान्वित किया है। कई बार 'श्रीस्वाध्याय' 'ज्योतिर्विज्ञान' 'वेंकटेश्वर' जन्मभूमि आदि पत्रोंमें हमारी रिपोर्ट गलत प्रमाणित करने वालोंको इनाम देने की घोषणायें समय २ पर प्रकाशित की जा चुकी हैं। और फिरसे हम डंकेकी चोट चेतावनी देते हैं कि व्यापारसे धन कमाना है तो शीघ्र ही हमारे ग्राहक बनें। इतने पर आपको यह भी सुविधा दी जा रही है कि पहले कमा लो और फिर फीस भेजो। समय चूके पछताना ही हाथ रहेगा, सोच लें।

(१) माह नवम्बर सन् १९४८ की सोना, चांदी, रुई, अलसी, डांइग, डिफर्ड, जूट चपड़ा आदि किसी भी १ वस्तु की सिर्फ खर्च मात्र फीस ५) भेजने पर आपको रिपोर्ट मिल सकती है।

(२) लाभ होनेके बाद आपको ५०) रुपये देना होगा।

(३) यह सुविधा सिर्फ इस नवम्बर मासके लिये है। बादमें—

(४) किसी भी वस्तु की चाहे जिस समयकी १ माह की १ वस्तु की फीस ६१) होगी। उपरोक्त रियायती शर्त नये व्यापारियों को ही है।

(५) फीस मनीआर्डरसे भेजें। वी. पी. नहीं होगी।

प्रोप्राइटर सः— श्री सत्येश्वर ज्योतिष कार्यालय,

मु० पो० खिड़कीयां जि० होशंगाबाद सी० पी०

त्रैमासिक राशिफल

[यह राशिफल प्रत्येक व्यक्तिको बराबर मिले यह आवश्यक नहीं है। सूक्ष्म यथार्थफलादेश तो अपनी जन्मकुण्डली एवं वर्षफलसे अनुभवी विद्वान् दैवज्ञों द्वारा ही ज्ञात हो सकता है, यह मध्यम मान है।]

सौर कार्तिक मास

(ता० १७ अक्टूबर से १५ नवम्बर १९४८ तक)

मेष—वायु विकार, लाभ मध्यम, यात्रा, स्त्री वा सन्तानको कष्ट, राज्यपक्ष श्रेष्ठ, गुप्त चिन्ता। असफलताके वातावरणमें सुधार, नवीन आशाका संचार और मासके अन्तमें गृह कलह। ता० १५। १६। १७ अक्टूबर और १२। १३। १४ नवम्बरको व्यय विशेष। ता० २५। २६। २७ अक्टूबर और नवम्बरकी २। ३। ४ तारीखें नेष्ट हैं।

वृषभ—मास साधारण है, सामान्य यात्रा होगी, लाभके साथ व्यय भी विशेष होगा। भोजन वस्त्र और इष्टमित्रोंमें व्यय, स्त्री सुख उत्तम, मध्यमें आकस्मिक लाभ, हानिसे बचें। मासांतमें रुके हुए कार्यमें सफलता, मनस्तुष्टि। ता० १८। १९। २० अक्टूबर और १४। १५ नवम्बरको व्यय विशेष। १६। २७। २८ अक्टूबर और ता० ४। ५। ६ नवम्बर नेष्ट दिन।

मिथुन—व्यापारमें लाभ, मित्र-मिलन, शत्रु हानि, बन्धु कष्ट। पारिवारिक चिन्ता, चित्तमें उद्विग्नता। श्रेष्ठ-पुरुषोंसे मिलन, प्रतिष्ठा वृद्धि, व्यावसायिक उत्कर्ष। ता० २०। २३। ३१ अक्टूबरको व्ययाधिक्य। ता० २९। ३०। ३१ और ७। ८। ९ नवम्बर अशुभ दिन हैं।

कर्क—स्थान परिवर्तनकी चिन्ता, लाभके अनन्तर हानिकी सम्भावना है। माता पिता या गुरुजनोंको कष्ट, पारिवारिक जनों और मित्रोंसे मतभेद। मासके मध्यमें अभीष्ट कार्यमें सफलताकी पूर्णाशा। ता० २३। २४। ३१ अक्टूबर और १। २। ९। १०। ११ नवम्बर श्रेष्ठ।

सिंह—अधिक परिश्रमसे व्यापारमें उन्नति। पराक्रमी सन्मित्रका सहयोग। गृह वाहन या जमीनके लिए झगड़ा, बन्धुवर्गसे मनोमालिन्य। ता० १८ अक्टूबर और २। ३। ४। १२। १३। १४ नवम्बर अशुभ दिन हैं। २५। २६। २७ अक्टूबरको व्ययाधिक्य।

कन्या—लाभ मध्यम, पारिवारिक अशान्ति, व्यय विशेष, मासके मध्यमें साधारण धन लाभ, मित्रमिलन। मासान्तमें यश प्रतिष्ठा, यात्रा। स्थायीसम्पत्तिके लिए कलह। ता० १८। १९। २०। २७। २८। २९ अक्टूबर और ४। ५। ६ नवम्बर नेष्ट दिन हैं।

तुला—मास मध्यम है। यात्रामें कष्ट, मानसिक अशांति, स्त्री कष्ट। लाभ व्यय समान। ता० २०। २१। २२। २९। ३०। ३१ अक्टूबर और ७। ८। ९ नवम्बर चिन्तादि अशुभफल कारक है।

(पृष्ठ १०५ का शेष)

ता० ४ जनवरी दिनके १० बजेसे ३। दिनमें—
सात ग्रहोंका बाण युद्ध चलना वस्तुके भावमें तड़ातड़ीका सूचक है। मतलब अच्छी तेजीका समझ लीजिये।

ता० ७ जनवरी रात ६ बजेसे ३। दिनमें—
संयोग देखते सिवाय सस्ताईके दूसरी ओर कोई सामग्री दिखाई नहीं देती। अनुमानतः रुईमें ८) १०) कालीमिर्चमें २०) ३०) डिफर्ड शेयर ४०) ५०) चान्दी एरण्डा मूङ्गफली ३) ४) और अलसी हेसियन और सोनेके भावमें १) २) टकेका चढ़ाव उतार होना पाया जाता है। जहां दुतर्फा घटाबढ़ीका मौका होता है। वहां ऊँचे भावकी वस्तुको बेचिये और नीचेके भाव वाली वस्तुको खरीदिये तथा बदलेमें नफा सुधारें।

वृश्चिक—स्वास्थ्य उत्तम, राज्यपक्षश्रेष्ठ, लाभ उत्तम। मासान्तमें स्वास्थ्य हानि। माता पिताको कष्ट, व्ययविशेष। यात्रामें कष्ट। ता० २३। २४। ३१ अक्टूबर और १। २। ९। १०। ११ नवम्बरको व्ययादि नेष्ट फल होगा।

धनुः—व्यवसायमें लाभ, आप्तजनसे सन्तोष, नया क्लेश। इष्टमित्रों और भूमि आदि स्थिर कार्यमें व्यया-धिक्य, तीर्थयात्रा, साधुसमागम। ता० २७। २८। २९। ३० अक्टूबर और २। ३। ४। १२। १३। १४ नवम्बर अशुभ दिन हैं।

मकर—व्यापार व्यवसायमें उन्नति, लाभ उत्तम। शुभ-व्यय, स्वास्थ्य मध्यम। वायुविकार, माता पिताको कष्ट। ता० १८। १९। २०। २७। २८। २९ अक्टूबर और ४। ५। ६। १४। १५। १६ नवम्बर चिन्ता कारक हैं।

कुम्भ—विशेष परिश्रमसे स्वास्थ्य हानि, परिवारमें कष्ट, धर्ममें बाधा। स्वास्थ्य मध्यम, प्रतिश्याय आदि। यात्रासे लाभ, स्त्री कष्ट। ता० २०। २१। २२। २९। ३०। ३१ और ७। ८। ९ नवम्बर चिन्ता कारक हैं।

मीन—गतमासका रुका हुआ कार्य सिद्ध होगा। शत्रु नाश, भाग्य वृद्धि। स्त्री सुखपूर्ण। लाभ व्यय समान, यात्रा, मानसिक व्यग्रता। स्वास्थ्य उत्तम। ता० २३। २४। २५ अक्टूबर और ७। ८। १५। १६ नवम्बर व्यय विशेष चिन्तादि अशुभ फल कारक हैं।

सौर मार्गशीर्षमास

(ता० १५ नवम्बरसे १४ दिसम्बर तक)

मेष—मास मध्यम है। शुभ कार्यमें प्रवृत्ति यात्रा, साधारण लाभ। मानसिक अशान्ति, स्त्रीकष्ट। ता० २१। २२।२३।३० नवम्बर और ९।१०।११ दिसम्बर चिन्ता क्लेश एवं व्ययकारक दिन हैं।

वृषभ—स्वास्थ्य दुर्बल, व्यापार व्यवसायकी चिन्ता, शत्रु पीड़ा, स्त्री कष्ट। मासान्तमें साधारण लाभ। आरम्भमें उच्चाधिकारी या स्वामीसे मनोमालिन्य होकर षड्यंत्रों का शिकार होना पड़े। अतः सतर्क रहें। ता० १९।२३। २४।२५ नवम्बर और २।३।९।४।१२।१३ दिसम्बर अनिष्ट दिन हैं। मासान्त अच्छा रहेगा।

मिथुन—मानसिक सन्तोष, वस्त्र भोजनादिमें व्यय-विशेष, पराक्रम वृद्धि, शत्रु हानि, स्त्री सुख उत्तम, व्यापारोन्नति, सन्तान कष्ट। ता० १७।१८।२५।२६।२७ नवम्बर और ४।५।६ दिसम्बर अनिष्टप्रद हैं।

कर्क—साधारण लाभ, व्यवसायकी चिन्ता, शत्रु पराजित हो। परिश्रमविशेष, माता पिता वा गुरुजनोंको कष्ट, मित्रोंसे अनबन। मासान्तमें अचानक लाभ। ता० १९।२०। २१।२७।२८।२९ नवम्बर और ता० ६।७।८।९ दिसम्बर नेष्ट हैं।

सिंह—लाभ मध्यम, व्यय विशेष। राज्य या रोगसे कष्ट। यात्रामें कष्ट। अकारण झगड़ा, वायु विकार रक्त प्रकोप वा अग्नि भयः, स्त्री कष्ट। शुभ कृत्यमें बाधा। ता० २१।२२।२३।२९।३० नवम्बर और ९।१०।११ दिसम्बर चिन्ता व्ययादि कारक हैं।

कन्या—मित्रोंसे वैमनस्य, व्यय विशेष। माता पिता वा पारिवारिकजनों से कष्ट। उत्तरार्धमें व्यापारमें उत्कर्ष, मानसिक सन्तोष, लाभ उत्तम। ता० २३।२४।२५ नवम्बर और ११।१२।१३ दिसम्बर अशुभ दिन हैं।

तुला—आप्त बन्धुओंसे वैमनस्य, मित्र-मिलाप। व्यापार में साधारण उन्नति। किञ्चित् धन हानि। मासका मध्यभाग उत्तम रहेगा। अन्त में आकास्मिक चिन्ता। ता० १७।१८।२५।२६।२७ नवम्बर और ४,५।६।१४।१५ दिसम्बर शुभ नहीं है।

वृश्चिक—व्यर्थ व्यय, शुभ विचारोदय, बन्धु क्लेश, यात्रा, मानसिक कष्ट। पारिवारिक अशान्ति, स्वास्थ्य निर्बल। मासान्तमें बिगड़ाकार्य बने। ता० १७।१८।१९। २७।२८।२९ नवम्बर और ६।७।८।९ दिसम्बर शुभ नहीं।

धनुः—स्वास्थ्य उत्तम, लाभ मध्यम, चित्त में विकलता, मित्र या पारिवारिक जनसे असन्तोष। बुद्धि अस्थिर, संतान कष्ट। ता० २२।२३।२५।३० नवम्बर और ९।१०। ११ दिसम्बर चिन्ता कारक हैं।

मकरः----स्थान परिवर्तन, यात्रा, मासके मध्यममें लाभ, गुप्त चिन्ता, भोजन वस्त्रादिमें व्यय विशेष, मित्र मिलाप, चोट या व्रणादिसे पीड़ा। आत्मीय जनोंसे असन्तोष । २३।२४।२५नवम्बर और २।३।४।११।१२ १३ दिसम्बर शुभ नहीं है।

कुम्भः----परिश्रम का उचित पुरस्कार न मिलनेसे खिन्नता। शिर और हृदय में पीड़ा, उदर विकार, स्त्री कष्ट, माता पिता को संताप। मासान्तमें व्यापार में उन्नति व्यवसाय में लाभ। ता० १६।१७।१८.२५।२६ नवम्बर और ४।५।६।१४।१५ दिसम्बर लाभप्रद शांति कारक नहीं है।

मीनः— राज्य पक्ष श्रेष्ठ, व्यापार व्यवासायमें लाभ, व्यय अधिक। धार्मिक कार्यमें प्रवृत्ति, पारिवारिक अशांति, संसारसे क्षणिक वैराग्य। स्वास्थ्य निर्बल, मासका मध्यभाग शान्ति कारक रहेगा। ता० १६।२०। २१।२७ २८।२६ नवम्बर और ७।८।६ दिसम्बर चिन्ता कारक है।

सौर पौष मास

(ता० १५ दिसम्बरसे १३ जनवरी तक)

मेषः—स्वास्थ्य निर्बल, कफवात व्याधि, सत्कार्य में बाधा, लाभ से व्यय विशेष, पारिवारिक चिन्ता। व्यापारमें साधारण उन्नति, मासके मध्यमें यात्रा, यशवृद्धि, मित्र समागम। ता० १८।१६।२०।२७।२८।२६ दिसम्बर और ५।६।७ जनवरी उत्तम नहीं हैं इनमें, चिन्ता और व्यय अधिक होगा।

वृषभ----यात्रा, कारोबार मध्यम, लाभ साधारण, प्रतिष्ठा वृद्धि। सत्कार्यमें प्रवृत्ति श्रेष्ट पुरुषोंसे सम्मेलन। मासके मध्यभागमें आमोद-प्रमोद के साधन जुटेंगे। ता० २१।२२।२६।३०।३१ दिसम्बर और ८।६।१० जनवरी नेष्ट दिन है।

मिथुन—दुर्बलता, स्त्री सन्तानको कष्ट, वायुविकार श्लेष्मज्वर प्रतिश्यायादिसे कष्ट। यात्रामें कष्ट, लाभ उत्तम, राज्यपक्ष श्रेष्ठ, चोट या अग्नि भय। सावधान रहें। ता० २३।२४।३१ दिसम्बर और १।२।१०।११।१२ जनवरी कष्ट प्रद हैं।

कर्क—व्यवसायमें साधारण सफलता, मानसिकचिन्ता, बन्धुक्लेश, व्ययाधिक्य। मासान्तमें लाभ, प्रसन्नता, स्त्रीकष्ट, यात्रा। ता० १५।१६।१७।१६ दिसम्बर और ३।४।५।१२। १३ जनवरी नेष्ट दिन हैं।

सिंह—लाभ व्यय बराबर, मित्रसे सन्तोष, वायुविकार, स्त्री और सन्तानको कष्ट, पशुभूम्यादि चिन्ता,बुद्धि अस्थिर, राज्य पक्ष श्रेष्ठ। मासके मध्यमें यात्रा, मित्र मिलाप। ता० १८।१६।२०.२७।२८।२६ दिसम्बर और ५।६।७ जनवरी शुभ नहीं है।

कन्या-सन्तति चिन्ता, शीतवायु-विकार, वृथा व्यय, यात्रा, परिचय प्रतिष्ठावृद्धि, श्रेष्ट पुरुषोंसे समागम। ता० २०।२१। २२।२६।३०।३१ दिसम्बर और ८।६।१० जनवरी अशुभ दिन हैं।

तुला—स्वास्थ्यमध्यम, व्यापारमें उन्नति लाभ, मित्रों से झगड़ा, बन्धु वर्गकी ओरसे अशान्ति। मासके मध्यमें यात्रा, मित्र-मिलाप, प्रसन्नता, व्ययाधिक्य। ता० २२।२३ २४।३१ दिसम्बर और ता० ७।८।१०।११।१२ जनवरी अशुभ दिन हैं।

वृश्चिक—मित्रवर्ग और स्त्री सुख उत्तम। लाभव्यय समान। यात्रा मासके मध्यमें होगी। शुभ कार्यमें व्यय अधिक होगा। ता० १६।१७।१८।२५।२६ दिसम्बर और ३।४।५।१३ जनवरी अरिष्टप्रद हैं।

धनुः—स्वास्थ्य मध्यम, श्लेष्मा खांसी शीत व्याधि, यात्रा मासके मध्यमें। साधारण लाभ, व्यय अधिक। पारिवारिक अशान्ति, धर्ममें बाधा, स्त्री सुख, सन्तान कष्ट। ता० १८।१६।२०।२६.२७.२८।२६ दिसम्बर और ५।६।७ जनवरी नेष्ट दिन हैं।

मकर—कार्यमें विघ्न, स्त्रीचिन्ता, राज्य वा शत्रुसे भय, व्यय अधिक, दुर्बलता, रक्त कफविकार। मित्रोंसे मनोमालिन्य। मासके मध्य यात्रा। ता० २०।२१।२२।२६।३०। ३१ दिसम्बर और ८।६।१० जनवरी अरिष्टप्रद हैं।

(शेष पृष्ठ १११ पर देखिये)

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

आश्विन शुक्ल	१० मङ्गलवार	ता० १२ अक्टूबर		विजयादशमी दशहरा
	११ बुधवार	ता० १३	,,	पापांकुशा एकादशी व्रत
	१३ शुक्रवार	ता० १५	,,	प्रदोष व्रत
	१४ शनिवार	ता० १६	,,	तुला संक्रांति मु० ३०
	१५ रविवार	ता० १७	,,	शरद्पूर्णिमा सत्यव्रत संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्नपर्यन्त
	१५ सोमवार	ता० १८	,,	आकाशदीपदान कार्तिक स्नानारम्भ
कार्तिक कृष्ण	३ गुरुवार	ता० २१	,,	करक (करवा) चौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ७ । ५२
	८ सोमवार	ता० २५	,,	अहोई अष्टमी
	११ गुरुवार	ता० २८	,,	रमा एकादशी व्रत　　* धन्वन्तरि जयन्ती
	१२ शुक्रवार	ता० २९	,,	प्रदोषव्रत, धन १३, गोवत्स पूजन, यमदीप दान, *
	१३ शनिवार	ता० ३०	,,	रूप १४ श्री हनुमज्जयन्ती नरक १४
	१४ रविवार	ता० ३१	,,	दीपमाला, श्री महालक्ष्मी पूजन
	३० सोमवार	ता० १ नवम्बर		गोवर्द्धन पूजन अन्नकूट, सोमवती अमावस्या
कार्तिक शुक्ल	१ मङ्गलवार	ता० २	,,	चन्द्रदर्शन भ्रातृ टिका २ यम २ दवात कलम पूजन*
	२ बुधवार	ता० ३	,,	मुहर्रम सन् १३६८ हिजरी प्रारम्भ
	९ बुधवार	ता० १०	,,	अक्षया ९ परिक्रमा नवमी
	११ शुक्रवार	ता० १२	,,	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत तुलसी विवाह ♦
	१३ रविवार	ता० १४	,,	प्रदोष व्रत　　* वष्टिकाकर्षण (रस्साकशी)
	१४ सोमवार	ता० १५	,,	वृश्चिक संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल दूसरे दिन बै० १४
	१५ मङ्गलवार	ता० १६	,,	सत्यव्रत टुकरी पूर्णिमा भीष्मपञ्चक स० का० स्ना० स०
मार्गशीर्ष कृष्ण	४ शनिवार	ता० २०	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८ । ३३
	७ मङ्गलवार	ता० २३	,,	श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी
	१० शुक्रवार	ता० २६	,,	उत्पन्ना एकादशी व्रत स्मार्त गृहस्थोंके लिए
	१२ शनिवार	ता० २७	,,	मल्लद्वादशी, वैष्णव सम्प्रदायका ११ व्रत
	१३ रविवार	ता० २८	,,	प्रदोषव्रत ♦भीष्मपञ्चकारम्भ चातुर्मास्यसमाप्ति ताजिया
	३० मङ्गलवार	ता० ३०	,,	भौमवती अमावस्या
मार्गशीर्ष शुक्ल	२ गुरुवार	ता० २ दिसम्बर		चन्द्र दर्शन
	६ सोमवार	ता० ६	,,	स्कन्द ६ चम्पा ६
	११ रविवार	ता० १२	,,	मोक्षदा एकादशी व्रत श्रीगीता जयन्ती
	१२ सोमवार	ता० १३	,,	सोम प्रदोष व्रत

मार्गशीर्ष शुक्ल	१४ बुधवार	ता० १५ दिसम्बर	धनुः संक्रान्ति मु० ४५ सत्यव्रत श्रीदत्तजयन्ती
पौष कृष्ण	३ रविवार	ता० १६ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८। ३५
	७ बुधवार	ता० २२ ,,	सायन मकरे भानुः उत्तरायण शिशिरऋतु प्रारम्भ
	११ रविवार	ता० २६ ,,	सफला एकादशी व्रत
	१२ सोमवार	ता० २७ ,,	सोम प्रदोष व्रत
	३० गुरुवार	ता० ३० ,,	अमावस्या
पौष शुक्ल	२ शनिवार	ता० १ जनवरी	चन्द्रदर्शन सन् १९४९ ई० प्रारम्भ

महापुरुषोंके जन्मदिन, निर्वाणदिन और प्रसिद्ध मेले

आश्विन शुक्ल	१० मङ्गलवार	ता० १२ अक्टूबर	मेला दशहरा बौद्ध जयन्ती
	१५ रविवार	ता० १७ ,,	श्री सरदार वल्लभभाई पटेल का ७४ वाँ जन्म दिवस
कार्तिक शुक्ल	१ मङ्गलवार	ता० २ नवम्बर	श्री त्यागमूर्ति गो० गणेशदत्त जी का ६० वाँ जन्मदिवस
	११ शुक्रवार	ता० १२ ,,	स्व० श्री महामना मालवीय जी का निधन दिवस
	१३ रविवार	ता० १४ ,,	श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू का ६०वाँ जन्मदिवसोत्सव
	१५ मङ्गलवार	ता० १६ ,,	श्री गुरु नानकदेव जयन्ती, मेला पुष्करराज
मार्गशीर्ष कृष्ण	१ बुधवार	ता० १७ ,,	स्व० श्री ला० लाजपतराय निधन दिवस
	१४ सोमवार	ता० २९ ,,	मेला पुरमण्डल (काश्मीर) देविकास्नान
मार्गशीर्ष शुक्ल	३ शुक्रवार	ता० ३ दिसम्बर	श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जी का ६५ वाँ जन्म दिवसोत्सव
	८ गुरुवार	ता० ९ ,,	श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी का ७१वाँ जन्म दिव०
पौष कृष्ण	१२ सोमवार	ता० २७ ,,	मेला बाबा हरवल्लभ जालन्धर

(शेष पृष्ठ १०९ का)

कुम्भ—लाभ, प्रसन्नता, नये मित्रोंसे भेंट। व्यापारमें उन्नति, व्यवसाय वृद्धि, स्त्री और बन्धुओं से कष्ट, विवादमें जय। मासके मध्य यात्रा, व्यय अधिक। ता० २२।२३।२४ २९।३०।३१ दिसम्बर और १०।११।१२ जनवरी नेष्ट दिन।

मीन—स्वास्थ्य उत्तम, व्यापार व्यवसाय या नौकरीमें उन्नति। लाभ, चित्तमें प्रसन्नता। पारिवारिक अशान्ति मास के अन्तिम भागमें होगी, पूर्वार्ध श्रेष्ठ है। ता० १७।१८।२० २४।२५ दिसम्बर और ३।४।५।१३ जनवरी व्यय विशेष और चिन्ता कारक हैं।

❀ अभिजित् का तारा और बापूजी ❀

इस आर्य देश में ब्रह्माजी के नामसे सब परिचित् हैं। यद्यपि सृष्टि के रचयिता का नाम ही ब्रह्मा है। और उन्हीं ब्रह्माजी को ब्रह्मा कहते हैं। किन्तु आज से १४०००वर्ष पहले ध्रुव की जगह जो तारा था उसका नाम अभिजित् था। आज भी अभिजित् के तारे को ब्रह्मा कहते हैं। और ब्रह्मा जी का वाहन सिगनूस का नक्षत्र मण्डल Swan अर्थात् हंस कहलाता है। यह नक्षत्र ब्रह्मा नामके एक व्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जो उस समय पुष्कर में रहते थे। पुष्कर का पुक्खर, पुक्खर से बुक्खर बनकर आज बुक्खरसे बुखारा (बलख) के नाम से प्रसिद्ध है। इसी ब्रह्मा ने वर्तमान वैदिक साहित्य (Vaidik Litrature) की व्यवस्था तथा समाज की व्यवस्था की थी। ऋग्वेद के पञ्चम-मण्डल में ब्रह्मा की प्रशंसा में "ऋषिर्विप्राणां"लिखा है। इसी प्रकार आकाश के तारे वशिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, अगस्त्य आदि नमों से ऋषियों के नामों का स्मरण दिला रहे हैं। श्रीमान् स्वनामधन्य श्री महात्मा गांधीजी को जो इस काल में देशमान्यता का गौरव प्राप्त हुआ, यदि उन बापूजी की स्मृति में वर्तमान ध्रुव के तारे को जो (UrsaMinor) नाम से परिचित है इस (Polairis) ध्रुव के तारे का नाम महात्मा गांधी की स्मृति में गांधी या बापू नाम से पहचान ने का प्रयत्न कर दिया जाय तो यह नक्षत्र हजारों वर्ष का स्मारक आगे चल कर हो जायगा।

ब्रह्माजी के इतिहासके जिज्ञासु हमारे गुरु जी महाराज श्री मधुसूदनजी विद्यावाचस्पति की "श्री जगद्-गुरु वैभव" नामकी पुस्तक देखें। इसमें सप्रमाण ब्रह्माजी का इतिहास लिखा है। इस ग्रन्थ का भाषानुवाद मैंने स्वयं कर दिया है उसके भी शीघ्र ही प्रकाशित हो जाने की संभावना है। इसी प्रकार 'इन्द्रविजय' नामका काव्य भी द्रष्टव्य है, इसके द्वारा वैदिक इतिहास का ज्ञान अंशतः हो सकता है।

१. इसी आधार पर मेरा व्यक्तिगत प्रस्ताव है कि १४००० वर्ष पूर्व के ध्रुव स्थानापन्न अभिजित् का नाम जिस आधार पर ब्रह्मा रक्खा गया था, उसी रीतिसे एक ऐसे विश्वविख्यात व्यक्तकी स्मृतिमें इस ध्रुव स्थानापन्न तारे का नाम रख देना समयानुकूल एवं चिरकाल स्थायी स्मारक रहेगा।

२. इसी महात्माकी कृतिकी स्मृतिमें एक नया संवत्सर १, २, की गणना से 'लोकतन्त्र-संवत्' के नाम से या किसी ऐसे ही नाम से चलाया जाय तो वह भी उपयुक्त ही होगा।

३. यदि इस ज्योतिर्विद्या की उन्नति के हेतु एक बड़ी ज्योतिष वेधशाला बनवाकर इस ज्ञान को वृद्धि की जाय तो बहुत उचित हो।

४. पञ्चाङ्गों की दुर्दशा मिटाने का प्रयत्न कर यदि सर्वमान्य एक पञ्चाङ्ग भी विश्वस्त मार्ग पर चलाया जाय तो इस त्रुटिकी पूर्ति संभावित है।

५. इस सब के मूलभूत वैदिक साहित्य की उन्नति का प्रयत्न किया जाय तो हमारा वैदिक साहित्य सुरक्षित हो जाय।

ये पांच प्रस्ताव कालोपयुक्त लिखनेका साहस किया है, यदि इसमें कुछ त्रुटि हो तो उनको क्षमा कर विद्वत् समाज इस पर विचार करें। अलं बहुना।

जन्तरमन्तर
नई देहली

प्रस्तावक—
पं० केदारनाथ ज्योतिषी

अनुभूत चान्स

कार्तिक कृष्ण २ बुधवार ता० २० अक्तूबर से आगे सवा मास (३७ दिन) के अन्दर रुई हेसियन बिट्वील पाट और चांदी में काफी मंदी आवेगी। रुई ५००) चांदी १४०) और बीटवील १२०) तक पहुंच जाना निश्चित है। यह चान्स बहुत पक्का और कई बारका अनुभूत ।

—एक अनुभवी दैवज्ञ

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र—

उल्का दर्शनका संसार पर प्रभाव

पाकिस्तान और पश्चिमोत्तरीय प्रदेशोंमें विनाशक स्थिति

कार्तिक मार्गशीर्ष पौष मासमें संसारकी राजनैतिक सामाजिक व्यापारिक स्थितिका विश्लेषण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

गताङ्कमें हम सिंहके शनिका प्रभाव विस्तृत रूपमें प्रकट कर चुके हैं, वहाँ हमने स्पष्ट लिखा था कि—"सिंहका शनि भारतको शक्तिशाली बनायेगा। और निजामके राज्यतन्त्रको समाप्त कर देगा।" तदनुसार निजाम हैदराबादमें भारतको जो आशातीत सफलता मिली वह सर्वविदित ही है। पाठकों को स्मरण होगा कि १४ मास पूर्व हमने ता० १५ अगस्त १९४७ के स्वतन्त्रता दिवसके दैनिकपत्रों और गतवर्षके नववर्षाङ्कमें पाकिस्तानसे प्रत्यक्ष सङ्घर्षका स्पष्ट उल्लेख किया था। एवं च गत पौषके 'हेमन्ताङ्क' में काश्मीरकी समस्या अधिक गम्भीर बनने, सुरक्षा-परिषद्के असफल रहने, हैदराबादके पतन, श्री महात्मा गांधीजी के मारकेश और मि० जिन्नाहकी इसी वर्षमें मृत्युका जो स्पष्ट उल्लेख था वह सब पाठकोंके सामने आ चुका है। हमारी धारणा अब भी वही है जो वर्षों पहले थी। विश्वके महान् राष्ट्रोंका प्रयत्न अभी स्थाई शान्ति स्थापित करने में सं० २०१३ सन् १९-५६ तक सफल न होगा। गताङ्कमें हमने सिंहके शनिके इन ढाई वर्षोंमें विश्वका वातावरण अशान्त सङ्घर्षमय बन कर तीसरे विश्वयुद्धकी सम्भावना प्रकट की थी वह भी अभी वैसी ही है। हाँ, इतना अवश्य है कि जबजब शनिका शुभ ग्रहोंसे योग एवं दृष्टिसम्बन्ध बनेगा उस समय संसारमें शान्ति सद्भावनाके प्रयत्न अधिक होंगे और जब शुभग्रहोंका सम्बन्ध हटेगा तबसे फिर शनिका प्रभाव बढ़ेगा। और पाप ग्रहोंके साथ दुष्ट सम्बन्ध होने पर संसारमें अशान्ति और पारस्परिक अविश्वासका वातावरण बढ़ने से भयावह स्थिति उत्पन्न होगी। यथा—

यस्मिन्नृक्षे विचरति सौरो बलवाञ्छुभैरयुत दृष्टः
तद्देशजन्य कर्म द्रव्यहनोऽतीव पापयुतः।

देवगुरु (बृहस्पति) न्याय विवेक शांति सुख समृद्धि और आर्यलोगोंके अधिपति हैं। यह ग्रह जब बलवान् होता है तब संसारमें सुखशान्तिकी वृद्धि होती है। अभी आश्विन शु० ५ गुरुवार ता० ७ अक्टूबर १९४८ को गुरुने अपने घर धनुःराशिमें प्रवेश करके अशान्तिकारक शनिग्रह पर नवम दृष्टिसे शुभ प्रभाव डाला, तभी से संसारमें शान्ति-चर्चा विशेषरूपसे सुनाई देने लगी हैं। गुरु आर्यजाति और धनुःराशि पूर्वीय देश एवं आर्य राष्ट्रों पर विशेष प्रभाव रखती है। अतः धनुःके गुरुमें भारतका गौरव बहुत बढ़ेगा, विज्ञान और कला कौशलकी भी उन्नति होगी। फाल्गुन कृ० ३० ता० २७ फरवरी तक गुरु धनुः में ही रहेगा, तब तक विश्वशान्तिको कोई भय नहीं है।

कार्तिकमें शनि राहुका त्रिकोण और मङ्गल नेपच्यून का त्रिरेकादश योग रहे तथा मिल शेयरोंमें मन्दी लावेगा और विदेशी मालका आयात अधिक होगा। यहां सूर्य नीच राशिमें है और पांच मङ्गलवार भी अतः इस मासमें पाकिस्तानी सीमाओं पर दोनों ओरसे सेनाओंमें साधारण टकर हो जाना सम्भव है। परन्तु गुरुके कारण यह मामला अधिक आगे नहीं बढ़ेगा।

मार्गशीर्षमें मङ्गल-हर्शल और शुक्र-राहुका प्रतियोग तथा सूर्य-शनिका केन्द्रयोग और मङ्गल शनिका त्रिकोण योग बन रहा है अतः सैन्य-सङ्गठनमें वृद्धि होगी। पड़ौसी राष्ट्रोंमें आन्तरिक अव्यवस्था बढ़ेगी। मजदूरोंमें असन्तोष और यान दुर्घटना होगी। शेयर बाजार नीचे जायेगा और तिलहनमें तेजी होगी।

पौष मासमें १५ दिसम्बरसे १३ जनवरी तक सूर्य भी गुरुके साथ धनुः राशिमें ही रहेंगे, अतः इस मासमें भारत

में वैज्ञानिक साहित्यिक सामाजिक धार्मिक और राजनैतिक प्रगति अधिक होगी। आर्य जनता और भारतीय संस्कृतिका महत्व बढ़ेगा। वैज्ञानिक अनुसन्धान होंगे उत्पादन शक्ति बढ़ाई जायगी, कई नये कारखाने खुलेंगे। इस मासमें सूर्य राहु सूर्य शनिका त्रिकोण योग चांदी और तिलहनमें तेजी तथा शेयरमें मन्दी करेगा। ता० १८ दिसम्बरको बुध हर्शल प्रतियोग सोना चांदीमें मन्दीकारक है। इस मासमें शीतका प्रकोप अधिक होगा। पर्वतीय प्रदेशोंमें हिमपात, फसलोंको हानि, प्रजामें असन्तोष, तथा युद्ध जैसा वातावरण बनेगा।

अन्न समस्या नहीं सुलझेगी—

जहां गुरुदेव सुख शान्ति और सुभिक्षमें सहायक हो रहे हैं, वहीं कुछ योग ऐसे भी बन गये हैं, जो अन्न वस्त्र घृत शर्करादि पदार्थोंको सर्व सुलभ और सस्ता बनाने में बाधक हैं। अभी आश्विन शु० ३ को मङ्गलवार, आश्विन कृष्ण अमावस्याको शनिवार, विजयादशमी मङ्गलवारी, रविवारी दीपमाला, और आगे मार्ग शु० १५ को मघा नक्षत्र पर शनिका वक्री होना अन्नादि खाद्य पदार्थोंकी महर्घता तथा दुर्भिक्षके सूचक हैं। यथा—

आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमशनैश्चरौ।
तदा त्वग्निभयं विद्यादथवान्नमहर्घता॥
आश्विनस्यायमावास्यां शनिवारो यदा भवेत्
मध्यमं वर्षमथवा दुष्कालः खण्डमण्डले॥
वक्रंगतो रविसुतोऽपि धरासुतो वा
हस्ते तथैव पितृदैवतरौद्रभेषु।
क्षत्रस्यभङ्ग पतनं भुवि सैनिकानां
सर्वत्र लोकमरणं खलु शस्त्रसंघैः

पश्चिमी यवन देशोंमें भीषण स्थिति—

गतवर्ष हेमन्ताङ्क और वसन्ताङ्कमें हम स्पष्ट लिख चुके थे कि—"सिंहका शनि और धनुः मकरका गुरु प्रायः सभी अनार्य यवन देशों और विशेष कर पाकिस्तानके लिए अनेक प्रकारसे अनिष्ट कारक है।" तदनुसार सिंहके शनिने आते ही मि० जिन्नाको समाप्त करके पाकिस्तानको पंगु बना दिया और साथ ही निजामके अनार्य शासन को भी समाप्त कर दिया। अभी तो शनि सिंहमें आया ही है, सिंहके अंत में जाता हुआ शनि पाकिस्तानका भी अन्त कर जाए तो कोई आश्चर्य नहीं। पश्चिमी राष्ट्रों और पाकिस्तानके लिए कुछ दुर्लक्षण या अपशकुन ऐसे ही घटित हो रहे हैं।

उल्का-दर्शन

अभी आश्विन कृष्णा १४ शुक्रवार ता० २ अक्टूबरको पञ्जाबमें एक बड़ी अद्भुत एवं भयानक उल्काके दर्शन हुए। ये उल्काएं अनेक प्रकारकी होती हैं। अभी जो उल्का दिखाई दी उसका चित्रण हमारे एक स्नेहीके निम्न पत्रमें अत्यन्त सजीव रूपसे हुआ है—

"आश्विन कृष्णा चतुर्दशीको रात्रिके ८॥ बजे हम लोग बैठे रेडियो सुन रहे थे कि अचानक पश्चिमोत्तर दिशामें पृथ्वीसे आकाश तक प्रकाशकी सीधी लकीर दिखाई दी। पहले हम लोग उसे बड़ी टार्च या गैस समझे, किन्तु जब ध्यानसे देखने लगे तो स्तम्भके सदृश नीचेसे ऊपर तक प्रकाशपुञ्ज खड़ा दिखाई दिया। यह तीन-मिनिट तक लाठीकी भांति खड़ा ही रहा, हम सब लोग डर गये। फिर पृथ्वीसे इसका सम्बन्ध टूट गया और वह लम्बा प्रकाशस्तम्भ आकाशमें उसी प्रकार दश मिनट तक दिखाई देता रहा। यह सारा प्रकाश १५ मिनटमें शान्त हुआ। इस प्रान्तमें ३० चालीस मील तक यह दृश्य दिखाई दिया। सभी बाल वृद्ध विस्मयसे चर्चा करते हैं।"

दैनिक 'हिन्दुस्तान' के ६ अक्टूबरके अङ्कमें भी "पांच गजका पुच्छल तारा" शीर्षकसे एक समाचार प्रकाशित हो चुका है। हरिद्वार देहरादून और दिल्ली प्रांतमें भी यह उल्का पश्चिमकी ओर अनेक व्यक्तियोंको दिखाई दी है।

आचार्य वराहमिहिरकी 'बृहत्संहिता' और 'अद्भुत-सागर' नामक प्राचीन ग्रन्थोंमें इस प्रकारको अनेक उल्काओंके विभिन्न नाम तथा उनके फल भलीभांति लिखे गये हैं। उक्त ग्रन्थोंके आधार पर ही हम इस उल्काका शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं—

अभी जो उल्का दिखाई दी, यह 'धिष्ण्य' नामकी उल्का है। इसका स्वरूप इस प्रकार लिखा है—

उद्योतयन्ति गगनं काञ्चनेनैव वर्णना।
दण्डवच्चापि तिष्ठन्ति प्रभावन्तो च सूर्यवत्॥
(अद्भुतसागर पृष्ठ ३२५)

"या चाकाशे चिरं तिष्ठेत् दण्डवद्...."
(अद्भुतसागर पृष्ठ ३२६)

अर्थात् स्वर्णके समान अपनी कान्तिसे आकाशको जगमगा देने वाली, सूर्यके समान प्रकाश वाली जो उल्का आकाशमें दण्डकी भांति बहुत देर तक खड़ी रहती है उसे 'धिष्ण्य' नामक उल्का कहते हैं।

इस प्रकार उक्त उल्काके नाम स्वरूपके निर्णय हो जाने पर अब इसके फलाफलका भी शास्त्रीय दृष्टिसे विवेचन किया जाता है।

उल्काका फल

उल्काओंके फलका वर्णन करते हुए बृहत्संहिता और अद्भुतसागरमें लिखा है—

यस्याश्चिरं तिष्ठति खेऽनुषङ्गो दण्डाकृतिः सा
नृपतेर्भयाय (बृ० सं०)

तथ —

"रविकिरण जाल-मरुतां संघातो दण्डवत्—
स्थितो दण्ड:" यह उत्पत्ति बतलाई है कि रविकिरण जाल और मरुतका जो संघात है—वह दण्डवत् प्रकाश खड़ा कर देता है, उसका फल है—

"इयमग्रतो विशाला बहुप्रकारा सतेज—
दण्डान्ताः यस्मिन् देशे प्रभवति षण्मासान्तं
हि नाशाय"

या चाकाशे चिरं तिष्ठेद्दण्डवद्रूपभीतिदा।
देशस्तत्र विनश्येत षड्भिर्मासैर्न संशयः॥
(अद्भुत सागर पृ० ३४४)

योऽतीवदीप्त्या कुरुते प्रकाशं छायामपि व्यञ्जयतेऽर्कवद्यः।
राज्ञो महद्वेदयते भयं स शस्त्रप्रकोपं क्षतजानुरूपः॥
(बृहत्संहिता)

पूर्वरात्रे तु सम्भूता आदित्यपथमाश्रिता।
पश्चिमाभिमुखी याति मध्ये चैव विशीर्यते।
निष्पन्नेष्वपि शस्येषु तदा दुर्भिक्षमादिशेत्।
मानुषाश्च विपद्यन्ते समृद्धाश्च कुटुम्बिनः॥
(अद्भुतसागर ३३१)

दर्शयित्वा निशामेकां ततो गच्छत्यदर्शनम्।
दुर्भिक्षं जायते चात्र विरुध्यन्ते च पार्थिवाः॥
ज्वरा नानाविधाश्चात्र भवन्ति प्रबला नृणाम्।
दशवर्षाणि वा प्राहुः फलं मासाँश्च षोडश॥
(अ० सा० १७२)

तात्पर्य यह है कि जिस देश और दिशामें उल्का, धूमकेतु वा दिग्दाह दिखाई दे उस दिशा और देशमें कमसे कम ६ और अधिकसे अधिक १६ मासके भीतर भयंकर विनाशका अखण्डताण्डव होता है। राजा या प्रधान शासककी मृत्यु, दुर्भिक्ष, रोग, युद्ध, उत्पादि आपत्तियोंके साथ ही प्रजा और शासक वर्गको अनेकों आन्तरिक तथा बाह्य संघर्षोंका सामना करना पड़ता है। यह उल्का पश्चिमोत्तर दिशामें दिखाई दी थी, अतः पाकिस्तान अफगानिस्तान रूस काश्मीर और पंजाबके लिए अनिष्ट सूचक है। पश्चिमोत्तरीय सीमान्त प्रदेशोंमें कई अतर्क्य घटनाएँ घटेंगी, जिनका प्रतिरोध करनेके लिए जनताको सदा सचेष्ट रहना चाहिए। यद्यपि इस समय भारतके लिए गुरु बलवान् है, पंजाबकी राशिका अधिपति भी यही है और आगे मकर राशिमें जानेवाला गुरु भी भारतके प्रभाव क्षेत्रमें ही जा रहा है, अतः इस उल्काका भारतमें कोई अनिष्ट प्रभाव न होकर पश्चिमी अनार्य राष्ट्रोंमें ही इसका विनाशक प्रभाव अधिक होगा, तथापि पंजाबके प्रांतीय शासन और प्रधान मंत्रीको विशेष सतर्क रहना आवश्यक है। पंजाब और केन्द्रीय शासनमें कई प्रकार की आन्तरिक उलझनें एकाधिक बार उत्पन्न होंगी। पाकिस्तानमें आंतरिक विद्रोह बढ़ेगा। उनके धर्मबन्धु ही विद्रोही बनकर विनाशकी ओर अग्रसर होंगे। पठान कबायली लोग और अफगानिस्तानसे पाकिस्तानके सम्बन्ध बहुत बिगड़ जायेंगे।

माघसे चैत्र तक संसार और भारतकी परिस्थितिका विशेष विचार आगामी 'हेमन्ताङ्क' में तथा आगामी नवीन वर्ष सं० २००६ का सविस्तर भविष्य फल हमारे 'श्रीविश्व-विजय-पञ्चाङ्ग' में प्रकाशित हो रहा है। प्रतीक्षा कीजिए।

——



त्यागमूर्ति श्री १०८ गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराज

कार्तिक शुक्ल १ मंगलवार ता० २ नवम्बर १९४८ से
आप ६० वें वर्षमें प्रवेश कर रहे हैं।

आप हैं भारतकी धार्मिक क्रान्तिके अग्रदूत। आपकी कर्मठताने धर्मको साकार किया है। आपके सत्प्रयत्नोंने विद्याका प्रसार किया है। आपके त्यागने राष्ट्रका उद्धार किया है। और आपकी तपस्याने सुप्त भारतीय जनतामें जीवनका सञ्चार किया है। आपके ब्रह्म-तेज सम्पन्न नेतृत्वने सिद्ध कर दिया है—

ब्रह्मण एव तत्क्षत्रं वशमेति तद्यत्र वै ब्रह्मणः क्षत्रं वशमेति,
तद्राष्ट्रं समृद्धं तद्वीरवदाहास्मिन्वीरो जायते ॥

(ऐत० ८।३।६)

जिस राष्ट्रमें शासनशक्ति ब्राह्मणके वशमें रहती है, वह राष्ट्र समृद्ध होता है, वीरता उसमें हिलोरें लेती है, वहां वे वीर ही उत्पन्न होते, हैं जो राष्ट्र को स्वतन्त्र रखनेकी सामर्थ्य रखते हैं।

आपके ६० वें जन्मदिवसोत्सव पर श्रीस्वाध्याय-परिवार आपके लिए देवआयु की कामना करता है। और—

"अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मण वर्चसेन"

(अथर्व. १८।११)

इस वेदवाणी द्वारा ईश्वरसे प्रार्थना करता है कि आप अपने राष्ट्रिय ऐश्वर्य, यश, स्वातन्त्र्य और ब्रह्मतेजसे राष्ट्रको सत्य शिव सुन्दर और समृद्ध करें।

श्रीस्वाध्यायके संरक्षक सहायक बनकर

लाभ उठाइये

विगत सात वर्षोंमें 'श्रीस्वाध्याय' ने धार्मिक सांस्कृतिक साहित्यिक और विशेषकर ज्योतिर्विज्ञानके क्षेत्रमें कितनी महत्वपूर्ण प्रगति की यह आपको विदित ही है। व्यापारीवर्गका श्रीस्वाध्यायसे विशेष स्नेह है, वे इसे पूञ्जीकी भांति सुरक्षित रखते हैं। किन्तु इस आधुनिक सट्टेके व्यापारमें लाभ होता उन्हींको है जिनकी प्रारब्ध या ग्रहपंक्ति अनुकूल हो। जन्मकुण्डली और वर्षफलका विचार किसी अनुभवी विद्वान दैवज्ञसे कराये बिना ही जो व्यापारी इस व्यापारमें पड़ेंगे उन्हें लाभके स्थानमें हानि हो जाना सम्भव है। एतदर्थ व्यापारी वर्गके लाभार्थ हमने यह निश्चय किया है कि जो व्यापारी ५००) भेजकर 'श्री[illegible]ध्याय' के संरक्षक बनेंगे. उनका जन्मपत्र वर्षफल सूक्ष्म नवीन गणितसे बनाकर जिस वस्तुसे लाभ होनेका योग दिखाई देगा उसी वस्तुके अनुभूत चान्स उनको निःशुल्क भेजे जावेंगे। जो सज्जन १०१) रु० भेजकर 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक बनेंगे उन्हें वर्षमें एक अनुभूत चान्स निःशुल्क भेजा जायेगा। इस प्रकार जहाँ 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक सहायक बनकर भारतीय साहित्य एवं ज्योतिर्विज्ञानकी सेवाके रूपमें आप संसारमें यश प्राप्त करेंगे वहाँ व्यापारद्वारा पर्याप्त लाभ भी प्राप्त कर सकेंगे। विशेष जानकारीके लिए निम्न पते पर लिखिये—

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला) हिमाचलप्रदेश

कुछ प्रधान नगरोंमें श्रीस्वाध्याय मिलनेके स्थान

दिल्ली—(१) श्री पं० दयानन्दजी जोशी समोसागली
(२)—नारायणदास जयदयालमल बुक्सेलर दरीबाकलाँ
बम्बई नं० २—भावीरत्न कार्यालय, राममन्दिर, बिल्डिङ्ग कालबादेवी रोड
कलकत्ता—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी हरिसन रोड
कानपुर—बम्बई पुस्तक एजेन्सी चौकबाजार
आगरा—श्री पं० ज्योतिप्रसादजी शास्त्री भैरोंनाला बेलागंज
उज्जैन—श्री पं० रामचन्द्रजी त्रिवेदी मारुतीगञ्ज (उर्दू पुरा)
जयपुर—जैन न्यूजपेपर एजेन्सी जौहरी बाजार
भरतपुर—श्री पं० गोविन्दजी मिश्र चौबुर्जा

इन नगरोंके अतिरिक्त भारतके प्रत्येक छोटे बड़े नगरों में 'श्रीस्वाध्याय' के लिए उत्साही कार्यकुशल एजेण्टों की आवश्यकता है। निम्नपते से नियमादि मगवाइये—

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

आवश्यकता

गणित एवं फलितके विशेषज्ञ एक अनुभवी सहकारी ज्योतिर्विद् की आवश्यकता है। ज्योतिषाचार्य या शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण हो अथवा तत्सम योग्यता होना आवश्यक है। प्राचीन और नवीन दोनों प्रकारकी गणित शैलीके जानकार और साथ ही यदि अंग्रेजीकी भी योग्यता हो तो अच्छा है। अपनेकार्य और योग्यताका प्रमाणपत्र निम्न पते पर शीघ्र भेजें।

व्यवस्थापक श्रीस्वाध्याय सदन,
सोलन (शिमला)

★

★ प्रस्तुत अंकके सम्बन्धमें ★

कुछ एक अनिवार्य पारिवारिक कार्योंमें व्यस्त रहनेके कारण इस अंकके प्रकाशनावसर पर मैं देहली प्रेसमें उपस्थित न रह सका। अतः यह अङ्क श्री पं० तिलकधर जी शर्माके तत्त्वावधानमें छपा। फलतः अनेक लेखोंमें पत्रकी भाषा, विषय-शैली अपनी नीतिके अनुरूप न रह पायी और यत्र-तत्र अनेक अशुद्धियां भी रह गईं, तथा कई एक महत्वपूर्ण लेख भी प्रकाशित न हो पाये। आशा है परिस्थितिको ध्यानमें रखते हुए पाठक एवं लेखकगण तदर्थ क्षमा प्रदान करेंगे। अन्तमें श्री पं० तिलकधरजी शर्माको धन्यवाद है जिनके सहयोगसे ही यह नववर्षाङ्क प्रस्तुत रूपमें प्रकाशित हो सका। साथ ही श्री पं० नन्दलालजी शास्त्रीने प्रूफसंशोधनादि कार्योंमें जो सहयोग दिया तदर्थ आपका विशेष रूपसे धन्यवाद।

— हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सम्पादक)

श्रीस्वाध्यायके संरक्षक सहायक बनकर

लाभ उठाइये

विगत सात वर्षोंमें 'श्रीस्वाध्याय' ने धार्मिक सांस्कृतिक साहित्यिक और विशेषकर ज्योतिर्वि- ज्ञानके क्षेत्रमें कितनी महत्वपूर्ण प्रगति की यह आपको विदित ही है। व्यापारीवर्गका श्रीस्वाध्यायसे विशेष स्नेह है, वे इसे पूञ्जीकी भांति सुरक्षित रखते हैं। किन्तु इस आधुनिक सट्टेके व्यापारमें लाभ होता उन्हीको है जिनकी प्रारब्ध या ग्रहपंक्ति अनुकूल हो। जन्मकुण्डली और वर्षफलका विचार किसी अनुभवी विद्वान् दैवज्ञसे कराये बिना ही जो व्यापारी इस व्यापारमें पड़ेंगे उन्हें लाभके स्थानमें हानि हो जाना सम्भव है। एतदर्थ व्यापारी वर्गके लाभार्थ हमने यह निश्चय किया है कि जो व्यापारी ५००) भेजकर 'श्री ध्याय' के संरक्षक बनेंगे. उनका जन्मपत्र वर्षफल सूक्ष्म नवीन गणितसे बनाकर जिस वस्तुसे लाभ होनेका योग दिखाई देगा उसी वस्तुके अनुभूत चान्स उनको निःशुल्क भेजे जावेंगे। जो सज्जन १०१) रु० भेज- कर 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक बनेंगे उन्हें वर्षमें एक अनुभूत चान्स निःशुल्क भेजा जायेगा। इस प्रकार जहाँ 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक सहायक बनकर भारतीय साहित्य एवं ज्योतिर्विज्ञानकी सेवाके रूपमें आप संसारमें यश प्राप्त करेंगे वहाँ व्यापारद्वारा पर्याप्त लाभ भी प्राप्त कर सकेंगे। विशेष जानकारीके लिए निम्न पते पर लिखिये—

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला) हिमाचलप्रदेश

कुछ प्रधान नगरोंमें श्रीस्वाध्याय मिलनेके स्थान

दिल्ली—(१) श्री पं० दयानन्दजी जोशी समोसागली
(२)—नारायणदास जयदयालमल बुकसेलर दरीबाकलाँ
बम्बई नं० २—भावीरत्न कार्यालय, राममन्दिर, बिल्डिङ्ग कालबादेवी रोड
कलकत्ता—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी हरिसन रोड
कानपुर—बम्बई पुस्तक एजेन्सी चौकबाजार
आगरा—श्री पं० ज्योतिप्रसादजी शास्त्री भैरोंनाला बेलागंज
उज्जैन—श्री पं० रामचन्द्रजी त्रिवेदी मारुतीगञ्ज (उर्दू पुरा)
जयपुर—जैन न्यूजपेपर एजेन्सी जौहरी बाजार
भरतपुर—श्री पं० गोविन्दजी मिश्र चौबुर्जा

इन नगरोंके अतिरिक्त भारतके प्रत्येक छोटे बड़े नगरों में 'श्रीस्वाध्याय' के लिए उत्साही कार्यकुशल एजेण्टों की आवश्यकता है। निम्नपते से नियमादि मगवाइये—

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

आवश्यकता

गणित एवं फलितके विशेषज्ञ एक अनुभवी सहकारी ज्योतिर्विद् की आवश्यकता है। ज्यो- तिषाचार्य या शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण हो अथवा तत्सम योग्यता होना आवश्यक है। प्राचीन और नवीन दोनों प्रकारकी गणित शैलीके जानकार और साथ ही यदि अंग्रेजीकी भी योग्यता हो तो अच्छा है। अपनेकार्य और योग्यताका प्रमाणपत्र निम्न पते पर शीघ्र भेजें।

व्यवस्थापक श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

★

★ प्रस्तुत अंकके सम्बन्धमें ★

कुछ एक अनिवार्य पारिवारिक कार्योंमें व्यस्त रहनेके कारण इस अंकके प्रकाशनावसर पर मैं देहली प्रेसमें उपस्थित न रह सका। अतः यह अङ्क श्री पं० तिलकधर जी शर्माके तत्त्वावधानमें छपा। फलतः अनेक लेखोंमें पत्रकी भाषा, विषय-शैली अपनी नीतिके अनुरूप न रह पायी और यत्र-तत्र अनेक अशुद्धियां भी रह गईं, तथा कई एक महत्वपूर्ण लेख भी प्रकाशित न हो पाये। आशा है परिस्थितिको ध्यानमें रखते हुए पाठक एवं लेखकगण तदर्थ क्षमा प्रदान करेंगे। अन्तमें श्री पं० तिलकधरजी शर्माको धन्यवाद है जिनके सहयोगसे ही यह नववर्षाङ्क प्रस्तुत रूपमें प्रकाशित हो सका। साथ ही श्री पं० नन्दलालजी शास्त्रीने प्रूफसंशोधनादि कार्योंमें जो सहयोग दिया तदर्थ आपका विशेष रूपसे धन्यवाद।

— हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सम्पादक)

भारतीय संस्कृतिके अ... राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषय का अनुपम पत्र है।··· यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है·······।

श्रीयुत राजर्षि पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।·······इस पत्र और इसके संचालक मण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी·······।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।······ मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ·······।

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षामन्त्री युक्तप्रांत—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पंचम वर्ष का प्रथमां बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टि से देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय हैं।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"·······'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परि[श्रम]की प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।·······"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।··· ···यह एक उच्च कोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—" वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आ[र्य] संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।·······"

श्री डा० रामकुमार वर्माजी—"·······'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।·······"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"·······'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।·····प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्म प्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।······"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।······आपने 'स्वाध्याय' निकालकर हिंदीके एक विशेष अभावकी पूर्त्ति की है, इसमें संदेह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—"··· 'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म'में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारत के अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं की सकी।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन ...न (शिमला) से प्रकाशित